Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आधुनिक

हिन्दी शिक्षण विधियां

MODERN TEACHING OF HINDI

Surinder Singh Kadian

VINOD PUBLICATIONS
LUDHIANA-141 008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आधुनिक हिन्दी शिक्षण विधियां

(TEACHING OF HINDI)

(For B.Ed Students of Kashmir University)

SURINDER SINGH KADIAN
University College of Education
Kurukshetra University
KURUKSHETRA

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No....6935......
Dated 8/8/2006

2007-08

VINOD PUBLICATIONS
EDUCATIONAL PUBLISHERS
C/o New Sapna Tele Shop
Tajpur Road (Jail Road)
LUDHIANA – 141008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant
6935

Published By :

VINOD TONDON

Vinod Publications

Educational Publishers

C/o New Sapna Tele Shop

Tajpur Raod, (Jail Road)

Phones : (S) 2664960 (R) 2721629

Mobile : 98154-01711

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

© Author

Price : Rs. 160.00

Composed by :

Vinod Computers, LDH.

Printed by :

Kohli Press, Jalandhar.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

DEDICATED
TO
B.ED. STUDENTS
AND
TEACHER EDUCATORS
OF
KASHMIR UNIVERSITY

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमिका

मुझे अपनी पुस्तक "आधुनिक हिन्दी शिक्षण विधियां" का प्रथम संस्करण प्रस्तुत करते हुए बहुत हर्ष हो रहा है। यह पुस्तक नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार विधार्थियों की आवश्यकताओं को सन्मुख रखकर लिखी गई है। इसकी शैली सरल तथा स्पष्ट है। इसके साथ-साथ नवीनतम तथा रोचक सामग्री, शीर्षक तथा उपशीर्षक सोने पर सुहागे का काम करते हैं। पुस्तक के आकार को बड़ा बनाने का प्रयास नहीं किया गया है।

मैं उन अध्यापक साथियों का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने मेरा उत्साह बढ़ाया है और मुझे यह पुस्तक प्रस्तुत करने के लिए प्रेरणा दी है। मैं अनका नाम लेकर प्यार के सम्बन्ध को कमजोर करना उचित नहीं समझता।

पुस्तक को और अच्छा बनाने के लिए सभी सुझावों को धन्यवाद सहित स्वीकार किया जाएगा।

—सुरेन्द्र सिंह कादयान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीर विश्वविद्यालय का हिन्दी शिक्षण का पाठक्रम

पेपर—V हिन्दी-शिक्षण (TEACHING OF HINDI)

इकाई—1 हिन्दी शिक्षण की स्थिति

UNIT – I (POSITION OF HINDI TEACHING)

(1) हिन्दी भाषा का उद्‌भव व विकास (Origin and development of Hindi language)

(2) प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of teaching Hindi at elementary secondary levels.)

(3) भारत में हिन्दी भाषा की संपर्क भाषा के रूप में भूमिका (Role of Hindi as a link language in India)

(4) हिन्दी शिक्षण की समस्याएं (Problem of Hindi Teaching)

इकाई—II विधियां

UNIT – II (METHODS)

(1) अनुवाद विधि (Translation method)

(2) खेल विधि (Play way method)

(3) प्रत्यक्ष विधि (Direct method)

(4) संरचना उपागम (Structural approach)

इकाई—3 वाचन व लेखन

UNIT – III (DEADING & WRITING)

(1) वाचन का प्रत्यय अर्थ व महत्व (Concept Meaning and Importance of Deading)

(2) वाचन के प्रकार भौन/संस्वर, गहन व दूत तीव्र (Types of reading silent/louds/extensive & intensive)

(3) वाचन दोष व समाधान (Reading defects and their cure.)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(4) अच्छे लेखन के गुण (Quality of good hand writing)
(5) लेखन कौशल में अशुद्धियां व समाधान (Defects in Writing Skill and their improvement)
(6) संक्षेपीकरन व विस्तारीकरण (Summarizing and elaborating)
(7) निबन्ध लेखन/पत्र लेखन (Essay Writing/Letter Writing)

इकाई—4 गद्य व काव्य शिक्षण

UNIT – IV (TEACHING OF PROSE AND POETRY)

(1) गद्य शिक्षण व गद्य पाठ योजना (Teaching of Prose and Lesson Planning)
(2) काव्य शिक्षण व कविता पाठ योजना (Teaching of Poetry and Lesson Planning)
(3) मूल्यांकन का पृव्यय. व अर्थ (Concept and Meaning of Evaluation)
(4) अच्छे भाषा परीक्षण का आधार (Criteria of a Good Language Test)
(5) अशुद्धि विश्लेषण व उपचारात्मक शिक्षण (Error Analysis and Remedial Teaching)

इकाई—5 (हिन्दी शिक्षण—विषयवस्तु)

UNIT – 5 (TEACHING OF HINDI)

(1) हिन्दी की मानक ध्वनियां, हिन्दी के स्वर व त्यंजनों का सही उच्चारण (Standard Sounds of Hind, Vowels, Consonants Correct Pronunciation in Hindi)
(2) संज्ञा व विशेषण की परिभाषा व प्रकार (Defination kinds of Nouns & Adjectives)
(3) कबीर व तुलसी का जीवनवृत्त व कृत्तीत्व का विस्तृत अध्ययन (A Detailed Description of the Life & Works Contribution of Kabir & Tulsi)
(4) निम्नलिखित का अध्ययन (Study of the following)
(1) कबीर के दोहे (7वीं व 9वीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक)
Kabir's Dohe (7th & 8th Grade Text)
(2) महादेवी की कविता (मुरझाया फूल) (7वीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक)
Mahadevi's Murjhaya Phool (7th Grade Book)
(3) गिल्लू (कहानी) (8वीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक)
Gilloo (Story) (8th Grade Text Books)
(4) नीलकंठ (10वीं कक्षा की पाठय पुस्तक) Nilakant (10th Grade Text)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषय—सूची
(CONTENTS)

अध्याय	पृष्ठ

इकाई (UNIT) – I
(हिन्दी शिक्षण की स्थिति)
(POSITION OF HINDI TEACHING)

1. हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास (Origin and Development of Hindi Language) 3–8
2. प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य व महत्व (Objective and Importance of teaching of Hindi at Elementary & Secondary level) 9–32
3. भारत में हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में व हिन्दी शिक्षण की समस्याएं (Role of Hindi as a link language in India & Problem of Teaching of Hindi) 33–42

इकाई (UNIT) – II
विधियां
(METHODS)

4. आधुनिक हिन्दी शिक्षण विधियां (Modern Hindi Teaching Methods) 45–62

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय पृष्ठ

इकाई (UNIT) – III
(वाचन व लेखन)
(READING & WRITING)

5. वाचन शिक्षण समस्याएं व समाधान, वाचन के प्रकार (Teaching of Reading its Problems & Cures Types of Readings) 65 – 76
6. अच्छे लेखन के गुण, लेखन कौशल में अशुद्धियां व समाधान (Quality of Good Handwriting, Defect om Writing Skill and their Improvement) 77 – 85
7. संक्षेपीकरण और विस्तरीकरण (Summarising and Elaborating) 86 – 92
8. निबन्ध/पत्रलेखन (Essay Writing/Letter Writing) 93 – 110

इकाई (UNIT) – IV
(गद्य व काव्य शिक्षण)
(TEACHING PROSE & POETRY)

9. गद्य शिक्षण (Teaching of Prose) 113 – 132
10. कविता शिक्षण (Teaching of Poetry) 133 – 162
11. मूल्यांकन : प्रत्यय, अर्थ तथा अच्छे भाषा-परीक्षण का आधार (Evaluation : Concept, Meaning and Criteria of a good language Test) 163 – 184

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय	पृष्ठ
12. अशुद्धि विशलेषण व उपचारात्मक शिक्षण (Error analysis & Remedial Teaching)	185 – 194

इकाई (UNIT) – V
(हिन्दी-शिक्षण विषय-वस्तु)
(CONTENT IN HINDI TEACHING)

13. हिन्दी की मानक ध्वनियां, हिन्दी के स्वर व व्यंजनो का सही उच्चारण (Standard Sounds of Hindi, •Vowels, Consonants Correct Pronunciation in Hindi)	197 – 205
14. संज्ञा व विशेषण की परिभाषा व प्रकार (Definition & Kinds of Nouns & Adjectives)	206 – 211
15. कबीर व तुलसी का जीवनवृत व कृत्तीत्व का विस्तृत अध्ययन (A detailed Description of the life & Works Contribution of Kabir & Tulsi)	212 – 223
16. निम्नलिखित का अध्ययन (Study of the following)	224-236
(1) कबीर के दोहे (7वीं व 9वीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक से) (Kabir's Dohe (7th & 9th Grade Texts)	
(2) महादेवी की कविता (मुरझाया फूल) (7वीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक) (Mahadevi's 'Murjhaya Phool') (7th Grade Text)	
(3) गिल्लू (कहानी) (8वीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक से) Gilloo (Story) (8th Grade Text Book)	
(4) नीलकंठ (10वीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक से) Nilakant (10th Grade Text)	

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इकाई—I हिन्दी शिक्षण की स्थिति

UNIT – I (POSITION OF HINDI TEACHING)

(1) हिन्दी भाषा का उद्भव व विकास
(ORIGIN AND DEVELOPMENT OF HINDI LANGUAGE)

(2) प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य
(OBJECTIVES OF TEACHING HINDI AT ELEMENTARY SECONDARY LEVELS.)

(3) भारत में हिन्दी भाषा की संपर्क भाषा के रूप में भूमिका
(ROLE OF HINDI AS A LINK LANGUAGE IN INDIA)

(4) हिन्दी शिक्षण की समस्याएं
(PROBLEM OF HINDI TEACHING)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय – 1

हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास

(ORIGIN AND DEVELOPMENT OF HINDI LANGUAGE)

हिन्दी का उद्भव

भारत की शिक्षा-पद्धति में हिन्दी भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी भाषा को कहीं मातृभाषा के रूप में पढ़ाया जाता है, तो कहीं राष्ट्रीय भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है और कहीं हिन्दी का प्रयोग शिक्षा माध्यम के रूप में होता है। हिन्दी-अध्यापक को हिन्दी पढ़ाते समय उसके बहुमुखी उद्देश्यों को सामने रखना होता है। उसे विद्यार्थियों को हिन्दी बोलने, पढ़ने, समझने तथा लिखने में तो निपुण करना ही होता है, साथ में साहित्य की विभिन्न विधाएं—कविता, गद्य, कहानी, नाटक, पत्र-लेखन, निबन्ध आदि पढ़ाते समय कुछ विशिष्ट उद्देश्यों को सामने रखना होता है। इस बहुमुखी कार्य को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए शिक्षक को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। ज्ञान का समुद्र बहुत विशाल है। इसकी न कोई थाह है, न कोई सीमा। इसलिए शिक्षक को हमेशा ज्ञान ग्रहण करते रहना चाहिए।

टैगोर ने कहा है—"अध्यापक तब तक वास्तविक अर्थों में नहीं पढ़ा सकता जब तक दूसरे दीपक को प्रज्वलित नहीं कर सकता जब तक वह स्वयं न जलता रहे।"

हिन्दी के अध्यापक के लिए यह जानना भी बहुत आवश्यक है कि हिन्दी को 'हिन्दी' नाम कहां से मिला ? इसका उद्भव कैसे हुआ ? उस की गति किन मोड़ों से होती हुई किन परिवर्तनों को अपने में समाहित करती हुई विकसित हुई। इन सब प्रश्नों का उत्तर 'हिन्दी के उद्भव व विकास' में निहित है।

हिन्दी भाषा के आदिम रूप का संबंध यूरोप-एशिया चक्र के साथ माना जाता है। विद्वानों ने हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति 'यूरोप-एशिया' भाषा-समूह से मानी है।

भाषा परिवार

विद्वानों ने यूरेशिया भाषा समूह को मुख्य रूप से निम्नलिखित भाषा परिवारों में विभाजित किया है—

(1) आर्यभाषा परिवार/ भारोपीय परिवार (2) द्रविड़ भाषा परिवार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(3) चीनी भाषा समूह **(4) सामी भाषा परिवार**

(5) उराल-अलताई भाषा परिवार **(6) काकेशी भाषा परिवार**

इन भाषा परिवारों में से हिन्दी भाषा का सम्बन्ध आर्यभाषा परिवार/भारोपीय परिवार से है।

आर्य भाषा परिवार या भारोपीय परिवार—इस भाषा परिवार की भाषाओं का सम्बन्ध मुख्यतः भारत, यूरोप, ईरान व अफ़गानिस्तान से है। माना जाता है कि जब आर्य जाति एक ही स्थान पर निवास करती थी तब वह जिस भाषा का प्रयोग करती थी उसी से आर्य-भाषा परिवार का जन्म हुआ। यह प्रश्न आज भी विवादास्पद बना हुआ है कि आर्यों का मूल निवास भारत था, यूरोप था अथवा मध्य एशिया था, परन्तु इस सत्य को सभी मानते हैं कि आर्य जाति दूर-दूर तक फैलती गई और स्थानीय भेदों के कारण उनकी भाषा में विभिन्नता आती गई। यही कालान्तर में विविध भाषाओं का रूप धारण कर गई। इन विविध भाषाओं को विद्वानों ने दो भागों में बांटा है—

(1) कैन्टुम वर्ग—यूरोप की भाषाएं कैन्टुम वर्ग में आती हैं जिन में वर्तमान जर्मनी, अंग्रेज़ी, ईटालियन, फ्रैंच, यूनानी आदि भाषाओं का विकास हुआ।

(2) सतम वर्ग—इस वर्ग की प्रमुख भाषाओं का संबंध भारत और ईरान के साथ है। आर्यों की जो शाखाएं भारत और ईरान में बस गईं उन द्वारा प्रयुक्त भाषाओं को 'हिन्दी-ईरानी' या 'भारत-ईरानी' शाखा का नाम भी दिया गया।

हिन्दी-ईरानी शाखा की निम्नलिखित उप-शाखाएं हैं—

(1) ईरानी भाषा (2) भारतीय आर्य भाषाएं (3) दर्दी या पैशाची भाषाएं।

ईरानी भाषाओं में मुख्यतः फ़ारसी और अवेस्ता भाषा का विकास हुआ। भारतीय-आर्य भाषाओं का आदिम रूप वैदिक संस्कृत में मिलता है। यही वैदिक संस्कृत उत्तरोत्तर विकसित होती हुई आधुनिक हिन्दी तक पहुंची। दर्दी भाषा-समूह में कश्मीरी उल्लेखनीय है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'हिन्दी भाषा' की उत्पत्ति भारतीय भाषा परिवार की भारतीय-आर्य भाषाओं से हुई। भारत में बसते रहने वाले आर्य जिस भाषा का प्रयोग करते थे उसी में 'हिन्दी' की उत्पत्ति के बीज निहित हैं। इस भाषा का प्राचीनतम रूप वेदों में पाया जाता है। वेदों के समय से लेकर आधुनिक समय तक जिस भाषा में कई प्रकार के परिवर्तन हुए और इसकी कितनी शाखाएं बनती गई। वेदों की रचना कब हुई ? इसके संबंध में तो अभी तक कोई निश्चितं तिथि निर्धारित नहीं की जा सकी। आज अधिकांश विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि आज से पांच हज़ार वर्ष पहले वेदों की रचना हो चुकी थी। इस का तात्पर्य यह हुआ कि 'हिन्दी' के विकास में पांच हज़ार वर्ष हो चुके हैं और यह विकास अभी तक जारी है।

हिन्दी भाषा के उद्भव का काल विभाजन

अध्ययन की सुविधा के लिए वेदों की रचना से आज तक समूचे समय को तीन कालों में बांटा जा सकता है—

(1) प्राचीन काल (Ancient Age)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(2) मध्य काल (Midieval Period)

(3) आधुनिक काल (Modern Period)

(1) प्राचीन काल—हिन्दी भाषा का प्राचीनतम रूप भारतीय आर्य भाषा के रूप में ऋग्वेद मिलता है। इसे विद्वानों ने 'वैदिक भाषा' का नाम दिया। वैदिक भाषा उस समय की जन-साधारण भाषा रही होगी। वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ और अनिष्दों में इसी वैदिक संरकृत के दर्शन होते है। णिनी जैसे व्याकरणाचार्यों ने वैदिक संस्कृत का परिष्कार करके इसे व्याकरण के नियमों में बध दिया। वैदिक भाषा का यही परिमार्जित रूप 'संस्कृत' कहलाया।

यही व्याकरणबद्ध संस्कृत साहित्यकारों व विद्वानों द्वारा बनी। इस भाषा में श्रेष्ठतम साहित्य की रचना हुई। परन्तु जन साधारण अपनी बोल-चाल की भाषा में व्याकरण का पालन नहीं करते थे। इसे साधारण बोल चाल की भाषा कहते थे। इस प्रकार भाषा दो धाराओं में प्रवाहित होती रही साहित्यिक भाषा व जनसाधारण की भाषा। जब संस्कृत साहित्यिक भाषा थी उस समय जन साधारण की भाषा को प्राकृत-भाषा का नाम दिया गया था।

(2) मध्य काल—संस्कृत तो अपने साहित्यिक रूप में अनुशासित ही बनी रही परन्तु प्राकृत-भाषा जन-साधारण की बोल-चाल में निरन्तर परिवर्तित होती रहीं। ई.पू. 500 से 1000 ई. तक। मध्य काल प्राकृत भाषाओं के विकास का काल रहा। महात्मा बुद्ध ने अपने धर्म-प्रचार के लिए 'पाली' का प्रयोग किया था जो प्राकृत का ही एक रूप थी। प्राकृत भाषाओं के प्रभुत्व के कारण विद्वानों व आचार्यों ने इन्हें भी व्याकरण के नियमों में बांधना आरम्भ कर दिया व यह भी विद्वानों व साहित्यिकों की रचना की भाषा बन गई। परन्तु जन-साधारण की भाषा अपने सहज और स्वाभाविक प्रवाह में बढ़ती रही। जन-साधारण द्वारा बोली जाने वाली इस सरल भाषा को 'अपभ्रंश' का नाम दिया गया।

(3) आधुनिक काल—अपभ्रंश भाषाओं के प्रयोग से लेकर आज तक के काल को 'हिन्दी' की भाषा का आधुनिक काल कहा जा सकता है। यह काल 1000 ई. से आरम्भ हुआ और विभिन्न परिवर्तनों के साथ आज तक चला आ रहा है। अपभ्रंश भाषाओं में शौरसेनी अपभ्रंश भाषा की महत्त्वपूर्ण बोलियां हैं—ब्रज, भोजपुरी और खड़ी बोली। अर्द्ध मागधी अपभ्रंश की महत्त्वपूर्ण बोली है—अवधी। इन्हीं बोलियों ने हिन्दी के आधुनिक रूप को निखारा और संवारा है।

हिन्दी के विकास का काल विभाजन

हिन्दी साहित्य के इतिहास का आरम्भ ग्यारहवीं शताब्दी से माना जाता है। तब से हिन्दी अपने विकास-पथ पर अग्रसर है। हिन्दी की इस विकास यात्रा को मुख्यतः तीन भागों में बांटा जा सकता है—

(1) आदिकाल (1000 से 1500 ई. तक)

(2) मध्यकाल (1500 से 1800 ई. तक)

(3) आधुनिक काल (1800 ई. से आज तक)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(1) आदिकाल—हिन्दी भाषा का प्रारम्भिक काल था। आदिकाल में हिन्दी का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से होना आरम्भ हुआ। इस युग में हिन्दी तथा अपभ्रंश का साथ साथ विकास

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुआ। साहित्य के क्षेत्र में अपभ्रंश का महत्त्व था तथा बोल-चाल की अपभ्रंश हिन्दी का रूप धारण कर रही थी। इस युग में पुरानी हिन्दी तथा अपभ्रंश में इतनी समानता है कि कुछ लोग अपभ्रंश को ही हिन्दी मानते थे । परन्तु अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी दो भिन्न भाषाएं हैं।

राजनैतिक दृष्टि से यह युग उथल-पुथल का युग था। भारत में अनेक छोटे-छोटे राज्य स्थापित हो चुके थे। यवनों के आक्रमण शुरू हो चुके थे। मुहम्मद गौरी ने क्रमशः पृथ्वीराज तथा जयचंद को पराजित करके दिल्ली तथा कन्नौज को अपने अधिकार में कर लिया था पंजाब भी तुर्कों के अधीन था। इसी काल में गुलाम वंश का शासन स्थापित हो चुका था उसकी राजधानी दिल्ली थी। भाषा की दृष्टि से तुर्कों में अरबी, फ़ारसी को प्रमुखता प्राप्त थी परन्तु भारतीयों के साथ इनके बोल-चाल की भाषा पश्चिमी अपभ्रंश थी।

आदिकाल की भाषा में मुख्य रूप से डिंगल-पिंगल, ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, खड़ी बोली, पंजाबी, दक्खिनीं बोलियों का मिश्रण है। राजस्थान में डिंगल-पिंगल तथा मथुरा के पास ब्रज भाषा की प्रमुखता थी। इस काल के प्रमुख साहित्यकार हैं—चन्द बरदाई, नरपति नाल्ह, विद्यापति, अमीर खुसरो, गोरखनाथ आदि। भाषा की दृष्टि से इनमें विस्मयकारी संयोग है। जैसे—अमीर खुसरो की पहेलियां तथा मुकरियों की भाषा खड़ी बोली है। इस पर ब्रज का भी प्रभाव दिखाई देता है। चन्द बरदाई द्वारा लिखित 'पृथ्वीराज रासो, में डिंगल-पिंगल तथा अपभ्रंश का प्रयोग है। विद्यापति की 'कीर्ति लताका' तथा 'कीर्तिपताका' अपभ्रंश भाषा में लिखी गई हैं। कबीर, गुरू नानक आदि सन्तों ने आम बोल-चाल की भाषा का प्रयोग किया है। इन सभी साहित्यकारों की हिन्दी अपभ्रंश के काफ़ी निकट है। इस काल की भाषाएं अपभ्रंश तथा खड़ी बोली विदेशी प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाईं। इन पर विदेशी प्रभाव भी पड़ा। खुसरो ने जिस भाषा का प्रयोग किया था वह निस्सन्देह हिन्दी भाषा का आधुनिक रूप था। उन्होंने अपभ्रंश की प्रचुरता के युग में खड़ी बोली (जो वर्तमान हिन्दी का आधार है, का प्रयोग करके जैसे भारत की भावी राष्ट्र-भाषा की ओर संकेत कर दिया था। इस से स्पष्ट होता है कि अपने आरम्भिक काल में ही 'हिन्दी' ने अपभ्रंश के प्रभुत्व से मुक्ति प्राप्त करने का प्रयास आरम्भ कर दिया था।

(2) मध्यकाल (1500 से 1800 ई. तक) —इस काल को हिन्दी का स्वर्ण-युग माना गया है। भाषा तथा साहित्य दोनों दृष्टियों से इसका विशेष महत्त्व है। इस काल में अपभ्रंश का प्रभाव बिल्कुल हट गया था और हिन्दी की बोलियां विशेषकर ब्रज, अवधी और खड़ी बोली अपने पैरों पर खड़ी हो गई थी। इस युग में अवधी, ब्रज व खड़ी बोली के साहित्य का विकास हुआ।

कुतुबन, मंझन आदि सूफ़ी कवियों ने अवधी भाषा में साहित्य रचना की। अवधी भाषा के दो सर्वश्रेष्ठ काव्य जायसी का 'पद्मावत' तथा तुलसीदास का 'रामचरितमानस' इसी काल में लिखे गए। परन्तु इन दोनों की भाषा मे अन्तर है। जायसी ने ठेठ अवधी भाषा में काव्य-रचना की। जबकि तुलसी की भाषा आदर्श साहित्यिक अवधी है। तुलसी की भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता है।

इस युग में ब्रज भाषा का बहुत विकास हुआ। अष्टछाप के प्रमुख कवियों सूरदास नन्ददास, कुम्भनदास, हितहरिवंश, परमानन्द आदि ने पश्चिमी अपभ्रंश की उत्तराधिकारिणी ब्रज भाषा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को अपनाया तथा इस भाषा में पर्याप्त काव्य रचना की। कृष्ण-भक्त कवियों ने भी ब्रज भाषा को ही अपनाया। तुलसीदास ने भी विनय-पत्रिका, गीतावली आदि की रचना ब्रज भाषा में ही की। रीतिकाल समस्त साहित्य ब्रज भाषा में ही लिखा गया। इस प्रकार ब्रज भाषा मध्यकाल की अत्यन्त समृद्ध साहित्यिक भाषा है। यह गद्य तथा पद्य दोनों की भाषा रही है। इस भाषा की कोमलता, लालित्य तथा माधुर्य अद्वितीय हैं।

'ब्रज' और 'अवधी' भाषा के व्यापक प्रचार से यह धारणा नहीं बना लेनी चाहिए कि खुसरो के पश्चात 'खड़ी बोली' का प्रयोग समाप्त हो गया। भाषा का प्रवाह निरन्तर चलता रहता है और जब जन-साधारण का आश्रय मिल जाता है और साहित्यकार उसमें रचनायें करने लगते हैं तो वह मुख्य धारा का रूप धारण कर लेती है। 'खड़ी बोली' के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। 'ब्रज' और 'अवधी' के युग में भी खड़ी बोली का प्रयोग होता रहा। अकबर के समय गंगाभार ने 'चंद छंद बरनन की महिमा' नामक ग्रंथ की रचना की जिसकी भाषा आधुनिक 'खड़ी बोली' के आस-पास है। इस में तत्सम शब्दों का भी प्रयोग प्रयुक्त मात्रा में हुआ। इस युग में खड़ी बोली का विकास उत्तर भारत में अधिक न होकर दक्षिण भारत में दक्खिनी हिन्दी के रूप में हुआ। मध्यकाल में ब्रज भाषा का ही एकाधिकार रहा।

(3) आधुनिक काल—आधुनिक काल वस्तुतः 'खड़ी बोली' के आधुनिक विकास का इतिहास है। इस काल में खड़ी बोली का विकास विशेष रूप से हुआ। मुसलमानों में खड़ी बोली उर्दू का विकास अधिक हुआ। यह भाषा अमीर खुसरो से भी पूर्व की है। जब तक यह भाषा दक्खिनी रूप में रही। यह देश की परम्परा के अनुकूल ही विकसित होती रही, परन्तु मुसलमानों ने इसमें अरबी-फ़ारसी शब्दों की भरमार कर दी और हिन्दुओं ने इसमें संस्कृत शब्दों को भर दिया। इस प्रकार खड़ी बोली के दो रूप बन गए—खड़ी बोली हिन्दी तथा खड़ी बोली उर्दू। वर्तमान हिन्दी का विकास खड़ी बोली से ही हुआ। आधुनिक काल के आरम्भ में ब्रज काव्य-भाषा के रूप में प्रयुक्त होती रही, परन्तु बाद में पद्य तथा गद्य दोनों क्षेत्रों में खड़ी बोली का ही प्रयोग हुआ।

खड़ी बोली का प्रारम्भिक रूप लल्लू लाल, सदल मिश्र, इंशा अल्ला खाँ तथा सदा सुखलाल के काव्य में मिलता है। लल्लू लाल ने हिन्दवी या खड़ी बोली का प्रयोग किया। उनकी भाषा पर ब्रज तथा संस्कृत का प्रभाव था। सदल मिश्र की भाषा उर्दू मिश्रित है। ईंशा अल्ला खाँ की भाषा पर भी फ़ारसी का प्रभाव है।

सदा सुखलाल की भाषा व्यावहारिक है। उस समय उर्दू तथा हिन्दी का संघर्ष चल रहा था। राजा शिव प्रसाद तथा राजा लक्ष्मण सिंह की भाषा से उर्दू-हिन्दी संघर्ष का संकेत स्पष्ट रूप मे मिलता है। इस प्रकार खड़ी बोली की दो शैलियाँ—उर्दू तथा हिन्दी चल पड़ी। अयोध्या सिंह उपाध्याय ने शुद्ध या ठेठ हिन्दवी में 'अधखिला फूल' तथा 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' उपन्यास लिखे, परन्तु यह शैली अधिक सफल न हो सकी। फलस्वरूप हिन्दी तथा उर्दू दो अलग-अलग भाषाएँ बन गईं। आज खड़ी बोली हिन्दी भारत की प्रमुख साहित्यिक भाषा है। खड़ी बोली में काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, अलोचना सभी प्रकार की साहित्यिक-विधाएँ अपने विकसित रूप में मिलती है। खड़ी बोली हिन्दी केवल हिन्दी भाषा बोलने वाले लोगों की भाषा ही नहीं बल्कि समस्त भारत की भाषा बन चुकी है। अब यह विश्व भाषा के रूप में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकट हो रही है। इसे इस रूप में प्रकट करने का श्रेय लेखक चतुष्टय, ब्रह्म समाज, आर्य समाज, सनातन धर्म, ईसाई प्रचारक संस्थाओं, राजा लक्ष्मण सिंह, शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द', भारतेन्दु तथा उनके मण्डल के लेखकों, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा बाबू श्याम सुन्दर दास आदि भाषा महारथियों को है।

अन्त में हम निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि हिन्दी का उद्भव भारोपीय परिवार की भारतीय-आर्य भाषाएं है जिनका आदिम रूप हमें वैदिक संस्कृत में मिलता है वैदिक संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं से गुज़रती हुई अन्ततः ब्रज, अवधी तथा खड़ी बोली के विकसित रूप 'हिन्दी' में परिवर्तित हो गई।

हिन्दी शब्द का चयन—'हिन्दी' शब्द फ़ारसी तथा ईरानी भाषा से लिया गया है। भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार भारत में जिन शब्दों के प्रारम्भ और बीच में 'स' आता है, फ़ारसी में उन्हीं शब्दों में वहां पर 'ह' आता है। इस प्रकार भारतीय 'सिन्धु' शब्द फ़ारसी भाषा में 'हिन्दू' हो गया और 'हिन्दी' भी हुआ। 'हिन्द' के निवासियों की भाषा को 'हिन्दी' कहा जाने लगा। अतः 'हिन्दी' शब्द का उद्भव ईरान अथवा फ़ारस में हुआ।

ग्रीक भाषा में हिन्दी शब्द का पर्यायवाची 'इन्दिके' और 'इन्दिका' मिलता है तथा वहाँ निवास करने वालों के लिए 'इन्दोई' शब्द मिलता है जो लैटिन में जाकर 'इण्डिया' तथा 'इन्डियन' बन गए। इस प्रकार 'हिन्दी' शब्द 'सिन्धी' का फ़ारसी रूपान्तर है। हिन्दी शब्द का प्रयोग यहाँ के निवासियों के लिए किया जाता है। भारत में रहने वाले मुसलमानों के लिए भी 'हिन्दी' शब्द का ही प्रयोग किया जाता है। प्रसिद्ध शायर इकबाल की पंक्ति—हिन्दी हैं हम वतन है, हिन्दोस्ताँ हमारा—में भी 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग यहां के निवासियों के लिए किया गया है भाषा के लिए नहीं। पहले इस शब्द का प्रयोग सप्त सिन्धु अर्थात् भारतीय आर्यों के प्राचीन देश के लिए किया जाता था। मुसलमानों ने दिल्ली पर अपना राज्य स्थापित करने के पश्चात् जिस खड़ी बोली का प्रयोग किया उसी को 'हिन्दवी' कहा करते थे। यही नाम परिवर्तित होते-होते हिन्दी के नाम से प्रचलित हो गया। यद्यपि, ब्रज, अवधी आदि विभिन्न बोलियों ने इसके विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है परन्तु आज यह बोलियाँ अपने-अपने सीमित क्षेत्रों में वापिस चली गई हैं और 'खड़ी बोली' ही अपने आधुनिक विकसित रूप में 'हिन्दी' के नाम से समूचे विश्व में विख्यात है।

प्रश्नावली

1. हिन्दी भाषा का उद्भव किस प्रकार हुआ ? हिन्दी भाषा के वर्तमान स्वरूप लाने में कौन सी भाषाओं का योगदान रहा ?
2. हिन्दी के उद्भव तथा विकास की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।

□□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय – 2

प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य व महत्त्व

(OBJECTIVES AND IMPORTANCE OF TEACHING HINDI AT ELEMENTARY & SECONDARY LEVEL)

'शिक्षण' एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिस पर प्रत्येक देश की शासन प्रणाली, सामाजिक दर्शन तथा मूल्यों एवं संस्कृति का प्रभाव पड़ता है। जिस देश में जैसी शासन प्रणाली तथा दार्शनिक विचारधारा होती है वहां की शिक्षण प्रक्रिया पर उस देश की प्रणाली तथा दार्शनिक पक्ष का वैसा ही प्रभाव पड़ता है और तदनुसार ही शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण भी किया जाता है।

'उद्देश्य' यह शब्द 'उद्' उपसर्ग 'दिश्' धातु तथा 'यत्' प्रत्यय से बना हुआ है, जिसका अर्थ है किसी कार्य को दिशा या निर्देश देना। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण कार्य करते समय हमारी जो मूल धारणाएँ, इच्छाएँ, प्रवृत्तियाँ व प्रेरक तत्त्व होते हैं, वही शैक्षिक उद्देश्य हैं, क्योंकि इन्हीं के माध्यम से शैक्षिक कार्यों की प्रगति होती है। हिन्दी विषय को पढ़ाने से पूर्व निर्धारित किए जाने वाले उद्देश्य हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य कहलाते हैं। इन्हीं के माध्यम से शैक्षिक कार्यों का आयोजन किया जाता है तथा उन्हें दिशा मिलती है।

शिक्षण उद्देश्य का अर्थ **एन.सी.ई.आर.टी.** द्वारा प्रकाशित मूल्यांकन तथा परीक्षा अंक में इस प्रकार वर्णित है–'**उद्देश्य वह बिन्दु अथवा अभीष्ट है, जिसकी दिशा में कार्य किया जाता है अथवा उद्देश्य वह व्यवस्थित परिवर्तन है जिसे क्रिया द्वारा प्राप्त किया जाता है अथवा जिसके लिए हम क्रिया करते हैं।**' इस परिभाषा के अनुसार शिक्षण उद्देश्य के अन्दर तीन मुख्य बिन्दु हैं–(1) दिशा (2) व्यवस्थित परिवर्तन (3) क्रिया।

उद्देश्यविहीन क्रियाएँ अव्यवस्थित हो जाती हैं। परिणामतः शिक्षक अपने छात्रों में अपेक्षित परिवर्तन नहीं कर पाते। इसलिए उद्देश्यों का निर्धारण विवेक से किया जाना अपेक्षित है।

हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण करते समय ध्यान रखने योग्य बिन्दु:

1. विद्यालय की प्रकृति–हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण करने से पूर्व यह चिन्तन करना आवश्यक है, कि हम किस प्रकार के विद्यालय में हिन्दी पढ़ाने जा रहे हैं। क्या वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परम्परागत पद्धति पर आधारित विद्यालय में किया जाएगा, जहाँ प्राय: पहली कक्षा से ही छात्र पढ़ना प्रारम्भ करते हैं अथवा आधुनिक पद्धति पर आधारित विद्यालय में किया जायेगा, जहाँ प्राय: कक्षा छ: से हिन्दी का पठन-पान प्रारम्भ होता है।

2. कक्षा का स्तर—विद्यालय की प्रकृति के अनुसार कक्षा के स्तर का निर्धारण करना होगा। जिन विद्यालयों में प्राथमिक कक्षाओं से ही हिन्दी का पठन-पाठन प्रारम्भ हो जाता है। प्रारम्भिक स्तर 1-5 तक, माध्यमिक स्तर 6-12 तक तथा उसके पश्चात् उच्च स्तर आता है। जिन विद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन कक्षा 6 से आरम्भ होता है, वहाँ प्रारम्भिक स्तर कक्षा 6 से 8 तक, माध्यमिक स्तर 9 से 12 तक तथा इसके बाद उच्च स्तर आता है और उच्च स्तर में विश्वविद्यालय की अन्तिम परीक्षा तक को लिया जा सकता है।

3. हिन्दी की विभिन्न विधाओं के अनुसार—हिन्दी साहित्य की किस विधा को आज हम पढ़ाने जा रहे हैं ? इस विषय को भी उद्देश्य निर्धारण करते समय अवश्य ध्यान में रखना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक विषय की अपनी विशेषताएँ व प्रकृति होती है और तद्नुसार उसका शिक्षण किया जाता है, अत: गद्य, पद्य, कथा, व्याकरण, नाटक, रचना आदि के लिए शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण भी भिन्न-भिन्न होता है।

इस पाठ में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों का वर्णन ब्लूम के द्वारा दी गई टैक्सोनोमी के आधार पर तथा विभिन्न स्तरों के आधार पर किया जा रहा है। ब्लूम व उनके सहयोगियों ने शैक्षिक लक्ष्यों के निर्धारण की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। ब्लूम ने स्पष्ट किया कि मूल्यांकन की दृष्टि से निष्पत्ति परीक्षाओं के निर्माण में विषयवस्तु के स्थान पर उसके विभिन्न शैक्षिक उद्देश्यों का मापन एवं मूल्यांकन होना चाहिए। उन्होंने निष्पत्ति परीक्षा को विषय वस्तु केन्द्रित करने के बजाय उद्देश्य केन्द्रित बनाने पर बल दिया तथा प्रत्येक प्रश्न को किसी न किसी शैक्षिक उद्देश्य के मूल्यांकन के लिए निर्माण करने पर बल दिया। इसके लिए उन्होंने शिक्षण उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखने का प्रयास किया।

ब्लूम के अनुसार हिन्दी शिक्षण उद्देश्य (Main Teaching)

ब्लूम ने सम्पूर्ण शैक्षिक उद्देश्यों को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया—

1. ज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Domain)

2. भावात्मक पक्ष (Affective Domain)

3. मनोगत्यात्मक पक्ष (Psychomotor Domain)

ज्ञानात्मक पक्ष
(COGNITIVE DOMAIN)

ज्ञानात्मक पक्ष में प्रत्यास्मरण अथवा ज्ञान के पहचानने और मानसिक योग्यताओं एवं कौशलों के विकास से संबन्धित उद्देश्य आते हैं।

ब्लूम के द्वारा जिस ज्ञान के बोध होता है वह है—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(1) विशिष्ट तथ्यों का ज्ञान,

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(2) विशिष्ट तथ्यों को प्राप्त करने के ढंगों का ज्ञान,

(3) मान्यताओं एवं परम्पराओं का ज्ञान,

(4) प्रक्रियाओं एवं घटनाओं की गतिविधियों का ज्ञान,

(5) विधियों एवं प्रविधियों का ज्ञान,

(6) सिद्धान्तों एवं सामान्यीकरण का ज्ञान,

(7) किसी विषय के अन्तर्गत पाये जाने वाले वर्गीकरण तथा श्रेणियों का ज्ञान।

ब्लूम ने अपनी पुस्तक 'ज्ञानात्मक शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण' में बताया है कि ज्ञानात्मक उद्देश्य द्वारा ज्ञानात्मक पक्ष को विकसित करने के लिए 6 वर्गों को पार करना पड़ता है—

(1) ज्ञान (knowledge)

(2) बोध (understanding)

(3) प्रयोग (practical)

(4) विश्लेषण (analysis)

(5) संश्लेषण (synthesis)

(6) मूल्यांकन (evaluation)

1. ज्ञान—ज्ञान वर्ग में पाठ्य वस्तु की दृष्टि से निम्नलिखित तीन स्तर होते है।

(क) विशिष्ट बातों का ज्ञान

(ख) विशिष्ट तथ्यों से संबंधित साधनों व रीतियों का ज्ञान

(ग) सामान्यीकरण का ज्ञान

(क) विशिष्ट बातों का ज्ञान—इसका आशय विभिन्न पदों, तथ्यों एवं सूचनाओं के प्रत्यास्मरण से है। विशिष्ट ज्ञान को भी दो भागों में विभाजित किया जाता है—(अ) पदों का ज्ञान (ब) विशिष्ट तथ्यों का ज्ञान। हिन्दी शिक्षण में पदों के ज्ञान में वर्तनी, शब्द भेद, सन्धि, समास, प्रत्यय, उपसर्ग आदि आते हैं व विशिष्ट तथ्यों के ज्ञान में उच्चारण का विशिष्ट महत्त्व हैं, जिसमें स्वर, व्यंजन तथा विसर्गों का उच्चारण, अभ्यास स्थान प्रयत्न के अनुसार करवाया जाता है।

(ख) विशिष्ट तथ्यों से सम्बन्धित साधनों व रीतियों का ज्ञान—इसके अन्तर्गत ज्ञान के विभिन्न साधनों के संबंध में व्यवस्थित अध्ययन करके उचित आलोचना कर निर्णय लिए जाते हैं। ब्लूम ने इसे पांच भागों में विभाजित किया है, जिस का हिन्दी शिक्षण में प्रयोग इस प्रकार किया जाता है—

(अ) परम्पराओं का ज्ञान—पौराणिक गाथायें व सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा।

(ब) क्रम तथा प्रवृत्तियों का ज्ञान—सदाचार की कहानियों व नाटकों द्वारा।

(स) मानदण्ड का ज्ञान—तथ्य एवं घटनाओं की जानकारी द्वारा।

(द) विधियों का ज्ञान—उच्चारण स्थान के अभ्यास तथा कंठस्थीकरण की विधि द्वारा।

(य) श्रेणियों व वर्गीकरण का ज्ञान—यथा भाववाचक संज्ञा, दीर्घ सन्धि तथा इसी प्रकार के विभिन्न व्याकरण सम्बन्धित सम्प्रत्ययों का वर्गीकरण करके।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ग) सामान्यीकरण का ज्ञान—इसका सम्बन्ध नियमों तथा सिद्धान्तों से होता है। ब्लूम ने सामान्यीकरण के ज्ञान के दो रूप बताये हैं—

(अ) नियमों तथा सामान्यीकरण का ज्ञान

(ब) सिद्धान्तों तथा रचनाओं का ज्ञान

यह उद्देश्य हिन्दी शिक्षण में व्याकरण के विविध पाठों सन्धि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय आदि के नियमों का निर्धारण करवाने व आगमन-निगमन विधि द्वारा सामान्यीकरण का ज्ञान करवाने में प्रयुक्त किया जाता है।

2. बोध—बोध का अर्थ है, नवीन विषय वस्तु का छात्रों की समझ में आना। इसके अन्तर्गत ज्ञान निहित होता है। जिस पाठ्य वस्तु का छात्रों को बोध हो जाता है या जिस विषय वस्तु के विषय में उनकी पुनः स्मरण (प्रत्यास्मरण) तथा पहचान की क्षमताएं विकसित हो जाती हैं उसके सम्बन्ध में वे व्याख्या तथा उल्लेख आदि अनेक क्रियायें बोध उद्देश्य के आधार पर करते हैं, इसमें तीन बिन्दु हैं—

(अ) अनुवाद—हिन्दी शिक्षण में अनुवाद के दो रूप मिलते हैं—

(क) हिन्दी से संस्कृत या अन्य भाषा में अनुवाद करने की क्षमता

(ख) अन्य भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद करने की क्षमता।

इसके लिए कठिन शब्दों का ज्ञान, नियम, शब्द भेद पहचाना, वर्तनी को पहचानना आदि आवश्यक हैं।

(ब) व्याख्या—कठिन-कठिन शब्दों, वाक्यों या सूत्रों की उदाहरण सहित व्याख्या करना तथा स्पष्टीकरण करना।

(स) उल्लेख—स्वयं कोई मौलिक रचना करना अथवा पठित विषयवस्तु का वर्णन करना यथा-निबन्ध लेखन, सार संक्षेपण, कहानी लेखन, आत्म कथा लेखन, पत्र लेखन आदि।

3. प्रयोग—प्रयोग के तीन स्तर होते हैं—

(1) नियमों तथा सिद्धान्तों का सामान्यीकरण।

(2) छात्रों की कमज़ोरियों का निदान करना।

(3) छात्रों द्वारा पाठ्य वस्तु अथवा शब्दों तथा नियमों को अपने नियमों को अपने कथनों में प्रयोग करना।

उपर्युक्त तीनों बिन्दुओं का प्रयोग हिन्दी भाषा की विभिन्न विधाओं में किया जाता है। इसकी पूर्ति पाठयोजना में अभ्यास के सोपान में की जाती है।

4. विश्लेषण—उपर्युक्त तीनों उद्देश्यों के प्राप्त हो जाने पर विश्लेषण के अन्तर्गत पाठ्य वस्तु को तत्त्वों में विभाजित करके उनमें परस्पर संबंध स्थापित किया जाता है जिससे आदान-प्रदान स्पष्ट रूप से हो सके। इसके भी तीन स्तर होते हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(क) तत्त्वों का विश्लेषण करना।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) संबंधों का विश्लेषण करना।

(ग) उनका व्यवस्थित सिद्धान्तों के रूप में विश्लेषण करना।

नियम से उदाहरण की ओर बढ़ते हुए एक-एक तत्त्व का अलग-अलग विश्लेषण करना, इसे व्याकरण व पद्यों की व्याख्या करते हुए अपनाया जाता है।

5. संश्लेषण—इसको क्रियात्मक उद्देश्य की संज्ञा दी जाती है। इसका कारण यह है कि इसके अन्तर्गत विश्लेषण द्वारा किये गये तत्त्वों को एकत्रित करके पूर्ण रूप प्रदान करते हुए एक नया ढाँचा तैयार किया जाता है जिससे छात्रों की सृजनात्मक क्षमताओं का विकास होता है। इसके तीन स्तर हैं—

(क) तत्त्वों के संश्लेषण से अनोखा संप्रेषण करना।

(ख) तत्त्वों के संश्लेषण से नयी योजना प्रस्तावित करना।

(ग) तत्वों के अभूर्व संबंधों को खोजना।

विभिन्न उदाहरणों से नियम की ओर आते हुए समस्त विश्लेपित अंशों को जोड़कर किसी विशेष नियम की खोज करना। इस प्रकार बालकों में मौलिक क्षमता का विकास करना। हिन्दी भाषा में व्याकरण शिक्षण के साथ-साथ रचना शिक्षण में यह उद्देश्य विशेष उपयोगी है।

6. मूल्यांकन—यह ज्ञानात्मक पक्ष का सर्वोच्च स्तर है। यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। इसके अन्तर्गत पाठ्य वस्तु के नियमों, सिद्धान्तों तथा तथ्यों के संबंध में आलोचनात्मक निर्णय लेकर परीक्षा अथवा अन्य प्रकार के मापदण्डों द्वारा यह मालूम किया जाता है कि:

(क) शिक्षण के निर्धारित उद्देश्य प्राप्त हुए अथवा नहीं। यदि हुए तो किस सीमा तक प्राप्त हुए ?

(ख) विद्यार्थियों में कक्षा के अन्दर जो सीखने के अनुभव उत्पन्न किये गये थे वे प्रभावोत्पादक रहे अथवा नहीं।

(ग) शिक्षण के उद्देश्यों को कितने अच्छे ढंग से प्राप्त किया गया है।

इसके लिए बालकों को गृह कार्य, कक्षा कार्य, मौखिक कार्य, लिखित कार्य आदि बीच-बीच में करवाया जाता है।

भावात्मक पक्ष
(AFFECTIVE DOMAIN)

इस क्षेत्र में अभिवृत्ति मूल्यों, रुचि तथा प्रशंसा से सम्बन्धित उद्देश्य सम्मिलित हैं।

शिक्षक का कर्त्तव्य है, कि वह भावात्मक उद्देश्य द्वारा विद्यार्थियों के भावात्मक पक्ष अर्थात् रुचियों, संवेगों, मनोवृत्तियों तथा स्थाई भावों का अधिक से अधिक विकास करे।

इसे निम्नलिखित भागों में बांटा जा सकता है।

(1) आग्रहण करना (Receiving)

(2) अनुक्रिया (Response)

(3) अनुमूलन (Valuing)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(4) व्यवस्था (Organisation)

(5) स्वभावीकरण (Characterization)

1. आग्रहण करना—भावात्मक वर्गीकरण का यह प्रारम्भिक स्तर विभिन्न उद्दीपनों की उपस्थिति के प्रति छात्र की संवेदनशीलता तथा उस उद्दीपन को आग्रहण करने की चाह से संबन्धित होता है। इस उद्देश्य को पुनः जागरूकता आग्रहण की इच्छा तथा नियन्त्रित आकर्षण में विभाजित किया जा सकता है।

उपर्युक्त तीन स्तरों का प्रोयग हिन्दी शिक्षण में क्रमशः इस प्रकार किया जा सकता है।

(1) आग्रहण की जागरूकता—सुनकर कविता, गद्य कहानी सुनाकर मुख्य भाव आदि का आग्रहण करवाना।

(2) पढ़कर—व्याकरण व अन्य विधाओं में पाये जटिल सम्प्रत्ययों का स्पष्टीकरण करके।

(3) आग्रहण की इच्छा—शुद्ध वाचन, उच्चारण, पठन की योग्यता या क्षमतोत्पादन करना।

(4) नियन्त्रित आकर्षण—(क) मौन वाचन करने की योग्यता उत्पन्न करना

(ख) मुख्य भावों को स्वयं समझने की योग्यता उत्पन्न करना।

2. प्रतिक्रिया—भावात्मक वर्गीकरण के द्वितीय स्तर का सम्बन्ध उन अनुक्रियायों से होता है जो किसी उद्दीपन को आग्रहण करने के कारण होती है। इसको हिन्दी शिक्षण में अभिव्यक्ति के उद्देश्य के नाम से प्रतिक्रिया की जाती है। इसके अन्तर्गत छात्र प्रेरित होते हुए नवीन ज्ञान पर सक्रिय रूप से प्रतिक्रिया करता है। इसके तीन भाग है।

(क) प्रतिक्रिया के प्रति सहमति—बोलकर या लिखकर

(ख) प्रतिक्रिया की इच्छा—वार्तालाप, भाषण, कविता पाठ, प्रार्थना पत्र, कथा तथा निबन्ध लेखन।

(ग) अनुक्रिया से संतोष—उचित हाव-भाव के साथ बोलने की क्षमता तथा विचारों में क्रमबद्धता आदि।

3. अनुमूल्यन (Valuing)—अनुमूल्यन का अर्थ उन मूल्यों से है जिनमें विद्यार्थियों की आस्था होती है तथा जिनको वे अपने जीवन में विशेष महत्त्व देते हैं। भावात्मक वर्गीकरण का यह तृतीय स्तर विभिन्न वस्तुओं, कार्यों या व्यवहारों के उपयोग के मूल्य को स्वीकार करने तथा उसके प्रति एक निश्चित धारणा बनाने से संबंधित है। इसमें विद्यार्थी परिस्थिति के बदलने पर भी अपने व्यवहार में स्थिर भाव का प्रदर्शन करते हैं। इस सोपान को हिन्दी शिक्षण मे अभिवृत्ति के उद्देश्य के रूप में ग्रहण किया जाता है। इसके तीन स्तर होते हैं—

(क) मूल्य की स्वीकृति—मूल्यों के प्रति बच्चों में सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।

(ख) मूल्य वरीयता—दो तीन विषयों या विचारधाराओं में से प्रधान कौन सा है ? चयन करने की योग्यता विकसित करना।

(ग) वचन बद्धता अथवा रुझान—एकनिष्ठता या किसी दृष्टिकोण के प्रति स्पष्ट रुझान का उद्देश्य [illegible] है। जैसे जैसे [illegible] मूल्यों के साथ एकनिष्ठता या वचनबद्धता करते हैं, उनकी मूल्यों के प्रति एक धारणा बनने लगती है, वैसे-वैसे उनके सामने ऐसी परिस्थितियाँ भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आती हैं, जिनमें एक से अधिक मूल्य उपयुक्त होते हैं। ऐसी स्थिति में छात्र यह विचार करते हैं, कि वे कौन से मूल्यों को धारण करें। इसमें अध्यापक मूल्य की महत्ता को ध्यान में रखते हुए छात्रों को उचित निर्देशन प्रदान करने में सहायता देते हैं।

4. संगठन या व्यवस्था—मूल्यों का आत्मीयकरण करने के उपरान्त छात्रों के सम्मुख ऐसी परिस्थितियां आती हैं जिनमें एक से अधिक मूल्य होते हैं। ऐसी स्थिति में छात्रों को उन मूल्यों को एक क्रम में व्यवस्थित करना पड़ता है। जब मूल्यों का कोई व्यवस्थित क्रम बन जाता है तब यह आवश्यक हो जाता है कि इन मूल्यों को आत्मसात किया जाये तथा मूल्यों के पारस्परिक सम्बन्धों को स्थापित किया जाए। इसी लिए भावात्मक के व्यवस्थापन उद्देश्य को मूल्य के आत्मीयकरण तथा मूल्य प्रणाली को व्यवस्थापन में बाँटा जा सकता है।

5. स्वभावीकरण—भावात्मक उद्देश्यों के वर्गीकरण के सर्वोच्च स्तर पर स्वभाव निर्माण आता है। यह स्पष्ट है कि व्यक्ति स्वीकार किये मूल्यों के अनुरूप कार्य करता है। इन मूल्यों का व्यक्ति व्यक्ति के ऊपर प्रभाव इतना स्पष्ट होता है कि व्यक्ति के स्वभाव को इन मूल्यों से जोड़ा जा सकता है। अतः इस स्तर पर मूल्य चरित्र के स्थायी अंग बन जाते हैं।

3. मनोगत्यात्मक पक्ष
(PSYCHOMOTOR DOMAIN)

मनोगत्यात्मक क्षेत्र का सम्बन्ध मांसपेशियों के विकास तथा प्रयोग एवं शारीरिक क्रियाओं के समन्वय की योग्यता से है। शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, लेखन कार्य, नाट्यकला आदि में माँसपेशीय व आंगिक गतियों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। इसलिए इनकी शिक्षा में मनोगत्यात्मक पक्ष के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। मनोगत्यात्मक क्षेत्र के उद्देश्यों को ब्लूम ने 6 वर्गों में विभाजित किया है।

(1) उद्दीपन (Stimulus) (2) कार्य करना (Working)

(3) नियन्त्रण (Control) (4) समायोजन (Adjustment)

(5) स्वाभावीकरण (Characterisation)

सिम्पसन के द्वारा दिए वर्गीकरण के अनुसार मनोगत्यात्मक उद्देश्यों को पाँच भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) प्रत्यक्षीकरण (Perception) (2) मनोस्थिति (Set)

(3) निर्देशित प्रतिक्रिया (Guided Response) (4) कार्य कौशल (Mechanism)

(5) जटिल व्यवहार (Complex Behaviour)

(1) प्रत्यक्षीकरण—किसी भी गामक क्रिया को करने का पहला पद इन्द्रियों की सहायता से वस्तुओं व गुणों तथा सम्बन्धों के प्रति जागरूक होने की प्रक्रिया है। गामक क्रियाओं के लिए वस्तुओं का प्रत्यक्षीकरण करना अत्यन्त आवश्यक है। ज्ञानेन्द्रियों द्वारा बाह्य वस्तुओं के सम्बन्ध में रुचि तथा प्रेरणा के आधार पर जागरूक होने वाली प्रक्रिया प्रत्यक्षीकरण है। यह एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें कार्यों की शृंखला सम्मिलित होती है तथा जिसे वास्तविक अनुभव कहा जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(1) इन्द्रियों के द्वारा वस्तुओं के प्रति जागरूकता या वर्णनात्मक।

(2) इन्द्रियों के द्वारा गुणों के प्रति जागरूकता या संक्रमण काल की स्थिति।

(3) इन्द्रियों के द्वारा सम्बन्धों के प्रति जागरूकता। हिन्दी शिक्षण में शुद्ध उच्चारण, शुद्ध लेखन में इसका प्रयोग किया जाता है।

2. मनोस्थिति—मनोस्थिति किसी विशेष प्रकार के कार्य अथवा अनुभव को करने का पूर्व समायोजन है। मनोस्थिति के तीन विभिन्न पक्ष मानसिक, भौतिक तथा संवेगात्मक बताए गए है। सीखी गई विषय वस्तु को सिद्धान्तों, सूत्रों, नियमों में बांधने की प्रक्रिया में इसका प्रयोग किया जाता है।

3. निर्देशित प्रतिक्रिया—किसी गामक कौशल को विकसित करने का यह पूर्व पद है। इसमें उन योग्यताओं पर ध्यान दिया जाता है जो किसी जटिल कौशल को करने के लिए आवश्यकता होती हैं। निर्देशित प्रतिक्रिया एक ऐसा बाह्य व्यावहारिक कार्य है जिसे कोई व्यक्ति अन्य व्यक्ति के निर्देशन में करता है। यह क्रियात्मक कौशल के विकास में प्रथम चरण है। निर्देशित प्रतिक्रिया में कौशल सम्बन्धित योग्यताओं के विकास पर बल दिया जाता है। हिन्दी शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में चार कौशलों का विकास करना है। ये चार कौशल हैं—श्रवण, वाचन, पठन तथा लेखन। मनोगत्यात्मक पक्ष को ध्यान में रखते हुए हिन्दी शिक्षण में इन चार कौशलों का विकास प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा किया जाता है।

(4) कार्य कौशल—इस स्तर पर विद्यार्थी किसी कार्य को करने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास तथा कौशल प्राप्त करने का प्रयास करता है। हिन्दी शिक्षण करते समय एतदर्थ बीच-बीच में प्रश्न पूछे जाते हैं। कक्षा कार्य तथा गृह कार्य दिया जाता है।

(5) जटिल बाह्य व्यवहार/जटिल प्रत्यक्ष अनुक्रिया—मनोगत्यात्मक पक्ष के सर्वश्रेष्ठ स्तर को जटिल प्रत्यक्ष अनुक्रिया कहते हैं। इस स्तर पर विद्यार्थी ऐसे गामक कार्य कर सकता है जिन्हें अत्यधिक जटिल माना जाता है। इस स्तर पर आकर विद्यार्थी में जटिल से जटिल कार्य को कम से कम शक्ति तथा समय में पूरा करने की योग्यता उत्पन्न की जाती है। हिन्दी शिक्षण में इस के अन्तर्गत भाषण व लेखन का कार्य करवाया जाता है। इस वर्ग के दो भेद हैं—

(1) जटिल क्रियाओं को प्रभावशाली ढंग से करना

(2) जटिल क्रियाओं को सुचारू रूप से करना

(1) ज्ञानात्मक क्षेत्र (Cognitive Domain)

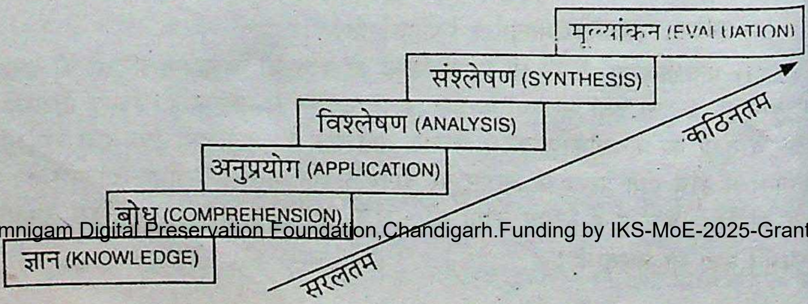

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(2) भावात्मक क्षेत्र (Affective Domain)

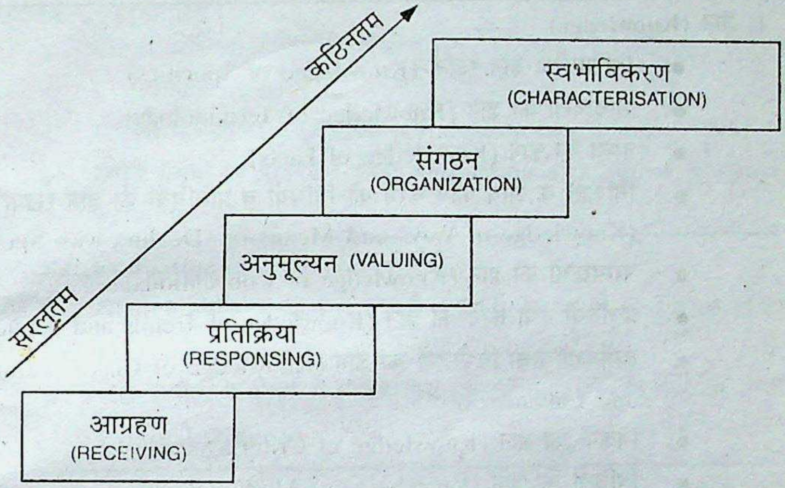

(3) मनोचालक/मनोगत्यात्मक क्षेत्र (Psycho-motor Domain)

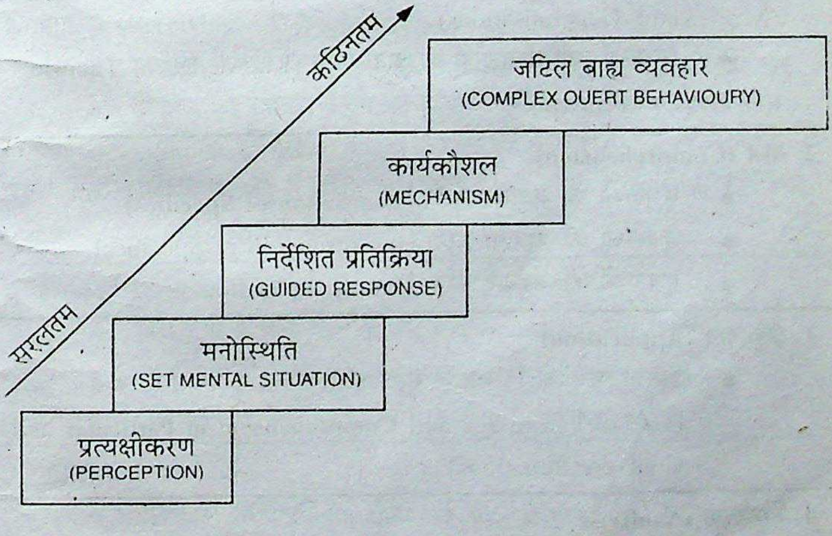

हिन्दी शिक्षण के शैक्षिक उद्देश्यों का क्रमिक वर्गीकरण ब्लूम के अनुसार (Hierarchical Classification of Hindi Teaching According to Bloom's)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज्ञानात्मक क्षेत्र के उद्देश्यों का वर्गीकरण

(Taxonomy of Educational Objectives in Cognitive Domain)

---

1. ज्ञान (Knowledge)

- विशिष्ट का ज्ञान रखना (Knowledge of Specifics)
- शब्दावली का ज्ञान (Knowledge of Terminology)
- तथ्यों का ज्ञान (Knowledge of Facts)
- विशिष्टों के साथ काम करने की विधियों व प्रविधियों का ज्ञान रखना (Knowledge of Ways and Means of Dealing with Specifics)
- परम्पराओं का ज्ञान (Knowledge of Conventions)
- प्रवृत्तियों तथा क्रमों का ज्ञान (Knowledge of Trends and Sequences)
- वर्गीकरण तथा विभोज़नों का ज्ञान (Knowledge of Classification and Categories)
- विकपों का ज्ञान (Knowledge of Criteria)
- विधियों का ज्ञान (Knowledge of Methodology)
- किसी क्षेत्र के सम्प्रत्ययों व सामान्यीकरणों का ज्ञान रखना (Knowledge of Universals and Abstractions in a field)
- नियमों तथा सामान्यीकरणों का ज्ञान रखना (Knowledge of Principle and Generalisations)
- सिद्धान्तों तथा संरचनाओं का ज्ञान रखना (Knowledge of Theorie and Structures.

---

2. बोध (Comprehension)

- सूचनाओं का अनुवाद करना (Translation of Specifics)
- सूचनाओं की व्याख्या करना (Interpretation of Specifics)
- सूचनाओं का अनुवाद करना (Extrapolution)

---

3. अनुप्रयोग (Application)

- ज्ञान व बोध को विशिष्ट व स्थूल परिस्थितियों में प्रयोग में लाना (Use of knowledge and Comprehension in Particular and Concrete Situations)

---

4. विश्लेषण (Analysis)

- तत्त्वों का विश्लेषण करना (Analysis of Elements)
- सम्बन्धों का विश्लेषण करना (Analysis of Relationship)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- संयोजक सिद्धान्तों का विश्लेपण करना (Analysis of Organizational Principles)

---

5. संश्लेपण (Synthesis)

- मौलिक अभिव्यक्ति का प्रस्तुतीकरण (Production of Unique Communication)
- मौलिक योजना को तैयार करना (Production of a Unique Plan)
- अमूर्त संबंधों का प्रतिपादन करना (Periuation of a Set of Abstract Relations)

---

6. मूल्यांकन (Evaluation)

- आन्तरिक प्रमाण में संदर्भ में निर्णय लेना (Judgement in Terms of Internal Evidence)
- बाह्य कसौटी के संदर्भ में निर्णय लेना (Judgement in Terms of External Criteria)

---

2. भावात्मक क्षेत्र के उद्देश्यों का वर्गीकरण

(Taxonomy of Educational Objectives in Affective Domain)

---

1. आग्रहण (Receiving)

- उद्दीपन के प्रति जागरूकता (Awareness about a Stimulus)
- उद्दीपन को स्वीकार कराने की इच्छा (Willingness to Receive a Stimulus)
- उद्दीपन के प्रति नियन्त्रित आकर्पण (Controlled Attention Toward a Stimulus)

---

2. प्रतिक्रिया (Responding)

- प्रतिक्रिया के प्रति सहमति (Acquiescence in Responnding)
- प्रतिक्रिया की इच्छा (Willingness to Respond)
- प्रतिक्रिया से सन्तोप (Satisfaction in Response)

---

3. अनुमूल्यन (Valuing)

- मूल्य की स्वीकृति (Acceptance of a Value)
- मूल्य की वरीयता देंना (Preference for a Value)
- मूल्य वचनबद्धता (Values Commitment)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

4. संगठन (Organization)

- मूल्य आत्मीयकरण (Conceptualization of a Value)
- मूल्य प्रणाली का व्यवस्थापन (Organization of Value System)

5. स्वभावीकरण (Characterization)

- सामान्यीकृत स्थिति (Generalized Set)
- चारित्रीकरण (Characterization)

3. मनोगत्यात्मक/मनोचालक क्षेत्र के उद्देश्यों का वर्गीकरण (Taxonomy of Educational Objectives in Psychomotor Domain)

1. प्रत्यक्षीकरण (Perception)

- इन्द्रियों के द्वारा वस्तुओं के प्रति जागरूकता (Awareness about the Objects)
- इन्द्रियों के द्वारा गुणों के प्रति जागरूकता (Awareness about the Qualities)
- इन्द्रियों के द्वारा सम्बन्धों के प्रति जागरूकता (Awareness about the Relations)

2. मनोस्थिति (Set)

- कार्य के लिए मानसिक मनोस्थिति का होना (Preparatory Mental Adjustment)
- कार्य के लिए शारीरिक मनोस्थिति का होना (Preparatory Physical Adjustment)
- कार्य के लिए संवेगात्मक मनोस्थिति का होना (Preparatory Emotional Adjustment)

3. निर्देशित प्रतिक्रिया (Guided Response)

- किसी व्यक्ति के निर्देशन में विभिन्न बाह्य व्यवहार करना (Overt Behavioural Act or Under the Guidance of Another Individual)

4. कार्य कौशल (Mechanism)

- किसी कार्य को करने के लिए कौशल प्राप्त करना (Achievement of Certain Degree of Skills in Performance of an Act)
- किसी कार्य को करने के लिए आत्म विश्वास का होना (Achievement of Certain Confidence in the Performance of an Act)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. जटिल बाह्य व्यवहार (Complex Overt Behaviour)

- जटिल क्रियाओं को प्रभावशाली ढंग से करना (Carrying out Complex Motor Act Efficiently)
- जटिल क्रियाओं को सुचारू रूप से करना (Carrying out Complex Motor Act Smoothly)

व्यवहार परिवर्तन के रूप में उद्देश्य

अधिगम क्रियाओं के फलस्वरूप छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन होता है तथा इन परिवर्तनों के आधार पर छात्रों का मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन में स्पष्टता व यथार्थता के लिए यह तर्क संगत है कि शिक्षण उद्देश्यों को व्यवहार परिवर्तन के रूप में स्पष्ट किया जाये जिससे उनकी प्राप्ति की सीमा को असंदिग्ध रूप से जाना जा सके। जब शिक्षण उद्देश्यों को व्यवहार परिवर्तन के रूप में लिखा जाता है तो उन्हें व्यावहारिक उद्देश्य अथवा विशिष्ट उद्देश्य के नाम से पुकारा जाता है। ये उद्देश्य व्यावहारिक क्रियाओं की सहायता से लिखे जाते हैं। ज्ञानात्मक क्षेत्र के लिए व्यावहारिक क्रियायें।

उद्देश्य (Objectives)	कार्य सूचक क्रियाएँ (Action Verbs)
1. ज्ञान (Knowledge)	परिभाषा देना, चयन करना, कथन करना, मापन करना, मिलान करना, प्रत्यास्मरण करना, सूची बनाना, वर्णन करना, रूपरेखा बनाना, लिखना
2. बोध (Comprehension)	व्याख्या करना, उदाहरण देना, संकेत करना, प्रस्तुत करना, प्रतिपादन करना, वर्गीकरण करना, निर्णय लेना, चयन करना परिवर्तित करना
3. प्रयोग (Application)	पूर्व कथन देना, जाँच करना, गणना करना, रचना करना, प्रयोग करना, ज्ञात करना, प्रदर्शन करना, उल्लेख करना, स्पष्ट करना।
4. विश्लेषण (Analysis)	विश्लेषण करना, विभाजन करना, निष्कार्ष निकालना, तुलना करना, भेद करना, आलोचना करना, अलग करना, पुष्टि करना।
5. संश्लेषण (Synthesis)	तर्क करना, चयन करना, वाद-विवाद करना, निष्कर्ष निकालना, व्यवस्थित करना, पूर्व कथन करना, सामान्यीकरण करना, संक्षिप्त करना।
6. मूल्यांकन (Evaluation)	निर्णय लेना, पहचानना, मूल्यांकन करना, दूर करना, अलोचना करना, बचाव करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भावात्मक क्षेत्र के उद्देश्यों के लिए व्यावहारिक क्रियायें

(Action Verbs for Different Objectives in Affective Domain)

उद्देश्य (Objectives)	कार्य सूचक क्रियाएँ (Action Verbs)
1. आग्रहण करना (Receiving)	पूछना, चयन करना, वर्णन करना, प्रयोग करना, स्वीकार करना, प्रत्यक्षीकरण, पसन्द करना, ग्रहण करना
2. प्रतिक्रिया करना (Responding)	वाद-विवाद करना, चयन करना, सहायता करना, आलेखन करना, उत्तर देना, लिखना, पढ़ना
3. अनुमूल्यन (Valuing)	पूर्ण करना
4. संगठन (Organization)	व्यवस्था करना, चयन करना सम्बन्ध स्थापित करना बनाना, तुलना करना, निश्चित करना, निर्णय करना, सहसम्बन्ध स्थापित करना
5. स्वभाविकरण (Characterization)	अन्तर करना, दुहराना, प्रभाव डालना, पहचानना, बदलना, कार्य करना, सुधार करना, विकसित करना, सुनना

हिन्दी के उद्देश्यों का लेखन दो प्रकार से होता है

(1) उद्देश्यों के साथ अपक्षित व्यवहारगत परिवर्तनों को लिखना

(2) उद्देश्यों को स्तरानुसार (प्राथमिक या माध्यमिक) सीधे-सीधे लिखना।

(1) उद्देश्यों का व्यवहारगत परिवर्तनों के रूप में लिखना

उद्देश्य	अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
1. ज्ञानात्मक भाषा तत्वों ज्ञान कराना उच्चारण स्वर, व्यंजन, विसर्ग, अनुवाद, स्थान प्रयत्न के अनुसार स्पष्ट उच्चारण कराना।	1. छात्र उच्चारण की दृष्टि से वर्णों के स्वरूप को पहचान सकेंगे।
(1) वर्तनी के शुद्ध लेखन का ज्ञान कराना	2. छात्र इसका प्रत्यास्मरण कर सकेंगे
(2) कठिन शब्दों की व्युत्पत्ति से परिचित कराना।	3. छात्र अशुद्ध रूप तथा त्रुटियों में अन्तर कर सकेंगे।
	4. छात्र शुद्ध रूप तथा त्रुटियों में अन्तर कर सकेंगे।
	5. प्रकृति प्रत्यय का विश्लेपम कर सकेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) विषय वस्तु का ज्ञान कराना। 1. सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों का ज्ञान कराना (तथ्य एवं घटनाओं द्वारा,.पौराणिक गाथाओ व विभिन्न उदाहरणों द्वारा।	1. छात्र उन मूल्यों को पहचान सकेंगे। 2. छात्र द्वारा अपने व्यावहारिक जीवन में लाने का प्रयत्न करेंगें। 3. छात्र इनकी तुलना कर सकेंगे।
2. अर्थ ग्रहणात्मक (अरबोधात्मक)	
(अ) सुनकर अर्थ ग्रहण कराना (1) आदर्श सस्वर वाचन, वार्तालाप, वाद विवाद, भाषण, निर्देश व आदेश द्वारा (2) ध्वनि, अभिलेख, आकाशवाणी व दूरदर्शन पर हिन्दी कार्यक्रमों को सुनाकर	1. वह धैर्यपूर्वक सुनेगें 2. सुनकर प्रस्तुत की गई विषय वस्तु का अर्थ-ग्रहण कर सकेंगे। 3. वह केन्द्रीय भावों को ग्रहण कर सकेंगें। 4. शब्द भण्डार में वृद्धि होगी हिन्दी शब्दों का अर्थ समझ सकेंगे।
(ब) पढ़ कर अर्थ ग्रहण करना (1) अनुकरण वाचन व मौन वाचन द्वारा	1. छात्र कठिन शब्दों के अर्थ को समझ सकेंगी। 2. मुख्य भावों व विचारों को मसझ सकेंगें। 3. विषय वस्तु के मुख्य सार को ग्रहण कर सकेंगे।
3. अभिव्यक्त्यात्मक	
(अ) सरल हिन्दी में अभिव्यक्त करने की योग्यता उत्पन्न करना वार्तालाप, भाषण, प्रश्नोत्तर, चर्चा, वाद-विवाद द्वारा	1. छात्र सस्त व छोटे वाक्यों में हिन्दी बोल सकेंगे। 2. वह प्रसंगानुसार उचित गति में बोल सकेंगे। 3. वह विराम चिन्हों का सही प्रयोग कर बोल सकेंगें।
(ब) हिन्दी में लिखकर अभिव्यक्ति करने की योग्यता उत्पन्न करना। सार-लेखन, निबन्ध-लेखन; पत्र-लेखन कथा-लेखन द्वारा	1. छात्र शुद्ध वर्तनी में हिन्दी में अपनी लिखित अभिव्यक्ति कर सकेंगें। 2. व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध लिख सकेंगे। छात्र प्रसंगानुसार तथा विषयानुसार उपयुक्त भाषा का प्रयोग कर सकेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

	छात्र प्रसंगानुसार सूक्तियों व दोहों का प्रयोग कर सकेगे।
4. अभिवृत्यात्मक (अ) सकारात्मक अभिवृत्ति	1. छात्रों में आदर्शों व सद्प्रवृत्तियों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति उत्पन्न होगी। 2. सद्गुणों को अपने जीवन में लाने का प्रयत्न करेंगे।
(ब) नकारात्मक अभिवृत्ति विषयवस्तु की प्रकृति के अनुसार छात्रों में सकारात्मक व नकारात्मक अभिवृत्ति उत्पन्न करना।	
3. समाज विरोधी आचरण के प्रति छात्रों में नकारात्मक दृष्टि/अभिवृत्ति उत्पन्न होगी।	5. अभिरुच्यात्मक हिन्दी साहित्य के प्रति छात्रों में रुचि उत्पन्न करना। (विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों के आयोजन द्वारा) 1. छात्र पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य हिन्दी पुस्तकों भी पढ़ सकेंगे। 2. वह सूक्तियों मुहावरों, दोहों, चौपहियों को भी कंठस्थ कर सकेंगे। 3. विद्यालय-पत्रिका में अपने लेख दे सकेंगें। 4. विद्यालय के बाहर आयोजित होने वाली हिन्दी प्रतियोगिताओं में भाग ले सकेंगे।
6. मनोविनोदात्मक	1. छात्रों में हिन्दी समझने की योग्यता उत्पन्न होगी।
(अ) कहानियों, लघुकथाओं, कविताओं द्वारा छात्रों का मनोरंजन करना।	2. हिन्दी पठन के प्रति छात्र की रुचि विकसित करन॥
(2) अंताक्षरी शब्द खेलों द्वारा छात्रों में हिन्दी के प्रति अनुराग उत्पन्न करना।	3. छात्र अवकाश के क्षणों का सदुपयोग कर सकेंगे।

उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखते समय सावधानियां निःसन्देह शिक्षण उद्देश्यों को व्यवहार परिवर्तन के रूप में लिखना अत्यन्त उपयोगी हैं। परन्तु शिक्षा उद्देश्यों को व्यवहार परिवर्तन के रूप में लिखते समय अत्यन्त सावधानी रखनी चाहिए। कुछ सावधानियाँ निम्नलिखित हैं :

(1) उद्देश्य कथन में केवल एक कार्य क्रिया होनी चाहिए।

(2) उद्देश्य कथन किसी बाह्य क्रिया या मापे जा सकने वाले व्यवहार के रूप में होना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(3) उद्देश्य कथन में छात्रों के अपेक्षित व्यवहार का वर्णन करना चाहिए।
(4) उद्देश्य कथन में पाठ्य वस्तु का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।
(5) उद्देश्य कथन सार्थक होना चाहिए।
(6) प्रत्येक उद्देश्य में केवल एक ही व्यवहार का वर्णन होना चाहिए।
(7) उद्देश्य कथन छात्रों के समूह के लिए न लिखकर छात्र के लिए लिखने चाहिए।

विभिन्न स्तरों के आधार पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य

(क) प्राथमिक स्तर

(ELEMENTRY LEVEL)

1. हिन्दी के सरल गद्याशों व पद्याशों को शुद्ध एवं स्पष्ट रूप मे पढ़ने की क्षमता उत्पन्न करना।
2. पाठ्य सामग्री का भावानुसार शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास कराना।
3. हिन्दी के सरल काव्याशों का सुन्दर तथा आकर्षक ढंग से लयपूर्वक पाठ करने का अभ्यास करवाना। कुछ महत्त्वपूर्ण कविताओं को कण्ठस्थ करने की प्रेरणा देना।
4. हिन्दी के बोले गए व लिखे गए वाक्यों का अर्थग्रहण करने की क्षमता उत्पन्न करना।
5. हिन्दी से मातृभाषा या मातृभाषा से हिन्दी में अनुवाद करने की क्षमता उत्पन्न करना।
6. सन्धि, कारक, शब्दों, रूपों का ज्ञान प्रदान करना।
7. छात्रों को अनुलेख तथा श्रुतलेख लिखने का अभ्यास करवाना।
8. हिन्दी के गद्य खण्डों तथा काव्य का अर्थ समझने की योग्यता उत्पन्न करना।
9. नवीन हिन्दी शब्दों का संचय करना।
10. संग्रन्थन उपागम द्वारा एक से वाक्यों का उच्चारण करना तथा उनका प्रयोग करना सीखाना।
11. हिन्दी के प्रति छात्रों में रुचि उत्पन्न करना।
12. अति लघु वाक्यों में वार्तालाप करने की योग्यता उत्पन्न करना।

माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य

(OBJECTIVE OF TEACHING OF HINDI AT SECONDARY LEVEL)

आधुनिक विद्यालयों मे माध्यमिक स्तर को दो भागों में बाँटा जा सकता है—
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

1. माध्यमिक स्तर (कक्षा व 10) जिसमें हिन्दी अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. उच्च माध्यामिक स्तर (11 व 12वीं कक्षा) जिसमें हिन्दी वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ायी जाती है।

माध्यमिक स्तर तक आते-आते छात्र हिन्दी भाषा से सामान्यतः परिचित हो जाते है। इस स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. हिन्दी के अनुच्छेदों को सही तरीके से पढ़ना तथा उनके अर्थों को पढ़कर समझने की योग्यता उत्पन्न करना।
2. हिन्दी काव्य को उचित लय, मात्रा, यति, गति एवं विराम साहित मढ़ने की योग्यता उत्पन्न करना जिसमें छात्र विभिन्न छन्दों के पाठों में भेद कर सकें तथा मात्रानुसार छन्दों को पहचान सकें।
3. हिन्दी में लघु निबन्ध, लेख तथा पत्र आदि लिखने की क्षमता का विकास करना तथा मौलिक लेखों में हिन्दी काव्य व गद्य के अंसों को उद्घृत कर छात्रों की भावाभि व्यक्ति की शैली को सशक्त बनाना।
4. हिन्दी से मातृ भाषा या अन्य भाषा में तथा मातृभाषा या अन्य भाषा से हिन्दी में अनुवाद करने की योग्यता का विकास करना।
5. छात्रों को हिन्दी में अपने स्तर के अनुकूल शुद्ध, प्रभावोत्पादक, मधुर एवं रमणीय ढंग से विचारों को अभिव्यक्ति करने योग्य बनाना।
6. वैकल्पिक हिन्दी विषय को पढ़ने वाले छात्रों में काव्य ककी सौन्दर्यानुभूति करवाने के लिए सम व विषम भाव के का व्यय को समझने की योग्यता का विकास करना।
7. छात्रों में पद्याशों की ससन्दर्भ व्याख्या करते समय पद्यांश में निहित रस, अलंकार, छन्द, अन्तः कथा, सूक्ति आदि का विश्लेषण करने की योग्यता का विकास करना।

(3) उच्च स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य—आधुनिक महाविद्यालयों की बी.ए., एम.ए.कक्षाएँ और शास्त्रीय महाविद्यालयों की शास्त्री, आचार्य कक्षाएँ इस स्तर में सम्मिलित की जाती है। इस स्तर पर पहुँचकर शिक्षक छात्रों के हिन्दी ज्ञान को परिपुष्ट करने के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों को मानस में रख शिक्षण करते हैं—

1. हिन्दी के अथाह साहित्य को अधिकाधिक पढ़ने की क्षमता प्रदान करना।
2. हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति छात्रों में अनुसन्धानात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।
3. छात्रों में मौलिक रचना करने की क्षमता उत्पन्न करना।
4. छात्रों को हिन्दी सम्बन्धी विविध प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर प्रदान करना।
5. 'समस्या पूर्ति' करने की योग्यता विकसित करना।
6. हिन्दी रचनाओं का समालोचनात्मक विवेच करने की क्षमता का विकास करना।
7. हिन्दी के ध्वनि विज्ञान की पूर्ण जानकारी देना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

8. हिन्दी के व्याकरण संबंधी ज्ञान की परिपुष्ट करना।
9. हिन्दी की साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन कर उनका सम्पादन करने की योग्यता का विकास करना जिससे वे समाज को एक अमूल्य भेंद दे सके।
10. हिन्दी में धारा-प्रवाह अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।
11. छात्रों में वाद-विवाद करने की योग्यता विकसित करना।
12. अपठित अंशों को समझने व उनका सार हिन्दी में लिखने की योग्यता विकसित करना।
13. हिन्दी भाषा में संगणक (कम्प्यूटर) के लिए सॉफ्टवेयरर तैयार करने की क्षमता उत्पन्न करना।
14. दूरदर्शन हेतु हिन्दी भाषा में धारावाहिक तैयार करवाने में सहयोग देना ताकि समाज में हिन्दी के प्रति रूचि का विकास किया जा सके।

उपर्युक्त वर्णित स्तरानुसार उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु आधुनिक पद्धति वाले विद्यालयों में सरल शैली तथा शास्त्रीय पद्धति वाले विद्यालयों में कुछ कठिन शैली को अपनाया जा सकता है जिससे हिन्दी के स्तर को उन्नत किया जा सके।

भाषा शिक्षण का महत्व

(IMPORTANCE AND ROLE OF HINDI LANGUAGE IN INDIA)

परिभाषा— जिस भाषा को बच्चा अनुकरण द्वारा सीखता है उसे मातृ-भाषा कहते हैं। अपने बाल्य काल से बालक अपने परिवार में रहता हुआ अपने साथियों, माता-पिता, भाई-बहनों का अनुकरण करके जिस भाषा को ग्रहण करता है वह उसकी मातृ-भाषा होती है। यदि किसी बच्चे को जन्म लेते ही एसे परिवार में छोड़ दिया जाए जहां की भाषा उसके परिवार से भिन्न है तो निश्चित ही वह उस भाषा को सीखेगा जिस भाषा के वातावरण में उसका पालन पोषण हुआ है। अत : हमें उस भाषा को ही मातृ-भाषा कहना चाहिए जिसे कोई बच्चा प्रारम्भ से हो अपने वातावरण से सीखता है और जिस पर उसका जन्म सिद्ध अधिकार होता है। साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में हम देखते हैं कि मातृ-भाषा का और भी विस्तृत अर्थ लिया जाता है। यहां पर मातृ-भाषा से तात्पर्य किसी क्षेत्र विशेष की उस भाषा से होता है जिसके माध्यम से उस क्षेत्र के शिक्षित व्यक्ति मौखिक एवम् लिखित रूप में विचार-विनिमय करते हैं।

मातृ-भाषा के रूप में हिन्दी— हिन्दी के आज हमारे सामने तीन रूप हैं—मातृ-भाषा के रूप में हिन्दी आज भारत की राष्ट्र भाषा है। भारत में लगभग 20-25 करोड़ व्यक्ति इसको दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं हिन्दी न केवल भारतीय भाषाओं में ही प्रधान है अपितु संसार की भाषाओं में अपना विशेष स्थान रखती है। जनसंख्या की दृष्टि से सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी का संसार में तीसरा स्थान है।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मातृ-भाषा के रूप में उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा प्रदेशों की भाषा हिन्दी है। इन प्रदेशों में विद्यालय में प्रविष्ट होते ही बच्चा लिखित हिन्दी से पाठ प्रारम्भ करता है। मौलिक रूप से हिन्दी उसकी दैनिक भाषा होती है।

मातृ-भाषा के रूप में हिन्दी का महत्त्व— मातृ-भाषा का ज्ञान विकास के लिये परमावश्यक है। मातृ-भाषा के ज्ञान के अभाव में शिक्षा का विकास कठिन तथा असम्भव है। इसी कारण आज संसार के लगभग सभी देशों में मातृ-भाषा के महत्त्व को समझते हुए इसी के माध्यम से शिक्षा देने का आयोजन है।

मातृ-भाषा की कुछ विशेषताएं इस प्रकार है

(Some Charateristics of Mother Tongue)

(1) अभिव्यक्ति का सरलतम् माध्यम है— बालक अपने परिवार में बचपन से ही अभिव्यक्ति के लिए अनुकरण द्वारा एक भाषा को सीखता है। आकृति तथा अभ्यास से उस भाषा के जन्म लेते हैं, उठते हैं, पनपते हैं और समाप्त होते हैं। आगे चलकर बच्चा बढ़ा होकर किसी अन्य भाषा में चाहे कितनी ही निपुणता क्यों न ग्रहण कर ले किन्तु जितनी सरलता हो वह अपनी मातृ-भाषा में अभिव्यक्ति प्राप्त कर सकता है अन्य में नहीं।

बच्चों को विचार विनिमय के लिए जितनी सरल मातृ-भाषा होती है अन्य भाषा नहीं। अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए उन्हें मातृ-भाषा ही सरलतम साधन प्रतीत होती पर वे घर पर या एक दूसरे से पंजा में ही विचार विनिमय करेंगे क्योंकि वह उनकी मातृ-भाषा होने कारण उन्हें अभिव्यक्ति के लिए बहुत सरल साधन प्रतीत होती है।

(2) शैक्षणिक विकास में सहायक है— विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा के लिए किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता होती है। एसे माध्यम के रूप में शैक्षणिक विकास के लिए मातृ-भाषा ही हो सकती है। अन्य नहीं शिक्षा का माध्यम होने के कारण मातृ-भाषा अन्य आषाओं एवम् ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन की नींव होती है।

(3) मानसिक और बोद्धिक विकास का साधन है— मानसिक विकास के लिये सबसे पहली आवश्यकता विचार-शक्ति की होती है। भाषा और विचार का अटूट सम्बन्ध होता है एक दूसरे का जन्म एक दूसरे की सहायता से होता है। सुदृढ़ विचार शक्ति मानसिक विकास की नींव होती है।

पूज्य बापू ने मानसिक विकास के लिए मातृ-भाषा को उतना ही आवश्यक माना है जितना शिशु के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध (The Mother tongue is as natural for the development of man's mind as mother's milk for the development of infant's body."

M.K. Gandhi

सभी मानसिक शक्तियों जैसे—स्मृति, विवेक, तर्क, अनुशीलन तुलना और साहचर्य की वृद्धि मातृ-भाषा के ज्ञान के बिना असम्भव होती है।

(4) शारीरिक विकास में सहायक है— ... अनुभूतियों और भाषा एक उपकरण है आनन्द प्रसन्नता और ज्ञान का एक स्रोत है। रुचियों अनुभूतियों का एक निर्देशक है और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विधाता द्वारा मनुष्य को ही हुई उस सर्वोत्तम शक्ति के प्रयोग का साधन है, जिसके द्वारा हम उस भगवान् के निकट पहुंचने हैं।

("It is atonce a tool, a source of joy, happiness and Knowledge, a director of taste and feeling and a means of using the highest power that God has given us where we come closest to Him.")

(W.M. Ryburn : The Teaching of the Mother Tongue)

इसमें कोई सन्देह भी नहीं है। जिस व्यक्ति की साहित्याध्ययन में रुचि हो जाती है वह साहित्य से अलोकिया आनन्द की अनुभूति ग्रहण करता है जो कि उसके शारीरिक विकास के लिए एक वरदान होता है। शारीरिक विकास के लिए पोष्टिक भोजन एक आवश्यकता है तो प्रसन्न रहना दूसरी आवश्यकता। मातृभाषा इस दूसरी आवश्यकता को पूरा करती है। शिशु बचपन से ही मातृ-भाषा के माध्यम से आनन्द की अनुभुति करता हैं। मां की लोरियां उसे एक अवर्णनीय आनन्द की अनुभूति कराती है। इसी से मातृ-भाषा को पालने की भाषा (Language of cradle) के नाम से पुकारा गया है। जोकि उसके शारीरिक विकास के भवन में नींव का कार्य करती है।

(5) सांस्कृतिक विकास का आधार है— बालक जैसे जैसे मातृ-भाषा पर अधिकार करता जाता है वैसे वैसे ही उसका उस भाषा के साहित्य के साथ लगाव विशेष होता जाता है। प्रत्येक साहित्य उसके समाज का दर्पण होता है जिसमें उस युग और समाज का पूरा प्रतिबिम्ब झलकता है। साहित्य को देखकर ही उस समाज के स्तर का स्वत : हो आभास मिल जाता है। प्रत्येक जाति की संस्कृति उसके साहित्य में झलकती है। यदि हमें अपनी मातृ-भाषा पर पूर्ण अधिकार होता है तो स्वतः ही अपनी संस्कृति का ज्ञान हो जाता है। साथ ही आगामी समय में अपनी संस्कृति के सुधार और वृद्धि में भी योगदान कर सकते हैं। भाषाध्ययन के अभाव में साहित्य सृजन असम्भव है। अतः मातृ-भाषा की शिक्षण-व्यवस्था और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि एक ही भाषा बोलने वालों के बीच प्रेम, साहचर्य, सद्भावना और सहानुभूति स्वयं उत्पन्न हो जाते हैं।

(6) भावात्मक विकास में सहायक है— जिस प्रकार बच्चे अपनी मां के प्रति श्रद्धा भाव और प्रेम रखते हैं उसी प्रकार एक मातृ-भाषा भाषी व्यक्तियों में आपसी प्रेम रहता है, एकता की भावना, बढ़ती है। बच्चे के मन में माता मातृ-भूमि और मातृ-भाषा के प्रति चिर स्थायी अनुराम रहता है। अपनी मातृ-भाषा के स्वचन्द रूप में प्रयोग से मन में एक अनोखे सुख की अनुर्मूति होती। अत : इस भावनात्मक एकता को विकसित करने के लिए भी मातृभाषा बहुत महत्त्वपूर्ण है।

(7) व्यक्तित्व के विकास में सहायक है— मातृ-भाषा बच्चों को अपनी बात कहने तथा दूसरों की बातों को समझने का पूर्ण सामथ्य प्रदान करती है। इससे उनके व्यक्तित्व मे निखार आता है। उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है। अपनी बात निस्संकोच व्यक्त करने से उनकी शक्तियों का विकास होता है। साथ ही अपनी संस्कृति ओर सभ्यता का ज्ञान भी अपनी भाषा के द्वारा ही सम्भव होता है। जिस से वह अपनी रुचि के अनुकूल समाज सम्मत क्रियाओं का चुनाव कर सामाजिक व्यक्तिव के साथ-साथ वैयवियक व्यक्तितत्व भी प्राप्त करता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(8) सामाजिक विकास में सहायक है— प्रत्येक व्यक्ति एक सामाजिक वातावरण में जन्म लेता है। मातृ-भाषा उस समाज का प्रमुख साधन होती है। मातृभाषा बालक की आदतों का समाज के आदर्शों के अनुसार परिष्कार करती है। साथ ही विचारों के आदान-प्रदान करने में भी मातृभाषा प्रमुख साधन होती है। समाज में उसी व्यक्ति का अधिक मूल्य होता है जोकि अपने विचार सुन्दर और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर पाने में समर्थ होता है। रायबर्न ने ठीक ही कहा है कि एक नागरिक में होने वाले गुण—स्पष्ट चिन्तन स्पष्ट अभिव्यक्ति, विचारों, भावों तथा क्रियाओं की वास्तविकता और संवेगात्मकता तथा रचनात्मक जीवन की पूर्णता—समुचित रूप में तभी उत्पन्न और विकसित किये जा सकते हैं जबकि सम्पूर्ण बौद्धिक एवं भावात्मक जीवन की आधार-शिला मातृ-भाषा की ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाये। ("All the virtues that are necessary in a good citizen, clear thinking, clear expression, sincerity of thought and feeling and actions, fulness of emotional and creative life, all these things can be properly cultivated and developed only if sufficient attention is paid to the foundation of emotional and intellectual life, the mother tongue." (W.M. Ryburn—The Teaching of the Mother Tongue).

(9) कल्पना के विकास में सहायक है— विचार और भाषा एक दूसरे के अभिन्न अंग हैं। भाषा के अभाव में कल्पना केवल कल्पना हो रह जाती है, साकार नहीं हो सकती। अतः मातृ-भाषा शिक्षण अत्यन्त आवश्यक है। ("For if thought and inner speech are so closely inter-woven that they row and decay together, we cannot cultivate one without cultivating the other. And training in the use of the mother tongue—the tongue in which a child thinks and dreams—becomes the first essential of schooling and the finest instrument of human culture." (P.B. Ballard—Thought and Language.)

मातृ-भाषा— हिन्दी के शिक्षण उद्देश्य—भाषा शिषण का उद्देश्य बच्चों में मौलिक या लिखित अभिव्यक्ति कर सकने तथा अभिव्यक्त विचारों को समझ सकने की योग्यता प्रदान करना होता है। किन्तु मातृभाषा-शिक्षण के उद्देश्य इसमें कुछ और बढ़कर होते हैं, क्योंकि मातृ-भाषा शिक्षण का यह भी एक मुख्य ध्येय होता है कि बालकों में अपने विचारों को प्रभावोतादय ढंग से प्रस्तुत करने की योग्यता उत्पन्न हो जाये। इन उद्देश्यों को हम निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

(1) छात्रों में दूसरों को मोखिका पर लिखित भाषा के पूर्ण रूप से समझने को क्षयता का विकास करना— बच्चे में ग्रहण शक्ति का विकास करना मातृभाषा शिक्षण का प्रथम उद्देश्य होता है। बच्चों को छ्वनियों तथा छ्वनि समूहों का पूर्ण एवं स्पष्ट ज्ञान कराना छ्वनियों का अन्तर, शब्दों एवं मूक्तियों का प्रसंगानुकूल प्रयोग करने को क्षमता तथा समानार्थी शब्दों की भिन्नता समझने के योग्य बनना लिपि का ज्ञान, वाचन कला में निपुणता प्रदान करना, प्रसंगानुकूल अर्थ ज्ञात करना, केन्द्रीय भाव ग्रहण करने की योग्यता उत्पन्न करना आदि मातृभाषा शिक्षण का प्रथम उद्देश्य होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(2) छात्रों में अपने विचारों को मौखिक अथवा लिखित रूप में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता उत्पन्न करना— ग्रहण शक्ति के साथ अभिव्यक्ति शक्ति का विकास करना भी आवश्यक है। अपने विचारों को लिखित अथवा मौखिक रूप से दूसरों के सामने प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने की क्षमता, दूसरों के साथ वार्तालाप करने की योग्यता उत्पन्न करना, दैनिक व्यवहार में शुद्ध भाषा का प्रयोग करने की क्षमता, शुद्ध उच्चारण, अवसरानुकूल भाषा शैली का प्रयोग, आत्म-विश्वास के साथ बोलने की क्षमता, स्वच्छ सुन्दर लेख का अभ्यास, शुद्ध बर्तनी (Spellings) एवं वाक्य रचना की योग्यता, नवीन शब्दावली का प्रयोग करने आदि की योग्यता का विकास करना मातृ-भाषा शिक्षण का द्वितीय उद्देश्य है।

(3) छात्रों में मातृ-भाषा साहित्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करके उसका रसास्वाहन करने के योग्य बनाना— छात्रों में ज्ञानाजिन की योग्यता उत्पन्न करना मातृभाषा, शिक्षण के माध्यम से ही सम्भव होता है। वाचन तथा अध्ययन से निपुण बनाना, स्तरानुकूल साहित्य के अध्ययन की ओर उन्मुख करना साहित्य की झुलना ओर समालोचना करने की क्षमता का विकास करना, कण्ठस्थ उद्धरणों का प्रयोग करना, मनन, तर्क की योग्यता उत्पन्न करना, ज्ञान विज्ञान तथा साहित्य के अध्ययन से नवीन विचार ग्रहण करना. शव्द-योजना का ज्ञान कराना, भिन्न-भिन्न शैलियों का ज्ञान कराना, किसी साहित्यकार की रचना और उसके सृजन-काल की परिस्थितियों की अध्ययन की योग्यता प्रदान करना आदि मातृभाषा शिक्षण का तीसरा उद्देश्य है।

(4) छात्रों की सृजनात्मक शक्तियों का विकास करना— मातृभाषा-शिक्षण से बालकों में रचनात्मक अभिव्यक्ति की योग्यता उत्पन्न होती है। छात्रों को स्वाभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना, नाटक अभिनय कराना, कविता-लेख-कहानी आदि की रचना करने के लिए प्रोत्साहित करना, कविता के सस्वर वाचन की योग्यता उत्पन्न करना लेख, समाचार, रिपोर्ट, विवरण, अनुवाद का सम्पादन करने की योग्यता का विकास करना, ज्ञान-विज्ञान की प्रस्तकों की रचना करने की योग्यता प्रदान करना मातृभाषा-शिक्षण का चौथा उद्देश्य है।

(5) साहित्य से मनोविनोद प्राप्त करने की योग्यता उत्पन्न करना—मातृभाषा- शिक्षण का एक यह भी उद्देश्य है कि बालकों में ऐसी योग्यता उत्पन्न हो जाये कि वे अपना अवकाश का समय सत्-साहित्य के अध्ययन में लगाकर मनोविनोद कर सके।

(6) सौन्दर्यानुभूति प्राप्त करने की योग्यता उत्पन्न करना—वच्चों में कविता के प्रति रुचि कवियों की अनुभूतियों को ग्रहण करने की शक्ति, काव्यानन्द प्राप्त करने की क्षमता, रागात्मक भावनाओं का उद्बोधन और परिष्कार करने की योग्यता उत्पन्न करना भी मातृभाषा-शिक्षण का उद्देश्य है।

(7) छात्रों को मानव जीवन और उसकी विभिन्न परिस्थितियों का ज्ञान कराकर उनकी अपनी रुचियों एवं प्रवृत्तियों को सामाजिक आदर्शनुकूल परिष्कृत करना—छात्रों को अधिकाधिक अध्ययन के लिए प्रेरित किया जाये, जिससे वे सामाजिक आदर्शों एवं मूल्यों का चयन कर सकें तथा अपने व्यवहार को समाज के आदर्शानुकूल बना सकें। यह केवल मातृभाषा शिक्षण द्वारा ही सम्भव हो सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मातृभाषा-शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने के साधन

(MEANS OF ACHIEVING AIMS OF TEACHINGS MOTHER TONGUE)

बालक विद्यालय में प्रवेश पाने से पूर्व अपनी घरेलू भाषा का ही प्रयोग करता है जिसका विद्यालय में परिभाजन होता है। अध्यापकों के संसर्ग से वह शुद्ध बोलने का अभ्यास करता है तथा शुद्ध लिखना सीख जाता है।

कक्षा में मौन पाठ तथा सस्वर वाचन से बालकों में वाचन की प्रवीणता आती है। अध्यापक के सस्वर वाचन से बालक उचित आरोह-अवरोह के साथ काव्य-पाठ करने की कला में निपुण हो जाता है। लेखन शैली के विकास के लिए गृह कार्य तथा प्रश्न आदि दिये जाते हैं, सुलेख का अभ्यास कराया जाता है। मौन पाठ बच्चों में बोध-शक्ति का विकास करता है तथा अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता बालकों में अभिव्यक्ति की शक्ति का विकास करती है।

शिष्टाचार की भाषा के लिए नाटकों की शिक्षा द्वारा संवाद एवं अभिनय की क्षमता का विकास किया जाता है। इससे उनमें वार्तालाप करने की क्षमता का भई विकास होता है। कविता शिक्षण बालकों में सौन्दर्यानुभूति को जागृत कर उसका विकास करने का अवसर प्रदान करता है। विभिन्न निवन्धकारों की शैलियों से परिचित कराने के लिए अनेक निबन्धकारों के निबन्ध पढ़ाये जाते हैं। इससे उनमें शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन करने की भी क्षमता आती है।

बच्चों में सृजनात्मक शक्तियों का विकास करने के लिए अनेक प्रतियोगिताओं का समायोजन किया जाता है। शुद्ध भाषा-ज्ञान के लिए व्याकरण की शिक्षा दी जाती है। इसके साथ ही बच्चों में मौलिकता के लिए उन्हें मौलिक लेख, कविता तथा कहानी आदि लिखने के लिए अध्यापकों द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। क्योंकि यह एक जन्मजात शक्ति होती है और अवसर प्रदान करना सृजन शक्ति के लिए आवश्यक होता है।

प्रश्नावली

1. हिन्दी-शिक्षण के उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डालिए।
2. ब्लूम के अनुसार हिन्दी शिक्षण के सम्पूर्ण शैक्षिक उद्देश्यों को कितने भागों में विभाजित किया जा सकता है चर्चा कीजिए।
3. हिन्दी शिक्षण के व्यावहारगत उद्देश्य कौन-कौन से है। उनको लिखते समय कौन-कौन सी सावधानियाँ रखनी चाहिए।
4. हिन्दी शिक्षण के ज्ञानात्मक, भावात्माक व मनोगत्यात्मक उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
5. प्राथमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य कौन से होने चाहिए लिखिए।
6. आप माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के कौन से उद्देश्य रखना चाहेंगे और क्यों ?
7. मातृ-भाषा शिक्षण का क्या महत्त्व है ? यह बालक के विकास में क्या भूमिका निभाती है ?
8. हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों को आप किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय—3

भारत में हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में

(ROLE OF HINDI AS A LINK LANGUAGE IN INDIA)

हिन्दी भारत की राष्ट्र-भाषा है। जिन प्रदेशों की मातृ-भाषा हिन्दी नहीं है वहां पर हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाया जायेगा। हिन्दी भारत की 15 भाषाओं में से एक है। हमारे संविधान द्वारा हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में मान लिया गया है। साहित्य, भाषा, जनसंख्या आदि अनेक दृष्टिकोणों से हिन्दी ही इस पद की वास्तविक अधिकारिणी है। हिन्दी भारत के बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली भाषा है। समस्त भारत की जनसंख्या के लगभग 50% व्यक्ति हिन्दी भाषा-भाषी हैं। एक मूल, संस्कृत से निकली होने के कारण समस्त आर्य भाषा-भाषी लोग हिन्दी को समझ पाने में समर्थ हैं।

हिन्दी का क्षेत्र बड़ा ही व्यापक है। भारत के संविधान ने खड़ी बोली हिन्दी को राष्ट्र-भाषा स्वीकार किया है। अतः यह एक और मत-भेद की बात सामने आती है कि यह हिन्दी उर्दू-निष्ठ हो अथवा संस्कृतनिष्ठ। मेरे अपने विचार से उर्दू तो केवल मात्रा हिन्दी की एक शैली है। अतः उर्दू-निष्ठता का तो प्रश्न ही नहीं उठता। साथ ही संस्कृत के क्लिष्ट शब्दों की भरमार का भी मैं हामी नहीं। हां, भाषा परिवर्तनशील होनी चाहिए क्योंकि परिवर्तन ही विकास है और विकास ही जीवन है। अंग्रेज़ी के रेल, स्टेशन, बैटरी, पैन्ट, टाई, स्कूल आदि शब्दों को अपना लिया जाये तो कोई हानि नहीं है।

राष्ट्र-भाषा हिन्दी ही क्यों ?—प्रारम्भ में इस विषय पर बड़ा ही मत-भेद रहा, किन्तु हिन्दी की इन विशेषताओं के कारण उसे राष्ट्र-भाषा पद की उचित अधिकारिणी माना गया :—

(1) बहुसंख्यक की मातृ-भाषा हिन्दी—हिन्दी भारत के एक विशाल भूभाग की मातृ-भाषा है। यही नहीं, हिन्दी का संसार की प्रमुख भाषाओं में तीसरा स्थान है। हिन्दी की जननी संस्कृत है जिससे कि उत्तर तथा मध्य भारत की समस्त भाषाएं जन्मी हैं। अतः इन सभी भाषाओं में बहुत अधिक साम्य है और इसी साम्य के कारण हिन्दी न जानने वाले भी हिन्दी को आसानी से समझ लेते हैं।

(2) राजनैतिक क्षेत्र की भाषा हिन्दी—राष्ट्र-भाषा के पद पर प्रायः वही भाषा बिठाई जाती है जो कि राजनैतिक क्षेत्र की भाषा होती है। भारत के प्रमुख राजनैतिक क्षेत्र उत्तर प्रदेश तथा केन्द्र देहली की भाषा हिन्दी है। अतः यह स्वाभाविक था कि हिन्दी को ही राष्ट्र-भाषा बनाया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाता। भारत एक धर्मप्राण देश है। यहाँ के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों की भाषा भी हिन्दी है। इसी कारण आज दक्षिण के बड़े-बड़े नगरों में भी हिन्दी खूब बोली और समझी जा रही है।

(3) हिन्दी साहित्य में प्राचीन संस्कृति निहित है—हिन्दी साहित्य में भारतीय संस्कृति के पूर्ण-दर्शन होते हैं। यद्यपि बंगला साहित्य हिन्दी से अधिक समृद्ध है किन्तु बंगला पर विदेशी छाप की अधिकता के कारण यह पद हिन्दी के लिए ही उचित समझा गया।

(4) हिन्दी का ध्वनि-तत्त्व वैज्ञानिक है—हिन्दी का ध्वनि-तत्त्व अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक है। हिन्दी में दूसरी भाषाओं के शब्दों को पचाने की बहुत अधिक क्षमता है। श्रीयुत पुरुषोत्तम दास टंडन ने हिंन्दीं को ही राष्ट्र-भाषा बनाने के लिए इस कारण से ज़ोर दिया। उनके अनुसार "_मैं इसे राष्ट्र-भाषा इसलिए मानता हूं कि इसमें हमारी दासता की प्रतीक अंग्रेज़ी को देश से बाहर निकालने की क्षमता है।"

(5) भारत की एकता को दृढ़ बनाने वाली भाषा—स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ठीक ही कहा था "हिन्दी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।" एक भाषा देश की एकता के लिए आवश्यक है। हिन्दी ही अंग्रेज़ी का, जोकि अंग्रेज़ी शासनकाल में पूरे भारत की राज-भाषा थी, स्थान ले सकती है। जब तक एक प्रदेशवासी दूसरे प्रदेशवासी से अपने विचार विनिमय नहीं कर सकता तब तक देश में एकता की भावना नहीं आ सकती। हिन्दी के माध्यम से ही हम सब विभिन्न प्रान्तवासी एक भारतीय बन सकते हैं। योगिराज अरविन्द ने भी कहा है कि "भारत के विभिन्न प्रदेशों में हिन्दी प्रचार के द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत बन्धु हैं।"

(6) देश की उन्नति के लिए उपयोगी—महात्मा गांधी जी के अनुसार "राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।" क्योंकि प्रान्तीय भाषाओं के स्थान पर नहीं बल्कि उनके सिवाय अन्तर्प्रान्तीय विनिमय के लिए राष्ट्र-भाषा समस्त भारत के लिए आवश्यक है, वह भाषा हिन्दी ही होनी चाहिए।"

(7) समृद्ध भाषा—वैसे तो बंगला तथा मराठी साहित्य भी उतने ही समृद्ध हैं जितना कि हिन्दी का, किन्तु हिन्दी साहित्य की समृद्धता ऊर्ध्वमुखी है। श्री मैथिली शरण गुप्त ने कहा है, "हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिसके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।"

वैसे तो स्वतन्त्रता के पूर्व भी हिन्दी के महत्त्व को अच्छी तरह से आंका गया, किन्तु 14 सितम्बर, 1940 ई. को जब भारत सरकार ने इसे राष्ट्र-भाषा घोषित कर दिया तब हिन्दी का महत्त्व और अधिक बढ़ गया। आज हिन्दी का महत्त्व सर्व-विदित है। यही एकमात्र ऐसी भाषा है जो कि पूरे देश की सम्पर्क भाषा का कार्य कर सकती है।

पाठ्यक्रम में राष्ट्र-भाषा हिन्दी का स्थान—राष्ट्र-भाषा राष्ट्र के समान ही वन्दनीय है। राष्ट्र-भाषा के अभाव में किसी राष्ट्र की कल्पना केवल कल्पना ही लगती है, क्योंकि किसी एक सम्पर्क भाषा के अभाव में पूरा देश एक रह कर इकाइयों में बंट कर रह जाता है। यही कारण है कि संसार के प्रत्येक देश की अपनी एक राष्ट्र-भाषा है। हमारे देश में राष्ट्र-भाषा के रूप में हिन्दी को एकता के लिए वही कार्य करना है जो कि अंग्रेज़ी शासन-काल में अंग्रे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का था। इसके लिए आवश्यक है कि हिन्दी को पाठ्यक्रम में यथोचित स्थान दिया जाये। जहां हिन्दी मातृ-भाषा है और जहां पर यह द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है, उन दोनों प्रदेशों में हिन्दी को उसके अनुकूल ही स्थान दिया जाना है।

यह एक परमावश्यक कर्त्तव्य है कि विद्यालयों में राष्ट्र-भाषा हिन्दी की शिक्षा-व्यवस्था अनिवार्य रूप में की जाए। यह और ध्यान देने की बात है कि पाठ्यक्रम में हिन्दी को केवल एक विषय ही न माना जाए, बल्कि जहां पर यह मातृ-भाषा के रूप में पढ़ाई जायेगी वहां तो यह शिक्षा का माध्यम होने के कारण समस्त विषयों के ज्ञान का आधार ही होगी। अतः उसकी शिक्षा प्रत्येक विषय के साथ ही साथ देनी चाहिए। जिन प्रदेशों में हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जायेगी वहां पर पाठ्यक्रम में हिन्दी को कक्षा 6 से स्थान अवश्य ही दिया जाये। हिन्दी शिक्षण के लिए अन्य विषयों की भांति निर्धारित कालांश (periods) तो होने ही चाहिएं, साथ ही साथ समय सारिणी (time table) में कुछ विशेष समय की भी ओर व्यवस्था की जाए। अहिन्दी भाषी प्रदेशों में इससे हिन्दी शीघ्र सीखने में सहाता मिलेगी तथा हिन्दी भाषी प्रदेशों में इससे सभी विषयों की आधार-शिला मज़बूत होगी, क्योंकि वहां पर हिन्दी ही समस्त ज्ञान विज्ञान का माध्यम है।

यह एक दुर्भाग्य का विषय है कि हमारे कुछ बन्धु हिन्दी के इस महत्त्व को भुला कर हिन्दी के स्थान पर अंग्रेज़ी को ही रखना चाहते हैं। यह एक थोथी दलील है कि अंग्रेज़ी के बिना हमारा कार्य नहीं चल सकता। यदि ऐसा होता तो अब से 200 वर्ष पहले कार्य कैसे चलता था। हां यह हो सकता है कि हिन्दी जब तक पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाती तब तक सह-भाषा के रूप में अंग्रेज़ी चलाई जाये। देश की एकता और अखण्डता के लिए हिन्दी को पाठ्यक्रम में उचित स्थान देना हमारा मानसिक दासता से छुटकारा पाना होगा।

राष्ट्र-भाषा के रूप में हिन्दी-शिक्षण के उद्देश्य
(AIMS OF TEACHING HINDI AS NATIONAL LANGUAGE)

राष्ट्र-भाषा हिन्दी के शिक्षण के उद्देश्य मातृ-भाषा हिन्दी से कुछ भिन्न होंगे। राष्ट्र-भाषा हिन्दी के शिक्षण उद्देश्य निम्न प्रकार होंगे :—

(1) व्यावहारिक योग्यता प्रदान करना—प्रथम उद्देश्य यह है कि समस्त भारतवासी चाहे किसी भी प्रदेश के वासी क्यों नहीं, वे किसी अन्य प्रदेश में जाकर अपने को अजनबी महसूस न कर सकें। सामाजिक, राजनैतिक, व्यावसायिक आदि कार्यों में भाषा विषयक कठिनाई का सामना न करना पड़े।

(2) राजनीतिक उद्देश्य—हिन्दी के माध्यम से प्रत्येक भारतवासी समस्त देश को अपना घर माने। राजनीतिक दृष्टि से भावात्मक एवम् रागात्मक एकता के लिए हिन्दी शिक्षण अनिवार्य है।

(3) प्रशासनिक उद्देश्य—हिन्दी के शिक्षण से समस्त राजकीय कार्यालयों के कर्मचारी हिन्दी में इतने निपुण हो जाएं कि प्रशासनिक कार्य में अंग्रेज़ी के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग सुचारु रूप से होने लगे। सभी कर्मचारियों को हिन्दी का सामान्य ज्ञान देना अत्यन्त आवश्यक है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(4) सांस्कृतिक उद्देश्य—हिन्दी साहित्य में हमारी संस्कृति निहित है। उस संस्कृति के दर्शन समस्त भारतीयों को हिन्दी के माध्यम से ही सम्भव हैं। अतः प्राचीन भारतीय साहित्य का दिग्दर्शन कराना भी हिन्दी शिक्षण का उद्देश्य है।

(5) भाषा सम्बन्धी उद्देश्य—हिन्दी का ज्ञान अहिन्दी भाषी व्यक्तियों के लिए एक और भाषा का ज्ञान तो देगा ही, साथ ही नये मुहावरों, शब्दों, सूक्तियां, भावों आदि की भी वृद्धि करेगा। उन्हें वे अपनी भाषा में प्रयोग करके अपनी मातृ-भाषा की भी वृद्धि कर सकते हैं। अतः दो भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके यह भी हिन्दी-शिक्षण का उद्देश्य है राष्ट्र-भाषा के रूप में।

(6) साहित्यिक उद्देश्य—भावों का आदान-प्रदान किसी भी भाषा को सशक्त बनाता है। हिन्दी ने बंगला से बहुत कुछ लिया है। बंगला साहित्य पर अंग्रेज़ी साहित्य का बहुत प्रभाव पड़ा है। जब अहिन्दी भाषी प्रन्तों में हिन्दी शिक्षण होगा तब हिन्दी साहित्य से अन्य भाषाएं बहुत कुछ ग्रहण कर सकेंगी। भाषाओं के साहित्य का आदान-प्रदान एकता के सूत्र में बांधने वाला है। अतः हिन्दी शिक्षण का यह भी एक मुख्य उद्देश्य है कि अहिन्दी भाषी लेखक या साहित्यकार भी हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि कर सकें।

सारांश
(SUMMARY)

हमारे संविधान में हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया है। अतः अब पूरे देश में हिन्दी का शिक्षण एक पुनीत कर्त्तव्य है। संविधान में खड़ी बोली हिन्दी को राष्ट्र-भाषा माना गया है। पूरे देश के एक विशाल भू-भाग की भाषा होने के कारण हिन्दी को ही इस पद की अधिकारिणी माना गया है।

हिन्दी ही राष्ट्र-भाषा क्यों ?—हिन्दी की महत्ता को झुठलाया नहीं जा सकता। निम्नलिखित विशेषताओं के कारण हिन्दी ही राष्ट्र-भाषा घोषित की गई :—

(1) बहुसंख्यक की मातृ-भाषा हिन्दी।
(2) राजनीतिक क्षेत्र की भाषा हिन्दी।
(3) हिन्दी साहित्य में प्राचीन संस्कृति निहित है।
(4) हिन्दी का ध्वनि-तत्त्व वैज्ञानिक है।
(5) हिन्दी भारत की एकता को दृढ़ करने वाली भाषा है।
(6) देश की उन्नति के लिए उपयोगी।
(7) समृद्ध भाषा।

पाठ्य-क्रम में हिन्दी का स्थान—पाठ्यक्रम में हिन्दी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। अहिन्दी प्रदेशों में कक्षा 6 से हिन्दी शिक्षण अवश्य ही प्रारम्भ कर दिया जाना चाहिए। टाइम-टेबिल में भी हिन्दी के लिए अतिरिक्त घण्टों का प्रस्ताव होना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राष्ट्र-भाषा हिन्दी के शिक्षण उद्देश्य :—

(1) व्यावहारिक योग्यता प्रदान करना।

(2) राजनीतिक उद्देश्य।

(3) प्रशासनिक उद्देश्य।

(4) सांस्कृतिक उद्देश्य।

(5) भाषा सम्बन्धी उद्देश्य।

(6) साहित्यिक उद्देश्य।

हिन्दी शिक्षण की समस्याएं
(PROBLEM OF HINDI TEACHING)

शिक्षा का माध्यम...हिन्दी
(HINDI AS MEDIUM OF INSTRUCTION)

आज स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद हमारे देश में इस प्रश्न पर कि शिक्षा का माध्यम क्या हो वहुत विवादास्पद स्थिति खड़ी हो गई है। लार्ड मैकाले के उन शब्दों की सत्यता आज प्रकट हुई है। उसने कहा था कि अंग्रेज़ी भाषा के द्वारा एक ऐसा वर्ग बनाया जाये जो रंग-रूप में भले ही भारतीय हो किन्तु आचार-विचार और सभ्यता की दृष्टि से अंग्रेज़ हो। अभी तक शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी थी, किन्तु यह हमारी मानसिक दासता की प्रतीक थी। अत: अब हमें शिक्षा के नवीन माध्यम के विषय में गम्भीरतापूर्वक विचार करना है। हमारे संविधान ने निश्चित किया कि 15 वर्ष के बाद हिन्दी शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेज़ी का स्थान ग्रहण कर लेगी। किन्तु आज 23 वर्ष बाद भी हिन्दी को वह स्थान नहीं दिया जा सका है। यह एक दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति है।

आज इस समस्या के तीन रूप हैं :—

(1) एक मत है कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी ही रहे।

(2) दूसरे मत के अनुसार प्रादेशिक भाषाएं शिक्षा का माध्यम बनाई जाएं।

(3) तीसरे मत के अनुसार हिन्दी ही शिक्षा का माध्यम हो।

शिक्षा का माध्यम...अंग्रेज़ी
(ENGLISH AS MEDIUM OF INSTRUCTION)

इस भाषा के समर्थकों का एक वहुत बड़ा दावा है, कि अंग्रेज़ी के बिना ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा असम्भव है। यदि अंग्रेज़ी शिक्षा का माध्यम न रही तो छात्रों में योग्यता का ह्रास होता चला जायेगा। किन्तु ये सब थोथी आशकाएं हैं। वास्तव में स्थिति तो यह है कि यदि हमने अंग्रेज़ी को शिक्षा का माध्यम बनाये रखा तो हमारी स्वतन्त्रता का कोई अर्थ नहीं होगा। इसके साथ ही निम्न कारणों से भी अंग्रेज़ी शिक्षा का माध्यम नहीं हो सकती।

(1) अंग्रेज़ी ज्ञान प्राप्ति का कठिन साधन—विदेशी भाषा होने के कारण अंग्रेज़ी के माध्यम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
से हम न तो अभिव्यक्ति ही सरल रूप से कर सकते हैं और न ही यह सीखने में ही सरल है। अतः विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा देना शक्ति का अपव्यय है।

(2) अंग्रेज़ी को माध्यम बनाये रखना भारतीय भाषाओं के साथ विश्वासघात करना है
आज जो भी भारतीय भाषाओं की शोचनीय स्थिति है यह सब अंग्रेज़ी की ही कृपा है। चिर-काल की उपेक्षा ने उनकी यह दशा की है। आज उनको प्रतिष्ठा देना हमारा कर्त्तव्य है अतः अंग्रेज़ी को इस पद से हटाना ही होगा।

(3) शिक्षा प्रसार में बाधक—आज जो भारतीय जनता का एक छोटा सा भाग ही शिक्षा की ओर आकृष्ट है तथा अधिक भाग अशिक्षित है यह सब विदेशी माध्यम के कारण ही है। यदि भारतीय भाषा शिक्षा का माध्यम हो तो निश्चित ही शिक्षा प्रसार में बहुत योग मिलेगा।

(4) अंग्रेज़ी हमारी संस्कृति से बहुत दूर—यह निश्चित है कि विदेशी भाषा हमारी संस्कृति का माध्यम नहीं बन सकती विदेशी संस्कृति का ही माध्यम बन सकती है। हमारी अपनी परम्पराएं, विचार, दर्शन, आचारण, प्रथाएं सब केवल भारतीय भाषा के माध्यम से ही सिखाये जा सकते हैं अंग्रेज़ी से नहीं।

(5) युवा शक्ति का ह्रास—अंग्रेज़ी शिक्षा पठन-पाठन में आज की पीढ़ी की शक्ति का अपव्यय ही है। जितने समय में वह अंग्रेज़ी को रटकर सीखता है उतने समय से वह हिन्दी का विशद ज्ञान प्राप्त कर सकता है। आज विदेशी शासन से मुक्ति पाकर भी विदेशी भाषा के प्रेत से यदि मुक्ति न पाई गई तो हमारे लिए यह बहुत लज्जा की बात होगी। अतः अंग्रेज़ी को शिक्षा का माध्यम बनाये रखने की बात तो असामयिक ही लगती है।

शिक्षा का माध्यम...प्रादेशिक भाषाएं
(REGIONAL LANGUAGES AS MEDIUM OF INSTRUCTION)

प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने का अर्थ है कि बालकों को उनकी मातृ-भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाये। मातृ-भाषा से अध्ययन-अध्यापन सुगम और सरल बनता है। इस युक्ति में बहुत कुछ सत्यता है, क्योंकि भाषा और विचारों का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। मातृ-भाषा के माध्यम से प्राप्त किया ज्ञान स्थायी होता है, प्रादेशिक भाषाएं समृद्ध बनती जायेंगी, तथा इससे युवकों में स्वाधीनता की भावना का उदय होगा, किन्तु इसके साथ ही यह भी सत्य है कि इस प्रकार प्रत्येक प्रदेश का अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग हो जायेगा तथा राष्ट्र की एकता को भी संकट का सामना करना पड़ जायेगा।

उच्च शिक्षा का माध्यम हिन्दी ही रखा जाये। इसके निम्नलिखित कारण हैं :—

(1) विभिन्न भाषाओं में अंग्रेज़ी के परिभाषिक शब्दों का अनुवाद एक दुस्तर कार्य होगा।

(2) इस तर्क के मूल में संकीर्ण प्रान्तीयता तथा साम्प्रदायिकता कार्य कर रही है जो कि देश की एकता के लिए विष-वृक्ष के समान है।

(3) एक प्रदेश के अध्यापक तथा विद्यार्थी दूसरे प्रदेश में अध्यापन एवम् अध्ययन के लिए नहीं जा सकते। देश के संगठन के लिये यह आवश्यक है कि शिक्षकों तथा छात्रों का आदान-प्रदान हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(4) देश में सामाजिक, राजनैतिक, व्यावसायिक विषमताओं को दूर करने के लिए भी प्रादेशिक भाषाओं के स्थान पर हिन्दी ही शिक्षा का माध्यम बनाई जाये।

(5) प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने से भिन्न-भिन्न भाषाओं के पृथक साहित्यों का सृजन करना पड़ेगा। पुस्तकों के लिए भी (15 भाषाओं की) बहुत धन की आवश्यकता होगी।

(6) प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने से शिक्षा का स्तर गिरने की आशंका है तथा इससे प्रत्येक प्रदेश की शिक्षा का स्तर और मूल्य भी भिन्न-भिन्न होगा।

शिक्षा का माध्यम हिन्दी
(HINDI AS MEDIUM OF INSTRUCTION)

हिन्दी ही एकमात्र वह भाषा है जो कि शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेज़ी का स्थान ले सकती है। हिन्दी समस्त प्रदेशों में आसानी से समझी जाती है। आर्य-परिवार की भाषा होने के तथा मूल संस्कृत से निकली होने के कारण हिन्दी उत्तर भारत तथा मध्य भारत की सभी भाषाओं से मेल खाती है तथा समृद्ध भाषा होने के कारण हिन्दी ही पूरे देश की शिक्षा का माध्यम बन सकती है।

हिन्दी को माध्यम बनाने से निम्नलिखित लाभ होंगे :—

(1) राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक—अंग्रेज़ी के समान यदि पूरे देश को एकता में बांधने वाली कोई भाषा है तो वह हिन्दी ही है। भिन्न-भिन्न प्रदेश हिन्दी के माध्यम से ही निकट आ सकते हैं।

(2) शिक्षा के समान स्तर के लिए आवश्यक—हिन्दी के माध्यम बनाने से शिक्षा का स्तर, पाठ्यक्रम, ग्रन्थ-संग्रह, और पारिभाषिक शब्द एक समान ही होंगे। समान शिक्षा का स्तर हिन्दी से ही सम्भव हो सकता है।

(3) शिक्षकों तथा विद्यार्थियों का आदान-प्रदान सम्भव—पूरे देश की सम्पर्क भाषा और शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी को अपनाने से शिक्षकों एवं छात्रों का आदान-प्रदान सरल होगा। इससे देश की भावात्मक एकता को बल मिलेगा।

(4) राजकीय कर्मचारियों के लिए लाभदायक—राष्ट्र-भाषा होने के कारण हिन्दी सभी राजकीय कार्यालयों में प्रयुक्त होगी। अतः कर्मचारियों को हिन्दी का ज्ञान अत्यावश्यक है। शिक्षा का माध्यम हिन्दी होने से उन्हें हिन्दी सीखने में बहुत सरलता होगी।

(5) केन्द्रीय सरकार को सुगमता—एक ही भाषा में पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण से इस कार्य में केन्द्रीय सरकार को बहुत सुगमता हो जायेगी तथा पाठ्य-क्रम भी अच्छे स्तर का होगा।

(6) शोध-कार्य में सुगमता—अनुसंधान तथा शोध कार्यों में हिन्दी शिक्षा का माध्यम होने से भिन्न-भिन्न प्रांतों से सहयोग बड़ी ही सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। तथा शोध कार्य से केवल एक क्षेत्र ही नहीं अपितु पूरा देश ही लाभान्वित हो सकेगा।

(7) समान अवसर की सुविधा—हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बना कर देश के प्रत्येक नागरिक को उन्नति के समान अवसर प्रदान करने की सुविधा दी जा सकेगी। साथ ही इससे उत्तर-दक्षिण के भेद को भी समूल नष्ट किया जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(8) समय की बचत—आज कही-कही पर उच्च कक्षाओं में हिन्दी अथवा अंग्रज़ी शिक्षा का माध्यम बनाकर अध्यापकों के लिए एक समस्या खड़ी कर दी है। उन्हें अपने विचार दोनों ही भाषाओं में छात्रों तक पहुचने पड़ते है। इससे एक पाठ को दोहरा पढ़ाना पड़ता है तथा समय का व्यय में अपव्यय होता है। हिन्दी को शिक्षा की माध्यम बना देने से इस समस्या का स्वतः ही हल हो जाता है।

हिन्दी के विरुद्ध कुछ आक्षेप
(SOME OBJECTIONS AGAINST HINDI)

हिन्दी के कुछ विरोधियों ने शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी का विरोध करते हुए उस पर कुछ आक्षेप लगाये है। ये आक्षेप केवल दासता की प्रतीक अंग्रेज़ी को मुक्ति ही प्रदर्शित करते है तथा सत्यता से कोसों दूर है।

(1) हिन्दी में पारिभाषित शब्दों का अभाव—भौतिक विज्ञान, इन्जीनियरिंग, चिकित्सा, सामाजिक विषयों आदि के पारिभाषिक शब्दों का हिन्दी में अभाव होने के कारण शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी सफल नहीं हो सकती।

यह आक्षेप निराधार है। ऐसी समस्याओं का सामाना प्रत्येक नवनिर्मित राषट्र को करना पड़ता है इस के लिए या तो हम अंग्रेज़ी शब्दों को ही रख लें अथवा पारिभाषिक शब्द कोष का निर्माण कर लें। इस क्षेत्र में काशी की नागरी प्रचारिणी सभा ने बहुत हमत्त्वपूर्ण कार्य किया है। अब हिन्दी पारिभाषिक शब्दों के क्षेत्र में पूर्ण स्वावलम्बी बन चुकी है। लगभग सभी विष्यों में शब्दावली तैयार हो चुकी है।

(2) हिन्दी में पाठ्या पुस्तकों का अभाव—यह आक्षेप वस्तुतः राज्य सरकारों की उत्तरदायित्व हीनता के कारण है। हिन्दी के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के लिए उचित पाठ्य पुस्तकों का निर्माण अति आवश्यक है।

इस आक्षेप के उत्तर में यही कहना उचित है कि शिक्षा एक भवन है जिसका निर्माण एक दिन में सम्भव नहीं होता। पाठ्य पुस्तकों एवं समायक पुस्तकों का अंग्रेज़ी से अनुवाद कराकर तैयार कराने की पूर्ण व्यवस्था हो चुकी है। यदि राज्य सरकारें इस पुण्य कार्य में उचित सहयोग दें तो यह कार्य और शीघ्रता से पूरा हो सकता है।

(3) क्या अनुवाद लाभकारी होगा ?—यह एक गल्त धारणा है, क्योंकि विदेशी भाषा के स्थान पर अपनी भाषा में अनुदित पुस्तकें पढ़ना कई गुना अच्छा है।

(4) विश्वविद्यालय के अध्यापक हिन्दी से अनभिज्ञ हैं—वह सत्य है कि विश्वविद्यालय के अध्यापक हिन्दी के माध्यम से पढ़ाने के लिए तैयार नहीं है। किन्तु यह आक्षेप भी निर्मूल है क्योंकि यदि अध्यापक हृदय से प्रयत्न करें तो अल्प समय में ही हिन्दी के माध्यम से पढ़ाने में समर्थ हो सकते हैं। इसके लिए वर्तमान पीढ़ी का प्रयत्न आने वाली पीढ़ी के लिए मार्ग खोल देगा।

(5) अंग्रेज़ी के विना शिक्षा का स्तर गिर जायेगा—पांचवा आक्षेप यह लगाया जाता है कि यदि अंग्रेज़ी हटा दी गई तो शिक्षा का स्तर गिर जायेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस आक्षेप में कोई बल नहीं है। यदि ऐसा होता तो जिन देशों में अंग्रेज़ी के स्थान पर उनकी राष्ट्र-भाषा शिक्षा का माध्यम है उनकी शिक्षा का स्तर क्यों नहीं गिरा। यह तो अध्यापकों के ऊपर निर्भर है कि वे चाहें तो स्तर गिरा दें अथवा उठा दें।

(6) हिन्दी कठिन भाषा—अगला आक्षेप यह है कि हिन्दी में संस्कृत के शब्दों की भरमार करके उसे इतना कठिन बना दिया है कि वह बोलचाल की भाषा से बहुत दूर हो गई है।

यद्यपि यह आक्षेप कुछ कुछ संत्य है किन्तु इसका _ किया जा सकता है। हमें उन विदेशी शब्दों को जोकि आम बोलचाल में रम गये हैं स्वीकार कर लेना चाहिए। इससे भाषा में अन्तर अवश्य होता है। अतः इस बात का ध्यान रखते हुए हम हिन्दी भाषा को सरल माध्यम बना सकते हैं।

(7) प्रादेशिक भाषाओं की अवनति—यह अन्तिम आक्षेप लगाया गया है कि हिन्दी यदि शिक्षा का माध्यम बना दी गई तो प्रादेशिक भाषाओं की उन्नति में बाधा उत्पन्न हो जायेगी तथा हिन्दी ही उन पर पूरी तरह छा जायेगी।

यह बात भी तथ्य हीन है। शिक्षा का माध्यम हिन्दी होने से छात्रों को राष्ट्र-भाषा के रूप में एक और भाषा का ज्ञान होगा तथा अन्य भाषा के सम्पर्क में आकर उस भाषा की भी वृद्धि होगी। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। हिन्दी तो केवल शिक्षा का माध्यम होगी वह प्रादेशिक भाषा का स्थान कभी नहीं ले सकती। अतः यह भय निर्मूल है।

हिन्दी ही शिक्षा का माध्यम होना चाहिए

(HINDI ALONE SHOULD BE THE MEDIUM OF INSTRUCTION)

उपर्युक्त विवेचन से यह ज्ञात हो जाता है कि निर्विवाद रूप से अंग्रेज़ी को हटा कर हिन्दी ही शिक्षा का माध्यम होना चाहिए। उत्तर प्रदेश, देहली, बिहार, मध्य-प्रदेश, राजस्थान, तथा हरियाणा प्रदेशों में मातृ-भाषा होने के कारण हिन्दी ही शिक्षा का माध्यम है। अन्य प्रदेशों को भी प्रान्तीयता की संकीर्ण भावना से ऊपर उठ कर इसका अनुकरण करना चाहिए।

जहां तक हाई स्कूल या प्राथमिक विद्यालयों का सम्बन्ध है वहां पर मातृ-भाषा के माध्यम में ही शिक्षा देना ठीक है। मातृ-भाषा के माध्यम से शिक्षा असानी से दी जा सकेगी क्योंकि बालकों को मातृ-भाषा से सरल और कोई कोई भाषा उसके मस्तिष्क के लिए भार स्वरूप ही होगी। साथ ही प्रादेशिक भाषा की शिक्षा भी उसके लिए अपूर्ण ही रह जायेगी।

किन्तु विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा का माध्यम हिन्दी ही होना चाहिए। उच्च शिक्षा के लिए प्रादेशिक भाषाएं सफल नहीं हो सकतीं तथा यह समान स्तर तथा देश की एकता के लिए भी खतरा सिद्ध होंगी। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी उन विश्वविद्यालयों को मान्यता नहीं दी जायेगी जहां पर कि प्रादेशिक भाषाएं शिक्षा का माध्यम होंगी। अतः सबसे अच्छा सुझाव यही है कि प्राथमिक तथा हाई-स्कूल की शिक्षा मातृ-भाषा के माध्यम से तथा विश्वविद्यालय की शिक्षा हिन्दी के माध्यम से दी जाये। तभी देश का कल्याण हो सकता है।

शिक्षा का माध्यम...अंग्रेज़ी

शिक्षा के माध्यम के रूप में तीन मत हैं—एक मत है कि अंग्रेज़ी ही शिक्षा का माध्यम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहे। दूसरा मत है कि प्रादेशिक भाषाएं शिक्षा का माध्यम हों। तीसरे मत के अनुसार राष्ट्र-भाषा हिन्दी को ही शिक्षा का माध्यम होना चाहिए।

इस मत का विरोध निम्न कारणों से है :—

(1) अंग्रेज़ी ज्ञान प्राप्ति का कठिन साधन है।
(2) अंग्रेज़ी को बनाये रखना प्रादेशिक भाषाओं के साथ विश्वासघात करना होगा।
(3) शिक्षा प्रसार में बाधक।
(4) हमारी संस्कृति से दूर।
(5) युवा शक्ति का ह्रास।

शिक्षा का माध्यम...प्रादेशिक भाषाएं

यह मत भी निम्न कारणों से अमान्य है।

(1) पारिभाषिक शब्दों का सभी भाषाओं में अनुवाद कठिन है।
(2) संकीर्ण प्रान्तीयता का पोषक।
(3) आदान-प्रदान में कठिनाई।
(4) विषमताओं को बढ़ाने वाला।
(5) अत्यन्त खर्चीला।
(6) असमान शिक्षा स्तर

शिक्षा का माध्यम...हिन्दी

हिन्दी को माध्यम बनाने के निम्नलिखित लाभ हैं :—

(1) राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक।
(2) एक स्तर के लिए आवश्यक।
(3) आदान-प्रदान सरल।
(4) राजकीय कर्मचारियों के लिए सुयमता।
(5) केन्द्रीय सरकार को लाभ।
(6) शोध कार्य में सरलता।

प्रश्नावली

1. हिन्दी शिक्षण की समस्याएं कौन-कौन सी हैं ? विस्तार से लिखिए।
2. हिन्दी शिक्षण की समस्याओं के समाधान के लिए आप क्या उपाय करेंगे ?
3. संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

□□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इकाई—II विधियां

UNIT – II (METHODS)

(1) अनुवाद विधि
(TRANSLATION METHOD)

(2) खेल विधि
(PLAY WAY METHOD)

(3) प्रत्यक्ष विधि
(DIRECT METHOD)

(4) संरचना उपागम
(STRUCTURAL APPROACH)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय – 4

आधुनिक हिन्दी शिक्षण-विधियाँ

(MODERN HINDI TEACHING METHODS)

विज्ञान ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रान्ति मचा दी है। शिक्षा भी इसके प्रभाव से मुक्त नहीं रही। आज वैज्ञानिक प्रयोगात्मक और मनोवैज्ञानिक खोजों के आधार पर शिक्षा और शिक्षण विधियों को एक नया रूप मिल गया है। अब अध्यापक शिक्षा का एकमात्र केन्द्र न रह कर वह केवल एक अंग रह गया है। शिक्षा अब न तो शिक्षक केन्द्रित है, न विषय केन्द्रित बल्कि अब शिक्षा का केन्द्र बालक है। जान ड्यूवी का यह कथन कि **शिक्षा जीवन के अनुभवों के माध्यम से जीवन की तैयारी है** ("Education is the preparation for life through life experience"-John Dewey) पूर्णतः सत्य उतरता है। अब पुस्तक कण्ठस्थ करा कर कुछ सूत्र या पाठ्य सामग्री को केवल रटा देना शिक्षा नहीं माना जाता, बल्कि शिक्षा देते हुए शिक्षक को यह भी देखना होता है कि जो कुछ पढ़ाया जा रहा है वह जीवन के लिए उपयोगी भी है या नहीं। वह बच्चों की रुचि के अनुकूल भी हैं अथवा नहीं।

इन सब मनोवैज्ञानिक तथ्यों को ध्यान में रखते हुए पिछले 150 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक खोजों तथा प्रयोगों के आधार पर कुछ शिक्षण प्रणालियों का जन्म हुआ है। इन शिक्षण विधियों को ही नवीन शिक्षण पद्धतियों के नाम से पुकारा जाता है। नवीन प्रयोगों के आधार पर जो पद्धतियां आज शिक्षा जगत में अपनी महत्ता तथा गुणों के बल पर स्थान बनाए हुए हैं उनमें मुख्यतः हैं—

- प्रत्यक्ष विधि
- खेल विधि
- अनुवाद विधि
- संरचना विधि
- प्रोजेक्ट विधि
- बालोद्यान विधि
- मान्टेसरी विधि
- डाल्टन विधि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- बेसिक विधि
- क्रिडा विधि

'प्रोजेक्ट पद्धति', 'बालोद्यान पद्धति', 'मान्टेसरी पद्धति', 'डाल्टन पद्धति', बेसिक पद्धति।

भाषा शिक्षण के क्षेत्र में इन नवीन शिक्षण पद्धतियों की उपयोगिता सर्वविदित है। शिक्षण पद्धतियों को हिन्दी भाषा-शिक्षण में कैसे अपनाया जा सकता है। यही इस अध्याय का मुख्य विषय है। आज की शिक्षा बाल केन्द्रित, क्रियाशील, वास्तविक जीवन से सम्बन्धित, सामाजिक जीवन से सम्बन्धित, उपयोगी पाठ्यक्रम तथा मनोवैज्ञानिक आधार जैसे नवीन सिद्धान्तों पर आधारित है। इन सभी पद्धतियों में मूलतः अन्तर अवश्य है किन्तु इन सिद्धान्तों का सभी पद्धतियों में समान रूप से पालन किया गया है। अतः भिन्नता होते हुए भी सबमें समानता है। प्रत्येक विधि की क्रमशः व्याख्या की गई है :—

1. प्रत्यक्ष पद्धति
(DIRECT METHOD)

भाषा-शिक्षण की यह एक आधुनिक विधि है। इस विधि को निर्बाध विधि भी कहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी भी भाषा को उसी के माध्यम से सिखाया जाए। मातृभाषा अथवा प्रादेशिक भाषा जैसे अनावश्यक माध्यम का आश्रय न लिया जाए। इसमें शब्द का वस्तु अथवा भाव के साथ सीधा सम्बन्ध रखा जाता है। यूरोप में ग्रीक तथा लेटिन के शिक्षण में इस विधि ने अभूतपूर्व सफलता पाई थी। अतः हिन्दी शिक्षण के सम्बन्ध में भी यह माना जाता है कि प्रत्यक्ष पद्धति के द्वारा छात्रों को शीघ्र पारंगत कर सकते हैं।

उद्देश्य—

(1) मातृभाषा, अंग्रेज़ी अथवा कोई अन्य प्रादेशिक भाषा के माध्यम के बिना ही हिन्दी-शिक्षण कराया जाए।

(2) इस विधि का मुख्य उद्देश्य है कि छात्र हिन्दी में ही चिन्तन करे। सर्वप्रथम प्रादेशिक भाषा में सोचना पुनः हिन्दी में अनुवाद करके लिखना या बोलना अनुचित है। यहां प्रयास यह होना चाहिए कि छात्रों को हम इस योग्य बना दें कि वे धारा प्रवाह हिन्दी में अपने विचारों को व्यक्त कर सकें।

(3) इसमें वस्तु तथा शब्द का प्रत्यक्ष सम्बन्ध बनाया जाता है। क्लिष्ट शब्दों की व्याख्या के लिए प्रादेशिक भाषा का पूर्णतः बहिष्कार करके इस प्रयोजन हेतु स्थूल वस्तुओं का प्रदर्शन, हाव-भाव के अभिनय तथा पर्यायवाची शब्दावली का प्रयोग किया जाता है।

(4) जिस प्रकार विद्यार्थी प्रादेशिक भाषा एवं मातृभाषा सीखता है उसी प्रकार स्वाभाविक वातावरण में हिन्दी भी सीख जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(5) वह शिक्षण प्रभावशाली माना गया है जिसमें अधिक ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग हो। नेत्रों की अपेक्षा जिह्वा व श्रवणेन्द्रिय अधिक प्रबल हैं। इस विधि में इसी नियम का आश्रयण किया जाता है। अतः इस विधि में मौखिक कार्य पर अधिक बल दिया जाता है जो हिन्दी शिक्षण की प्रथम शर्त है।

(6) प्रत्यक्ष पद्धति द्वारा हिन्दीमय वातावरण का निर्माण किया जा सकता है।

ण—

(1) हिन्दी शिक्षणं की यह त्वरित विधि है। कुछ ही मास के परिश्रम से छात्रों का पर्याप्त शब्दकोश तैयार हो जाता है। किसी भी भाषा को उसी भाषा के माध्यम से सुगमतापूर्वक सीखा जा सकता है।

(2) इसमें अध्यापक व छात्रों के मध्य सतत सक्रियता बनी रहती है। अतः कक्षा का वातावरण सजीव रहता है।

(3) भाषा शिक्षण में क्रमानुसार श्रवण, वदन, पठन व लेखन आते हैं। इस विधि में इस नियम का पूर्णतया पालन किया जाता है। अतः इसमें छात्र हिन्दी के शुद्ध उच्चारण में अभ्यस्त हो जाते हैं। उसके कान व जिह्वा प्रशिक्षित हो जाते हैं।

(4) यह विधि छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति को सशक्त बनाती है जो उनके भावी जीवन में आने वाले अध्यापन, वकालत, प्रचारक जैसे व्यवसायों में सहायक होती है।

(5) यह विधि व्याकरण तथा अनुवाद की समस्त रटन्त प्रणाली का निराकरण करने में सक्षम है क्योंकि इसमें सभी शुष्क नियमों का परित्याग करके शुद्ध रूप का पुनः अभ्यास करवाया जाता है।

(6) प्रत्यक्ष विधि में स्वाभाविक वातावरण के निर्माण पर अधिक बल दिया जाता है। शिक्षण-सूत्रों का पालन किया जाता है। अतः यह रोचक, क्रियाशील, उपयोगी विधि है।

सीमाएं—कुछ भाषाविदों को इसके प्रत्यक्ष व निर्बाध नाम पर आपत्ति है क्योंकि थोड़ी वस्तुओं व क्रियाओं का ही सीधे शब्द के साथ सम्बन्ध हो सकता है।

1. अध्यापक को पर्याय रूपों की व्याख्या तथा परिभाषाओं का अवलम्बन करना ही पड़ता है जैसे बड़वानल, भागीरथी आदि शब्दों की व्याख्या केवल वस्तु, क्रिया अथवा भाव भंगिमा द्वारा सम्भव नहीं है।
2. इस विधि में वार्तालाप का व्यापक प्रयोग होता है, ऐसी स्थिति मे बुद्धिमान छात्र ही कक्षा कार्य पर छाए रहते हैं। साधारण व मन्दबुद्धि बालक अधिक लाभ नहीं प्राप्त कर सकते।
3. यह विधि समय साध्य है। प्रारम्भिक अवस्था में तो यह लाभप्रद है किन्तु उच्च स्तर पर हिन्दी शिक्षण के समय दीर्घ व्याख्याओं की आवश्यकता पड़ती है। वहां प्रादेशिक भाषा के माध्यम का आश्रयण करना ही पड़ता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. प्रत्यक्ष विधि में छात्रों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाना आवश्यक है। छात्रों की अत्यधिक संख्या के कारण यह विधि अधिक उपयोगी नहीं है।
5. हिन्दी भाषी क्षेत्रों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों के अध्यापकों की भी अपनी कमि सीमाएं हैं। उनका हिन्दी बोलने का पर्याप्त अभ्यास नहीं होता अतः प्रारम्भिक वार्ता तो हम कर सकते हैं किन्तु इसी भाषा के माध्यम में हर विषय पढ़ाना पर्याप्त क है। तो अध्यापक द्वारा अधिक श्रम व समय का व्यय अपेक्षित है।

निष्कर्ष—हिन्दी शिक्षण की प्रत्यक्ष विधि की उपयुक्त सीमाओं को दृष्टिगत रखते हुए, निष्कर्ष सुगमतापूर्वक निकलता है कि इसे भी एक पूर्ण विधि की संज्ञा नहीं दी जा सक हिन्दी-भाषी क्षेत्रों को छोड़कर अन्य कक्षाओं में हिन्दीमय वातावरण का निर्माण कठिन परन्तु इसकी लाभदायक विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए इस विधि की नितान्त उपेक्ष उचित नहीं। अहिन्दी भाषी व हिन्दी भाषी सभी प्रदेशों में हिन्दी शिक्षण प्रारम्भ करने प्राथमिक कक्षाओं में यह विधि बड़ी उपयोगी है। अध्यापक और विद्यार्थियों के समवेत प्र द्वारा सीमित हिन्दीमय वातावरण बनाया जा सकता है। छात्रों को प्रारम्भ से ही सुदृढ़ शब्द का आधार दिया जा सकता है।

2. खेल-विधि
(PLAYWAY METHOD)

खेल-विधि का अर्थ है बच्चे को खेल विधि द्वारा शिक्षण देना। भारतीय वाङ्मय में प्रणाली बड़ी प्राचीन है। हमारे यहाँ जब शिक्षण मुख्यता मौखिक हुआ करता था तो क कथन एवं नाटकीकरण द्वारा शिक्षण का अत्यन्त महत्त्व था। महिलारोप्य नगरी के राजा शक्ति के अशिक्षित पुत्रों को शिक्षित करने के लिए निमित्त विष्णुशर्मा ने कहानी कथन आश्रय लिया था क्योंकि उनके अनुसार सीधे उपदेशों एवं पाठों से बच्चे घबरा जाते हैं। आध्या तत्त्वों एवं नीतिगत बातों को कथांशों द्वारा सरलता से समझाया जा सकता है। गुरु गृ खेले जाने वाले नाटकों के द्वारा जीवनोपयोगी शिक्षा सहजता से दी जाती थी। इन्हीं अ में नाटकों के द्वारा आखेट व रणक्षेत्र में काम आने वाले अस्त्र-शस्त्र के परिचालन का शि दिया जाता रहा है।

आधुनिक युग में हेनरी कॉलबेल कुक ने सर्वप्रथम भाषा-शिक्षण के लिए खेल वि महत्त्व को स्वीकार किया है। उन्होंने प्ले वे नामक स्वरचित पुस्तक में उल्लेख किया कि अं भाषा एवं साहित्य पढ़ाने के लिए विषय-वस्तु को नाटक एवं वाद-विवाद के तौर पर रखा तो बच्चे रुचिपूर्वक भाषा सीख जाएंगे। आधुनिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण के लिए विधि का सर्वत्र अनुमोदन किया जाता है। इसका प्रयोग फ्रोवेल, डी.वी. मॉटिसरी हेलन प ने अपनी भाषाओं के शिक्षण में किया है :

उद्देश्य

1. हिन्दी भाषा शिक्षण को मनोवैज्ञानिक ढंग से सफल बनाना।
2. छात्रों की स्वाभाविक रुचियों का शिक्षण में प्रयोग करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. व्याकरण के शुष्क एवं दुररूह प्रयोगों का परिहार करके रुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करना।
4. हिन्दी भाषा-शिक्षण में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा विषय वस्तु को प्रस्तुत करना।
5. भाषा-शिक्षण को आनन्ददायक व रुचिपूर्ण क्रिया बनाना।
6. हिन्दी भाषा में छात्रों की मौखिक-अभिव्यक्ति को सशक्त बनाना।

प्रक्रिया

खेल विधि के अनेक आयाम हैं। किन्तु शिक्षण में कोई भी क्रिया खेल की क्रिया तभी हो सकती है जब वह बच्चे की स्वाभाविक रुचि (बातचीत, मौखिक व सृजनात्मक अभिवृत्ति) के अनुरूप हो। छात्रों को उन क्रियाओं को स्वतन्त्रतापूर्वक पूर्ण करने के लिए सहज वातावरण मिले, तभी उसको सम्पन्न करने में वे अपना उत्तरदायित्व महसूस करेंगे। इस प्रक्रिया में वे मानसिक व शारीरिक थकान से बचे रहेंगे, कार्य को विवशता से वे बाध्य नहीं होंगे। हिन्दी शिक्षण में हम फ्रोबेल, मॉंटिसरी, डाल्टन आदि द्वारा निर्देशित खेलों का प्रयोग कर सकते हैं। पाठान्तर क्रियाओं जैसे बालचर संस्था, विद्यालय पत्रिका, विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगिताएँ, कृत्रिम संसद, कृत्रिम न्यायालय, कृत्रिम चुनाव आदि के द्वारा हम खेल-खेल में छात्रों को महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रभावी ढंग से दे सकते हैं। अंकों की जानकारी के लिए गोले व डण्डी का सहारा ले सकते हैं। अक्षर ज्ञान के लिए फ्लैश कार्ड का प्रयोग कर सकते हैं। हिन्दी कविताओं को रटने के बजाय शब्दान्तक्षरी द्वारा रुचिपूर्ण ढंग से सिखा सकते हैं।

गुण

1. हिन्दी-शिक्षण की खेल विधि अत्यन्त सफल विधि हैं क्योंकि यह मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों, रुचि, स्वतन्त्रता, क्रियाशीलता पर आधारित है।
2. घूमने फिरने, जोड़ने-तोड़ने में बच्चे की स्वाभाविक रुचि होती है। यह विधि इन स्वाभाविक वृत्तियों से लाभ उठाती है। अतः खेल विधि रुचिकर विधि है।
3. मौखिक अभिव्यक्ति में किसी प्रकार का अवरोध हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए अहितकर हैं। इस विधि में ऐसे अवरोधों के परिहार की व्यवस्था की जाती है।
4. सौन्दर्यानुभूति का उद्देश्य हिन्दी भाषा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। खेल विधि द्वारा इस उद्देश्य की पूर्ति सफलतापूर्वक की जा सकती है।
5. खेल-विधि द्वारा शिक्षित छात्र अध्यापन, वकालत, अभिनय, गायन आदि व्यवसायों को सफलतापूर्वक कर सकते हैं।
6. विभिन्न साहित्यिक क्रियाओं के संगठन के अवसर देकर हम छात्रों को भावी जीवन के लिए तैयार करते हैं।

सीमाएँ

1. खेल विधि में छात्रों के लिए अत्यधिक स्वतन्त्रता की आवश्यकता रहती है जिससे अनुशासनहीनता का भय बना रहता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. खेलों की संख्या अनन्त है। हमारे यहाँ स्तर के अनुसार खेलों सम्बन्धी पाठ्यक्र सहजता से उपलब्ध नहीं है।
3. हिन्दी-शिक्षण में खेल विधि से पढ़ाते समय अध्यापक का रुचिपूर्ण व्यक्तित्व हो आवश्यक है जो सर्वत्र सुलभ नहीं है।
4. खेल-विधि में प्रयुक्त खेल बहुधा खेल बनकर ही रह जाते हैं उनका शैक्षिक मह गौण हो जाता है।
5. खेल-विधि द्वारा हिन्दी भाषा में नैपुण्य के लिए पर्याप्त समय की आवश्यक रहती है। हमारे भारतीय विद्यालयों में हिन्दी भाषा को दिए गए कालांश इस लिए पर्याप्त नहीं हैं।
6. प्रत्येक छात्र की स्वाभाविक वृत्तियाँ, रुचियाँ, आदि मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ भि होती हैं। ऐसे में अनेकों प्रकार की खेल क्रियाएँ समानान्तर चलनी चाहिएं जो विद्याल में प्रायोगिक दृष्टि से सम्भव नहीं हैं।
7. उच्च स्तर पर गहन शिक्षण व स्वाध्याय के समय यह विधि अतिरिक्त लाभ न दे पाती।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि भाषा-शिक्षण में खेल विधि जैसे मनोवैज्ञानिक वि के लाभ निर्विवाद हैं। हिन्दी जैसी लोकप्रिय भाषा जिसका अत्यन्त समृद्ध साहित्य है, में ह अपने छात्रों के लिए खेल के अनेक अवसर उपलब्ध करवा सकते हैं। भाषा-शिक्षण का स्वाभावि क्रम सुनना, बोलना पढ़ना तथा लिखना है—खेल विधि द्वारा इस क्रम का अक्षरशः पालन हो है जो हिन्दी भाषा में बच्चे के स्वाभाविक विकास को सुनिश्चित करता है। आधुनिक सम में जब शिक्षण में यान्त्रिकता सी आती जा रही है तब यदि हमें छात्रों में सहृदयता विकसि करनी है तो सौन्दर्यानुभूति का प्रशिक्षण खेल विधि द्वारा दिया जा सकता है। उचित संवा यथावसर मुहावरों का प्रयोग, पहेलियाँ बूझना, सुन्दर सूक्तियों के माध्यम से अपनी बात कह और भावपूर्ण अभिव्यक्ति खेल विधि द्वारा सार्थक की जा सकती है।

3. अनुवाद-विधि
(TRANSLATION METHOD)

किसी एक भाषा में अभिव्यक्त विचारों या भावों को दूसरी भाषा में रूपान्तरण अनुवा कहलाता है। इस क्रिया द्वारा हिन्दी शिक्षण करवाया जा सकता है, बशर्ते अध्यापक को हिन्द एवं रूपान्तरित होने वाली भाषा (मातृभाषा व प्रादेशिक भाषा) में प्रयुक्त होने वाले शब्द, अ एवं भाव का स्पष्ट ज्ञान हो। हिन्दी-शिक्षण की यह सुगम एवं सरल विधि है। इसमें वाच के पश्चात् अध्यापक द्वारा पठित गद्यांश व पद्यांश के कलिष्ट शब्दों के अनूदित अंश श्यामप पर लिख दिए जाते हैं। छात्र कठिन शब्दों के अर्थ, एवं अन्य अनूदित अंशों को अपनी उत्तरपुस्तिक में लिख लेता है। इस लिखित सामग्री की सहायता से छात्र हिन्दी विषय में संग्रहीत विषय-साम को ग्रहण करता है। इससे छात्रों के शब्द भंडार में वृद्धि होती है। ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पश्चात् वे स्वयं भी हिन्दी विषय को समझने में सक्षम हो जाते हैं। इस विधि को सफल बनाने के लिए कठिन शब्दों की अनुसूची प्रत्येक पाठ के प्रारम्भ अथवा अन्त में और पाठ्य-पुस्तक के अन्त में वर्णक्रमानुसार दी जाती है। कभी-कभी अध्यापक कोष से शब्दों के अर्थ ग्रहण का सुझाव भी देते हैं। हिन्दी में अनुवाद विधि के निम्नलिखित उद्देश्य हैं।

उद्देश्य—

1. छात्रों के शब्द-भण्डार में वृद्धि करना।
2. अनुवाद की प्रक्रिया द्वारा हिन्दी भाषा और मातृभाषा (प्रादेशिक भाषा) में सामीप्य उत्पन्न करना और फलस्वरूप हिन्दी-शिक्षण की गति को तीव्र करना।
3. अनुवाद विधि के द्वारा हिन्दी शिक्षण को रोचक सुग्राह्य व सरल बनाना।
4. हिन्दी-साहित्य को अन्य आधुनिक भाषाओं के साहित्य से समृद्ध करना।
5. छात्रों को विभिन्न भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन के अवसर उपलब्ध करवाना।
6. हिन्दी-भाषा में ग्रहण तथा अभिव्यक्ति के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रयास करना।

प्रक्रिया

छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप पाठ्यक्रम में निर्धारित गद्य या पद्य का चयन करके उसका हिन्दी से मातृभाषा में अनुवाद करके विषय-वस्तु का बोध करवाया जाता है। प्रारंभिक स्तर पर छात्रों की हिन्दी शब्दावली सीमित होती है। अतः इस स्तर पर उनकी बोल-चाल की प्रादेशिक अथवा आँचलिक भाषा के शब्दों से अनुवाद के लिए शब्द चुने जाते हैं। छोटे-छोटे सरल वाक्यों की सहायता से बच्चों का हिन्दी ज्ञान बढ़ाया जाता है। बच्चे अध्यापक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखी विषय-सामग्री को उत्तर पुस्तिका में लिखता है। हिन्दी भाषा के शब्दों के स्थान पर समानार्थक दूसरी भाषा के शब्दों को रखा जाता है। इसके साथ ही प्रयास किया जाता है कि हिन्दी भाषा के मूल भाव तथा शैली को ज्यों का त्यों प्रेषित किया जा सके। इसके लिए अध्यापक को सरलतम शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों में विषय-सामग्री सरल से कठन और ज्ञात से अज्ञात की ओर गमन के नियम को ध्यान में रखकर संजोई होती है तो अध्यापक को भी उसी क्रम का अनुगमन करना चाहिए। क्योंकि छात्रों को इन पाठों को बार-बार पढ़कर अभ्यास करना होता है। इससे अनुवाद विधि को सफल बनाया जा सकता है।

गुण

1. यह अध्यापकों की सुर्वप्रिय विधि है क्योंकि इसमें नवीन शब्दों और वाक्यों खण्डों को अनूदित करके छात्रों की मातृभाषा में लिखना होता है जो अध्यापक के लिए सरल कार्य है।
2. छात्रों को एक से अधिक भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन का अवसर मिलता है। इस्से उनकी निर्णय क्षमता व विवेक विकसित होते हैं।
3. इस विधि द्वारा प्रशिक्षण के पश्चात् विद्यार्थी कोष आदि का सहारा लेकर उच्च-स्तर पर स्वयं ही अध्ययन करने लगते हैं।
4. नवीन संग्रहीत शब्दावली से दोनों भाषाओं के अनेक शब्द बच्चे को अनायास ही स्मरण हो जाते हैं जिन्हें यह जीवन में आवश्यकतानुसार प्रयोग कर सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. अनुवाद-विधि से छात्रों में हिन्दी लेखन की क्षमता उत्पन्न होती है।
6. यह विधि प्रारम्भिक स्तर से ही हिन्दी भाषा के छात्रों में बोध शक्ति जागृत करने में सक्षम है।

सीमाएँ

1. हिन्दी से मातृभाषा अथवा प्रादेशिक भाषा में अनुवाद करने की विधि शिक्षण की पूर्ण विधि नहीं है क्योंकि समानार्थी शब्दों को जान लेने के उपरान्त भी बच्चे द्वारा उन शब्दों के प्रयोग को सुनिश्चित नहीं किया जा सकता।
2. अनुवाद करना अध्यापकों की लोकप्रिय विधि है। इसलिए वे हिन्दी-शिक्षण में अन सहायक या पूरक विधियों की उपेक्षा करते हैं जिनमें अधिक श्रम शक्ति व समय की आवश्यकता होती है।
3. इस विधि द्वारा सम्भव है छात्र हिन्दी से मातृभाषा में अनूदित अंश से शब्दों की व्युत्पत्ति तथा वास्तविक तात्पर्य न समझ सकें—
   जैसे बड़वानल, अव्यक्त जैसे अनेकों शब्द अनुवाद के अतिरिक्त व्याख्या के लि प्रयासों की अपेक्षा भी रखते हैं।
4. व्याकरण सम्बन्धी जटिलताओं के स्पष्टीकरण के लिए अनुवाद के अतिरिक्त भी व्याख्या करनी पड़ती है जो इस विधि द्वारा असम्भव है। अतः व्याकरण के ज्ञान का अभाव रहता है।
5. यह विधि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के विपरीत है क्योंकि इसमें छात्र निष्क्रिय रहते हैं। अध्यापक क्रियाओं का अनुगमन मात्र, कक्षा-शिक्षण में यान्त्रिकता सी ला देता है।
6. शब्दों के स्वभाषा में पर्याय रूपों का लेखन एवं स्मरण करना छात्रों में रहने की प्रवृत्ति का विकास करता है जो प्रभावी शिक्षण के विरुद्ध है।
7. अनुवाद कसीदाकारी का उल्टा रूप माना गया है। अध्यापक के यथेष्ट प्रयास के उपरान्त भी भाव एवं शैली की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं हो पाती। अतः हिन्दी कवि व लेखक जो कहना चाहता है वह शत प्रतिशत अनुवाद के माध्यम से प्रेषित नहीं हो सकता।
8. शब्दों के समानार्थी शब्दों के चयन, लेखन, स्मरण से सौन्दर्यानुभूति में व्यवधान उपस्थित होता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दी-शिक्षण की अनेक विधियों में अनुवाद-विधि एक ऐसी विधि है जिसे हम पूर्ण नहीं कह सकते। प्रारम्भिक स्तर पर निर्बाध विधि व संरचनात्मक उपागम अधिक लाभदायक है। माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर अनुवाद-विधि को हम एक सहायक अथवा पूरक विधि के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। तुलनात्मक भाषा अध्ययन एवं स्वाध्याय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लिए इस विधि के कई लाभ हैं। अतः अनुवाद-विधि का प्रयोग हिन्दी शिक्षण के लिए अपेक्षित है।

4. संरचनात्मक उपागम
(STRUCTURAL APPROACH)

उपागम का अर्थ है उप + आगम, समीप आना अर्थात् ऐसी विधि जो हमें भाषा के नज़दीक लाए। संरचना का अर्थ है बनावट। हर भाषा में वाक्यों की, शब्दों की, एक आवृत्ति, एक क्रम होता है। वह क्रम जितना व्यवस्थित होगा उतना ही हम भाषा से निर्वाह कर पाएँगे। क्रम बदलने पर अर्थ में, भाव में परिवर्तन अवश्यम्भावी है जैसे—राम ने रावण को बाण से मारा।

बाण ने राम को रावण से मारा।

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि वाक्य संरचना में व्यवस्थित क्रम से छेड़छाड़ करने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है अथवा अर्थ निकलता ही नहीं। दैनिक जीवन में एक शब्द से लेकर कई शब्दों की ऐसी संरचनाओं का हम नित्य प्रयोग करते हैं। जैसे केवल हाँ अथवा न का अर्थ है आप आ सकते हैं आप नहीं कर सकते।

आँखें उठाकर कहें अब (अर्थात् अग्रिम कार्य शैली क्या होगी)।

धन्यवाद, तो, फिर, बस

कुछ दीर्घ संरचनाएं जैसे अभी आप ठहरिए, नेकी और पूछ पूछ, शोक से, हाँ हाँ-करो तो सही।

भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में इन संरचनाओं का बड़ा महत्त्व है। इस विधि के द्वारा हम छात्रों के दैनिक जीवन से अनेक क्रियाओं का चयन करके हिन्दी शिक्षण करवा सकते हैं। इससे अहिन्दी भाषी प्रदेशों के छात्रों की कक्षाओं में भी हिन्दीमय वातावरण का निर्माण किया जा सकता है।

इसी अध्याय में हमने Direct Method अर्थात् निर्बाध विधि अथवा मौखिक विधि का अध्ययन किया हैं। प्रत्येक विधि की भाँति उसकी उपयोगिता भी सीमित है। हिन्दी शिक्षण में अनेक सीमाओं के उपरान्त भी यह एक द्रुत विधि है। इस विधि को सफलत्तम बनाने के लिए एक नया उपागम प्रारम्भ हुआ है जिसका नाम है संरचनात्मक उपागम।

संरचना की परिभाषा—किसी भी वाक्य खण्ड में पदों के रूप तथा क्रम को संरचना कहते हैं। इसके अन्तर्गत हैं—

1. पदों का क्रम से व्यवस्थापन।
2. उपसर्ग, प्रत्यय आदि अव्ययों का प्रयोग।
3. समास विभक्तियों के प्रयोग।

1. पदों का क्रम से व्यवस्थापन—सभी भाषाओं में पदों का अपना एक क्रम होता है। किसी छोटे से अंग्रेजी वाक्य में पदों को कर्ता, क्रिया व कर्म में व्यवस्थित किया गया है। परन्तु हिन्दी में यह क्रम कर्ता कर्म और क्रिया इस प्रकार होता है। **Ram killed Ravna**

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंग्रेजी में सही शब्द क्रम है। यदि यह क्रम बदल जाए तो अंग्रेजी वाक्य में Ravna killed Ram हो जाएगा। हिन्दी में भी ऐसी सम्भावना है। इस प्रकार हिन्दी शिक्षण में पदों का क्रमगत रूप से शिक्षण नितान्त आवश्यक है।

2. उपसर्ग, प्रत्यय आदि अव्ययों का प्रयोग—संस्कृत और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में उपसर्ग, प्रत्ययों और अपव्ययों के प्रयोग के निश्चित नियम हैं। मूल शब्द के साथ अनेक उपसर्ग लगाने से अनेक शब्द बनते हैं जैसे आहार, विहार, उपहार, निराहार आदि। इसी प्रकार तद्धित और कृदन्त प्रत्ययों के भी विशेष प्रयोग हैं। हिन्दी भाषा के छात्रों के लिए अपने शब्द भण्डार वृद्धि के निमित्त इन अव्ययों आदि से युक्त संरचनाओं का अभ्यास आवश्यक है।

समास विभक्तियों के प्रयोग—अंग्रेजी भाषा में कर्ता, कर्म, करण नामक विभक्तियाँ संज्ञा शब्दों के साथ युक्त कर दी जाती हैं और क्रिया शब्दों के साथ काल, वचन, पुरुष आदि का ज्ञान कराने के लिए सहकर्मी शब्द जोड़े जाते हैं। हिन्दी में भी संज्ञाओं, विशेषणों, सर्वनामों, संख्यावाचक शब्दों और क्रियाओं के साथ विभक्तियाँ जोड़ी जाती हैं। इनसे भाषा में अनेक संरचनाओं को निर्मित किया जा सकता है। यही हमारी हिन्दी भाषा की शब्द शक्ति है ... से—प्रातिपदिकों के सुप् विभक्तियों के मेल से जो व्युत्पादक तत्त्व हैं वे हैं—लिंग वचन एवं कारक। हिन्दी में स्त्री लिंग, पुल्लिग—दो लिंग, एक वचन, बहु वचन—दो ही वचन और कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध अभिकरण और सम्बोधन आठ कारक हैं। अतः पुल्लिंग प्रातिपदिक के साथ दो 'वचन' आठ (कारक) अर्थात् 16 विभक्तियाँ जुड़ जाती हैं। इन विभक्तियों से 16 संरचनाएं बन जाती हैं। हिन्दी शिक्षण करवाते समय इस प्रकार का सुदृढ़ आधार प्रदान करके हम अनेक संरचनाओं की सम्भावना की आशा रख सकते हैं।

संरचनात्मक विधि के उद्देश्य

1. अभ्यास एवं पुनरावृत्ति की सहायता से विद्यार्थियों में हिन्दी शिक्षण की नींव को सुदृढ़ता प्रदान करना।
2. छात्रों की शब्द-शक्ति में वृद्धि एतर्थ हिन्दी भाषा में निपुणता प्राप्त करना।
3. संरचनाओं के अध्ययन तथा प्रयोग द्वारा व्याकरण तथा रचनाओं की तुलना प्रस्तुत करना।
4. हिन्दी भाषा के चार मौलिक कौशलों श्रवण, भाषण, पठन, लेखन का सामान्य ज्ञान देना।
5. मौखिक अभिव्यक्ति के महत्त्व को समझते हुए उस पर अत्यधिक बल देना।
6. बच्चों को शुद्ध भाषा के अभ्यास द्वारा शुद्ध उच्चारण के लिए प्रेरित करना।
7. छात्रों की हिन्दी शिक्षण के दौरान सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना।

प्रक्रिया

सर्वप्रथम अध्यापक द्वारा ऐसी संरचनाओं का चयन किया जाता है जो छात्रों के दैनिक जीवन से सम्बद्ध हों। इनमें साधारण वाक्य औपचारिक शब्द समूह जैसे (धन्यवाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बात नहीं, अच्छा फिर) हो सकते हैं या फिर मुहावरे कहावतें आदि हो सकते हैं। इसके पश्चात् स्वाभाविक कक्षीय वातावरण में संरचनाओं की प्रस्तुति छात्रों के सम्मुख की जाती है। छात्रों का सक्रिय सहयोग लिया जाता है। एक संरचना का श्रवण, भाषण, पठन, लेखन की दृष्टि से क्रमानुसार अभ्यास करवाया जाता है। संरचना मे नैपुण्य को सुनिश्चित किया जाता है। मौखिक अभ्यास पर अत्यधिक बल दिए जाने के कारण यह भाषा-शिक्षण में प्रभावी रहता है।

गुण

1. यह मनोवैज्ञानिक विधि है क्योंकि इसमें छात्र निष्क्रिय श्रोता न रहकर सक्रिय भागीदार होते हैं।
2. हिन्दी भाषा में प्रवाहपूर्ण व्याख्यान के लिए यह विधि छात्रों को तैयार करती है।
3. इससे छात्रों में सृजनात्मक शिक्षण को बढ़ावा मिलता है क्योंकि छात्र स्वयंमेव अनेक ऐसी संरचनाएं करने में सक्षम बन जाते हैं।
4. इस विधि से सीखी गई विषय-वस्तु छात्र भली भाँति आत्मसात् कर लेते हैं क्योंकि उन्हें विशिष्ट वातावरण में यह शिक्षण करवाया जाता है।
5. इस विधि से छात्रों का भाषा पर अत्यधिक नियन्त्रण हो जाता है क्योंकि पुनः पुनः अभ्यास छात्रों के उच्चारण में शुद्धता लाता है।
6. हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए अनिवार्य है कि सभी भाषाई कौशलों पर समान अनुपात में बल दिया जाए। इस विधि में श्रवण, वाचन, पठन और लेखन पर समान रूप से बल दिया जाता है जो श्रेष्ठ परिणाम प्रदान करता है।
7. इस विधि में कक्षा के सभी छात्रों पर समान रूप से ध्यान दिया जा सकता है। यहाँ तक कि पिछड़े हुए और धीमी गति से सीखने वाले छात्रों के लिए भी विशेष प्रयास किए जा सकते हैं।

सीमाएँ

1. संरचनाओं का चयन, निर्माण और अभ्यास अत्यधिक परिश्रम, समय एवं शक्ति के व्यय की अपेक्षा रखता है जो हमारी आज की समय सारणी एवं कक्षागत वातावरण में व्यावहारिक नहीं है।
2. पुनः पुनः अभ्यास से कक्षा का वातावरण उबाऊ एवं यान्त्रिक सा बन जाता है।
3. संरचनात्मक विधि तभी सफल हो सकती है जब हम पाठ्यक्रम में उसके अनुरूप विषय-सामग्री रखें।
4. इस विधि में अध्यापक की अधिक मेहनत, निष्ठा, समय, अपेक्षित है जिसका अकसर अभाव देखा गया है।
5. सभी प्रकार के विषयों को संरचनाओं के द्वारा नहीं पढ़ाया जा सकता, विशेषकर उच्च स्तर पर जब विषय गम्भीर एवं व्यापक हो जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निष्कर्ष

इस प्रकार हमने देखा कि संरचनात्मक विधि हिन्दी-शिक्षण की एक सशक्त विधि है यह हिन्दी शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए अध्यापक के पास शक्तिशाली यन्त्र है। आवश्यकता है अध्यापक की निष्ठा, परिश्रम एवं भाषा-सागर से संरचनाओं के उपयुक्त चयन की। इ विधि द्वारा हिन्दी-शिक्षण की परम्परागत विधियों में सुधार लाया जा सकता है। इससे ह अपने शिक्षण में व्यवस्था, विभिन्नता सक्रियता, स्थायित्व तथा जीवन्तता ला सकते हैं।

5. प्रोजेक्ट या योजना पद्धति
(Project Method)

जान ड्यूवी के प्रयोजनावाद (Pragmatism) के सिद्धान्तों से प्रभावित इस विधि का आविष्कार उनके शिष्य श्री किलपैट्रिक ने किया। उनके अनुसार "योजना वह सहृदय उद्दे पूर्ण कार्य है जो पूर्ण लगन से सामाजिक वातावरण में किया जाता है।" प्रो॰ स्टीवेन्सन अनुसार "योजना एक समस्यामूलक कार्य है जो अपनी स्वाभाविक परिस्थितियों के अन्त पूर्णता को प्राप्त करता है।" ("Project is a problematic act carried to completi in its natural setting" Prof Stevenson) योजना पद्धति का उद्देश्य विद्यालय, पा क्रम तथा विषय सामग्री में समन्वय स्थापित करना होता है तथा यह पद्धति विद्यालय के सम कार्य-कलापों का केन्द्र बालक को मानती है। इससे बच्चों को स्वतंत्रतापूर्वक सोचने, व तथा पढ़ने के अवसर मिलते हैं। बच्चों की पढ़ने में रुचि जागृत होती है, उन्हें जीवन व्यावहारिक अनुभव मिलता है तथा पूरी शिक्षा ही उनके जीवन के अनुभवों से जुड़ी होती

यह पद्धति मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित है तथा इस पद्धति में सब विषयों अलग-अलग न पढ़कर एक इकाई के रूप में भी पढ़ाया जा सकता है।

भाषा का शिक्षण और प्रोजेक्ट पद्धति—प्रोजेक्ट पद्धति में कोई समस्या लेकर उ छात्रों को बहुमुखी शिक्षा प्रदान की जाती है। भाषा का शिक्षण इस प्रकार समस्या समा में प्रथम स्थान रखता है। भाषा प्रत्येक विषय की प्रथम आवश्यकता है। बिना भाषा कोई भी विषय पढ़ाना असम्भव है। प्रोजेक्ट द्वारा यद्यपि भाषा के सभी अंग नहीं पढ़ाये सके किन्तु विशेष अवसरों पर इस पद्धति का प्रयोग बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। प्रोजे का कार्य वास्तविक परिस्थितियों में ही पूरा किया जाता है। अतः यह विधि अत्यन्त रो सरल तथा वास्तविकता के निकट है। हिन्दी भाषा के शिक्षण में रचना-कार्य पत्र व्यवहार, मौ अभ्यास तथा शब्द-कोष में वृद्धि करने में यह विधि बहुत सहायक है। समस्या लेकर हिन्दी शिक्षण इस प्रकार कर सकते हैं—

समस्या—चण्डीगढ़ की यात्रा।

अध्ययन—चण्डीगढ़ के बारे में जानकारी पाने के लिए सम्बन्धित पुस्तकें पढ़कर छा अध्ययन करने की प्रवृत्ति जागृत की जा सकती है।

शब्दावली—बच्चों के सक्रिय शब्द-कोष में पशु पक्षियों, पेड़ों, प्राकृतिक स्थानों, तथा चण्ड के विभिन्न स्थानों, सैक्टरों, विश्वविद्यालय, सचिवालय और विधान सभा आदि के बारे में जा के लिए किये गए वार्तालाप से वृद्धि की जा सकती है। वार्तालाप की शिक्षा बड़े सरल से दी जा सकती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्र-व्यवहार—छात्र रेल द्वारा अथवा बस द्वारा यात्रा करने के लिए रेलवे अथवा बस अधिकारियों से पत्र-व्यवहार करेंगे ; इस प्रकार बड़ी सरलता से उनमें पत्र-व्यवहार करने की योग्यता का विकास होगा।

लिखित अभिव्यक्ति—चण्डीगढ़ की यात्रा करने के बाद इस यात्रा पर छात्रों से निबन्ध लिखवाया जा सकता है। इस प्रकार बच्चों में मौलिक अभिव्यक्ति के साथ लिखित अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करके उनमें सुव्यवस्थित ढंग से प्रसंगानुकुल तथा भावानुकूल विचार व्यक्त करने के योग्यता का विकास किया जा सकता है।

प्रोजेक्ट पद्धति की उपयोगिता—इस विधि में भाषा की शिक्षा बड़े व्यावहारिक ढंग से दी जाती है। बच्चे "वैयक्तिक अनुभव द्वारा" "खेल और कार्य के संयोग द्वारा" तथा "जिज्ञासा द्वारा सीखना" जैसे मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार भाषा सीखते हैं। किन्तु इस पद्धति में एक बहुत बड़ा दोष यह है कि इसके द्वारा हम भाषा की शिक्षा क्रमबद्ध नहीं दे सकते। व्याकरण तथा कविता की शिक्षा देने के लिए कोई अवसर ही नहीं मिलता। अतः इस पद्धति पर पूरी तरह निर्भर न रह कर इसे अन्य विधियों की पूरक विधि के रूप में अपनाया जा सकता है।

6. बालोद्यान पद्धति
(KINDERGARTEN METHOD)

प्रसिद्ध जर्मन शिक्षाविद् फ्रोबेल (Froebel) इस पद्धति के जन्म दाता हैं। फ्रोबेल के अनुसार जिस प्रकार बीज में सम्पूर्ण वृक्ष निहित होता केवल उसे समुचित वातावरण तथा देखभाल की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार बालक में भी गुणों का कोष छिपा रहता है। केवल उन्हें प्रकाश में लाने के लिए उपयुक्त वातावरण की आवश्यकता होती है। उन्होंने विद्यालय को एक बाग, (Garden) आध्यापक को माली, (Gardener) तथा बच्चे (Kinder) को पौधे का रूप दिया है। जिसमें अध्यापक रूपी माली का कार्य बच्चे रूपी पौधे की देखभाल करके उसे आत्म-विकास का पूर्ण अवसर प्रदान करना है। इसी कारण—फ्रोबेल ने इस पद्धति को बालोद्यान पद्धति (Kindergarten method) का नाम दिया।

इस पद्धति में बच्चों को क्रिया द्वारा अथवा खेल द्वारा आत्माभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया जाता है। इसके लिए—फ्रोबेल ने विभिन्न प्रकार की वस्तुएं बनाईं जिनको उपहार (Gifts) कहते हैं। ये उपहार लम्बे, गोल तथा धन के आकार के हैं। इनके अलावा कागज़ कैंची, मिट्टी, लकड़ी आदि को भी साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है।

भाषा-शिक्षण और बालोद्यान पद्धति
(LANGUAGE TEACHING AND KINDERGARDEN METHOD)

इस विधि के द्वारा भाषा शिक्षण बड़े ही मनोवैज्ञानिक तथा रोचक ढंग से किया जाता है। भाषा शिक्षण में सबसे अधिक सहायता गीतों तथा कहानियों से मिलती है। कुछ उपहारों की सहायता गीतों तथा कहानियों से मिलती है। कुछ उपहारों की सहायता से बच्चों को अक्षर रचना बड़े सरल ढंग से सिखाई जा सकती है। तथा ऐसी कविताएं जिन की प्रत्येक पंक्ति वर्णमाला के एक अक्षर से प्रारम्भ होती है, कण्ठस्थ कराकर अक्षर ज्ञान कराया जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चीज़ की सहायता से कहानी सुनाकर पढ़ना सिखाया जाता है। समवेत गान द्वारा भी बच्चे में वाचन की योग्यता का विकास किया जाता है। बच्चे सीधी, आड़ी तिरछी तथा गोल रेखा कलम द्वारा खींचकर लिखने के खेल का अभ्यास करते हैं। इस प्रकार बच्चा भाषा की पू शिक्षा खेल-खेल में ही प्राप्त कर लेता है।

बालोद्यान पद्धति की उपयोगिता—यह पद्धति खेल द्वारा शिक्षा के सिद्धान्त पर आधारि है। अक्षर ज्ञान, अक्षर रचना वाचन, अभिनय आदि सभी क्रियाएं भाषा-शिक्षण का अंग हैं इनकी शिक्षा देने के लिए यह विधि सर्वोत्तम है। बच्चे अपने को पूर्ण स्वतन्त्र महसूस क हैं अतः उनके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास होता है। छोटे बच्चों को भाषा की शिक्षा देने लिए यह विधि सर्वोत्तम है।

यह विधि कुछ कारणों से अपने में पूर्ण भी नहीं है। इस विधि पर ही केवल निर्भर न रहा जा सकता। क्योंकि इस विधि में भाषा के अन्य अंगों की शिक्षा का कोई विधान न है। उपहारों द्वारा शिक्षा भी बड़ी अव्यवस्थित है। किन्तु उपहारों के आडम्बर को त्याग क भी इस विधि का उपयोग किया जा सकता है।

7. मान्टेसरी पद्धति
(MONTESSORI METHOD)

यह पद्धति इटली की रहने वाली डा. मौरिया मौन्टेसरी (Dr. Maria Montessor की देन है। श्रीमती मोन्टेसरी ने भी फ्रोबेल की विचारधारा से प्रभावित होकर बच्चे की अन्तर्नि शक्तियों के विकास पर वल दिया तथा इन शक्तियों के विकास के लिए "अपनी प्रकृति अनुसार" बढ़ने के अवसरों को प्रदान करना आवश्यक माना। यह शिक्षण-पद्धति शिशुओं प्रकृति पर आधारित है।

बच्चों के लिए स्कूल में घर जैसा वातावरण तैयार किया जाता है। बच्चों को पूर्ण स्वत वातावरण में रखा जाता है जिस में वे 'स्वयं खेल द्वारा' शिक्षा प्राप्त करते हैं। इससे उन कर्मेन्द्रियों तथा ज्ञानेन्द्रियों को पूर्ण विकास के अवसर प्राप्त होते हैं।

मान्टेसरी पद्धति में विद्यालय एक प्रकार से 'बालघर' होता है जहां पर शिशुओं की कर्मेन्द्रि को दृढ़ बनाने के लिए उन्हें अपने हाथ मुंह धोना, कपड़े पहनना, सफ़ाई करना आदि सिखा जाता है।

भाषा-शिक्षण और मौन्टेसरी पद्धति
(LANGUAGE TEACHING AND MONTESSORI METHOD)

भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में मौन्टेसरी ने एक बिल्कुल नवीन बात यह दी कि पढ़ने से पा लिखना सिखाया जाये। लिखना सिखाने के लिये सर्वप्रथम बच्चों को लकड़ी अथवा गत्ते बने अक्षरों पर उंगली फेरने को कहा जाता है फिर उनमें स्याही भरने के लिए कहा जाता इन कटी हुई आकृतियों में स्याही भरते हुए ही अध्यापक के साथ-साथ बच्चे उच्चारण क हैं। इस प्रकार ध्वनियों से भी परिचित होते जाते हैं। लिखने के साथ बच्चे पढ़ना भी सी जाते हैं। वाचन की शिक्षा लिखने के बाद दी जाती है। वाचन के लिए इस विधि में प

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कार्ड आदि का प्रयोग किया जाता है। 'वाक्य से आरम्भ करके अक्षर-ज्ञान की ओर विधि को इस पद्धति में अपनाया जाता है।

मॉन्टेसरी पद्धति की उपयोगिता—भाषा सिखाने की यह विधि वैज्ञानिक है। उस समय जबकि बच्चा भाषा-शिक्षण के लिए तैयार किया जाता है इस विधि का अपनाना बहुत उपयोगी है। 3 से 6 वर्ष की आयु तक यह विधि शिक्षा के लिए सर्वोत्तम विधि है। बच्चों की ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को दृढ़ बनाना बहुत आवश्यक है। किन्तु लिखने के बाद पढ़ना सिखाने की प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक नहीं है। यह विधि बहुत अधिक व्यय-साध्य भी है। अतः हमें अपने देश में इसको अपनाने के लिए थोड़ा सुधार करना होगा। इसी विधि के अनुरूप ही सस्ते लकड़ी के यंत्र बनाए जा सकते हैं। शुद्ध उच्चारण, शुद्ध साधन, निर्दोष लेखन की शिक्षा के लिए यह विधि अत्यन्त उपयोगी है।

४. डाल्टन पद्धति
(DALTON METHOD)

इस पद्धति का आविष्कार डाल्टन नगर की कुमारी हेलन पार्क हर्स्ट (Miss Helen Parkhurst) ने किया। इस पद्धति में सामूहिक शिक्षा के स्थान पर वैयक्तिक शिक्षा पर बल दिया जाता है। अतः सामान्य कक्षाओं को प्रयोगशाला के रूप में बदल दिया जाता है। समय के बन्धन का इस विधि में कोई स्थान नहीं है। छात्र स्वतन्त्रापूर्वक अपना निर्दिष्ट कार्य (Assigned work) पूरा करते हैं। अध्यापक छात्र को निर्दिष्ट कार्य देता है पाठ कंठक पर हस्ताक्षर कराता है आवश्यक निर्देश (सहायक पुस्तकें, कोष, पत्रिका, चित्र, मान चित्र, आदि उपयोग करने के लिए) देता है तथा अन्त में छात्र के कार्य की जांच करता है। प्रत्येक विषय की अलग-अलग प्रयोगशालाएं होती हैं तथा अलग-अलग अध्यापक होते हैं।

इस विधि में इस प्रकार अध्यापक पूरे वर्ष को पाठ का ठेका (Contract) तथा उसकी करूप रेखा तैयार करता है। प्रत्येक मास को चार सप्ताहों के लिये बांट कर साप्ताहिक इकाइयों के रूप में 5 भागों में बांट दिया जाता है। कक्षाएं कक्षा न रहकर प्रयोगशालाएं बना दी जाती हैं जहां अध्यापक की सहायता से छात्र अपना निश्चित कार्य पूरा करते हैं। समय पर विमर्श सभाएं करके छात्रों की कठिनाइयों को दूर किया जाता है। अध्यापक छात्रों की प्रगति जानने के लिए रेखा चित्रों का प्रयोग करते हैं।

भाषा-शिक्षण तथा डाल्टन पद्धति
(LANGUAGE TEACHING AND DALTON METHOD)

अध्यापक एक मास के लिए भाषा के निदिष्ट कार्य को सप्ताहों में बांटकर छात्रों को देता है। छात्र को इस प्रकार का एक अधिन्यास (Assignment) दिया जाता है—

(अ) पाठ का शीर्षक तथा कक्षा—

(आ) समस्या का उल्लेख—अध्यापक स्पष्ट उल्लेख करता है।

(इ) लिखित कार्य—छात्रों द्वारा समस्या ऊपर लिखित प्रस्ताव तैयार करना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ई) अध्यायन कार्य—अध्याक सहायक पुस्तकों का हवाला देता है।

(क) मौखिक कार्य—छात्रों द्वारा विषय पर विचार विमर्श

(ख) प्रगति—प्रत्येक अपने किये काम का ग्राम तैयार करता है।

नियत पाठ्य—पुस्तकों के लिए कोई स्थान नहीं होता। अध्यापक की सहायता से छात्र भाषा-प्रयोगशाला में जाकर अध्ययन करते हैं। गृह कार्य भी नहीं दिया जाता है।

(घ) अध्याय छात्रों को कण्ठस्थ करने के लिए कविताएं तथा गद्यांश बता देता है।

डाल्टन पद्धति की उपयोगिता—यह विधि भाषा-शिक्षण में रचना-कार्य, व्याकरण, उच्चारण शुद्ध लेखन स्वाध्याय की प्रवृत्ति आदि के विकास के लिए बहुत उपयोगी है। किन्तु पूर्णतः वैयक्तिक विधि होने के कारण कविता शिक्षण नहीं किया जा सकता। मौखिक अभिव्यक्ति के लिए भी बहुत कम अवसर मिलता है। अतः भाषा-शिक्षण में इस पद्धति का उपयोग उपयुक्त नहीं है। हां सहायक विधि के रूप में इसे अपनाया जा सकता है। इस विधि से भाषा-शिक्षण केवल उच्च कक्षाओं में ही सम्भव है। छोटे बच्चे इसका लाभ नहीं उठा सकते।

9. क्रीड़ा पद्धति

(PLAYWAY METHOD)

इस पद्धति का आविष्कार हेनरी कालवेल कुक (Henry Calwell Cook) महोदय ने किया। सर्वप्रथम उन्होंने पढ़ाने में इस विधि का प्रयोग किया। उन्होंने अपनी पुस्तक प्ले-वे (Play way) में यह स्पष्ट किया कि यदि भाषा-शिक्षण में कक्षा में खेल की भावना को, नाटक वाद-विवाद के रूप में प्रस्तुत किया जाये तो बच्चे अधिक रुचि लेंगे और वे अच्छी प्रकार से भाषा सीख जाएंगे। यह विधि "रुचि का सिद्धान्त, स्वतन्त्रता का सिद्धान्त, क्रिया का सिद्धान्त आदि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है। मौन्टेसरी, बालोद्यान, प्रोजेक्ट, डाल्टन आदि सभी पद्धतियों में खेल द्वारा सीखने की क्रिया पर बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त सहपाठ्य क्रियाकलापों के माध्यम से भी शिक्षा दी जाती है।

भाषा-शिक्षण और क्रीड़ा पद्धति

(LANGUAGE TEACHING AND PLAY-WAY METHOD)

भाषा की शिक्षा के लिए यह विधि बहुत उपयोगी है। मौखिक भाषा की शिक्षा क्रीड़ा विधि द्वारा ही दी जानी चाहिए। मौन्टेसरी तथा बालोद्यान पद्धतियों में लिखना खेल पद्धति द्वारा ही सिखाया जाता है। कहानी सुनाना, अभिनय कराना, संवाद बुलवाना, अन्त्याक्षरी तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता सब खेल विधि के ही रूप हैं। भाषा-शिक्षण में हम इस विधि का पाठ्य पुस्तक और पाठ्य पुस्तक से अलग इस प्रकार प्रयोग कर सकते हैं।

पाठ्य पुस्तक—पाठ्य पुस्तक के किसी अनुच्छेद में से सर्वनाम, संज्ञा, कारक आदि छंटवाये जा सकते हैं। गद्यांश या पद्यांश को कण्ठस्थ करा सकते हैं। किन्हीं शब्दों के पर्यायवाची विलोम शब्द पूछे जा सकदे हैं। उपयुक्त शब्दों को जोड़ों में रखना तथा रिक्त स्थानों की पूर्ति कराई जा सकती है। अक्षर-रचना (Word Building) का खेल कराया जा सकता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठान्तर क्रियाओं में वालचर-संस्था (Scouting) में भाग लेना, नाटक खेलना, कोई यात्रा करना, पिकनिक का आयोजन आदि रचनात्मक कार्य कराना।

क्रीड़ा पद्धति की उपयोगिता—इस पद्धति की उपयोगिता पर कोई सन्देह नहीं किया जा सकता। भाषा-शिक्षण के लिए यह विधि सर्वोत्तम सिद्ध हो चुकी है। अध्यापक अपनी योग्यता से स्वयं अनेक खेलों का आयोजन कर सकता है। इस विधि से बच्चे पढ़ने में रुचि लेंगे तथा अध्यापक सरलतापूर्वक भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों को पूरा कर लेगा। व्याकरण जैसा नीरस विषय भी खेल पद्धति द्वारा सरस और रोचक बन जाता है।

10. समवाय पद्धति
(CORRELATION METHOD)

यद्यपि उपर्युक्त शिक्षा पद्धतियां विदेशों की देन हैं, किन्तु हम अच्छे तत्त्वों को भाषा शिक्षण में अपना सकते हैं। भारत में अब से लगभग 30 वर्ष पहले बापू ने एक शैक्षिक प्रयोग किया जिसे बुनियादी शिक्षा (Basic Education) के नाम से पुकारा गया। इस प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता है 'समवाय पद्धति'। ज्ञान और क्रिया का अटूट सम्बन्ध मानते हुए भिन्न-भिन्न विषयों से सम्बन्धित ज्ञान को किसी तरह के कार्य से समन्वित किया जाता है। बुनियादी शिक्षा व्यक्ति के मानसिक जीवन में एकता और समता देखती है। समवाय पद्धति में विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए उद्योग (Craft), सामाजिक पर्यावरण (Social environment) तथा प्राकृतिक पर्यावरण (Natural environment) को केन्द्र बनाया जाता है।

उदाहरणार्थ—हस्तकला (सूत कातना) के माध्यम से बच्चों को भाषा में रचनाकार्य, संवाद, गद्यपाठ का पढ़ना, पत्र व्यवहार आदि सिखाया जा सकता है। गणित में—वज़न, नाप, गुणा, योग भाग आदि सिखाया जा सकता है। इतिहास भूगोल विज्ञान आदि को भी समवेत किया जा सकता है। इस प्रकार कार्य द्वारा ज्ञान (Learning by doing), की प्रक्रिया पर बल दिया जाता है।

भाषा-शिक्षण और समवाय पद्धति
(LANGUAGE TEACHING AND CORRELATION METHOD)

समवाय पद्धति में मातृ-भाषा-शिक्षण को बहुत महत्त्व दिया गया है। वार्तालाप के लिए हस्त-कौशल पर बातचीत की जाती है। पढ़ना लिखना सिखाने के लिए बालकों को उद्योग सम्बन्धी उपकरणों के नाम लिख कर दिये जा सकते हैं।

भाषा के विभिन्न अंगों में आपस में सम्बन्ध जोड़ना जैसे गद्य पढ़ाते हुए रचना, व्याकरण आदि की शिक्षा देना, भाषा का अन्य विषयों से सम्बन्ध जोड़ना तथा किसी उद्योग, प्राकृतिक वातावरण अथवा सामाजिक वातावरण के साथ समवाय करके भाषा का शिक्षण बड़े ही प्राकृतिक तथा मनोवैज्ञानिक ढंग से किया जाता है। समवाय विधि में प्रत्येक विषय पढ़ते हुए भाषा शिक्षण को स्वतः ही अवसर मिलता रहता है।

समवाय पद्धति की उपयोगिता—समवाय पद्धति बच्चों को वास्तविक परिस्थितियों में भाषा सीखने के अवसर प्रदान करती है। यह पद्धति क्रिया द्वारा सीखने पर बल देती है। रुचि के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुसार सीखने के अवसर प्रदान करती है। किन्तु यह इस विधि का सैद्धान्तिक रूप है। व्यावहारि रूप में पद्धति असफल ही रही हैं। अध्यापक किसी विषय को समवेत करने के लिए जो जे तोड़ करते हैं उससे तो समवेत न किया जाना ही अच्छा है। इस प्रकार यह पद्धति के पुस्तकीय ही रह गई है। इसमें व्यावहारिकता लाने के लिए कुछ सुधार तथा सरकारी प्र आवश्यक हैं।

उपर्युक्त सभी पद्धतियां भाषा शिक्षण में बहुत ही सहायक हैं। ये सभी पद्धतियां आ आप में पूर्ण नहीं हैं। अतः किसी एक पद्धति को आधार बना कर भाषा की शिक्षा नहीं जा सकती। मौन्टेसरी पद्धति केवल 3 वर्ष से 6 वर्ष तक के बच्चों के लिए तथा बालोद्यान-पद्ध 3 वर्ष से 10 वर्ष तक के बच्चों के लिए लाभदायक है। डाल्टन तथा प्रोजेक्ट पद्धतियां मिडि स्कूल तथा हाई स्कूल कक्षाओं के लिए उपयोगी हैं। अक्षर ज्ञान कराने तथा पढ़ना लिख सिखाने में मौन्टेसरी तथा बालोद्यान पद्धतियों को अपनाना चाहिए। तथा भाषा के व्यावहारि ज्ञान के लिए प्रेजेक्ट, डाल्टन. और समदाय पद्वतियां अपनानी चाहिए। लेकिन यह भाषा अध्यापकों पर ही निर्भर करता है कि वे आवश्यकता तथा पाठ्य सामग्री के अनुसार कि विधि का प्रयोग करें ?

प्रश्नावली

1. हिन्दी शिक्षण की विभिन्न विधियां कौन-कौन सी हैं ? आप किस विधि से हि शिक्षण करेंगे।
2. आधुनिक हिन्दी शिक्षण विधि की प्राचीन हिन्दी शिक्षण विधियों से तुलना कीजिए
3. खेल विधि व प्रत्यक्ष विधि के गुण. दोषो पर प्रकाश डालिए ?
4. संरचना पद्धति से हिन्दी शिक्षण की कौन सी विधी पढ़ाई जा सकती है व कैसे
5. निम्नलिखित पर संक्षित टिप्पणी लिखिए :
   (1) अनुवाद विधि
   (2) मान्सरी विधि
   (3) डाल्टन विधि
   (4) समवाय विधि

□□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इकाई—III वाचन व लेखन

UNIT–III (DEADING & WRITING)

(1) वाचन का प्रत्यय अर्थ व महत्व
(CONCEPT MEANING AND IMPORTANCE OF DEADING)

(2) वाचन के प्रकार भौन/संस्वर, गहन व दूत तीव्र
(TYPES OF READING SILENT/LOUDS/EXTENSIVE & INTENSIVE)

(3) वाचन दोष व समाधान
(READING DEFECTS AND THEIR CURE.)

(4) अच्छे लेखन के गुण
(QUALITY OF GOOD HAND WRITING)

(5) लेखन कौशल में अशुद्धियां व समाधान
(DEFECTS IN WRITING SKILL AND THEIR IMPROVEMENT)

(6) संक्षेपीकरन व विस्तारीकरण
(SUMMARIZING AND ELABORATING)

(7) निबन्ध लेखन/पत्र लेखन
(ESSAY WRITING/LETTER WRITING)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय – 5

वाचन शिक्षण समस्याएँ व समाधान

(TEACHING OF READING ITS PROBLEMS & CURES)

वाचन—जब हमको कोई लिखित बात स्वयं पढ़नी होती है अथवा किसी को वह बात पढ़ कर सुनानी होती है तो हम उस बात को प्रवाहपूर्ण, शुद्ध उच्चारण के साथ, मधुर वाणी में पढ़ने का प्रयास करते हैं। क्योंकि इस रीति से पढ़ना सुनने वाले को तथा स्वयं को भी बड़ा भला लगता है। इस रीति से लिखित सामग्री का पढ़ना ही भाषा में वाचन कहलाता है। वाचन में उच्चारण के साथ ही उस अंश का भाव-ग्रहण करना भी आवश्यक होता है। कभी-कभी लिखित सामग्री को मन ही मन भी पढ़ना पड़ता है। इस प्रकार के पढ़ने को मौन वाचन की संज्ञा दी जाती है। अतः वाचन में लिपि को पढ़ना ही आवश्यक नहीं, वरन् पढ़ कर उस को समझ लेना भी अत्यावश्यक है।

वाचन के रूप

(KINDS/TYPES/FORMS OF READING)

(1) **सस्वर वाचन**—लिखित पाठ को समझते हुए स्वर सहित वाचन सस्वर वाचन कहलाता है।

(2) **मौन वाचन**—मुख से उच्चरित किये बिना पाठ का अर्थ ग्रहण कर लेना उच्च कक्षाओं में परमावश्यक होता है। यह अध्ययन की एक विधि है। इस प्रकार लिखित पाठ को बिना ध्वनि किये भाव ग्रहण करते हुए शांतिपूर्वक पढ़ लेने को मौन वाचन कहते हैं।

सस्वर वाचन

(LOUD READING)

महत्त्व—सस्वर वाचन की शिक्षा जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमें वाचन की आवश्यकता पड़ती है। जो अच्छे वक्ता, या वार्तांकार होते हैं उन को समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इस प्रकार सस्वर वाचन की जीवन में बड़ी उपयोगिता है। सस्वर वाचन करने से बालकों में वाचन करने की कला का विकास होता है। उनकी झिझक दूर हो जाती है तथा उन में आत्म विश्वास की भावना उत्पन्न होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सस्वर वाचन से बालकों में वाचन करने की कला कि विकास होता है। उनकी झिझक दू जाती है तथा उन में आत्म विश्वास की भावना उत्पन्न होती है। सस्वर वाचन से उच्चा भी शुद्ध होता है तथा वाचन-शक्ति का विकास होता है। अतः वाचन की शिक्षा की हमें विशेष ध्यान देना चाहिए।

सस्वर वाचन की शिक्षा के उद्देश्य

(AIMS OF TEACHING LOUD READING)

भाषा की शिक्षा के लिए वाचन की शिक्षा अत्यावश्यक है। बिना वाचन की शिक्षा भाषा की शिक्षा अधूरी ही रहती है।

निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए वाचन किया जाता है—

(1) बालक किसी लिखित गद्य या पद्य को शुद्ध उच्चारण के साथ एवम् भावानु पढ़ सकें।

(2) बालक पढ़ते-पढ़ते ही अर्थ ग्रहण कर सकने के योग्य हो सकें।

(3) बालकों में अक्षराभिव्यक्ति, शब्दोच्चारण, उचित ध्वनिनिर्गम, बल तथा सुस्व के उचित संस्कार उत्पन्न हो सकें।

(4) छात्र ज्ञानार्जन के साथ पुस्तकों से मनोरंजन भी प्राप्त कर सकें।

(5) छात्र उचित विराम, लोच और गति के साथ पढ़ सकें।

सस्वर वाचन के आवश्यक गुण।

(ESSENTIAL CHARACTERISTICS OF LOUD READING)

अच्छे वाचन में निम्नलिखित गुण होने आवश्यक हैं—

(1) मधुरता—वाणी में लोच और मधुरता का होना।

(2) **स्पष्ट अक्षर-अभिव्यक्ति**—प्रत्येक अक्षर का शुद्ध तथा स्पष्ट उच्चारण करना।

(3) **पदच्छेद**—प्रत्येक शब्द को अन्य शब्दों से अलग कर के उचित बल तथा विरा के साथ पढ़ना।

(4) **सुस्वरता**—भावों के अनुसार वाणी में उचित आरोह-अवरोह लाना।

(5) **धैर्य**—उचित गति के साथ पढ़ना।

(6) **लय**—वाणी में प्रवाह बनाये रखना।

(7) **वाचन मुद्रा**—सस्वर वाचन करते हुए उचित ढंग से बैठना अथवा खड़े होना, वाचन सामग्री को ठीक प्रकार से पकड़ना आदि अत्यन्त आवश्यक है।

सस्वर वाचन के रूप

(FORMS OF LOUD READING)

(अ) आदर्श वाचन (Model Reading)— अध्यापक बच्चों के सामने लिखित सामग्री का जो वाचन प्रस्तुत करता है उसे आदर्श वाचन कहते हैं। बच्चों को उसी वाचन का अनुकरण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करते हुए पढ़ना होता है। वास्तव में आदर्श वाचन वही है जिस में उपर्युक्त सात गुण हों अन्यथा, भले ही वह अध्यापक द्वारा वाचन हो आदर्श वाचन नहीं कहा जा सकता। अध्यापक को आदर्श वाचन प्रस्तुत करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए, क्योंकि आदर्श वाचन की सफलता पर ही अनुकरण वाचन की सफलता निर्भर करती है।

(आ) **अनुकरण वाचन** (Individual Reading) — अध्यापक के आदर्श वाचन के अनुरूप ही उस का अनुकरण करते हुए बच्चे जो व्यक्तिगत वाचन करते हैं उसे अनुकरण वाचन कहते हैं। अध्यापक को अनुकरण वाचन के समय बच्चों की मुद्रा का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अशुद्ध उच्चारण करने पर बीच में नहीं टोकना चाहिए, बल्कि वाचन समाप्त कर लेने के उपरान्त अन्य बच्चों की सहायता से समस्त अशुद्धियां ठीक करनी चाहिएं। अध्यापक सफल अनुकरण वाचन के लिए एक से अधिक बार भी आदर्श वाचन प्रस्तुत कर सकता है।

(इ) **समवेत वाचन** (Group Reading) — यह वाचन प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए ठीक है।

इस में दो या दो से अधिक छात्र एक साथ वाचन करते हैं। जिन बच्चों में आत्म-विश्वास की कमी होती है उन के लिए समवेत वाचन बड़ा लाभकारी है। किन्तु समवेत वाचन में हमें इन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए (क) यह छोटी कक्षाओं में ही कराया जाये (ख) बच्चों की संख्या 6 से 7 से अधिक नहीं होनी चाहिए (ग) प्रत्येक दल का नायक बना देना चाहिए जो कि अपेक्षाकृत वाचन में निपुण हो, (घ) एक दल में लगभग एक से स्वर वाले बालक ही रखे जायें।

वाचन की शिक्षण-विधियां
(METHOD OF TEACHING READING)

शुद्ध वाचन की प्रक्रिया में अक्षर-ज्ञान प्रथम आवश्यकता है। अक्षर-ज्ञान के अभाव में बालक द्वारा शुद्ध उच्चारण, उचित गीत, स्वर एवम् आरोह-अवरोह के साथ वाचन कठिन ही नहीं असम्भव भी है। इस प्रकार वाचन की शिक्षा के दो अंग हैं—प्रथम ज्ञान तथा द्वितीय वाचन अभ्यास :

वाचन शिक्षण की प्रमुख विधियाँ इस प्रकार हैं—

(1) अक्षर-बोध विधि (Alphabetic Method) — वाचन शिक्षण की यह विधि प्राचीनतम है। यद्यपि आजकल इस विधि की उपयोगिता को संशय की दृष्टि से देखा जाता है तथापि दुर्भाग्यवश हमारे विद्यालयों में अभी तक अध्यापक इसी विधि का अनुसरण कर रहे हैं। इस विधि के अनुसार पहले वर्णमाला के अक्षरों का क्रमानुसार ज्ञान कराया जाता है, फिर अक्षरों को जोड़ कर शब्द बनाना सिखाया जाता है। जैसे—पहले हिन्दी की पूर्ण वर्णमाला को याद कराया जा कर फिर उन के योग में 'क' 'म' 'ल' = कमल शब्द का ज्ञान कराना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुण

(1) देवनागरी भाषा के सिखाने के लिए यह विधि बहुत उपयोगी है, क्योंकि हि में अक्षरों का क्रम उच्चारण की दृष्टि से किया गया है। पहले स्वर फिर व्यं फिर संयुक्ताक्षर।

(2) इस विधि में प्रत्येक अक्षर का सम्बन्ध ध्वनि के साथ जोड़ा जाता है।

(3) अर्थ की अपेक्षा शब्दों की पहचान पर अधिक बल दिया जाता है।

दोष

(1) बच्चे निरर्थक शब्दों में रुचि नहीं लेते। यह विधि अमनोवैज्ञानिक है।

(2) इस विधि में बिना समझे याद करने पर अधिक बल दिया जाता है।

(3) इस विधि के द्वारा वाचन सिखाने में समय बहुत लगता है।

(2) स्वरोच्चारण विधि अथवा ध्वनि साम्य विधि (Phonic Method)

इस विधि में अक्षरों के नाम के स्थान पर उन की ध्वनि पर बल दिया जाता है। श का ज्ञान ध्वनि-साम्य के आधार पर दिया जाता है। पहले बच्चा ध्वनियां सीख लेता है उस के बाद उन ध्वनियों को मिला कर शब्द बनाता है।

एक साथ उच्चारित होने वाले शब्द एक साथ सिखाये जाते हैं। जैसे—धार, पार, स भार, हार, राम, काम, नाम, धाम, शाम आदि।

गुण

(1) यह विधि समय की बचत करती है।

(2) यह प्रयोग करने में आसान है।

(3) समान ध्वनियों का पर्याप्त अभ्यास हो जाता है।

अतः बच्चों का उच्चारण स्थिर हो जाता है।

दोष

(1) इस का प्रमुख दोष यह है कि व्यावहारिक शब्दावली से समान ध्वनि वाले सार्थ शब्द नहीं मिल पाने के कारण निरर्थक शब्द गढ़ने पड़ते हैं। इस प्रकार यह विधि अव्यावहारिक हो जाती है।

(2) केवल मात्र कुछ ध्वनियां ही सीख लेने से वाचन में निपुणता नहीं लाई जा सकती बालक हर समय ध्वनियों और वर्णों के आकार पर ही अपना मस्तिष्क लगा रखता है।

(3) इस विधि में शब्दों, वाक्य-खण्डों और उन के अर्थ पर उतना ध्यान नहीं दि जाता जितना कि उन की ध्वनियों पर ध्यान दिया जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(3) देखो और कहो विधि (Look and Say Method)

इस विधि में चित्रों की सहायता से पहले शब्द सिखाये जाते हैं, फिर अक्षरों का ज्ञान कराया जाता है। इस विधि में सिखाने की इकाई शब्द होती है। इस विधि से वाचन सिखाने में जो हम पढ़ते हैं उस के अर्थ पर ध्यान केन्द्रित रहता है। यह विधि मनोवैज्ञानिक एवम् रुचिकर है। इस विधि में चार्ट पर ऊपर शब्द और नीचे वस्तु दिखा कर शब्द कहलाया जाता है। जैसे—'अनार' का चित्र दिखा कर पहले 'अनार' शब्द पढ़ना सिखा जाता है फिर 'अ' 'ना' 'र' अक्षर।

गुण

(1) 'शब्द' शिक्षण की इकाई होता है, अतः इसे मौखिक भाषा के साथ आसानी से जोड़ा जा सकता है। इस से बच्चों में रुचि जागृत होती है।

(2) यह मनोवैज्ञानिक विधि है। बच्चों में उत्सुकता पैदा होती है।

(3) इस विधि में 'स्थूल से सूक्ष्म की ओर', 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' तथा 'सरल से कठिन की ओर' शिक्षण-सूत्रों का पालन किया जाता है।

दोष

(1) साधारण शब्द सिखाने के लिए दो वस्तुओं के चित्र बनाये जा सकते हैं, किन्तु क्रियार्थक तथा भावार्थक शब्दों को कैसे सिखाया जाये ? क्योंकि उनके चित्र नहीं बनाये जा सकते। हिन्दी में कुछ संयुक्ताक्षर ऐसे भी हैं जिनके चित्र नहीं दिखाये जा सकते जैसे—थ।

(2) बालक स्वतन्त्र रूप से पढ़ने में असमर्थ हो जाता है।

(3) यह विधि अंग्रेज़ी में उपयोगी हो सकती है, किन्तु हिन्दी की वर्णमाला वैज्ञानिक है। अतः इसके लिए उसकी अधिक उपयोगिता नहीं है।

(4) याद करने पर बहुत ज़ोर दिया जाता है।

(4) वाक्य शिक्षण विधि (Sentence Teaching Method)

इसमें और 'देखो कहो विधि' में कुछ समानता है। हम भाषा को पूर्ण वाक्यों में सीखते हैं। मनोविज्ञान के आधार पर यह सिद्ध हो चुका है कि पढ़ना भी पूर्ण वाक्यों से ही प्रारम्भ करना चाहिए। हिन्दी में विधि का अनुसरण करना कठिन कार्य है। इस विधि में भाषा की इकाई के रूप में वाक्य किसी चार्ट आदि पर बच्चे के सामने प्रस्तुत किये जाते हैं। बच्चे इन वाक्यों को पढ़कर अभ्यास द्वारा याद कर लेते हैं। विश्लेषण द्वारा दो वाक्यों में भिन्न शब्द की ओर बच्चे का ध्यान आकर्षित करके शब्दों का ज्ञान करा दिया जाता है। उदाहरणार्थ—(i) राम घर आता है।

(ii) श्याम घर आता है।

यहां बच्चे से पूछा जा सकता है कि कौन से शब्द समान हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुण

(1) यह विधि गैस्टाल्ट के 'सीखने के सिद्धान्त' के अनुरूप है कि मस्तिष्क पहले पू को देखता है और पूर्ण से अंश की ओर आता है।

(2) बच्चों को बुद्धिमता पूर्ण पढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

(3) बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि जागृत होती है।

दोष

(1) बच्चों का शब्द-भण्डार सीमित रह जाता है।

(2) हिन्दी में बिना भाषाओं के शब्दों से वाक्य रचना असम्भव सा है। अतः हि भाषा में इनका प्रयोग बहुत कठिन है।

(5) अनुकरण विधि (Imitation Method)

इस विधि में अध्यापक के शब्द बोलने पर बच्चे उसका अनुकरण द्वारा उच्चारण क हैं। यह विधि अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में उपयोगी हो सकती है। हिन्दी में अक्षर का उच्चारण सदैव एक ही होता है, अतः यह विधि हिन्दी की शिक्षा के लिए उपयु नहीं है।

(6) सामूहिक पाठ विधि (Group Reading Method)

यह विधि अनुकरण का ही एक रूप है। इस विधि में पूरी कक्षा या छात्रों की एक टो अध्यापक के वाचन का अनुकरण करती है। बालगीतों का प्रयोग इस विधि में किया जा सक है। अक्षर-ज्ञान के बाद इस विधि का प्रयोग वाचन सिखाने में बहुत लाभदायक है।

(7) कहानी विधि (Story Method)

यह विधि वाक्य विधि का ही रूप है। इसमें एक वाक्य के बदले अनेकवाक्य कहा के रूप में लिए जाते हैं। अध्यापक कहानी कहता है। तथा प्रत्येक घटना का चित्र दिख जाता है। वाक्यों की आवृत्ति की जाती है। वाक्य-विधि के समान ही यह विधि भी हिन्दी प्रयुक्त करना कठिन है।

(8) साहचर्य विधि (Association Method)

यह विधि डा॰ मान्टेसरी की देन है। इस विधि में विभिन्न देखी हुई वस्तुओं या उ चित्रों में तथा उन पर लिखे शब्दों में साहचर्य स्थापित किया जाता है। विद्यालय की दीवा पर वस्तुओं के चित्र तथा उनके नाम लिख कर टांग दिये जाएं, फिर बच्चों को उनमें साह स्थापित करने का अवसर दिया जाये। फिर कुछ ऐसे कार्ड बच्चों को दिये जायें कि जि कुछ पर वस्तुओं के चित्र हो तथा कुछ पर उनके नाम। बच्चों से चित्र वाले कार्ड की व के नाम वाले कार्ड को निकलवाया जाय। इस प्रकार बच्चे खेल खेल में बच्चों से परि हो जाते हैं। अक्षर ज्ञान के लिए यह विधि सर्वोत्तम है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर्वोत्तम विधि

(THE BEST METHOD)

उपर्युक्त सभी विधियों में कुछ न कुछ दोष हैं। अतः अक्षर ज्ञान कराने तथा वाचन की शिक्षा देने के लिए किसी एक विधि का अनुसरण अनुपयुक्त होगा। उपर्युक्त विधियों से यह सार निकाल सकते हैं—

(1) वस्तुओं के प्रत्यक्ष ज्ञान से बच्चों को अक्षर ज्ञान कराया जाए—जैसे आम, अनार, कबूतर, खरगोश, गधा, घड़ा आदि।

(2) वस्तुओं के चित्र उपस्थित करके उनका नाम लिया जाय।

(3) बच्चों के सामने फिर ऐसे चित्र उपस्थित किये जायं जिन पर वस्तु और उसका नाम दोनों हों। इस प्रकार बच्चे ज्ञात से अज्ञात की ओर जाकर अक्षर ज्ञान शीघ्र कर लेते हैं।

(4) साहचर्य विधि के माध्यम से फिर बच्चों को अक्षर ज्ञान स्पष्ट किया जाय।

(4) साहचर्य विधि के माध्यम से फिर बच्चों को अक्षर ज्ञान स्पष्ट किया जाय।

(5) फिर मात्राओं का ज्ञान कराया जाय।

(6) आगमन विधि द्वारा संयुक्ताक्षरों तथा शिरो-रेखा का ज्ञान अध्यापक मात्राओं को सिखाने के उपरान्त कराये।

(7) इस प्रकार अन्त में वाक्य या कहानी में शब्दों का प्रयोग कराया जाए।

प्रारम्भिक कक्षाओं में बच्चा अक्षर-ज्ञान शब्दोच्चारण अध्यापक के आदर्श पाठ का अनुकरण करने लगता है। कथा 8 तक आते आते उसकी वाचन-गति बढ़ जाती है। उसका अक्षरोच्चारण पर अधिकार हो जाता है। इस स्तर पर आकर अध्यापक का कर्त्तव्य है कि बालकों में अच्छे वाचन के गुणों का विकास करे। आगे चल कर बालक वाचन कला में स्वतः ही निपुण हो जाते हैं। किन्तु वाचन एक कला है और कला अभ्यास चाहती है।

मौन वाचन

(SILENT READING)

महत्त्व—मौन वाचन भापा शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग है। सस्वर वाचन में पूर्णता प्राप्त कर लेने के उपरान्त मौन वाचन की बारी आती है। मौन वाचन द्वारा पाठ शीघ्रता स पढ़ा जाता है तथा पढ़ते पढ़ते ही पाठ समझ भी आ जाता है। मौन वाचन से विद्यार्थी स्वावलम्बी बनते हैं। उनमें पढ़ने की आदत पड़ती है। वाचन छात्रों में सुव्यवस्थित ढंग से स्वाध्याय के प्रति रुचि जागृत करता है। जिन्हें मौन वाचन का अभ्यास नहीं होता वे बिना बोले हुए किसी शब्द का अर्थ समझ पाने में अपने को असमर्थ महसूस करते हैं।

उद्देश्य—मौन वाचन का शिक्षण मुख्य रूप से इसलिए होता है जिससे कि—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मौन वाचन
(SILENT READING)

लिपिबद्ध भाषा अर्थात् लिखित सामग्री को बिना आवाज़ किए हुए मन-ही-मन में शांतिपूर्वक पढ़ कर अर्थ ग्रहण करने की क्रिया को मौन वाचन कहा जाता है। मौन वाचन में नेत्र पाठ्य-सामग्री को जल्दी-जल्दी पढ़ते हैं और मस्तिष्क उस सामग्री के अर्थ को ग्रहण करता जाता है। इसमें बिना होंट हिलाए बच्चा मन ही मन में पढ़ता है।

'मौन वाचन' पठन की ऐसी प्रक्रिया है जिस में दृष्टि विराम के माध्यम से वाचन मन ही मन में किया जाता है। इस में नेत्र जल्दी-जल्दी चलते हैं, वाचन मानसिक धरातल पर होता है और मस्तिष्क जल्दी-जल्दी अर्थ ग्रहण करता है। इस में होंठ भी हिलाना नहीं होता है। मौन वाचन के लिए रायबर्न लिखते हैं "आरम्भ में ही बच्चों को प्रशिक्षित करना चाहिए कि अपने आप पाठ करते हुए वे अपने होठों को न हिलाएं। अन्यथा मौन वाचन 'सस्वर वाचन' का ही रूप बन कर रह जाएगा और बच्चा कभी भी अपनी आंखों से पढ़ना नही सीखेगा।

मौन वाचन की उपयोगिता व महत्त्व

वाचन के व्यापक क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए पहला कदम सस्वर वाचन के रूप में उठाया जाता है। परन्तु जीवन में सस्वर वाचन नहीं किया जाता। दूसरों की उपस्थिति में सस्वर वाचन करना न केवल अशिष्ट कहलाता है बल्कि दूसरों की कई उपयोगिताओं में बाधक भी बनता है। मौन वाचन की कई उपयोगिताओं के कारण विद्यार्थियों को सस्वर वाचन से मौन वाचन की ओर अग्रसर किया जाता है। मौन वाचन का महत्त्व इस प्रकार है—

(1) मौन वाचन से वाचन की गति में वृद्धि हो जाती है।

(2) मौन वाचन से थकान कम होती है।

(3) मौन वाचन से थकान कम होने के कारण छात्र अधिक देर तक पढ़ सकते हैं।

(4) अर्थग्रहणशीलता में भी इससे वृद्धि होती है।

(5) छात्र में एकाग्रता का विकास होता है।

(6) सूक्ष्म एवं विस्तृत दोनों प्रकार के अध्यय में उपयोगी होता है।

(7) संक्षेपीकरण में सहायक होता है।

(8) मौन वाचन में कम समय लगता है। एक परिच्छेद के स्वर-वाचन में जितना समय लगता है, उस से कहीं कम समय मौन वाचन में लगता है। ब्राईन के अनुसार—"निस्संदेह मौन-वाचन अपेक्षाकृत अल्पव्ययी साधन है। इसके साथ-साथ यह पद्धति जीवन की साधारण क्रियाओं के अत्यधिक अनुकूल है क्योंकि हमारा अधिकांश वाचन मौन रूप से होता है।

(9) गहन अध्ययन में सहायक है।

(10) समय के सदुपयोग में सहायक

(11) स्वाध्याय की आदत के विकास के लिए आवश्यक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाचन/पठन दोष व उनका समाधान

(Reading Defects and their Curve)

वाचन एक कला है। वाचन कौशल को विकसित करने के लिए काफी अभ्यास करना ज़रूरी है। वाचन करते हुए बच्चे निम्न प्रकार की त्रुटिया करते हैं :

(1) अशुद्ध उच्चारण
(2) अनुचित गति
(3) अटक-अटक कर पढ़ना
(4) अनुचित मुद्रा में पढ़ना
(5) अनुचित वाचन-शैली
(6) बिना अर्थ समझे पढ़ना
(7) आरोह-अवरोह को ध्यान में न रखते हुए पढ़ना
(8) पढ़ने के समय स्वर का धीमा होना
(9) भावानुसार न पढ़ना
(10) विराम चिन्हों का ध्यान न रखते हुए पढ़ना

वाचन सम्बन्धी त्रुटियों के कारण

(1) दृष्टि-दोष,
(2) वाणी सम्बन्धी दोष
(3) वाचन-अभ्यास की कमी
(4) पाठ्य-सामग्री का कठिन होना
(5) पाठ्य-सामग्री में छपाई सम्बन्धी त्रुटि
(6) मनोवैज्ञानिक कारण
(7) कक्षा का तनावपूर्ण वातावरण
(8) अध्यापक का व्यवहार
(9) वाचन सम्बन्धी मार्गदर्शन का अभाव
(10) अरुचिकर पाठ्य-सामग्री
(11) असावधानी
(12) अतिशीघ्रता
(13) छपाई का अशुद्ध होना
(14) व्याकरण ज्ञान का अभाव
(15) आदर्शवाचन का अभाव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाचन सम्बन्धी त्रुटियों को दूर करने के उपाय

(1) शारीरिक उपचार द्वारा दृष्टि दोष व वाणी-दोष को दूर करने का प्रयास करना।
(2) शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
(3) ध्वनियों का पूर्ण ज्ञान व अभ्यास करवाना।
(4) सस्वर वाचन करवाना।
(5) छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल पाठ्य सामग्री का चुनाव।
(6) छात्रों से सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना।
(7) पाठ्य-पुस्तकों की शुद्ध छपाई होनी चाहिए।
(8) वाचन सम्बन्धी उचित मार्गदर्शन करना।
(9) वाचन से पहले कठिन शब्दों की व्याख्या करना।
(10) सावधानी से पढ़ने का अभ्यास कराना।
(11) कक्षा का आकर्षक वातावरण बनाना।
(12) अध्यापक द्वारा आदर्श वाचन प्रस्तुत करना।

(1) बालकों में बोध शक्ति का विकास हो जाय।
(2) छात्रों में विभिन्न विषयों को पढ़ने के प्रति रुचि जागृत हो जाये।
(3) छात्र अध्ययनशील हो जाये।
(4) छात्र मौन रूप से पढ़ते पढ़ते ही अपनी विचार शक्ति का प्रयोग कर सके।

मौन वाचन के आवश्यक अंग—(1) छात्रों में सक्रिय शब्द कोप तथा परिचित शब्द का समृद्ध होना बहुत आवश्यक है।

(2) मौन पाठ करते हुए पाठ का भाव समझते हुए ही आगे बढ़ना चाहिए।
(3) धैर्य तथा एकाग्रता भी मौन वाचन के आवश्यक अंग हैं।
(4) मौन वाचन करते हुए उचित ढंग से बैठना बहुत आवश्यक है।

मौन वाचन को शिक्षा द्रुत-पाठ की पुस्तकें, कहानी, वर्णनात्मक निबन्ध, उपन्यास-आ के माध्यम से दी जा सकती है। कक्षा में शिक्षण के अलावा वाचनालयों और पुस्तकालयों भी मौन वाचन की शिक्षा दी ज़ा सकती है। इसके लिए प्रबन्ध और निरीक्षण की व्यव आवश्यक है।

लिखित सामग्री को प्रवाहपूर्ण तथा शुद्ध उच्चारण के साथ भाव समझते हुए पढ़ना वा कहलाता है। इस प्रकार लिपि को पढ़ने के साथ उसका समझ लेना भी आवश्यक है। वा दो प्रकार का होता है—सस्वर-वाचन तथा मौन वाचन।

सस्वर वाचन—स्वर सहित वाचन सस्वर वाचन कहलाता है। सस्वर वाचन से बालकों वाचन की कला का विकास होता है तथा उनका उच्चारण भी शुद्ध होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सस्वर वाचन की शिक्षा के उद्देश्य
(AIMS OF TEACHING LOUD READING)

सस्वर वाचन की शिक्षा इसलिए दी जाती है जिससे कि बच्चा शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ सके, पढ़ते-पढ़ते ही अर्थ ग्रहण कर सके—उसमें सुस्वरूप के संस्कार उत्पन्न हो सकें—ज्ञानार्जन के साथ-साथ मनोरंजन भी प्राप्त कर सके तथा उचित लय, गति, एवं विराम के साथ लिखित सामग्री का वाचन कर सके।

सस्वर वाचन के गुण अच्छे सस्वर वाचन में मधुरता, स्पष्ट अक्षर-अभिव्यक्ति, उचित बल, विराम, गति सुस्वरता, धैर्य, लय तथा उचित वाचन मुद्रा का होना परमावश्यक है।

सस्वर वाचन के रूप—सस्वर वाचन के तीन रूप होते हैं। प्रथम—आदर्श वाचन अध्यापक द्वारा, द्वितीय अनुकरण वाचन छात्रों द्वारा व्यक्तिगत रूप से तथा तृतीय समवेत वाचन—छात्रों की टोलियों द्वारा या पूरी कक्षा द्वारा प्रस्तुत किया गया अनुकरण वाचन।

वाचन की शिक्षण विधियां
(METHODS OF TEACHING READING)

1. अक्षर-बोध विधि (Alphabetic Method)
2. स्वरोच्चार विधि (Phonic Method)
3. देखो कहो विधि (Look and Say Method)
4. वाक्य-रचना विधि (Sentence teaching Method)
5. अनुकरण विधि (Imitation Method)
6. सामूहिक पाठ विधि (Group Reading Method)
7. कहानी विधि (Story Method)
8. साहचर्य विधि (Association Method)

इन विधियों का सार यही है कि हमें एक विधि की बजाय सभी विधियों के गुणों को ले कर अपने तरीके से वाचन की शिक्षा देनी चाहिए।

मौन वाचन—मुख से बिना ध्वनि किये भाव-ग्रहण करते हुए लिखित पाठ को शान्तिपूर्वक पढ़ लेने को मौन वाचन कहते हैं।

मौन वाचन भाषा शिक्षा का बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है। मौन वाचन से बालक स्वावलम्बी बनते हैं, उनमें पढ़ने की रुचि पैदा होती है तथा पाठ शीघ्र पढ़ा जाता है।

उद्देश्य—बालकों में बोध शक्ति के विकास के लिए—अध्ययन में रुचि पैदा करने के लिए—विभिन्न विषयों को पढ़ने में आनन्द प्राप्त कर सकने के लिए तथा उनमें विचार शक्ति के विकास के लिए मौन वाचन की शिक्षा दी जाती है।

आवश्यक अंग—सक्रिय तथा परिचित शब्द कोष का होना, भाव ग्रहण करते चलना, धैर्य और एकाग्रता का होना तथा उचित वाचन मुद्रा का होना मौन वाचन के आवश्यक अंग हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मौन वाचन की शिक्षा कक्षा में तथा कक्षा से बाहर पुस्तकालय, वाचनलय आदि में भी दी सकती है।

प्रशनावली

1. वाचन से क्या अभिप्राय है ? वाचन कितने प्रकार का होता है ? विस्तार से लिखि
2. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर स्पष्ट करते हुए उन्के उद्देश्यों पर प्रकाश डालि
3. वाचन के अंग कौन-कौन से हैं ? वाचन शिक्षण के समय कौन-कौन सी सावधा रखनी चाहिएं।
4. वाचन शिक्षण के लिए आप कौन सी विधियां अपनाएगें व क्यों ?
5. वाचन दोष कौन से है व आप उन्हें कैसे दूर करेंगे ? विस्तार से उदाहरणों स्पष्ट करें।

□□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय — 6

अच्छे लेखन के गुण

(QUALITY OF GOOD HANDWRITING)

लेखन की अपेक्षित योग्यताएं

1. लेख स्वच्छ, स्पष्ट, शिरोरेखा युक्त एवं सुपाठ्य होना चाहिए।
2. प्रसंगानुसार आवश्यक गति से लिखने की योग्यता होनी चाहिए।
3. लिखते समय शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करना चाहिए।
4. विराम-चिन्हों का उचित प्रयोग होना चाहिए।
5. लेखन में यथास्थान अनुच्छेद रखने चाहिएं।
6. लिखते समय वर्णों का आकार सुडौल होना चाहिए।
7. एक शब्द से दूसरे शब्द के बीच उचित दूरी रहनी चाहिए।
8. व्याकरण-सम्मत भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
9. पहले विचार कर पीछे लिखना चाहिए।
10. शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों और सूक्तियों का उचित प्रयोग करना चाहिए।
11. सरल, मिश्रित व संयुक्त वाक्यों की रचना करते हुए पूर्वापर सम्बन्ध का ध्यान रखना चाहिए।
12. लेख में वांछित सामग्री ही प्रस्तुत करनी चाहिए।
13. क्रमबद्धता आरम्भ से अन्त तक बनाये रखनी चाहिए।
14. आवश्यक हो तो थोड़े शब्दों में पुनरावृत्ति करने में हानि नहीं, विशेषतः लिखित का सारांश प्रस्तुत करते हुए।
15. पृष्ठपोषण से सदा बचना चाहिए।
16. लेख में पृथक-पृथक अनुच्छेदों का संयोजन करना चाहिए।
17. अपनी कही बात का व्याघात या खंडन नहीं करना चाहिए।
18. विदेशी भाषा के शब्दों की भरमार नहीं करनी चाहिए। इससे लेख उत्तम नहीं रहता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

19. विदेशी भाप का कोई शब्द अनिवार्य हो, तो उसे नागरी अक्षरों में, कोष्ठक (ब्रैके में लिखना चाहिए।
20. जिन शब्दों का निश्चित अर्थ विदित न हो, उन शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहि
21. लिखते समय तर्क संगतता का ध्यान रखना चाहिए।
22. अतिवाद से बचना चाहिए अर्थात् अति प्रशंसा तथा अतिनिन्दा का आश्रय न लेना चाहिए।

लेखन-कला के गुण

लेखन कला के बारह गुण हैं—

1. शुद्ध लेख 2. सुलेख 3. मौलिकता 4. सरलता 5. मधुरता 6. रोचकता 7. ला 8. कल्पना 9. चमत्कार 10. व्यंग्य 11. भावों की प्रबलता 12. विराम-चिन्हों का उचित प्रयोग

1. शुद्ध लेख—जो भी लेख लिखा जाए उसे शुद्ध होना चाहिए ।यदि कोई शब्द ए वार अशुद्ध लिखा जाए तो उसे दस बार शुद्ध लिखकर अभ्यास कर लेना चाहिए। कर्त्ता, क क्रिया आदि के क्रम का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। पुल्लिग, स्त्रीलिंग, एकवचन, बहुवच उत्तम पुरुष व मध्यम पुरुप का विशेष ध्यान रखना चाहिए। किसी विशेप अवसर को छोड़ प्रायः स्वतन्त्र वाक्य का आरम्भ परन्तु, किन्तु इसलिए आदि शब्दों से करना ठीक नहीं। मुहाव तथा प्रसिद्ध शब्दों को उसी रूप में लिखना चाहिए। वाक्य छोटे-छोटे होने चाहिएं।

2. सुलेख—प्रतिदिन के व्यवहार में और परीक्षा में विशेपतः सुलेख का वहुत महत्त्वपू स्थान है। लेख को देखते ही परीक्षक के हृदय में परीक्षार्थी के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल भा उत्पन्न हो जाता है। अतः सुन्दर लिखना एक विशेप गुण है। सुन्दर लिखना अभ्यास से बन है। निम्नलिखित उपायों पर ध्यान देने से लेख सुन्दर वन सकता है—

1. कभी भी अति शीघ्रता से न लिखो।
2. हाथ को ढीला छोड़कर लिखने से अक्षर भद्दे बन जाते हैं।
3. प्रत्येक अक्षर पूरा लिखना चाहिए और प्रत्येक अक्षर के वास्तविक स्वरूप को जान चाहिए।
4. यदि लेख बहुत खराब हो तो कलन से सुलेख संचिका पर बहुत धीरे-धीरे लिख अभ्यास करना चाहिए।
5. सुविधा के अनुसार सबसे पहले यह निश्चित कर लेना चाहिए कि अक्षर बाईं अ झुके हुए लिखने हैं, या सीधे अथवा दाईं ओर झुके हुए। फिर सदा उसी अ लिखने चाहिएं। कुछ अक्षर बाईं, कुछ सीधे तो कुछ दाईं ओर लिखने ठीक नहीं
6. खुरदरे और रद्दी काग़ज़ पर खराब निब से और फीकी स्याही से कभी नहीं लिख चाहिए, इससे सुलेख के भी अक्षर खराव हो जाते हैं।

3. मौलिकता—मौलिकता का अर्थ है अपने मन या मस्तिष्क की उपज। किसी के भा को दूसरों की कल्पना को, उसकी शैली की पूरी-पूरी नकल करने से लेख की मौलिकता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो जाती है। दूसरी जगह से सहायता लेने में कोई बुराई नहीं, पर उसमें अपनापन अवश्य होना चाहिए—अपने ढंग, अपनी नई शैली अपनी मौलिकता की छाप होनी चाहिए।

4. **सरलता**—सरलता लेख का एक विशेष गुण है। भाषा कठिन होने से भाव तुरन्त स्पष्ट नहीं होते और लेख का उद्देश्य पूरा नहीं होता। जहाँ तक हो सके भाषा सरल ही लिखनी चाहिए। कठिन शब्दों के प्रयोग में अशुद्धियाँ भी अधिक हो जाती हैं तथा भाषा बनावटी हो जाती है।

5. **मधुरता**—शब्द मधुर अक्षरों वाले होने चाहिएं। अधिक संयुक्त और ट, ठ, ड, ढ, ण, ष जैसे कर्णकटु अक्षरों वाले शब्दों के अधिक प्रयोग से लेख की शोभा कम हो जाती है। हाँ, वीर-रस सम्बन्धी लेख में ट वर्ग आदि का प्रयोग अच्छा होता है।

6. **रोचकता**—रोचकता सबसे बड़ा गुण है। चाहे कैसी ही भाषा लिखी जाए, यदि रोचक होगी तो उसका पूरा प्रभाव पड़ेगा। जो लेख पाठक को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है, वह वास्तविक लेख है। अरोचक लेख अच्छा नहीं कहा जा सकता है। कोई भी पक्ष, कहानी या निबन्ध लिखा जाए, उसका पहला ही वाक्य इतना रोचक होना चाहिए कि पढ़ने वाला उसे पढ़े बिना न छोड़े। सूरदास पर निबन्ध लिखते हुए यदि हम इस प्रकार लिखें कि सूरदास हिन्दी के उच्च कोटि के सन्त कवि हुए हैं, या सूरदास हिन्दी के सूर्य माने जाते हैं तो पाठक इसे रूचि से नहीं पढ़ेंगे। पर जब हम लिखेंगे कि "मधुर राग गाते हुए किसी संगीतज्ञ के मुख से 'अब हो' नाच्यो बहुत गोपाल' की ध्वनि सुनते ही हृदय-वीणा के तार हिलने लगते हैं, तो पढ़ने वाला इस लेख की ओर तुरन्त आकर्षित हो जाएगा।

रोचकता पैदा करने के लिए हास्य का पुट देना बहुत लाभदायक होता है, परन्तु तुच्छ या अश्लील हास्य कभी नहीं लिखना चाहिए।

7. **लाघव**—लाघव अर्थात् संक्षेप अच्छे लेख की विशेष पहचान है। साधारण लेखक जिस भाव को कई वाक्यों में भली भाँति प्रकट नहीं कर सकता, अच्छा लेखक उसी भाव को एक ही वाक्य में अच्छी तरह प्रकट कर देता है, इतना ध्यान रखना चाहिए कि संक्षेप के पीछे दीवाने बनाकर कहीं भावों का ही गला न घोंट दिया जाए। वाक्य यथाशक्ति छोटे-छोटे लिखने चाहिएं। अधिक विस्तार अच्छा नहीं होता। कई वाक्यों के समूह को अनुच्छेद कहते हैं। लेख कई अनुच्छेदों में बाँटकर लिखना चाहिए। वाक्य और अनुच्छेद बहुत लम्बे न हों तो अच्छा है।

8. **कल्पना**—जिस लेखक में कल्पना करने की शक्ति होती है, वही सफल लेखक होता है। कई बातें प्रत्यक्ष नहीं होती, कल्पना से लिखनी पड़ती हैं। बहुत से छात्र कल्पना शक्ति के अभाव में अच्छा लेख नहीं लिख पाते। कल्पना शक्ति बढ़ाने का सबसे अच्छा ढंग यह है कि किसी वस्तु के सम्बन्ध में पहले प्रश्न सोचे जाएं, फिर उनके उत्तरों की कल्पना की जाए।

9. **चमत्कार**—अलंकारों के मेल से भाषा चमत्कार पूर्ण बनती है। रमेश का रंग काला है की अपेक्षा रमेश तो तवे को मात करता है लिखने से वाक्य चमत्कृत हो जाता है। पर अलंकार स्वाभाविक होने चाहिएं। यह भी ध्यान रहे कि अलंकारों की अधिकता से लेख बिगड़ जाता है। उचित स्थान पर यथायोग्य मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से भी भाषा चटकीली और प्रभावपूर्ण हो जाती है।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. व्यंग्य—भाषा में शब्दों का अर्थ प्रकट करने वाली तीन शक्तियां होती हैं—अमिधा, लक्षणा, व्यंजना। व्यंजना-शक्ति से शब्दों का न तो सीधा सादा अर्थ लिया जाता है और न लक्ष्यार्थ लिया जाता है, व्यंग्यार्थ अर्थात् और ही अर्थ लिया जाता है। जैसे—रावण के पूछने पर अंगद कहा कि मैं बाली का बेटा हूँ। मेरे पिता से तुम्हारी कभी भेंट हुई होगी ? अर्थात् मैं उस बाली पुत्र हूँ, जिसने तुम्हें चिरकाल तक बन्दी बनाए रखा था। इस वाक्य में व्यंग्य अर्थ का बोध होता अतः लेख में जहाँ-तहाँ व्यंग्य या ध्वनि से अवश्य काम लेना चाहिए।

11. भावों की प्रबलता—भावों की प्रबलता होना बहुत आवश्यक है। भाव भाषा के प्र होते हैं। प्रबल भावों के न होने से ही लेख निर्जीव होता है, उसमें किसी को उत्साहित क या वास्तविक तथ्य समझाने की सामर्थ्य नहीं होती और वह मर्मस्पर्शी नहीं होता है।

12. विरामचिन्हों का उचित प्रयोग—विराम चिन्ह भाषा को संयत कर देते हैं और ठ भाव समझने में पूरी सहायता पहुँचाते हैं। विराम चिन्हों के बिना वाक्य का कुछ का कुछ अ प्रतीत होने लगता है, इसलिए विराम चिन्हों का उचित प्रयोग आवश्यक है।

लेखन में अशुद्धियां व उनका सुधार

(DEFECTS IN WRITING SKILLS AND THEIR IMPROVEMENT)

वैसे तो देवनागरी लिपि हिन्दी की वर्णमाला ध्वनियों पर आधारित है, अतः हिन्दी भा में लेखन की त्रुटियां होने की सम्भावना कम होती है, परन्तु फिर भी कक्षा में छात्रों के लेख में निम्न प्रकार की अशुद्धि हो सकती है :

(1) मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ

हिन्दी भाषा में शब्दों में ह्रस्व एवं दीर्घ दो प्रकार की मात्राओं का प्रयोग होता है। य छात्र इन मात्राओ को उनके निश्चित स्थान पर नहीं लगाते तो मात्रा सम्बन्धी अशुद्धि जाती है :

(अ) ह्रस्व एवं दीर्घ मात्राओं का अशुद्ध प्रयोग

जैसे अराम (आराम) किन्तू (किन्तु), परन्तू (परन्तु), प्रभू (प्रभु), कवी (कवि), मालीन (मालि मुकूट (मुकुट), भक्ती (भक्ति), दिवार (दीवार) आदि।

(आ) मात्राओं का लोप

जैसे मधर (मधुर), मालन (मालिन), ससराल (ससुराल), आशीवाद (आशीर्वाद), मुकट (मुकु आदि।

(इ) मात्राओं के स्थान में परिवर्तन

जैसे ऐतीहासिक (ऐतिहासिक), कवियत्री (कवियित्री), पश्चीम (पश्चिम) आदि।

(ई) ए तथा ऐ का अशुद्ध प्रयोग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लिए (लिऐ), चाहिऐ (चाहिए) एतिहासिक (ऐतिहासिक)

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(उ) अनावश्यक मात्राएं लगाना

जैसे आदि (आदि), प्रदर्शिनी (प्रदर्शनी)

ए तथा ये का अशुद्ध प्रयोग—जैसे लिये (लिए), गये (गए), चाहियें (चाहिए) आदि

(ऋ) ई तथा यी का अशुद्ध प्रयोग—जैसे खायी (खाई), रायी (राई), भायी (भाई) आदि

(ए) आ तथा वा का अशुद्ध प्रयोग—हुवा (हुआ), जावेगा (जायेगा)

2. ऋ तथा रि एवं र और अर की अशुद्धियाँ

जैसे—रिषि (ऋषि) रीतु (ऋतु), रिण (ऋण), पूरण (पूर्ण), द्रश्य (दृश्य), गिरह (गृह), परयोग (प्रयोग) आदि।

3. वर्णों की अशुद्धियां

(अ) अनावश्यक वर्ण लगाना। कई बार छात्र अनावश्यक वर्ण अपनी ओर से लगा देते हैं, जैसे—जैस्सा (जैसे), तुम्हने (तुमने), सनान (स्नान), यतन (यत्न), इस्नान (स्नान) आदि।

(आ) वर्णों के स्थान परिवर्तन जैसे—विषेश (विशेष), आस्वशत (आशवस्त), वुसमा (सुषमा), आर्दश (आदर्श), प्रमान (प्रमाण) आदि।

(इ) वर्णों का लोप जैसे—उदेश्य (उद्देश्य), अध्यन (अध्ययन), स्वाधाय (स्वाध्याय)

(ई) वर्णों सम्बन्धी अन्य अशुद्धियां जैसे—बचन (वचन), परेम (प्रेम), करण (कर्ण), परिय (प्रिय), सुमेह (सुमेध)

4. न और ण की अशुद्धइयों जैसे

गुन (गुण), रणभूमि (रणभूमि) आदि

5. क्ष और छ की अशुद्धियाँ

जैसे छमा (क्षमा), परीछा (परीक्षा), लछमण (लक्ष्मण)

(स) की अशुद्धियाँ जैसे—रासता (रास्ता), नि स सहाय (निस्सहाय) आदि।

7. व और ब की अशुद्धि जैसे

बिरेन्द्र (विरेन्द्र), बिधा (विद्या), बिकास (विकास) बन (वन), वनना (बनना), वसन्त (बसन्त) आदि।

8. स, श और ष की अशुद्धियां

जैसे भाया (भाषा) सुशमा (सुषमा), कश्ट (कष्ट), उपदेष (उपदेश), विदेप (विदेश), विस्वास (विश्वास), शरोज (सरोज), पुरुस (पुरुष), विकाश (विकास) आदि।

9. ष और ख की अशुद्धियाँ

जैसे वरखा (वर्षा), पुरुख (पुरुष) आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. संयुक्ताक्षर संबंधी अशुद्धियाँ जैसे विधालय (विद्यालय) , उद्विग्न (उद्विग्न) विदवता (विद्वता) , परीशरम (परिश्रम) चिन्ह (चिह्न) , मिटटी (मिट्टी) , प्रहल (प्रह्लाद) आदि।

11. बिन्दु की अशुद्धियाँ

(अ) बिन्दु का लोप हो जाना—पढना (पढ़ना), काढना (काढ़ना), ड़लिया (डलिया), ढ (ढकना) आदि।

(आ) बिन्दु का स्थान परिवर्तन—सतं (संत), कवरं (कंवर) आदि।

12. अनुस्वार का स्थान परिवर्तन संस्कंत (संस्कृत) , हसं आदि

(आ) अनुस्वार का लोप—गगा (गंगा), हस (हंस) आदि

(इ) अनुस्वार के स्थान पर चन्द्र बिन्दु तथा चन्द्र बिन्दु के स्थान पर अनुस्वार का जैसे—अं (आँख), चांद (चाँद), हंसी (हँसी), अशुद्धियां (अशुद्धियाँ)

13. विसर्ग संबंधी अशुद्धियाँ

जैसे दुख (दुःख), प्राय (प्रायः), अन्तसाक्ष्य (अन्तःसाक्ष्य) आदि।

14. शिरोरेखा संबंधी अशुद्धियाँ

घबराना (घवराना), मारत माता (भारत माता), घुंघराले (घुंघराले) आदि।

15. अल्प प्राण एवं महाप्राण की अशुद्धियां

जैसे—गर (घर), वास्कर (भास्कर), प्रबात (प्रभात) आदि।

16. अनुस्वार एवं अनुनासिक का अशुद्ध प्रयोग

जैसे—अहिन्सा (अहिंसा), हिंदी (हिन्दी), अन्क (अंक), झंडा (झण्डा) आदि।

17. उच्चारण भिन्नता संबंधी अशुद्धियां

जिन शब्दों के उच्चारण में अनेकरूपता होती है, उनकी वर्तनी में भी अनेकरूपता जाती है इसी कारण निम्नलिखित अशुद्धिया होती हैं जैसे अमरीका (अमेरिका), केरला (के चपरासी (चपड़ासी), रामा राम आदि।

18. संस्कृत शब्दों से संबद्ध अशुद्धियां

जैसे रितु (ऋतु), विश (विष), जिज्ञापा (जिज्ञासा) आदि।

19. विराम—चिह्नों संबंधी अशुद्धियाँ

सामान्यतः छात्र पूर्ण विराम, प्रश्नवोधक, अर्ध विराम, तथा योजन चिह्नों को यथास्थ प्रयुक्त नहीं करते जिस कारण भी लेखन की अशुद्धियाँ होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

20. विदेशी शब्दों से सम्बद्ध हिन्दी लेखन की अशुद्धियाँ

जैसे—कालेज (कॉलेज), डाक्टर (डॉक्टर), अखवार (अख़बार) आदि।

लेखन सम्बन्धी इन अशुद्धियों के अतिरिक्त छात्र सन्धि, समास, विभक्ति, लिंग एवं वचन सम्बन्धी अन्य कई त्रुटियां भी करते हैं। अध्यापक का कर्त्तव्य है कि कक्षा में पढ़ाते समय छात्रों की इन अशुद्धियों को पहचाने व उनके कारणों का पता लगाए और उन्हें दूर करने के प्रयास करे।

लेखन-सम्बन्धी अशुद्धियों के कारण :

छात्र लिखते समय लेखन सम्बन्धी विभिन्न प्रकार की अशुद्धियाँ करते हैं, इसके विभिन्न कारण निम्नलिखित हैं :

(1) लिपि का अपूर्ण ज्ञान
(2) मात्राओं का अपूर्ण ज्ञान
(3) अशुद्ध उच्चारण
(4) असावधानी
(5) अतिशीघ्रता
(6) व्याकरण का अपूर्ण ज्ञान
(7) अध्यापक की अयोग्यता
(8) अध्यापक द्वारा मार्गदर्शन का अभाव
(9) लेखन कार्य का अभाव
(10) संशोधन अभ्यास का अभाव
(11) प्रान्तीयता का प्रभाव
(12) सांवेगिक कारण
(13) बौद्धिक-यूनता
(14) शारीरिक दोष

यदि बच्चों को देवनागरी लिपि का पूर्ण ज्ञान नहीं होगा तो वे लेखन सम्बन्धी अशुद्धियां करते हैं जैसे व और व, स, ष, व, श की रेफ सम्बन्धी तथा अन्य विभिन्न प्रकार की त्रुटियों का कारण लिपि का अधूरा ज्ञान है।

लिपि के साथ ध्वनियों का ज्ञान कराते समय यदि छात्रों को यह न समझाया जाए कि प्रत्येक व्यंजन के साथ विभिन्न स्वर किस प्रकार से मिलते हैं, उन्हें अलग से कैसे लिखा जाता है, तो वे मात्राओं का शुद्ध प्रयोग नहीं कर पाते।

हिन्दी भाषा ध्वनि प्रधान है। इसे जैसा बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं। इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग वर्ण हैं। यदि छात्र में उच्चारण दोष होता है तो वह लिखेगा भी अशुद्ध।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यदि लिखते समय बच्चे का ध्यान कहीं और है, तो लेखन सम्बन्धी नई त्रुटियाँ हो जा है। वर्णलोप, स्थान परिवर्तन, मात्राओं की अशुद्धियाँ आदि विभिन्न दोष प्रायः इसी कारण होते हैं।

असावधानी की तरह अतिशीघ्रता से भी छात्र लेखन सम्बन्धी अशुद्धियां करते हैं। य छात्रों को व्याकरण सम्बन्धी नियमों का पूर्ण ज्ञान नहीं होता तो वे विराम चिह्नों सम्बन्धी, लि सम्बन्धी, वचन सम्बन्धी अशुद्धियां करते हैं। कई बार अध्यापक श्यामपट्ट लेखन कार्य क समय अशुद्धि लिखता है या छात्रों की अशुद्धियां नहीं बताता तो भी छात्र अशुद्ध लिखते है

बहुत से अध्यापक संशोधन कार्य से बचने के लिए लेखन कार्य बहुत कम कराते जिससे छात्रों को लिखने का कम अवसर मिलता है। यदि कभी लिखना पड़ता है तो अशुद्धि हो जाती हैं। कई बार अध्यापक छात्रों की अशुद्धियों की जाँच ठीक से नहीं करता। जल्दी-जल संशोधन से बहुत सी अशुद्धियां रह जाती है जिससे छात्रों को उन अशुद्धियों को दूर क का अवसर नहीं मिलता। साथ ही यदि अशुद्धियों का पता चल जाये तो छात्र उसका अभ्य नहीं करते जिससे छात्र वे अशुद्धियां बार-बार करते हैं।

प्रान्तीय, विदेशी भाषा के प्रभाव के कारण भी छात्र अशुद्ध लिखते हैं। कई बार कि विशेष कारण से मानसिक रूप से अस्वस्थ होने या सांवेगिक तनाव होने की स्थिति में लिख समय सन्तुलन नहीं रह पाता है और लेखन की अशुद्धियां हो जाती हैं।

इस प्रकार अध्यापक को छात्रों की विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों के कारणों को जान चाहिए जिससे वह उनको दूर कर सकें।

लेखन की अशुद्धियों को दूर करने के उपाय

(1) लिपि का पूर्ण ज्ञान
(2) बारहखड़ी का अभ्यास
(3) व्याकरण का पूर्ण ज्ञान
(4) शुद्ध उच्चारण की शिक्षा
(5) लिखने का अभ्यास
(6) लिखित कार्य का संशोधन
(7) सावधानीपूर्वक लिखने की आदत डालना
(8) तीव्र गति से लिखने का अभ्यास कराना
(9) वाचन का अभ्यास
(10) अध्यापक का शुद्ध लेखन
(11) शब्दकोश का प्रयोग
(12) विश्लेषण विधि का प्रयोग
(13) शब्द-पुस्तिकाएँ बनवाना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(14) शारीरिक उपचार

(15) अध्यापक का व्यवहार

(16) व्यक्तिगत ध्यान देना

(17) सामान्य त्रुटियों को सामूहिक रूप से समझाना

(18) खेल विधि का प्रयोग

इस प्रकार उपर्युक्त उपायों का प्रयोग कर अध्यापक छात्रों की लेखन सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर कर उन्हें शुद्ध लिखने का अभ्यास करा सकता है।

प्रश्नावली

1. वाचन का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
2. वाचन की अशुद्धियों के प्रमुख कारण क्या हैं ? उदाहरणों सहित लिखें।
3. वर्तनी की शिक्षा के कौन से साधन हैं ? वर्तनी की शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य कौन-कौन से है ?
4. छात्र लेखन सम्बन्धी कौन सी अशुद्धियां करते हैं ?
5. अच्छे लेखन की क्या विशेषताएं होती हैं।
6. वाचन किसे कहते हैं ? इसके प्रमुख रूपों का उल्लेख करते हुए भाषा-शिक्षण में इसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
7. सस्वर वाचन तथा मौन वाचन की उपयोगिता तथा गुणों का उल्लेख करते हुए इनके उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।
8. वाचन करते समय छात्र सामान्य रूप से किस प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं ? उनके कारण और उपायों का उल्लेख कीजिए।

□□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय–

संक्षेपीकरण और विस्तारीकर

(SUMMARISING AND ELABORATIN

संक्षेपीकरण का अर्थ
(SUMMARIZING MEANING)

अर्थ (Meaning)

किसी मूल लेख अथवा भाषण को उसमें निहित तथ्यों सहित संक्षेप में प्रस्तुत करने क्रिया को संक्षेपीकरण अथवा संक्षेपण कहते है।

संक्षेपीकरण का महत्व व आवश्यकता
(IMPORTANCE AND NEED OF SUMMARIZING)

1. संसार ज्ञान का भण्डार है और आज यह ज्ञान विभिन्न भाषाओं के माध्यम से लि रूप में प्राप्त है। विस्तृत रूप में वर्णित इस ज्ञान को संक्षिप्त रूप में प्रकट दूसरों तक पहुँचाना समाज के प्रति एक बड़ा उपकार है।
2. बड़े लम्बे-चौड़े भाषणों को ज्यों का त्यों लिख देने से पृष्ठों की संख्या तो ब ही है साथ ही साथ पढ़ने वालों का समय भी नष्ट होता है। अतः आवश्य इस की पड़ती है कि इन लम्बे-चौड़े भाषणों को उनके सम्पूर्ण तथ्यों सहित सं रूप में प्रस्तुत किया जाए।
3. प्रायः हमें किसी बैठक में भाग लेने वालों के वक्तव्यों के सार एवं उसकी कार्य को उसके संक्षिप्त रूप में लिखना होता है, यह सब हम तभी कर सकते हैं संक्षेपीकरण में निपुण हों; अतः हमें बच्चों को संक्षेपीकरण की शिक्षा आवश्य चाहिए।
4. इसके अतिरिक्त आज की दुनिया में कार्यालय कार्य बहुत हैं, उनमें अधिकतर लिखित रूप में होता है और कार्यालय द्वारा पत्र-व्यवहार भी लेखन के रू होता है। कार्यलयों में आवश्यक पत्रों का न ... एक रजिस्टर किय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके संक्षिप्त रूप में चढ़ाना होता है। यह कार्य निपुणता के साथ तभी किया जा सकता है जब वह संक्षेपीकरण की कला में निपुण हो।

5. बड़े-बड़े ग्रन्थों को पढ़कर उनके सार को ग्रहण करने की प्रवृत्ति का विकास करने की प्रवृत्ति का विकास करने की दृष्टि से भी हमें बच्चों को संक्षेपीकरण में निपुण करना चाहिए।

संक्षेपण की शिक्षण विधि (Teaching Method of Summarizing)

स्कूलों में संक्षेपण की शिक्षा कैसे दी जाती है, इससे हम सभी परिचित हैं। प्रायः अध्यापक बच्चों के सामने किसी मूल रचना के किसी अनुच्छेद अथवा पंक्तियों को प्रस्तुत कर उन्हें उसका सार लिखने को कहा जाता है और विद्यार्थी उसका भाव ग्रहण करे विना ही मूल लेख की भाषा में कुछ हेर-फेर कर संक्षेपण कर देते हैं। इस क्रिया में वे कभी ऐसा हेर-फेर कर देते हैं कि मूल भाव का लोप ही हो जाता है। आजकल संक्षेपण की शिक्षा दी जाती है लेकिन ठीक से नहीं।

संक्षेपण की शिक्षा की आदर्श प्रणाली—संक्षेपण भी एक कला है। इसके लिए बच्चों को भाषा-ज्ञान के साथ-साथ विश्लेषण एवं संक्षेपण, तर्क-वितर्क एवं विचार तथा निर्णय करने में भी निपुण होना चाहिए। आठवीं कक्षा तक के बच्चे इन सब क्रियाओं में निपुण नहीं होते, अतः उन्हें संश्लेषण की शिक्षा नहीं देनी चाहिए। यह कार्य नवीं कक्षा से प्रारम्भ करना चाहिए।

संक्षेपण की शिक्षा के उद्देश्य
(AIMS OF SUMMARIZING)

संक्षेपण की शिक्षा के उद्देश्यों को इस निम्नलिखित क्रम में प्रकट कर सकते हैं —

(1) विद्यार्थियों को कार्लय विधि एवं पत्रकारिता में निपुण करना।

(2) विद्यार्थियों में निबंध में से सार की बात छांट कर उसे ग्रहण करने एवं निरर्थक बातों को त्यागने की प्रकृति का विकास करना।

(3) विद्यार्थियों की विश्लेषण, संश्लेषण, तर्क एवं निर्णय आदि शक्तियों का विकास करना।

(4) विद्यार्थियों को बड़ी से बड़ी बात को सूक्ष्म रूप में प्रकट करने की कला में निपुण करना।

(5) विद्यार्थियों के विस्तृत लेखों व भाषणों का विश्लेषण कर उनके तथ्यों को छाँटने में निपुण करना।

1. छात्रों द्वारा सामग्री का मौन पठन

सबसे पहले छात्र प्रस्तुत सामग्री का मौन पठन करें। मौन पठन करते समय उन्हें कठिन शब्दों एवं मूल तथ्यों को रेखांकित करना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. शब्दकोष का प्रयोग

शब्दकोष की सहायता से कठिन शब्दों के अर्थ लिखें।

3. पुनः मौन पठन

शब्दार्थ लिखने के बाद छात्र पुनः मौन पठन करें और केन्द्रीय भाव ग्रहण करते हुए को ग्रहण करें।

4. तथ्य विश्लेपण

अब अध्यापक प्रश्नोत्तर विधि द्वारा विद्यार्थियों के बोध की परीक्षा करें और यथा का विश्लेपण कर बच्चों को तथ्यों के छांटने एवं उसके केन्द्रीय भाव को ग्रहण करने में सह हों। छात्रों को अंश का शीर्षक निकालने में सहायता करना भी आवश्यक होता है।

5. बच्चों द्वारा मौखिक रूप से संक्षेपण

छात्रों को अब लेख के तथ्यों को मूल के एक तिहाई रूप में व्यक्त करने को चाहिए। छात्रों की अशुद्धियों को उन्हीं के साथियों की सहायता से दूर करना चाहिए।

6. बच्चों द्वारा लिखित रूप से संक्षेपण

मौखिक रूप से संक्षेपण के बाद अध्यापक को सभी छात्रों को लेख का संक्षिप्त लिखने का आदेश देना चाहिए। इस समय अध्यापक को कक्षा निरीक्षण करना चाहिए देखना चाहिए कि सभी छात्र अपना-अपना कार्य स्वतन्त्रता पूर्वक स्वच्छता एवं शुद्धता के करें।

7. लिखित कार्य की जाँच

बच्चों के लिखित कार्य की जाँच सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसके अभाव में की अशुद्धियों का पता नहीं लगा सकते। सामूहिक अशुद्धियों को सामूहिक और व्यक्ति अशुद्धियों को व्यक्तिगत रूप से र करना चाहिए।

संक्षेपण के सम्बन्ध में कुछ सावधानियां ध्यान रखने योग्य बातें।

1. संक्षेप लेख इतना सूक्ष्म अथवा जटिल नहीं होना चाहिए कि तथ्यों को स ही कठिन हो जाए।
2. संक्षेप लेख में मूल लेख अथवा लेखांश के सभी तथ्य आ जाने चाहिए सभी अनावश्यक बातें उससे दूर हो जानी चाहिएं।
3. लेख का शीर्षक जांचते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सम्पूर्ण लेख का प्रतीक हो, जिससे लेख के केन्द्रीय भाव की अनुभूति चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. संक्षेप लेख में संक्षेपक को मूल लेख अथवा लेखांश की भाषा नहीं लेनी चाहिए। उसे अपनी भाषा और अपनी शैली में लेख का सार प्रस्तुत करना चाहिए। भाषा और शैली में प्रवाह होना आवश्यक है। भाषणों का संक्षेप करते समय वक्ता की भाषा का प्रयोग किया जा सकता है।
5. संक्षेप अन्य पुरुष में लिखा जाना चाहिए और यदि कहीं ऐसा करने में बात को स्पष्ट करने में बाधा पड़ती है तो उसे कोष्ठक में स्पष्ट कर देना चाहिए।
6. संक्षेप लेख क्रमबद्ध रूप में सर्वमान्य भाषा एवं प्रवाहपूर्ण शैली में व्यक्त करना चाहिए।
7. पूर्णता और स्पष्टता संक्षेपण के आवश्यक अंग हैं। संक्षेप लेख लिख कर उसे ध्यान से देख लेना चाहिए और यदि कोई मूल बात छूट गई हो तो उसे लिख देना चाहिए। जहाँ कहीं अस्पष्टता नज़र आए वहाँ भाषा में परिवर्तन कर उचित भाव को स्पष्ट कर देना चाहिए।
8. संक्षेप लेख मूल लेख के एक तिहाई से अधिक नहीं होना चाहिए।
9. संक्षेप लेख में मूल भावों की टीका टिप्पणी करने का अधिकार संक्षेपक को नहीं होता।
10. संक्षेपण के समय मुख्य भावों को संकेत रूप में ध्यान में रखें या लिख लें।
11. संक्षेपण की भाषा सरल, स्पष्ट और साधारण बोल चाल की भाषा में ही होनी चाहिए।
12. निर्दिष्ट भावों में अपनी राय नहीं जोड़नी चाहिए। केवल दिए हुए विचार ही हों।
13. संक्षेपण के समय मुहावरे या लोकोक्तियों का संक्षिप्त भाव ही लेना चाहिए।
14. संक्षेपण करने से पहले गद्यांश को कम से कम दो तीन बार अवश्य पढ़ें।

विस्तारीकरण एवं उसका महत्त्व/आवश्यकता (Need and Importance of Elaborating)

किसी मूल लेख अथवा भाषण को उसकी व्याख्या सहित विस्तार से लिखने की क्रिया को विस्तारीकरण या विस्तरण कहते हैं। जीवन में हमें कभी संक्षेपीकरण की आवश्यकता पड़ती है तो कभी विस्तारीकरण की। मनुष्य की एक प्रवृत्ति यह भी है कि वह अपनी बात को सार रूप में बड़े संक्षिप्त ढंग से व्यक्त करता है। विद्वान् लोग प्रायः ऐसा ही करते हैं। उनकी सार रूप में कही बात को पूर्णतया स्पष्ट करने के लिए, हमें उसे विस्तार से प्रकट करने के लिए हमें उसे विस्तार से प्रकट करना होता है। साहित्य के कोष में अनेक मुहावरे, कहावतें और सूक्तियां भरी पड़ी हैं, प्रायः उनके विस्तारीकरण की हमें आवश्यकता पड़ती है। दोहे, चौपाईयाँ या मन्त्र रूप में कही बातों को भी विस्तार से प्रकट करना होता है। साहित्य शिक्षण में तो विस्तारीकरण की सबसे अधिक आवश्यकता पड़ती है। गद्य हो अथवा पद्य, उसका पूरा-पूरा अर्थ एवं भाव समझने एवं उसे अपने शब्दों में व्यक्त करने के लिए विस्तारीकरण ही करना होता है।

2020 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विस्तारीकरण की शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Elaborating Education)

1. विद्यार्थियों को व्यास शैली अर्थात् किसी की बात को बाल की खाल नि कर व्यक्त करने में निपुण करना।
2. छात्रों को किसी बात के पक्ष अथवा विपक्ष में दूसरों और अपने जीवन के अनु से प्रमाण प्राप्त करने की क्रिया में निपुण करना।
3. छात्रों को दूसरों द्वारा कहीं मूल बात को पूर्ण विस्तार कके साथ कहने व लि की कला में निपुण करना।
4. छात्रों को दूसरों की बात को उसके पूर्ण रूप में समझाने में निपुण करना।
5. छात्रों को मौन पठन/अध्ययन की कला में निपुण करना।

विस्तारीकरण की शिक्षा के सोपान व शिक्षण पद्धति (Steps of Elaborati Education and Teaching Process)

भाषा एवं साहित्य की शिक्षा में हम प्रायः विस्तारीकरण की शिक्षा देते हैं। उसकी प्रच प्रणाली से हम सब परिचित हैं। शिक्षक किसी गद्य अथवा पद्य खण्ड का भाव कथन प्र द्वारा स्पष्ट कर देते हैं और बच्चों को पंक्तियों विशेष की व्याख्या लिख कर लाने का आ दे देते हैं। बच्चे घर जाते हैं और बाज़ार में उपलब्ध गाइडों व सहायक पुस्तकों में से न कर शिक्षा की आज्ञा का पालन कर देते हैं। ऐसे बच्चों की संख्या बहुत कम है जो स समझते है और स्वयं ही किसी कथित व लिखित तथ्य को विस्तार देते हैं।

विस्तारीकरण की आदर्श प्रणाली

संक्षेपीकरण की तरह विस्तारीकरण भी एक कला है। इसके लिए भी बच्चों को भ का ज्ञान होना चाहिए, उनकी विश्लेषण एवं संश्लेषण, तर्क-वितर्क और निर्णय करने की शक्ति विकसित होनी चाहिएं। बच्चों में प्रारम्भ से ही किसी बात को खोल-खोल कर कहने की प्र देखी जाती है। शिक्षकों का कार्य उन्हें इस क्रिया में निपुण करना है। यह कार्य भाषा-शि के साथ-साथ प्रारम्भ किया जा सकता है। सात-आठ वर्ष के बच्चे अपनी बात को समझा-सम कर कहते देखे जाते हैं। इससे इतना स्पष्ट है कि विस्तारीकरण की शिक्षा प्राथमिक स्तर ही प्रारम्भ कर देनी चाहिए। जैसे-जैसे स्तर उठता जाए तैसे-तैसे विस्तारीकरण के विषय उसका क्षेत्र बढ़ता जाना चाहिए। प्रारम्भ में बच्चे कठिन शब्दों के अर्थ समझा कर लिखें, कठिन वाक्यों को तोड़ कर लिखा करें और इसके बाद किसी तथ्य के पक्ष अथवा विपक्ष प्रमाण प्रस्तुत करें और आगे चल कर गंभीरता से प्रदर्शन करें।

विस्तारीकरण के सोपान

विस्तारीकरण की शिक्षा अलग से देने की जगह गद्य और पद्य की शिक्षा के साथ इसकी शिक्षा दी जाती है। विस्तारीकरण की शिक्षा के चरण नीचे दिए गए हैं—

(1) अध्यापक द्वारा पाठ्यांश का आदर्श पठन।

(2) छात्रों द्वारा अनुकरण पठन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(3) विश्लेषण एवं सौन्दर्यनुभूति (कविता पाठ में)
(4) शब्द एवं भाव व्याख्या (गद्य पाठों में)
(5) मौन पाठ (गद्य पाठों में)
(6) द्वितीय आदर्शवाचन (कविता पाठों में)
(7) संक्षिप्तावृत्ति (गद्य पाठों में)
(8) पुनरावृत्ति या बोध परीक्षा
(9) गृह कार्य एवं संशोधन कार्य।

विस्तारीकरण में बच्चों को निपुण करने के लिए यह आवश्यक है कि यथा अंश में निहित तथ्यों का विश्लेषण कर उन्हें स्पष्ट किया जाए। विचारों से संबन्धित छात्रों के अनुभवों को एकत्रित किया जाए, दूसरों के अनुभवों से उन्हें अवगत कराया जाए, पक्ष अथवा विपक्ष में प्रमाण प्रस्तुत किए जाएं, अर्न्तकथाओं को स्पष्ट किया जाए और उस संबंध में अपना निश्चित मत प्रकट करने के लिए बच्चों को प्रेरणा दी जाए।

छात्रों को किसी प्रसंग का पूर्ण भाव आत्मसात कराने के बाद उन्हें उस अंश का प्रसंग एवं सन्दर्भ सहित विस्तारीकरण करने के लिए कहना चाहिए। वे घर से इस कार्य को पूरा करके लाएं। अध्यापक उनके लिखित कार्य की जाँच करें और उनकी भाषा, शैली तथा विषय वस्तु सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर करें, छात्र अपनी अशुद्धियों को दूर करते हुए उसे पुनः विस्तार सहित व्यक्त करें-इससे छात्र विस्तारीकरण में अपने-आप सफल होने लगेंगे।

उच्च माध्यमिक कक्षाओं में छात्रों को आत्म-निर्भर बनाने का प्रयास करना चाहिए। छात्र किसी गद्य या पद्य के अंश को स्वयं पढ़े और उसके भाव को समझे यह आवश्यक होता है। अतः इस स्तर पर छात्रों को यथा अंश का मौन पठन करने, शब्दकोष के कठिन शब्दों के अर्थ ढूंढने, अर्न्तकथाओं की जानकारी के लिए समाज के प्रौढ़ व्यक्तियों अध्यापकों एवं पुस्तकालयों का प्रयोग करने और यथा भाव से सम्बन्धित अपने अनुभवों को एकत्रित करने की क्रिया में दक्ष करना चाहिए।

विस्तारीकरण के सम्बन्ध में कुछ सावधानियाँ

1. किसी भी दशा में विस्तारक को मूल भाव को उसके अपने ही रूप में प्रकट करना चाहिए।
2. विस्तार से कही बातें किसी भी दशा में अशुद्ध, भ्रामक और निरर्थक नहीं लेनी चाहिए।
3. विस्तरण में मूल लेख अथवा लेखांश की भाषा नहीं होनी चाहिए। विस्तारक को यह कार्य अपनी भाषा और अपनी शैली में प्रस्तुत करना चाहिए। भाषा का सरल एवं सर्वमान्य रूप ही प्रयोग करना चाहिए।
4. विस्तार करते समय मूल लेख के सभी शब्दों का स्पष्टीकरण होना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. संक्षेपीकरण के विरुद्ध विस्तारीकरण में लेखक के अपने विचारों की टीका टि करने की विस्तारक को पूरी-पूरी छूट होती है पर लेखक के अपने विचारों का स्पष्टी करना पहली आवश्यक बात होती है और फिर उसके पक्ष अथवा विपक्ष में प्रस्तुत करना दूसरी बात।
6. विस्तार करते समय यथा अंश में प्रयुक्त मुहावरों, कहावतों और सूक्तियों को करना आवश्यक होता है। उनके लिए उपमा, प्रमाण एवं दृष्टान्त का सहारा चाहिए। अन्तर्कथाओं को भी स्पष्ट रूप से लिखना चाहिए।
7. अनावश्यक बातों को तूल देना उचित नहीं होता। निरर्थक बातों की आवृत्ति विस्तृत लेख की सुन्दरता समाप्त हो जाती है।
8. विस्तार करते समय प्रसंग या अंश के मूल भावों को छाँट कर उन्हें उचित क्रम लगाना चाहिए और फिर उन्हें क्रमबद्ध रूप से स्पष्ट करना चाहिए। भिन्न-भि विचारों को उचित क्रम अलग-लग अनुच्छेदों में व्यक्त करना चाहिए।
9. विस्तार की कोई सीमा नहीं। जितना लिखने से बात पूर्णतया स्पष्ट होती है, उ इसे विस्तार देना चाहिए। इसका अर्थ यह भी नहीं कि व्यर्थ का पृष्ठ-पोषण कि जाएं।

प्रश्नावली

1. विस्तारीकरण से आप क्या समझते हैं ? बच्चों को विस्तारण की शिक्षा आप कि प्रकार देगें ?
2. विस्तारीकरण की शिक्षा के क्या सोपान होने चाहिएं ? छात्रों को विस्तारीक की शिक्षा देते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिएं।
3. संक्षेपण से आप क्या समझते हैं ? संक्षेपण की शिक्षा के क्या सोपान हे चाहिएं ?
4. छात्रों को संक्षेपीकरण की शिक्षा आप किस प्रकार देगें ? संक्षेपण के समय किन-कि बातों का ध्यान रखना चाहिए।
5. छात्रों को संक्षेपीकरण व विस्तारीकरण की शिक्षा देना क्यों आवश्यक है ? विस्त से लिखिए।

□□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय – 8

निबन्ध/पत्र लेखन

(ESSAY WRITING/LETTER WRITING)

निबन्ध लेखन

संस्कृत में उक्ति है—'**गद्यम् कवीनाम् निकषं वदन्ति**' अर्थात् गद्य कवियों की कसौटी है। इसे स्पष्ट करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि 'यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है।' कहने का अभिप्राय यह है कि कथा-कहानी या उपन्यास आदि रचनाएं साधारण गद्य में भी लिखी जा सकती हैं, परन्तु निबन्ध लिखने के लिए विकसित गद्य की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि संसार के साहित्य में कविता, कहानी उपन्यास के पश्चात् ही निबन्ध लिखने का विकास हुआ।

'निबन्ध ' का अर्थ है बन्धा हुआ। विचारों को बांध कर लिखने को निबन्ध कहते हैं। निबन्ध रचना भी एक कला है। यह हर एक के बस का रोग नहीं । उच्च उद्देश्य की पूर्ति करने वाले, साहित्य के इस अंग को अध्यापन का विषय बनाते हुए अध्यापकों में भय का संचार होता है। किसी भी अतिथि या निरीक्षक के आने के समय विरला शिक्षक ही निबन्ध पढ़ाने का साहस करता है। कारण स्पष्ट है—इसमें विचारों की श्रृंखला को बिना किसी अवलम्बन के सजाना पड़ता है। जबकि पाठ्य पुस्तक पढ़ाते समय पाठ्य-समाग्री तो हाथ ही में होती है।

यही दशा छात्र अध्यापकों में भी देखने को मिलती है। अपनी परीक्षा के समय केवल 4 से 5% विद्यार्थी ही निबन्ध पढ़ाते हैं। शायद इसी की छाया विद्यार्थियों पर भी पड़ती दिखाई देती है। वे बहुत ही कम निबन्ध लिखना चाहते हैं। उन्हें उनसे यह कार्य बलपूर्वक करना पड़ता है। छुट्टियों में दिए गए निबन्ध को वे स्कूल खुलने के एक दिन पहले लिखने बैठते हैं। फिर भी हर्ष से नहीं, बाध्य होकर क्योंकि ऐसा न करने से उन्हें डांट का भय रहेगा। वस्तुतः निबन्ध लिखना तथा पढ़ना-आनन्द का विषय होना-चाहिए, क्योंकि इसमें अपनी स्वतन्त्र कल्पना के लिए स्थान होता है तथा शैली का विकास भी। पूर्ण निबन्ध की तीन विशिष्ट आवश्यकतायें होती हैं—

1. हम कुछ कहना चाहते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. हम उसे कह डालते हैं।

3. हम उसे शक्ति और सौन्दर्य से पूर्ण व्यक्त करते हैं।

निबन्ध लिखने हेतु हमें निम्न बातों पर दृष्टि रखनी होगी।

1. वातावरण
2. मनुष्य
3. दोनों की एक दूसरे पर प्रतिक्रिया

संसार के संघर्षों के प्रतिक्रिया या प्रतिक्रिया के तीन दृष्टिकोण हो सकते हैं (1) आदर्शवा (2) यथार्थवादी (3) पलायनवादी।

1. आदर्शवादी—जो भौतिक संसार के प्रति उदासीन, उसके प्रति कोई आशा-आकां नहीं रखते—वे जगत में रहते हुए भी अपने आध्यात्मिक संसार में विचरण करना चाहते अत: ईश्वर के मनन-चिन्तन में शान्ति पाते हैं।

"पथ मेरा निर्वाण बन गया,
प्रति पग शव वरदान बन गया।"

2. यथार्थवादी—जो संसार की विपत्तियों का साहस-पूर्वक सामना करता चाहता है। सं की कठोरताओं तथा समस्याओं के प्रति जो निरन्तर संघर्ष करना चाहता है—जिसकी का 'विद्रोह' है और जीवम एक 'क्रान्ति'।

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल-पुथल मच जाए।"

3. पलायनवादी—जो सांसारिक संघर्षों के वचकर कहीं दूर चला जाना चाहते हैं। जि संसार की वास्तविकताओं से टक्कर लेने की क्षमता नहीं होती है। जगत और जीवन निराश होने पर जो अपनी ही कल्पना द्वारा निर्मित संसार में विचरण करना चाहते हैं औ उटते हैं—

'ले चल मुझे भुलावा देकर,
मेरे नाविक धीरे-धीरे।"

संसार के प्रति लेखक का जैसा दृष्टिकोण होगा, उसी के अनुरूप, उसके लेख का, उस शैली का, उसके स्वरों का उद्बोधन होगा। शिक्षण में हमारा ध्यान उसी शैली पर रहता उसकी वास्तविक अभिव्यक्ति पर। अभिव्यक्ति के उत्तरोत्तर विकास की ओर विद्यार्थियों ध्यान जाये तथा वे लिखने में आनन्द की अनुभूति कर सकें यही हमारा मुख्य उद्देश्य हो चाहिए।

लिखने की प्रेरणा हमें दो रूपों में मिलती है—

1. अन्तर से—जिसमें आत्मानुभूति होती है व जिसमें भावात्मक व विचारात्मक नि लिखे जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. बाह्य से—जिसमें बाह्यानुभूति के आधार पर कथात्मक व वर्णात्मक निबन्ध लिखे जाते हैं।

निबन्धों के प्रकार

'निबन्ध लिखना अभ्यास से आता है। निबन्ध का अर्थ बर्धाँ हुआ। अतः थोड़े से अत्यन्त चुने हुए शब्दों में किसी विषय पर अपने विचार प्रकट करने के प्रयत्न को निबन्ध कहते हैं। निबन्ध के विषयों की कोई सीमा नहीं। आकाश-कुसुम से लेकर चींटी तक सभी निबन्ध के विषय हो सकते हैं। फिर भी हम निबन्धों को चार भागों में बांट सकते हैं।

1. कथाकत्मक (Narrative Essay)
2. वर्णनात्मक (Descriptive Essay)
3. भावात्मक (Emotional Essay)
4. विचार-प्रधान (Reflective Essay)

1. कथात्मक निबन्ध—कथात्मक निबन्ध, निबन्ध का अति सरल रूप है। इसमें विद्यार्थी को केवल ज्ञात विषय वस्तु को निबन्ध का रूप देना पड़ता है। निम्न कक्षाओं में निबन्ध का यह रूप केवल सुनी हुई कहानियों का आधार लेकर चलता है। मुख्य बातों को लेकर केवल सरल भाषा में लिखा जाता है। बौद्धिक अनुशासन के रूप में इसका महत्त्व उच्च कक्षाओं में ही बढ़ता है। इसमें किसी घटना, प्राचीन कहानी अथवा किसी धार्मिक और सामाजिक विषयों पर निबन्ध लिखा जा सकता है।

2. वर्णनात्मक निबन्ध—ऐसे निबन्ध लिखने से विद्यार्थियों की निरीक्षण-शक्ति बढ़ती है। बच्चों में न्याय-संगत बुद्धि अवश्य होनी चाहिए जिससे वे उपयुक्त बातों का ही निरीक्षण करके उन्हें लिख सकें। विद्यार्थी वस्तुओं, स्थानों, घटनाओं और परिस्थितियों का वर्णन करते हैं। सामान्य कश्मीरी विद्यार्थी डल लेख, ताजमहल का वर्णन सहज रूप में कर सकता है। शैक्षिक भ्रमण भी इसी ओर उठाया जाने वाला एक कदम है—घूमकर आने वाले स्थानों और वस्तुओं का विवरण सरलता से कराया जा सकता है। मोटर, रेलगाड़ी, रेडियो, मेले, यात्रा आदि का वर्णन सरलता से कराया जा सकता है।

3. भावात्मक निबन्ध—यह रूप केवल उच्च कक्षाओं में ही प्रयोग में लाया जाता है। मौलिक विचार इसकी प्राथमिक आवश्यकता है। शिक्षक की यथेष्ट सहायता तथा अपने अध्ययन और परिश्रम से ही ऐसे निबन्धों के लिखने में सफलता सकता है। इन निबन्धों में अमूर्त भावों की सार-पूर्ण विवेचना की जाती है। इसमें कवि हृदय तथा कल्पना शक्ति की आवश्यकता होती है। भाषा की मधुरता और अलंकारों की छटा के बिना भावात्मक निबन्ध सुन्दर नहीं लगता। अतः साधारण विद्यार्थी के लिए इस प्रकार के निबन्ध लिखना कठिन होता है। छात्रों को यथा सम्भव ऐसे निबन्ध तभी लिखने चाहिए , जब भाषा पर उन्हें पूर्ण अधिकार प्राप्त हों और कल्पनाशील तथा भावुक हृदय उनके पास हो।

4. विचार-प्रधान निबन्ध—इन निबन्धों के शीर्षक विचार-प्रधान होते हैं। किसी भी समस्या पर अपने विचार व्यक्त किये जाते हैं। गुण-दोषों का आकलन सत-असत की समयक विवेचना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की जाती है। ऐसा निरीक्षण, कल्पना और ज्ञान उच्च कक्षा के विद्यार्थियों के लिए ही सं होगा। तुलसी या सूर की काव्य-शैली पर विचार करने को कम से कम ९वीं कक्षा से जाऐगा।

निबन्ध साधारण को भी असाधारण बना होता है। बाबू गुलाबराय जी ने निबन्ध परिभाषित करते हुए कहा है—"निबन्ध उस गद्य-रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आ के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सष्ठिव सजीवता तथा आवश्यक संगती और सम्बद्धता के साथ किया गया हो।"

निबन्ध लेखन में सहायक कुछ बातें .

(क) निबन्ध का ठीक-ठीक चुनाव आवश्यक है

अनेक बार देखा गया है, विद्यार्थी किसी एक विषय को चुनकर पहले निबन्ध लि आरम्भ कर देते हैं, परन्तु फिर अचानक उसे छोड़ कर दूसरे विषय को अपना लेते हैं। करने में समय नष्ट होने के साथ कभी-कभी दूसरा विषय ठीक प्रकार से लिखा नहीं जाता फिर बीच-बीच में पहले निबन्ध को पुनः आरम्भ करने की इच्छा भी जागने लगती है। परिणामस्व 'धोबी का कुत्ता न धर का ना घाट का' की तरह विद्यार्थी कहीं का नहीं रहता।

अतः निबन्ध लिखने से पूर्व ही किसी एक ऐसे विषय को निश्चित और अन्तिम रू चुन लेना चाहिए, जिसको लिखने में दूसरे विषयों की अपेक्षा विद्यार्थी को अधिक सुविधा लाभ नज़र आए। जिस विषय के बारे में अधिक जानकारी, अधिक ठोस सामग्री, उदाहरण उद्धरण याद हों, उसी विषय को ही चुनना चाहिए।

एक बार विषय चुन लेने पर और लिखना आरम्भ कर देने पर फिर उसे बदलना चाहिए। ऐसा लोभ कभी-कभी अत्यन्त हानिकारक सिद्ध होता है।

(ख) निवन्ध के अंग की जानकारी

निबंध के तीन अंग होते हैं (1) भूमिका (2) विस्तार (3) उपसंहार

निबन्ध को आरम्भ करने में सबसे अधिक कठिनाई अनुभव की जाती है। वैसे तो नि को कैसे और कहां से आरम्भ किया जाए, इस विषय में कोई निश्चित विधि नहीं है, त प्रयत्न इस बात का करना चाहिए कि विषय के नाम का उल्लेख प्रथम पंक्तियों में न हो कुछ देर के पश्चात् ही होना चाहिए। आरम्भ में अपने विषय को उपस्थित करने के लिए मैदान तैयार कर लेना चाहिए। उदाहरण के लिए विषय का महत्त्व अथवा विषय ही उपयो या लाभ वर्णन करके धीरे-धीरे अपने विषय को सामने लाना चाहिए।

जैसे 'महात्मा गांधी' पर निबन्ध लिखते हुए प्रारम्भ में महापुरुषों के बारे में, उनके महत्त्व के उद्देश्य आदि के विषय में थोड़ा लिखकर फिर गांधी जी को भी उन्हीं में गिनते हुए आ के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है। पहले से ही गांधी जी के जन्म और जीवन की घट का ब्यौरा देने से कौतूहल नष्ट हो जाता है। यह लेख एक 'इतिहास' बन कर रह जात निबन्ध नहीं रहता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमिका—भूमिका निवन्ध का आरम्भ होती है। निबन्ध का आरम्भ जितना आकर्षक और रोचक होगा निबन्ध उतना ही सुन्दर बन जायेगा। अतः भूमिका लिखने में विशेष सावधान रहना चाहिए, क्योंकि निवन्ध का सारा भवन भूमिका रूपी नींव के सहारे ही खड़ा होता है।

विस्तार—भूमिका के बाद विषय का विस्तार किया जाता है। निवन्ध के विषय का परिचय देकर उस विषय के लाभ, हानि आदि के विषय में विस्तार से चर्चा की जाती है साथ ही उसके समर्थन में कुछ उदाहरण देना बहुत आवपश्यक हो जाता है। यदि विषय देश भक्ति, एकता, सिनेमा, विज्ञान आदि जैसा उपयोगी है तो उसके दोनों पक्षों अथवा लाभ और हानि पर प्रकाश डालना चाहिए। विषय के विवेचन के साथ-साथ रामायण, महाभारत या आधुनिक इतिहास में से दृष्टान्तं अथवा कालपनिक कथाएं भी देकर अपने विषय को पुष्ट किया या सकता है। महान लेखकों, कवियों आदि के उद्धरण देने से भी जहां विषय का विस्तार होगा वहीं निवन्ध भी अच्छा वनेगा।

उपसंहार—निबन्ध के विस्तार के पश्चात् अन्तिम भाग उसंहार आता है। यदि भूमिका रोचक और विषय-विस्तार प्रभावशाली हो तो निवन्ध का अन्त भी चुटीला लोना चाहिए। अन्त या उपसंहार में पूर्वोक्त विषय का सारांश देकर अपने आरम्भिक मत का समर्थन एक बार पुनः कर देना उचित है। जहां से निवन्ध को आरम्भ किया था उसी का फिर संकेत देकर संक्षेप में अपना निष्कर्ष प्रस्तुत कर देना चाहिए। इस प्रकार विषयांतर होने की संभावनां दूर हो जाती है। उपसंहार में उक्त प्रसंग को दोहराते समय शैली तथा शब्द रचना की नवीनता का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। निवन्ध का अन्त किसी कवि की उक्ति से भी किया जा सकता है।

(ग) छोटे-छोटे अनुच्छेद

निवन्ध को छोटे-छोटे अनुच्छेदों में लिखना चाहिए। प्रत्येक अनुच्छेद में एक ही विचार पर बल देना चाहिए। निवन्ध लिखने से पहले ऐसे विचारों को अलग से क्रम बनाकर लिख लेना विद्यार्थी के लिए बहुत सुविधाजनक रहता है।

(घ) दोहे व कवितांश देने चाहिए

निबन्ध को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए उसमें यदि हिन्दी के दोहे या कवितांश दिए जा सके तो उसका महत्त्व और बढ़ जाता है, परन्तु उनकी संख्या बहुत अधिक नहीं होनी चाहिए। अंग्रेज़ी और संस्कृत के उदाहरण भी दिए जा सकते हैं। ये उदाहरण किसी भी महापुरुष या लेखक के गद्य अथवा पद्य में होने चाहिएं। कुछ विद्यार्थी निवन्ध का आरम्भ ही किसी पद्य अथवा गद्यं के उद्धरण से करते हैं। यह शैली भी उपयोगी रहती है।

(ङ) सुलेख पर ध्यान

निवन्ध लिखते समय 'सुलेख' पर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए। इसमें केवल लेखक की शुद्धि ही नहीं, उसका सुन्दर और स्पष्ट होना भी बहुत आवश्यक है। सबसे पहला प्रभाव परीक्षक पर विद्यार्थी के लेख का ही पड़ता है।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(च) प्रवाहमयी भाषा

भाषा सरल तथा प्रवाहमयी होनी चाहिए। मुहावरे और लोकोक्तियों का यथास्थान प्र सोने पे सुहागे का काम करता है। विराम-चिन्ह लगाने पर भी पूर्ण ध्यान देना बहुत आवश् है।

(छ) विचारों में एकता व क्रम बद्धता

निबन्ध लिखने में विचारों की एकता और क्रम का विशेष महत्त्व होता है। उसके अ में निबन्ध एक पागल का प्रलाप बन कर रह जाता है। इसलिए निबन्ध लिखते समय वि को पहले से ही भूमिका विस्तार और उपसंहार में दिए जाने वाले विचारों का संकेत अ ध्यान में रख लेना चाहिए अथवा अलग से उन्हें नोट कर लेना चाहिए। इस क्रम अथवा वि की अन्विति से निबन्ध का रूप और महत्त्व बढ़ जाता है।

(ज) पुर्ण आत्मविश्वास से लिखें

विषय चाहे पठित हो या अपठित विद्यार्थी को पूर्ण आत्मविश्वास के साथ लिखना चा संक्षिप्त विषय को विस्तृत करने की शैली का अभ्यास इस विषय में बहुत सहायक सिद्ध है। सामान्य ज्ञान की पुस्तकें, समाचार पत्र आदि पढ़ने वाले तथा रेडियो एवम् कथा सुनने वाले विद्यार्थियों के लिए किसी भी निबन्ध को लिखना कठिन नहीं होता।

निबन्ध शिक्षण के उद्देश्य

(क) निबन्ध लिखने के प्रति छात्रों में अनुराग की भावना जाग्रत करना।

(ख) छात्रों को उचित गति से सुन्दर, सुडौल और स्पष्ट लेख लिखने में प्रशिक्षित क

(ग) छात्रों को शब्दों, सूक्तियों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का उचित प्रयोग कर स के योग्य बनाना।

(घ) छात्रों को व्याकरणसम्मत भाषा का प्रयोग कर सकने के योग्य बनाना।

(ङ) छात्रों में अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप से प्रकट करने की क्षमता विकसित क

(च) छात्रों की मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति में स्पष्टता एवं शुद्धता लाना।

(छ) छात्रों में ऐसी योग्यता उत्पन्न करना कि वे जो कुछ भी विचार या भाव प्रक करें उनमें एक उचित तालमेल हो।

(ज) छात्रों को लेखन की विभिन्न शैलियों से परिचित कराना।

(झ) छात्रों की निरीक्षण, तर्क, कल्पना तथा विवेक-शक्तियों को विकसित करना।

(ञ) छात्रों को कम से कम भाषा में अधिक से अधिक विचार व्यक्त करने के बनाना।

(ट) छात्रों की सृजनात्मक शक्ति का विकास का साहित्य-सृजन के लिए प्रेरणा दे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(ठ) छात्रों में अध्ययन, चिन्तन एवं मनन की अभिवृत्ति का निर्माण करना।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ड) छात्रों की अभिव्यक्ति में मौलिकता लाना।

(ढ) छात्रों की वाक्य-प्रयोग द्वारा विकसित शब्द-कोप पर अधिक अधिकार प्राप्त करना।

(ण) छात्रों की अभिव्यंजना की विधि साहित्यिक शैलियों से परिचित कराना।

निबन्ध-शिक्षण की विधियां

1. देखो और रचो विधि—यह विधि प्राथमिक कक्षाओं के लिए है। इसमें एक मंजूपा (पेटी) में सज्जित वस्तुओं को देखकर बालक उनके सहारे अपने भावों को व्यक्त करने का प्रयास करता है। उस मंजूपा को प. मदन मोहन मालवीय के नाम पर "मोहन पेटी" कहा जाता है। इसमें हिन्दी के अक्षर, मात्रायें तथा कुछ शब्द भरे हुए होते हैं, जिन्हें निकाल कर बालक खांचीदार पाटियों पर लगाता है। क्रिया द्वारा सीखने से उसको खेल-खेल में ज्ञान प्राप्त हो जाता है। यह पद्धति मॉन्टिसरी तथा फ्रोबेल की पद्धति को अपनाए हुए है।

2. प्रश्नोत्तर विधि—इस विधि का प्रचलन प्राचीन भारत और यूनान में था। प्रश्न के उत्तर के आधार पर निबन्ध की रूप-रेखा निर्मित की जाती है। इस विधि का आरम्भ सुकरात द्वारा किया गया था, तभी इसे सुकरात विधि भी कहते हैं। जिस विषय पर निबन्ध लिखना होता है छात्र उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं को प्रश्न रूप में अध्यापक के समक्ष रखते थे और अध्यापक उनका समाधान अपने प्रवचनों द्वारा करते थे। आज भी यह विधि प्रशिक्षण विद्यालयों में प्रयोग की जाती है। हां, इसका रूप ठीक उल्टा हो गया है—आज अध्यापक प्रश्न पूछते हैं और विद्यार्थी अपने ज्ञान के आधार पर उत्तर प्रस्तुत करते हैं। निबन्ध की पूर्ण विषय-वस्तु अध्यापक के मन में होती है—वह क्रमिक रूप से प्रश्न पूछकर विद्यार्थियों से पूर्ण निबन्ध मौखिक रूप से प्रस्तुत करवा लेता है। उस विधि मे प्रश्न बड़ी ही स्पष्टता से प्रस्तृत किए जाने चाहिए। क्रमबद्धता और श्रृंखला अद्वितीय होनी चाहिए।

अध्यापक उत्तर स्वरूप प्राप्त हुई सामग्री में से कुछ संकेत श्यामपट पर लिखता जाता है। इस प्रकार निबन्ध की समाप्ति करने के पश्चात् निबन्ध लिखने का आदेश दे दिया जाता है। कक्षा में पूर्ण हो पाने पर उसे घर से पूर्ण करके लाया जाता है।

इस विधि में छात्र व अध्यापक दोनों ही सक्रिय रहते हैं अतः निबंध शिक्षण की यह एक उपयुक्त प्रणाली है। किसी भी स्तर पर निबन्ध कार्य कराने के लिए इस प्रणाली का प्रयोग किया जा सकता है।

इस प्रणाली का प्रयोग करते समय अध्यापक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि निबन्ध का विषय छात्रों की अनुभव-सीमा के भीतर का हो प्रश्न छोटे व स्पष्ट हो, सभी छात्रों को प्रश्नों का उत्तर देने लिए प्रोत्साहित किया जाए, प्रश्नों का उत्तर पूर्ण वाक्य में लिखा जाए, छात्रों को भी प्रश्न पूछने की छूट हो, उनकी शंकाओं का उचित समाधान किया जाए एवं छात्रों के उत्तरों में त्रुटि होने पर उन्हीं की सहायता से इन त्रुटियों का दूर कराने का प्रयास भी किया जाए।

G.M. College of Education Bantalab Raipur Jammu.
Acc. No. 6935
Dated 8/8/2006
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

3. सूत्र विधि—इस विधि में छात्रों के लिए उपयोगी सूत्र श्यामपट्ट पर लिख दिए ज हैं। इन सूत्रों का विधिवत् विकास विद्यार्थियों द्वारा किया जाता है। अध्यापक को ध्यान रख चाहिए कि यह सूत्र छात्रों की ज्ञान-परिधि के अन्तर्गत आने वाले ही हों।

सूत्रों की व्याख्या करने हेतु संस्कृत में बड़ी-बड़ी रचनायें लिखी गयी हैं, जैसे उपनि वेद की संहिताओं आदि का शिक्षण इन्हीं सूत्रों के रूप में किया जाता था। इस विधि प्रयोग किसी भी स्तर के विद्यार्थियों के लिए किया जा सकता है। छात्रों को अभिव्यक्ति लिए अधिक से अधिक अवसर देना चाहिए जिससे वे अपने विचार स्वतन्त्रता से अभिव्य कर सकें। उन्हें भिन्न-भिन्न लेखन शैलियों से परिचित कराना चाहिए, जिससे वे अपनी योग्य और रुचि के अनुसार शैली का चयन कर सकें। शब्द और सूक्तियों का चयन कलात्मक जो सभी को आकर्षित कर सके। इस विधि से ऐतिहासिक कहानियों, जीवन-चरित्रों तथा कि यात्रा या मेले आदि पर निबन्ध सफलतापूर्वक लिखा जा सकता है।

4. अनुकरण विधि—इस विधि में छात्रों के सम्मुख भाषा एवं शैली की दृष्टि से त्रुटि कोई निबन्ध प्रस्तुत किया जा सकता है। छात्र उस निबन्ध का अध्ययन एवं मनन करते फिर उसी निबन्ध से मिलता-जुलता कोई दूसरा निबन्ध छात्र स्वयं लिखते हैं। जैसे— प्रिय रचना" निबन्ध का अनुकरण छात्र "मेरा प्रिय कवि", "मेरा प्रिय खेल" विषय पर नि लिख सकते हैं। इस विधि का प्रयोग माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर निबन्ध-कार्य करा लिए किया जा सकता है।

"अच्छा निबन्ध अच्छे आदर्शों के अनुकरणों पर आधारित होता है, और यदि अनु ज्ञात और जानकर किया जाए तो उसका प्रभाव कहीं अधिक होता है-बजाय अज्ञात अनु के।" बैलार्ड

5. तर्क या वाद-विवाद प्रणाली—विवादग्रस्त विषयों पर निबन्ध-कार्य कराने के लिए कक्षाओं में उस विधि का प्रयोग किया जा सकता है। सहशिक्षा, जाति प्रथा, दहेज प्रथा, पूजा आदि विषयों पर निबन्ध लिखवाने के लिए कक्षा के छात्रों को दो भागों में बांटकर के विषय के पक्ष एवं विपक्ष में विचार प्रस्तुत करने के लिए कहा जाता है। छात्र विष पक्ष या विपक्ष में बोलते हुए अपने विचारों को सत्य सिद्ध करने के लिए तर्क प्रस्तुत करते इस प्रकार वाद-विवाद पूरा होने के पश्चात छात्रों को विषय पर निबन्ध लिखने के लिए जाता है। इसमें छात्र अपने पक्ष का मण्डन (समर्थन) एवं विपक्ष (खण्डन) करता है, अत: खण्डन-मण्डन विधि भी कहा जाता है।

6. स्वाध्याय और मंत्रणा विधि—दोनों विधियों में केवल नाममात्र का अन्तर है। म विधि में अध्यापक निबन्ध के विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने के पश्चात् छात्रों को से सम्बन्धित पत्र-पत्रिकाएं तथा पुस्तकों के बारे में बताता है। छात्र उन पत्र-पत्रिकाओं पुस्तकों का अध्ययन कर स्वयं निबन्ध रचना करते हैं। किसी भी विषय से सम्बन्धित वि दृष्टिकोणों का अध्ययन करने, विचार करने एवं चयन करने व स्वतन्त्र रूप से विचारों को अभि ... दृष्टि से यह विधि एक उपयोगी विधि है। स्वाध्याय विधि में पूरा कार्य छात्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वयं करना होता है। अध्यापक केवल रचना की विषय ही छात्रों को बताते हैं। निबंध रचना करने के लिए पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं आदि की खोज छात्र स्वयं करते हैं और उनका अध्ययन कर स्वयं सम्बन्धित विषय पर रचना करते हैं। इस विधि का प्रयोग उच्च कक्षाओं में किया जा सकता है। जब छात्र स्वयं सोचने और निर्णय लेने के योग्य हो जाते हैं।

7. प्रवचन विधि—इस विधि से अध्यापक निबन्ध के विषय पर छात्रों के सामने अपना व्याख्यान या भाषण देता है और छात्रों को उस विषय पर रचना करने का आदेश देता है। छात्र अध्यापक के प्रवचन को सुनकर उसके आधार पर तथा अपने विचारों को उसमें मिश्रित कर स्वयं निबंध रचना कार्य करते हैं। स्वतन्त्र अभिव्यक्ति की योग्यता को विकसित करने की दृष्टि से यह एक उपयोगी विधि है।

8. रूपरेखा विधि—इस विधि में निबन्ध के विषय की रूपरेखा छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत की जाती है। छात्र उस रूप रेखा के आधार पर स्वयं सोचकर निबंध लिखते हैं। यह विधि तार्किक क्रम में विचारों को व्यक्त कर निबन्ध कार्य करने के लिए तो उपयुक्त है परन्तु स्वतन्त्र अभिव्यक्ति की दृष्टि से यह उपयुक्त नहीं। यह विधि माध्यमिक एवं उच्च दोनों स्तरों पर रचना कार्य कराने के लिए उपयोगी है।

9. समीक्षा विधि—इस विधि में अध्यापक निबन्ध के तत्वों तथा रचना कौशल के सिद्धान्तों को स्पष्ट करता है और छात्रों को किसी भी विषय पर समीक्षात्मक निबन्ध लिखने का आदेश देता है। छात्र निबन्ध के तत्वों के आधार पर विषय पर समीक्षात्मक निबन्ध लिखते हैं। यह विधि उच्च कक्षाओं में बच्चों की लिखित अभिव्यक्ति में सुधार लाने के लिए प्रयुक्त की जा सकती है।

कक्षा में निबन्ध योजना को प्रस्तुत करते समय किसी विशिष्ट विधि का प्रयोग नहीं किया जाता, वरन् प्रश्नोत्तर विधि को प्रधानता देते हुए, कभी-कभी आवश्यक सामग्री को प्रवचन रूप में प्रस्तुत करते हुए मौखिक रूप से पूर्ण निबन्ध, अध्यापक और छात्रों के संयोग से प्रस्तुत किया जाता है। कभी-कभी साथ ही साथ पुनरावृत्ति प्रश्नों के आधार पर निबन्ध की रूपरेखा श्यामपट्ट पर लिखकर कक्षा कार्य की समाप्ति कर दी जाती है। उच्च कक्षाओं में मेलणा-विधि का भी प्रयोग किया जाता है। लिखने का पूर्ण भार प्रत्येक छात्र को वहन करना पड़ता है उनकी सुरुचि एकाग्रता या स्वाध्याय की झांकी शिक्षक को उनके लिखित निबन्ध में मिलती है।

निबन्ध की पाठ योजना

छात्र अध्यापक अनुक्रमांक—
विषय—हिन्दी (निबन्ध)
उपविषय—'वर्षा ऋतु'
विद्यालय—

कक्षा—नवीं
समय—30 मिनट
औसत आयु—13 वर्ष
दिनाक—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहायक सामग्री—

1. नृत्य करते हुए मोर का चित्र
2. चारो तरफ छाई हुई हरियाली का चित्र

सामान्य उद्देश्य

1. छात्रों को अपने भावों तथा विचारों को शुद्ध व्याकरण सम्मत भाषा में प्रभावश ढंग से प्रस्तुत करने की योग्यता प्रदान करना।
2. छात्रों को रचना की विभिन्न शैलियों से परिचित कराना।
3. छात्रों का व्यवहारिक ज्ञान बढ़ाना
4. छात्रों की शब्दावली में वृद्धि करना
5. छात्रों की रचनात्मक व सृजनात्मक शक्ति का विकास करना

विशिष्ट उद्देश्य—

1. छात्रों को वर्षा ऋतु से सम्बन्धित जानकारी देना
2. छात्रों को वर्षा ऋतु पर निबन्ध लिखने की योग्यता प्रदान करना।

पूर्व ज्ञान—

बच्चे प्रतिवर्ष वर्षा ऋतु का आनन्द लेते हैं। वे अपनी अभिव्यक्ति में मानक भाषा प्रयोग करते हैं।

पूर्व ज्ञान परीक्षा—

1. भारत में कितनी ऋतुएं आती हैं ?
2. उन ऋतुओं के नाम क्या हैं ?
3. ग्रीष्म ऋतु के बाद किसी ऋतु का आगमन होता है।

उद्देश्य कथन—

आज हम वर्षा ऋतु पर निबन्ध लिखेंगे।

प्रस्तुतीकरण—

पाठ को पढ़ाने में प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग किया जाएगा। निबन्ध को ती भागों में बांट कर पढ़ाया जाएगा—

(1) भूमिका (2) मध्यभाग (3) उपसंहार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठ्य वस्तु	छात्र अध्यापक क्रियाएं	छात्र क्रियाएं
भूमिका : भारत एक कृषि प्रधान देश है जहां क्रम से छः ऋतुएं आती हैं ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, पतझड़, वसन्त। इनमें से वर्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका कारण कि भारत कृषि प्रधान देश है। हमारी कृषि प्राय: वर्षा पर ही निर्भर है। जिस साल वर्षा नहीं होती, उस साल अकाल पड़ जाता है। अत: वर्षा ऋतु हमारे देश के लिए जीवन दायिनी है।	प्रवचन विधि द्वारा छात्र अध्यापक निवन्ध की भूमिका बांधेगा तथा प्रश्न पूछेगा भारत में कितनी ऋतुएं आती हैं ? उन ऋतुओं के नाम वताओ। भारतीय कृषि में वर्षा का क्या महत्त्व है ? छात्र अध्यापक आवश्यक बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखेगा। छात्र अध्यापक वर्षा ऋतु से पहले के मौसम के बारे में वताएगा व प्रश्न पूछेगा।	छात्र ध्यान पूर्वक सुनेगें व छात्र अध्यापक द्वारा पूछे प्रश्नों का उत्तर देगें। महत्व को छात्र उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।
मध्य भाग **भीषण गर्मी।** ग्रीष्म ऋतु में जव भगवान सूर्य उग्र रूप धारण कर लेते हैं। तव उसके प्रखर तेज से पृथ्वी अंगार वन जाती है। छाया भी छाया को ढूंढने लगती है। यह भीषण ऋतु मानव को कृत्रिम साधनों का प्रयोग करने को विवश कर देती है। न दिन को चैन न रात को। लोग गर्मी से व्याकुल हो जाते हैं।	बच्चो जव मई-जून की तेज़ गर्मी होती है, तव आप कैसा अनुभव करते हैं	छात्र ध्यान से सुनेंगे और प्रश्नों का उत्तर देंगें।
गर्मी से व्याकुल होकर व्यक्ति इन्द्र देवता की ओर आंखे लगाए एक टक निहारते रहते हैं। किसान अकाल के भय से चिन्तित रहते हैं। जगह-जगह पर इन्द्र देवता को प्रसन्न करने के लिए गीत गाए जाते हैं "काले मेघा पानी दे, पानी दे गुड़धानी दे।"	विषय का समवाय करते हुए छात्र अध्यापक पूछेगा कि जब आप गर्मी से परेशान हो जाते हैं, तो आपकी क्या इच्छा होती है ? अध्यापक बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखेंगा।	छात्र प्रश्नों का उत्तर देंगे व मुख्य बिन्दु अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठ्य वस्तु	छात्र अध्यापक क्रियाएं	छात्र क्रियाएं
वर्षा का आरम्भ : हमारे देश में वर्षा ऋतु आषाढ़ मास से आरम्भ होती है व आश्विन मास में समाप्त हो जाती है। प्रचण्ड ग्रीष्म में जब जल वाष्प वनकर ऊपर उठता है, तो यही जल आकाश में जाकर मेघ का रूप धारण कर लेता है। यही फिर वर्षा के रूप में ज़मीन पर आ जाता है।	छात्रअध्यापक वर्षा के प्रारम्भ के वारे में वताएगा और प्रश्न पूछेगा वर्षा कव आरम्भ होती है ? उत्तरों को संक्षेप में श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।	छात्र ध्यान पूर्वक सुनें प्रश्नों के उत्तर देंगें। छात्र श्यामपट्ट पर लि संक्षेपक का अपनी कापिये लिखेंगे।
वर्षा का स्वागत वर्षा आने पर लोग उसका स्वागत करते हैं तथा अभिनन्दन के गीत गाते हैं। जब मेघ पृथ्वी पर बरस पड़ता है, तो चारों ओर हर्ष की लहर दौड़ जाती है। क्या मनुष्य क्या पशु, क्या पशु-पक्षी, सभी वर्षा का सहर्ष स्वागत करते हैं। बच्चे वर्षा में नहा कर खुश होते हैं। पक्षी राज मयूर आकाश में छाई हुई काली घटाओं को देखकर नृत्य करने लगता है। अपनी सुध-बुध भूलकर नृत्य में मग्न हो जाता है। संसार को तपाने वाली ऋतु न जाने कहां चली जाती है।	छात्र अध्यापक वर्षा ऋतु के स्वागत व दृश्य के वारे में वताएगा और पूछेगा— वच्चो आप वर्षा ऋतु का स्वागत कैसे करते हो नृत्य करके हुए मोर का चित्र दिखाकर पूछा जाएगा कि बच्चो वताओ मोर इतना मग्न होकर क्यों नाच रहा है ? जब वर्षा ऋतु आती है तो -सा दृश्य होता है ?	बच्चे ध्यान से सुनेगें और का उत्तर देंगे। वच्चों चित्र देखेंगे और का उत्तर देंगें।
सुन्दर दृश्य: वर्षा ऋतु का दृश्य मनमोहक होता है।आकाश में काले-काले मेघ छा जाते हैं। उस समय ऐसा लगता है मानो बड़े-बड़े पर्वत हवा में उड़ रहे हों। कभी तो बादल गरजते हैं, तो कभी विजली कड़कती है फिर वर्षा की झड़ी लग जाती है।	भाषण विधि का प्रयोग करते हुए छात्र अध्यापक वर्षा के सुन्दर दृश्य का वर्णन करेगा। कभी तो वादल गरर्जते हैं, तो कभी बिजली कड़ती है फिर वर्षा की झड़ी लग जाती हैं।	

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठ्य वस्तु	छात्र अध्यापक क्रियाएं	छात्र क्रियाएं
प्रकृति में परिवर्तन और किसानों के लिए लाभदायक: वर्षा आते ही पृथ्वी का रंग बदल जाता है। सूखी हुई वनस्पति पानी मिलने पर हरी हो जाती है। चारों ओर हरियाली छा जाती है।	बच्चों को हरियाली का चित्र दिखाकर पूछा जाएगा कि क्या वर्षा होने पर प्रकृति में परिवर्तन होता है।	बच्चे चित्र देखेंगे और प्रश्न का उत्तर देंगे।
कृषक वर्षा के आने पर प्रसन्न हो जाता है और खेतों में हल चलाने लगता है। पुरवैया अपना राग अलापने लगती है। पशुओं के लिए हरा चारा हो जाता है, जिसे चरकर, गाएं, भैंसे, खूब दूध देती हैं। इसलिए किसानों के घरों में दूध की कमी नही होती। ग्वाले पशुओं को चराना छोड़कर बागों में आनन्द मनाते हैं। **तीज त्योहार,** ऐसे ही मौसम में तीज का त्योहार आता है।	प्रवचन विधि का प्रयोग करते हुए छात्र अध्यापक वर्षा होने से प्रकृति में आए परिवर्तन और किसानों को उसके लाभ को स्पष्ट करेगा।	बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे।
युवतियां रंगबिरंगे वस्त्र पहन कर झूला झूलती हैं। वे सावन का स्वागत करती हैं। कभी-कभी आकाश में इन्द्र धनुष की निराली छटा बालकों का मनोरंजन बन जाती है।	विषय का दैनिक जीवन से समवाय करते हुए छात्र अध्यापक पूछेगा कि आप तीज त्योहार कैसे मनाते हैं ? छात्र अध्यापक वर्षा ऋतु में होने वाली हानियों के बारे में बताएगा और पूछेगा।	छात्र प्रश्न का उत्तर देगें।
वर्षा से हानियां : **स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव !** जहां वर्षा से अनेक लाभ हैं वहां इससे हानियां भी हैं। गड्ढों में जल से मच्छर उत्पन्न हो जाते हैं। इससे मलेरिया आदि का प्रकोप हो जाता है।	वर्षा से स्वास्थ्य पर कैसा प्रभाव पड़ता है ? इस ऋतु में कौन-कौन सी बीमारियां होती हैं ? मलेरिया कैसे होता है ?	छात्र ध्यान से सुनेंगे व प्रश्नों के उत्तरं देगें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठ्य वस्तु	छात्र अध्यापक क्रियाएं	छात्र क्रियाएं
ऐसे में पाचन क्रिया शिथिल हो जाती हैं । फोड़े-फुंसियां इस ऋतु की सौगात हैं, जिससे बहुत कम लोग बच पाते हैं।		
बाढ़ आने पर ख़तरा ज़्यादा वर्षा आने पर बाढ़ का ख़तरा रहता है। बाढ़ से गांव के गांव नष्ट हो जाते हैं। मकान गिर जाते हैं, लोग बेघर हो जाते हैं, कई बार तो लोगों को जान से भी हाथ धोना पड़ता है।	नदियों में बाढ़ क्यों आती हैं ? प्रवचन विधि का प्रयोग करते हुए छात्र अध्यापक वर्षा से आने वाली बाढ़ और उसके परिणाम बताएंगा।	
उपसंहार : इन हानियों के होते हुए भी वर्षा मानव जीवन के लि वरदान है। इन सब बातों को देखते हुए यह मानना पड़ता है कि बसन्त ऋतुओं का राजा है तो वर्षा ऋतुओं की रानी है।	र्व्षा वरदान है या अभिशाप पाठ के विकास के साथ-साथ छात्र अध्यापक छात्रों द्वारा दिए प्रश्नों के उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखेगा।	छात्र प्रश्नों का उत्तर दें।

पुनारावृत्ति प्रश्न

1. वर्षा ऋतु कब आरम्भ होती है ?
2. वर्षा ऋतु में कौन-कौन से त्योहार आते है ?
3. किसानों के लिए वर्षा ऋतु कैसे लाभदायक हैं ?
4. इससे स्वास्थ्य पर कैसा प्रभाव पड़ता है ?
5. वर्षा से बाढ़ आने का ख़तरा कैसे रहता है ?

कक्षा-कार्य एवं निरीक्षण—बच्चों से श्यामपट्ट कार्य अपनी कापियों में लिखने को जाता है। जब बच्चे लिख रहे होगें तब छात्र अध्यापक कक्षा का निरीक्षण करेगा व को आवश्यक निर्देश देगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

गृह कार्य—बच्चों ! घर से वर्षा ऋतु पर एक सुन्दर सा निबन्ध लिखकर लाना।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्र लेखन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक होने के कारण वह आपस में एक-दूसरे के साथ विचारों का आदान-प्रदान करता है। अपने अनुभव एवं सुख-दुःख दूसरों के सम्मुख प्रकट करता है एवं दूसरों के अनुभव और सुख-दुःख को बांटता है। मशीनीकरण एवं औद्योगीकरण ने व्यक्तियों को सुन्दर स्थानों में अपने परिचितों से अलग होकर रहने को बाध्य कर दिया है। इन सुन्दर स्थानों में रहने वाले अपने परिचितों के साथ संपर्क बनाए रखने का उपाय पत्र-लेखन के रूप में पाते हैं। पत्र लिख कर हम आपस में अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। पत्रों के द्वारा ही किसी कष्ट या विपत्ति की सूचना देते हैं। सामान्य जीवन के कुशल समाचार भी पत्र द्वारा प्रेपित करते हैं। अतः पत्रों का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है।

पत्र हमारी प्रत्यक्ष बातचीत का स्थानापत्र है अतः पत्र में भावों व विचारों की प्रस्तुति बहुत ही सरल व सुबोध रूप में होनी चाहिए। हमारे पत्र का सम्बन्धित व्यक्ति पर सही प्रभाव तभी पड़ता है जब पत्र में विचारों को उचित भाषा-शैली में व्यक्त किया गया हो, पत्र के विचारों में सही तारतम्य हो ओर जिस उद्देश्य से पत्र लिखा गया है वह उद्देश्य पूरी तरह से व्यक्त हो। इसलिए हिन्दी भाषा की शिक्षा में पत्र लेखन शिक्षण का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। पत्र-लेखन भी एक कला है। अन्य भाषायी कौशलों के विकास के साथ-साथ प्राथमिक स्तर से ही बच्चों में पत्र-लेखन-कौशल का विकास किया जाना चाहिए।

पत्र लेखन के प्रकार—सामान्य रूप से पत्र दो प्रकार के होते हैं

(1) व्यक्तिगत पत्र (2) कार्यालय पत्र

विद्यालय में छात्रों को प्रायः व्यक्तिगत पत्रों का लिखना ही सिखाया जाता है क्योंकि कार्यालय पत्र तो विभिन्न प्रकार के सररकारी, गैर सरकारी एवं अर्ध सरकारी कार्यालयां में लिखे जाते हैं। उनका शिक्षण विद्यालय में किया जाना उचित नहीं।

व्यक्तिगत पत्र

ये पत्र निम्न प्रकार के होते हैं।

1. पारिवारिक पत्र—इन पत्रों में अपने परिवार के सदस्यों, परिचितों, मित्रों आदि को परिवार संबंधी बातों की सूचना दी जाती है।

2. सामाजिक पत्र—विभिन्न प्रकार के समारोहों एवं अवसरों पर इस प्रकार के पत्र लिखे जाते हैं। जैसे, शादी-विवाह आदि अवसरों पर निमन्त्रण या बधाई के लिए पत्र, शोक के अवसरों पर संवेदना प्रकट करने वाले पत्र आदि।

3. व्यावसायिक पत्र—अपने व्यवसाय से सम्बन्धित मामलों के बारे में व्यवसाय से सम्बन्धित व्यक्तियों को ये पत्र लिखे जाते हैं।

4. आवेदन पत्र—नौकरी प्राप्त करने के लिए ये पत्र लिखे जाते हैं।

5. पदाधिकारियों के नाम पत्र—किसी भी प्रकार की समस्या या परेशानी होने या किसी संस्था आदि से कोई सहायता लेने के लिए सम्बन्धित पदाधिकारी को ये पत्र लिखे जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6. सम्पादक के नाम पत्र—अपने आस-पड़ोस की किसी समस्या या किसी कार्याल परेशान किए जाने पर समाचार-पत्र में उस बात को छपवाने के लिए इस प्रकार के पत्र लि जाते हैं। इनका उद्देश्य जनता, सम्बन्धित विभाग एवं सरकार का ध्यान उस परेशानी की ओ आकर्षित करना होता है।

पत्र लिखते समय ध्यान में रखनें योग्य बातें—पत्र लिखते समय एक अच्छे पत्र की विशेषताओं का ध्यान रखा जाता है जो निम्नलिखित हैं।

1. पत्र लिखते समय पत्र में शिष्टाचार के नियमों का सदा ध्यान रखना चाहिए।
2. पत्र की भाषा सरल, स्वाभाविक एवं रोचक होनी चाहिए।
3. पारिवारिक सदस्यों को लिखे पत्र में आत्मीयता झलकनी चाहिए।
4. पत्र में विचारों की अभिव्यक्ति इस प्रकार होनी चाहिए कि ऐसा प्रतीत हो पत्र लिखने वाला सामने बैठा हुआ अपनी बात कह रहा हो।
5. पत्र में सभी तथ्य पूरी तरह लिखे जाने चाहिएं। कोई भी बात न छूट जाए। पत्र में किसी बात का उत्तर दिया जा रहा हो, तो हर बात का उत्तर अलग-अ अनुच्छेदों में होना चाहिए।
6. पत्र में आवश्यक बातों का ही उल्लेख होना चाहिए। एक ही बात को बा दोहराना नहीं चाहिए।
7. पत्र में विराम-चिन्हों आदि का शुद्ध प्रयोग होना चाहिए।
8. बातों का अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए। संक्षेप में अपनी बात स्पष्ट क चाहिए।
9. पत्र में वाक्य छोटे-छोटे तथा प्रभावशाली होने चाहिएं।
10. पत्र में जो बात कही जाए, स्पष्ट होनी चाहिए। पढ़ने वाला पत्र पढ़ते ही प भाव समझ जाए।

पत्र के भाग

पत्र लेखन आज के जीवन में एक उपयोगी कला है। सभी प्रकार के पत्रों में साम निम्नलिखित भाग होते हैं।

1. पत्र के प्रेषक का पता—पत्र के ऊपर दाएं तरफ़ कोने में पत्र लिखने वाले का लिखा जाता है।

2. तिथि—प्रेषक के पते के नीचे पत्र लिखने की तारीख लिखी जाती है।

3.सम्बोधन—पत्र के बांयी तरफ़ ऊपर कोने में तिथि की सीध में जिस व्यक्ति को लिखा जा रहा है उसके लिए सम्बोधन सूचक शब्द का प्रयोग किया जाता है। बड़ो के आदरणीय, पूज्यनीय, माननीय, श्रद्धेय आदि छोटों के लिए प्रिय शब्द का प्रयोग किया है। व्यावसायिक पत्रों में श्रीमान, महोदय आदि शब्द लिखे जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. अभिवादन—सम्बोधन के बाद अगली पंक्ति में अभिवादन सूचक शब्द लिखा जाता है। जैसे बड़ों को सादर प्रणाम, सादर चरण स्पर्श, अपने से छोटों के लिए खुश रहो, शुभाशीष आदि तथा मित्रों के लिए सप्रेम नमस्ते आदि अभिवादन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। व्यावसायिक पत्रों में अभिवादनशील शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

5. पत्रारम्भ—पत्र को प्रारम्भ करने वाली सामान्य कुशलता आदि से सम्बन्धित बातें लिखी जाती है।

6. मूल विषय या कलेवर—जिस उद्देश्य से पत्र लिखा जा रहा है उससे सम्बन्धित सभी बातों को क्रमानुसार अलग-अलग अनुच्छेदों में बांटकर लिखा जाता है।

7. पत्र की समाप्ति—सभी महत्त्वपूर्ण बातों को लिखने के उपरान्त पत्र के अन्त में एक-दो वाक्य शिष्टाचार सम्बन्धी लिखे जाते हैं। जैसे-शेष कुशल है, त्रुटियों को क्षमा करे, पत्रोत्तर शीघ्र दें, धन्यवाद आदि।

8. आत्मनिर्देश—अन्त में पत्र के दाएं क़ोने में अपने लिए निर्देश लिखा जाता है। जैसे आपका पुत्र, आपका आज्ञाकारी शिष्य, तुम्हारा शुभचिन्तक, शुभेच्छु, शुभाकांक्षी, भवदीय आदि।

9. हस्ताक्षर—आत्मनिर्देश लिखने के उपरान्त लिखने वाला अपने हस्ताक्षर करता है या अपना नाम लिखता है।

10. पत्र पाने वाले का पत्र—निश्चित स्थान पर पत्र पाने वाले का पता लिखा जाता है।

पत्र लेखन शिक्षण की विधि—पत्र में लिखने वाले की आत्माभिव्यक्ति होती है। पत्र का सम्बन्धित व्यक्ति पर उचित प्रभाव तभी पड़ता है जब पत्र में उचित भाषा शैली का प्रयोग किया गया हो और पत्र के विचारों में क्रमबद्धता और उचित तारतम्य हो। विद्यार्थियों को पत्र लेखने की कला में निपुण करने के लिए निम्न विधि का प्रयोग करना चाहिए।

1. छात्रों के मानसिक स्तर के अनुसार पत्र-लेखन के लिए उपयुक्त विषय का चुनाव करना चाहिए। प्रारम्भ में सरल व छोटे पत्र लिखवाने चाहिएं, बाद में लम्बे पत्र लिखवाने चाहिए।
2. बच्चों के समक्ष पत्र का एक आदर्श नमूना प्रस्तुत कर छात्रों को पत्र के विभिन्न भागों से परिचित कराना चाहिए।
3. पत्र के विभिन्न भागों का परिचय देने के लिए अध्यापक को प्रदर्शन विधि एवं प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग करना चाहिए। आदर्श नमूना दिखाते हुए प्रारम्भिक, मदय एवं अन्तिम भाग से सम्बन्धित प्रश्न क्रमनुसार पूछने चाहिए।
4. छात्रों के द्वारा दिए जाने वाले उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखना चाहिए।
5. सभी छात्रों को सक्रिय रहने व उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
6. छात्रों के द्वारा पत्र-रचना सम्बन्धी कोई त्रुटि होने पर उसी समय उसे ठीक कराना चाहिए।
7. पत्र की भाषा शैली सरल व स्वाभाविक होनी चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

8. पत्र पूरा कराने के उपरान्त छात्रों से अपने आप पत्र लिखने के लिए कहना चाहि
9. छात्रों को पत्र सुन्दर लेख में लिखने के लिए प्रेरित करना चाहिए जिससे पत्र प वाला पत्र को ठीक से पढ़ सके।
10. छात्रों के द्वारा लिखे गए पत्र की उसी समय सावधानीपूर्वक जांच करनी चाहिए उचित संशोधन करना चाहिए। इस प्रकार छात्रों को विभिन्न प्रकार के पत्रों के लि का अभ्यास कराना चाहिए।

प्रश्नावली

1. निबन्ध किसे कहते हैं ? निबन्ध लेखन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कि विषय पर निबन्ध रचना की एक पाठ योजना तैयार कीजिए।
2. हिन्दी शिक्षण में पत्र-लेखन का क्या महत्त्व है ? पत्र लेखन कितने प्रकार होता है ? पत्र लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
3. किसी पत्र के मुख्य भागों का वर्णन करते हुए बताइए कि आप बालकों को लिखने की शिक्षा कैसे देंगे ?
4. हिन्दी शिक्षण में निबन्ध लेखन का क्या महत्त्व है ? निबन्ध कितने प्रकार के हैं ? निबन्ध लेखन की विभिन्न विधियां कौन-कौन सी हैं ?
5. निबन्ध से क्या अभिप्राय है ? निबन्ध लेखन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।
6. निबन्ध लेखन शिक्षण व पत्र लेखन शिक्षण की विधियों पर प्रकाश डालिए।
7. "छात्रों में अभिव्यक्ति कौशल, रचनात्मक कौशल के विकास के लिए निबन्ध ले सिखाना आवश्यक है।" आप इस कथन से कहां तक सहमत हैं ? विस्ता लिखिए।

□ □ □

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इकाई—IV गद्य व काव्य शिक्षण

UNIT—IV (TEACHING OF PROSE AND POETRY)

(1) गद्य शिक्षण व गद्य पाठ योजना
(TEACHING OF PROSE AND LESSON PLANNING)

(2) काव्य शिक्षण व कविता पाठ योजना
(TEACHING OF POETRY AND LESSON PLANNING)

(3) मूल्यांकन का पृव्यय व अर्थ
(CONCEPT AND MEANING OF EVALUATION)

(4) अच्छे भाषा परीक्षण का आधार
(CRITERIA OF A GOOD LANGUAGE TEST)

(5) अशुद्धि विश्लेषण व उपचारात्मक शिक्षण
(ERROR ANALYSIS AND REMEDIAL TEACHING)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय—9

गद्य शिक्षण

(TEACHING OF PROSE)

विचारों की संश्लिष्ट अभिव्यक्ति ही गद्य है। गद्य शब्द संस्कृत की गद् धातु से उत्पन्न ;आ है जिसका अर्थ है स्पष्ट कहना। व्यक्ति अपने विचारों को कहीं सरल और स्पष्ट भाषा i कहीं संश्लिष्ट भाषा में, अभिव्यक्त करता है। उस गद्यात्मक अभिव्यक्ति में छन्द आदि का योग नहीं किया जाता है। गद्य हिन्दी साहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग है। 'गद्य कवीनां' निकषं दन्ति गद्य कवियों की कसौटी है। गद्य रचना में लेखक स्वतन्त्र रहता है। स्वतन्त्र होने के ाते उसे बहुत सावधान रहना पड़ता है क्योंकि काव्य में भाषा संबंधी मूल को यह मानकर त्रीकार कर लिया जाता हैं कि लय एवं भाव की दृष्टि से व्याख्या पर कवि का ध्यान नहीं या, किन्तु गद्य में लेखक को व्याकरणिक त्रुटि के लिए क्षमा नहीं किया जाता और इसे उस ा दोष घोषित कर दिया जाता है।

गद्य शिक्षण का स्वरूप : गद्यात्मक अभिव्यक्ति विचारों की समाहारिता से पुष्ट होती है। द्यात्मक लेख विज्ञान, राजनीति, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, सामाजिक ज्ञान, मनोविज्ञान, नीति शास्त्र ादि से संबंधित होते हैं। जन साधारण अधिकतर विषयों की जानकारी गद्यात्मक लेखों के रा ही प्राप्त करता है। गद्य लेखों में छिपे विचारों के विश्लेषण स्पष्टीकरण, व्याख्या एवं ालोचना को सरलतम रूप में वर्णित कर विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। इस कार गद्य शिक्षण बहुत महत्त्वपूर्ण है, इसकी भी शिक्षण प्रणाली है जिसे हिन्दी अध्यापकों का ानना अनिवार्य है। गद्य शिक्षण के अर्न्तगत, निबन्ध, कहानी नाटक आदि समाविष्ट है, तथा ा सभी के शिक्षण की विधियां भी अलग-अलग हैं। अतः गद्य शिक्षण के द्वारा विचारात्मक, ालोचनात्मक आदि लेखों की विभिन्न शैलियों का ज्ञान कराना, तर्क तथा विवेचन शक्ति का कास करके विचार शक्ति बढ़ाना आदि सम्भव हो जाता है।

द्य शिक्षण का महत्त्व (Importance of Teaching of Prose)

हिन्दी-शिक्षण में 'गद्य' शिक्षण का अनिवार्य स्थान है। गद्य के बिना हिन्दी पाठ्यक्रम था हिन्दी पाठ्य-पुस्तक की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसमें सन्देह नहीं कि गद्य इतना रल और आन्ददायक नहीं होता जितना पद्य, परन्तु गद्य शिक्षण के बिना हिन्दी शिक्षण का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आरम्भ ही सम्भव नहीं है। वर्णमाला पढ़ाने के पश्चात् बच्चों को जो छोटे वाक्य पढ़ाये जाते हैं वह वस्तुतः गद्य शिक्षण की ओर ही पहला कदम होता है। गद्य-शिक्षण द्वारा ही विद्यार्थि के शब्द-भण्डार में वृद्धि की जाती है। उनके ज्ञान-भण्डार को संवृद्ध बनाया जाता है। उ गद्य-अभिव्यक्ति की विभिन्न शैलियों से परिचित करवाया जाता है। इसके साथ ही छात्रों रचनात्मक लेखन-कार्यों की ओर प्रेरित किया जाता है। गद्य की व्यावहारिक उपयोगित कारण पाठ्य-पुस्तकों में प्रायः पद्य की अपेक्षा गद्य अधिक होता है। पद्य यदि सौन्दर्यानु एवं रसास्वादन का स्त्रोत है तो गद्य जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान प्रदान करने का स्रोत हिन्दी शिक्षण में वाचन तथा मौखिक अभिव्यक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन दोनों का अ गद्य-शिक्षण में होता है।

गद्य का हमारे दैनिक जीवन में बहुत महत्त्व है। हमारे अधिकतर कार्य गद्य के मा से ही सम्पन्न होते हैं। व्याकरण सम्मत भाषा लिखने व समझने में गद्य शिक्षण बहुत सह होता है। इसके साथ-साथ गद्य की विभिन्न विधाओं का ज्ञान भी गद्य शिक्षण द्वारा ज्ञान एवं भावात्मक विकास के लिए तथा भाषिक तत्त्वों की जानकारी के लिए गद्य शिक्षण का मह स्थान है।

गद्य की विभिन्न विधाएँ (Types of Prose)

साहित्य के गद्य रूप में छन्द लय, प्रवाह आदि के बन्धनों का होना आवश्यक उसमें तथ्यों को सर्वमान्य भाषा में ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत किया जाता है। सामान्य व्यक्ति विचारों की अभिव्यक्ति गद्य के माध्यम से ही करते हैं। गद्य हमारे दैनिक जीवन की है। हमारा मस्तिष्क हर समय विचार करने, तर्क-वितर्क करने, चिन्तन-मनन करने एवं वि निर्णय लेने का कार्य करता रहता है। इन्हीं विचारों, तथ्यों एवं सिद्धान्तों का विवेचन के गद्य रूप द्वारा किया जाता है। इन विचारों व तर्कों की अभिव्यक्ति में व्यवस्था, क्र शृंखला का होना आवश्यक है। यह गद्य हमें विभिन्न रूपों में देखने को मिलता है। जैसे— कहानी, नाटक, उपन्यास, एकांकी, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, पत्र, डायरी, आलोचना रे आदि। इन्हें ही गद्य की विधाएँ कहा जाता है। हर विधा, भाषा-शैली विषय के प्रति प्रस्तुतीकरण आदि की दृष्टि से अलग-अलग होती है। सभी विधाओं को अलग-अल स्पष्ट किया गया है।

(1) कहानी—गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं में से तक कहानी है। कहानी में के एक पहलू, एक क्षण, एक घटना अथवा एक विचार को कथारूप में प्रस्तुत किया ज कहानी मुख्यतः चार प्रकार की होती है :

(क) **चरित्र-प्रधान**-जिनमें किसी घटना के माध्यम से उसके सक्रिय पात्रों के च उभारकर प्रस्तुत किया जाता है।

(ख) घटना प्रधान—जिनमें किसी पौराणिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक घटना को स्पष्ट किया जाता है।

(ग) **भाव-प्रधान व मनोवैज्ञानिक**—जिनमें पात्रों की मनोदशा या अन्तर्द्वन्द्व का चित्र जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(घ) **समस्या प्रधान**—इस प्रकार की कहानियों में किसी धार्मिक, सामाजिक या राजनैतिक समस्या को आधार बनाकर उसका समाधान प्रस्तुत किया जाता है।

कथा वस्तु, पात्र चरित्र-चित्र, कथोपकथन, भाषा-शैली, देश, काल व उद्देश्य, ये कहानी के तत्त्व होते है।

निबन्ध—निबन्ध एक ऐसी गद्य विधा है जिसमें व्याकरण सम्मत भाषा और विषयानुकूल शैली के माध्यम से विचारों अथवा तथ्यों को सरल, संक्षिप्त किन्तु क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है। सामान्यतः निबन्ध चार प्रकार के होते हैं। विवरणात्मक या कथात्मक, वर्णात्मक, विचारात्मक एवं भावात्मक।

एकांकी—इसमें जीवन की किसी घटना को एक अंक में प्रस्तुत किया जाता है। रंगमंच पर दृश्य-परिवर्तन नहीं करना पड़ता है। कम समय में अधिक आनन्द प्रदान करना एकांकी की विशेषता है।

नाटक—गद्य साहित्य की यह प्राचीनम विद्या है। इसमें कथा या घटना को पात्रों के अभिनय द्वारा रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है। इसे देखने से दर्शकों के हृदय प्रभावित होते हैं अतः इसे दृश्य काव्य कहा जाता है। कथा वस्तु, पात्र एवं चरित्र-चित्रण संवाद, कथोपकथन, देश काल, भाषा-शैली, उद्देश्य, अभिनेयता-ये नाटक के तत्त्व होते हैं।

जीवनी—जीवनी गद्य साहित्य की वह विधा है जिसमें किसी व्यक्ति के जीवन की सत्य घटनाओं पर आधारित विवरण प्रस्तुत किया जाता है। व्यक्ति के जीवन की कुछ प्रमुख घटनाओं को चुनकर भाषा-शैली एवं कल्पना के सहारे उसे रोचक और प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उसमें किसी काल्पनिक घटना का वर्णन नहीं होता है।

आत्मकथा—गद्य साहित्य की इस विद्या में कोई व्यक्ति अपने जीवन की घटनाओं को स्वयं लिखकर प्रस्तुत करता है। जीवनी अन्य कोई व्यक्ति लिखता है और आत्मकथा स्वयं लिखी जाती है। लेखक अपने जीवन के सुखद व दुखद, अच्छे एवं बुरे, दोनों पक्षों का चित्रण करता है। वह आत्म परीक्षण कर स्वनिष्कर्ष भी प्रस्तुत करता है जिससे पाठक उसके अनुभवों का लाभ उठा सकें।

उपन्यास—उपन्यास का स्वरूप बहुत विस्तृत होता है। गद्य की इस विधा में एक विस्तृत प्रमुख कथा का वर्णन होता है परन्तु उस विस्तृत कथा के अन्तर्गत अनेक गौण कथाएँ समाहित होती हैं। उपन्यास दो प्रकार के होते हैं—घटना-प्रधान व चरित्र-प्रधान। जासूसी तथा साहसिक कथानक वाले उपन्यास घटना-प्रदान होते हैं तथा ऐतिहासिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कथानक वाले उपन्यास चरित्र-प्रधान होते हैं।

संस्मरण—इस विधा में लेखक स्वयं अपनी आँखों देखी या अनुभव की गई घटनाओं का रोचक विवरण प्रस्तुत करता है। यदि यह संस्मरण अपने जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित है तो आत्मकथा के अति निकट और यदि अन्य व्यक्ति के जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित है तो जीवनी के अति निकट होता है। इसमें लेखक अपने दृष्टिकोण से घटना का विश्लेषण करता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रेखाचित्र—गद्य की इस साहित्यिक विधा को शब्द चित्र या स्कैच भी कहते हैं। इसमें किसी व्यक्ति की आकृति, चाल ढाल या स्वभाव की किन्हीं विशेषताओं को शब्द चित्रों के माध्यम से सजीव रूप में चित्रित किया जाता है। इसमें व्यक्ति के कार्यों का संक्षिप्त एवं सजीव चित्र होता है।

डायरी—गद्य की इस विधा में लेखक अपने अनुभवों, जीवन की घटनाओं, अपने सम्पर्क में आए व्यक्तियों आदि को प्रतिदिन अलग-अलग लिखित रूप में अभिव्यक्त करता है। यह डायरी कहलाती है।

यदि विश्लेषण किया जाए तो गद्य पाठ मुख्यतः तीन भागों में संकलित किए जा सकते हैं—सूचनात्मक, वर्णानात्मक तथा भावात्मक। उपयुक्त गद्य की सभी विधाओं के पीछे कुछ न कुछ उद्देश्य अवश्य होता है। उदाहरण के लिए जीवन चरित्र के द्वारा बालक को गुण ग्रहण करने की प्रेरणा देकर चरित्र निर्माण में योग देना, वैज्ञानिक अविष्कारों पर आधारित पाठों के द्वारा विद्यार्थियों को वैज्ञानिक खोजों से परिचित करा कर उनमें लाभ तथा हानि का विवेक जागृत करना।

विचारात्मक लेख द्वारा गम्भीर भाव व्यक्त करने की विविध शैलियों का ज्ञान कराना, तर्क तथा विवेचन शक्ति का विकास कराना सम्भव हो जाता है। आलोचनात्मक पाठों का मुख्य उद्देश्य होता है, बालक की निर्णायक शक्ति दृढ़ करके समीक्षा शक्ति बढ़ाना, तर्क विवेक की साधना करके गुण दोष का निष्पक्ष विवेचन करने योग्य बनाना।

गद्य-शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Teaching Prose)

अध्यापक को गद्य पाठों की शिक्षा देते समय बच्चों के स्तर, पाठ्य वस्तु एवं प्राप्त समय के अनुसार निम्न उद्देश्यों को सामान्यतः ध्यान में रखना चाहिए।

सामान्य उद्देश्य (General Aims)

1. छात्रों को उचित गति, स्वर एवं उतार-चढ़ाव के अनुसार स्वर वाचन करने के योग्य बनाना।
2. छात्रों को शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराना।
3. छात्रों को मौन वाचन में निपुण करना।
4. छात्रों में स्वाध्याय की आदत विकसित करना।
5. छात्रों के शब्द, सूक्ति, लोकोक्ति एवं मुहावरों के भण्डार में वृद्धि करना।
6. छात्रों को गद्य का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना।
7. छात्रों की बोध-शक्ति, कल्पना शक्ति एवम् विवेचना शक्ति का विकास करना।
8. छात्रों को लिपि का ज्ञान कराना।
9. छात्रों को मौखिक एवं लिखित रूप से विचारों को अभिव्यक्त करने के योग्य बनाना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. छात्रों को पूर्ण मनोयोग से सुनने एवं सुनकर अर्थ ग्रहण करने के योग्य बनाना।
11. छात्रों की निरीक्षण, बोध कल्पना एवं विवेचना आदि शक्तियों का विकास करना।
12. छात्रों को चरित्र-निर्माण में सहायता देना।
13. छात्रों की सृजनात्मक योग्यताओं का विकास करना।
14. छात्रों को गद्य का अध्ययन कर उसकी समीक्षा करने के योग्य बनाना।
15. छात्रों को गद्य पाठों द्वारा सांस्कृतिक मूल्यों, ऐतिहासिक घटनाओं, पौराणिक कथानकों, सत्यों, धार्मिक विश्वासों, सामाजिक स्थितियों एवं मानव जीवन के विविध पक्षों का ज्ञान कराकर उनके ज्ञान-भण्डार में वृद्धि करना।
16. छात्रों में समाज, जाति, धर्म एवं देश के प्रति सम्मान का भाव जागृत करना।
17. छात्रों को गद्य साहित्य की समीक्षा करने योग्य बनाना।
18. छात्रों को विभिन्न लेखन-शैलियों से परिचित कराना।
19. छात्रों को व्याकरण के नियमों और उनका भाषा में प्रयोग सिखाना।
20. छात्रों को वाचन, श्रवण, लेखन व मौखिक कौशल में निपुण बनाना।

विशिष्ट उद्देश्य (Special Aims) — विशिष्ट उद्देश्य पाठ के अनुसार होते हैं। पाठ का जो रूप होगा, जैसी विषय सामग्री होगी वैसे ही उद्देश्य होगें। गद्य शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(1) गद्यांश का व्याकरणोचित भाषा में वाचन करने की क्षमता का विकास करना।
(2) अभीष्ट गद्यांश में आए कठिन शब्दों से छात्रों के शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
(3) छात्रों की विचार विश्लेषणात्मक योग्यता का विकास करना।
(4) अभीष्ट गद्यांश में प्रयुक्त व्याकरणि विशेषताओं का उल्लेख करने की क्षमता विकसित करना।
(6) गद्यांश के सारांश को अपने शब्दों में लिखने की योग्यता का विकास करना।

गद्य-शिक्षण के इन सभी सामान्य व विशिष्ट उद्देश्यों को पाठ्य-निबन्ध, कक्षा के स्तर और बच्चों की अधिगम-क्षमता और प्राप्त समय के आधार पर निश्चित किया जाना चाहिए।

गद्य शिक्षण में गहन एवं विस्तृत अध्ययन (Intensive and Extensive Study in Prose)

(1) गहन या सूक्ष्म अध्ययन—इसमें पाठ्य पुस्तक का गहन एवं सूक्ष्म रूप से अध्ययन कराया जाता है। कठिन शब्दों की विस्तृत व्याख्या, मुहावरे-लोकोक्तियों की व्याख्या, शुद्ध उच्चारण का अभ्यास, विचार एवं भावों की व्याख्या आदि सभी कार्य विस्तार में किए जाते हैं। इसी से इसे गहन या सूक्ष्म अध्ययन कहा जाता है। गद्य के निबन्धात्मक पाठ सूक्ष्म अध्ययन के लिए ही होते हैं।

(2) विस्तृत एवं स्थूल अध्ययन—गद्य की अन्य विधाओं से सम्बन्धित पाठ विस्तृत एवं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

स्थूल अध्ययन के लिए होते हैं। इनके द्वारा छात्रों में तीव्र गति से पठन का विकास एवं विचार ग्रहण करने की योग्यता का विकास तथा साहित्याध्ययन में रुचि जागृत करने का प्रयास किया जाता है।

गद्य शिक्षण की विधियाँ
(METHODS OF TEACHING PROSE)

गद्य साहित्य का सर्वोत्तम रूप है। इसमें विचारों को प्रभावशाली ढंग से व्याकरण सम्मत सर्वमान्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। गद्य की शिक्षा देने के लिए जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है, वे इस प्रकार हैं।

1. अर्थकथन विधि (Meaning Explanation Method)
2. व्याख्या विधि (Explanation Method)
3. प्रश्नोत्तर विधि (Question-Answer Method)
4. समीक्षा विधि (Critical Evaluation Method)
5. संयुक्त विधि (Eclectic Method)

1. अर्थकथन विधि—इस विधि में अध्यापक गद्यांशों का मौखिक पठन करता है। इसके बाद गद्यांश में आए कठिन शब्दों का अर्थ बताता है और बाद में सभी वाक्यों के सरलार्थ बताता हुआ सम्पूर्ण गद्यांश अर्थ स्पष्ट कर देता है।

2. व्याख्या विधि—व्याख्या विधि अर्थ कथन विधि का ही विकसित रूप है। इस विधि में अध्यापक मौखिक पठन करने के बाद कठिन शब्दों का अर्थ व गद्यांश का सरलार्थ कराते हुए शब्दों और भावों की व्याख्या भी करता है। शब्दों की व्याख्या करते हुए शब्दों मे उपसर्ग प्रत्यय, सन्धि व समास आदि की व्याख्या करता है। शब्दों के पर्यायवाची व विपरीतार्थक स्पष्ट करता है, शब्दों का विस्तार करता है, उनमें छिपे-प्रसंगों या कथानकों को स्पष्ट करता है और भावों को स्पष्ट करने के लिए उनकी विस्तृत व्याख्या भी करता है।

3. प्रश्नोत्तर विधि—इस विधि को विश्लेषण-विधि भी कहा जाता है। यह विधि व्याख्या विधि का विकसित रूप है। इस विधि में व्याख्या विधि की तरह ही शब्दों और भावों की व्याख्या की जाती है, अन्तर इतना है कि इसमें शब्दों और भावों की व्याख्या की जाती है जिसे करने के लिए प्रश्न व उत्तर की सहायता ली जाती है। अध्यापक छात्रों के पूर्व-ज्ञान के आधार पर प्रश्न पूछता हुआ उन्हें नवीन ज्ञान की तरफ़ अग्रसर करता है। छात्रों को प्रश्न सुनकर स्वयं सोचने व उत्तर देने का अवसर देता हुआ छात्रों को सक्रिय रखने का प्रयास करता है।

4. समीक्षा विधि—इस विधि का प्रयोग माध्यमिक व उच्च कक्षाओं में किया जाता है। इस विधि का प्रयोग तभी करना चाहिए जब छात्रों को गद्य के तत्त्वों का ज्ञान, और भाषा कौशलों में विकास पूरी तरह से हो जाए। इस विधि में पाठ्य वस्तु का पठन कर भाषा तत्त्वों के आधार पर उसके गुण दोषों की परख की जाती है। इसके पहले गद्य पाठ के अर्थ एवं भाव का स्पष्टीकरण अत्यन्त आवश्यक है। इसमें अध्यापक छात्रों को पाठ्य वस्तु का भाव स्पष्ट कर उसके भाषायी तत्त्वों का ज्ञान प्रदान करता है और ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से पाठ्य वस्तु के गुण-दोषों की परख करने के लिए कहता है। साथ ही आवश्यक संदर्भ-ग्रन्थों एवं रचनाओं के बारे में भी बताता है जिनका अध्ययन कर छात्र पाठ्य वस्तु के गुण-दोषों का विवेचन कर सकें। इस विधि में छात्रों को स्वयं काफ़ी कार्य करना पड़ता है, अध्यापक भी उनका मार्गदर्शन करता है।

बच्चों में स्वाध्याय की आदत विकसित करने में यह विधि विशेष रूप से सहायक है।

5. संयुक्त विधि—माध्यमिक स्तर पर इन सभी प्रणालियों का आवश्यकतानुसार मिश्रित रूप से प्रयोग करके भी हम गद्य-शिक्षण को प्रभावशाली बना सकते हैं। भाषायी कौशल एवं ज्ञान प्रदान करने के लिए व्याख्या एवं प्रश्नोत्तर विधि को संयुक्त रूप से अपनाया जाए। साथ में, भाषायी तत्त्वों का शास्त्रीय विवेचन करने के लिए समीक्षा-प्रणाली को अपनाया जाए। इस संयुक्त प्रयोग से बच्चों को गद्य-पाठों की शिक्षा बहुत ही रोचक, आकर्षक एवं प्रभावशाली ढंग से दी जा सकेगी।

इस प्रकार अध्यापक गद्य-पाठ की शिक्षा देने के लिए अपनी आवश्यकतानुसार किसी एक विधि का अलग से या सभी विधियों का संयुक्त रूप से प्रयोग कर सकता है।

गद्य शिक्षण के अंग

गद्य-शिक्षण के मुख्यतः तीन अंग है—वाचन, व्याख्या एवं विचार-विश्लेषण।

वाचनः वाचन, से तात्पर्य है गद्यांश का उचित उच्चारण के साथ पाठ। वाचन कौशल ही बड़ी कक्षाओं में स्वध्याय का रूप धारण कर लेता है। गद्य शिक्षण की सम्पूर्ण प्रक्रिया में वाचन निम्न प्रकार से प्रयुक्त किया जाता है।

(1) अध्यापक द्वारा आदर्श वाचन

(2) विद्यार्थियों द्वारा अनुकरण वाचन

(3) विद्यार्थियों द्वारा व्यक्तिगत पाठ

(4) विद्यार्थियों द्वारा मौन पाठ

अध्यापक द्वारा आदर्श पाठ—अध्यापक द्वारा गद्यांश का शुद्ध उच्चारण करते हुए वाचन आदर्श पाठ कहलाता है। आदर्श वाचन कक्षा के अनुसार, लेख के अनुसार, उद्देश्य के अनुसार किया जाना चाहिए।

अनुकरण वाचन—वाचन सीखने की आरम्भिक अवस्थाओं में अनुकरण वाचन की बहुत आवश्यकता है। अध्यापक द्वारा आदर्श पाठ किए जाने के पश्चात् उसी गद्यांश का विद्यार्थियों द्वारा अनुकरण वाचन कराया जाता है। अनुकरण वाचन के समय यह ध्यान रखा जाता है कि विद्यार्थी वाचन करते समय वाचन संबंधी, उच्चारण सम्बन्धी तथा वर्तनी सम्बन्धी कोई त्रुटि न हो।

व्यक्तिगत वाचन या सस्वर वाचन—गद्य पाठ में विद्यार्थियों द्वारा व्यक्तिगत वाचन या सस्वर वाचन कराया जाता है। व्यक्तिगत वाचन उन विद्यार्थियों से कराया जाता है जिनका उच्चारण शुद्ध हो। कम से कम चार-पाँच विद्यार्थियों से व्यक्तिगत वाचन कराया जाना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

व्यक्तिगत वाचन के समय उच्चारण संबंधी अशुद्धियों का होना स्वाभाविक है, इसलिए अशुद्धियों के शुद्धिकरण का प्रयास किया जाना चाहिए।

मौन वाचन—मौन वचन से अभिप्राय है मुँह से बिना ध्वनि निकाले पढ़ना। मौन वाचन से वाचन के यांत्रिक पक्ष पर बल न होकर बौद्धिक पक्ष पर बल होता है। मौन पाठ का उचित समय पर ही प्रयोग कराया जाना चाहिए। मौन पाठ शिक्षण के पश्चात् या व्याख्या के बाद कराया जाए तो अधिक प्रभावशाली होता है। मौन पाठ द्वारा विद्यार्थी पठन सामग्री से परिचित हो जाता है। पठन सामग्री के विचार स्पष्ट हो जाते हैं तथा गद्यांश की अर्थ ग्राह्यता में सहजता आ जाती है।

गद्य-शिक्षण में प्रयुक्त सोपान

(STEPS INVOLVED IN PROSE TEACHING)

गद्य-शिक्षण से सम्बन्धित पाठ कभी तो लम्बे-लम्बे होते हैं और कभी छोटे। इन पाठों को प्रायः कक्षा के एक ही कालांश में पढ़ाना कठिन होता है। यदि पाठ छोटा है तो एक ही कालांश में उसे पढ़ाया जा सकता है परन्तु यदि पाठ लम्बा है तो उसे कालांश की अवधि के अनुसार विभिन्न इकाइयों में बाँटकर, उनकी अलग-अलग शिक्षण योजना तैयार करना चाहिए। गद्य की शिक्षण-योजना तैयार करने के लिए प्रायः सभी शिक्षा शास्त्री हरबर्ट की पंचपद प्रणाली जिसमें (1) प्रस्तावना (2) प्रस्तुतीकरण (3) तुलना (4) नियमीकरण (5) अभ्यास पाँच सोपन होते हैं, को अपनाने का समर्थन करते हैं। परन्तु हरबर्ट की पंचपद प्रणाली के पाँच सोपानों में से तृतीय (तुलना) व चतुर्थ (नियमीकरण) गद्य पाठ के शिक्षण के लिए उपयोगी नहीं हैं। अतः गद्य पाठ के सफल शिक्षण के लिए हम हरबर्ट की पंचपद प्रणाली को थोड़े से परिवर्तन के साथ स्वीकार कर सकते हैं। इसके लिए निम्न शिक्षण-क्रम को अपनाया जा सकता हैं :

1. प्रस्तावना—छात्रों को नया पाठ पढ़ाने को तैयार करने एवं उसके प्रति रुचि जागृत करने के लिए अध्यापक नवीन पाठ को छात्रों के पूर्वज्ञान से जोड़ने का प्रयास करता है। छात्रों के पूर्वज्ञान की परीक्षा लेने व उसका सम्बन्ध नवीन पाठ से जोड़ने के लिए अध्यापक विभिन्न क्रियाओं एवं साधनों की सहायता लेता है। अध्यापक छात्रों के पूर्व ज्ञान की परीक्षा निम्न प्रकार से ले सकता है :

पूर्व ज्ञान परीक्षा

1. शिक्षोपकरणो द्वारा—नवीन ज्ञान से सम्बन्धित कोई वस्तु, चार्ट, चित्र, या मॉडल आदि की सहायता से पाठ की प्रस्तावना की जा सकती है। जैसे नीलकण्ठ का पाठ पढ़ाने के लिए मोर का चित्र दिखाकर प्रश्न करते हुए पाठ की प्रस्तावना की जा सकती है।

2. प्रश्नोत्तर द्वारा—नवीन पाठ से सम्बन्धित पूर्वज्ञान पर आधारित द्वारा प्रश्न पूछकर छात्रों को यथा पाठ पढ़ने के लिए तैयार किया जाता है।

3. पूर्वकथा द्वारा—जैसे ... पाठ को पढ़ाने के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वल्लभाई पटेल के जीवन की पूर्व कथा को संक्षेप में सुनाकर या उस पर प्रश्न पूछकर पाठ की प्रस्तावना की जा सकती है।

4. समस्या द्वारा—पाठ से सम्बन्धित किसी समस्या को प्रस्तुत करके पाठ के प्रति छात्रों में कौतूहल उत्पन्न किया जा सकता है।

5. लेखक परिचय द्वारा—जैसे 'पूव की रात' नामक पाठ को पढ़ाने के लिए संक्षेप में प्रेमचन्द का परिचय देते हुए कहा जा सकता है कि आज हम उन्हीं के द्वारा लिखित कहानी का अध्ययन करेंगे।

1. उद्देश्य कथन—पूर्वज्ञान-परीक्षा के अन्त में सरल, संक्षिप्त एवं रोचक भाषा में अध्यापक छात्रों को नवीन पाठ के मुख्य उद्देश्यों को स्पष्ट करता है तथा पाठ का शीर्षक बताते हुए पाठ्य पुस्तक की पृष्ठ-संख्या भी बता दी जाती है जिससे बच्चे आसानी से पाठ को खोल सके।

2. प्रस्तुतीकरण—उद्देश्य धन के पश्चात् अध्यापक को छात्रों के सम्मुख नवीन पाठ को प्रस्तुत करना चाहिए। पाठ को प्रस्तुत करने के लिए अध्यापक को तीन प्रकार की क्रियाएँ सम्पन्न करनी होती हैं जिन्हें वाचन शिक्षण या गद्य शिक्षण के अंग भी कहा जाता है। ये क्रियाएं निम्नलिखित हैं :

(क) वाचन (ख) व्याख्या (ग) विचार-विश्लेषण

(क) वाचन

वाचन गद्य शिक्षण का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसमें बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है। वाचन तीन प्रकार का होता है।

(अ) आदर्श वाचन

(ब) अनुकरण वाचन

(स) मौन वाचन

(अ) आदर्श वाचन—अध्यापक द्वारा किये जाने वाले वाचन को आदर्श वाचन कहा जाता है। इसी का अनुकरण कर छात्र स्वयं वाचन करना सीखते हैं अतः नए गद्यांश से परिचित करवाने और पाठ्य सामग्री के केन्द्रीय भाव को ग्रहण करने के लिए आदर्श वाचन प्रत्येक दृष्टि से आदेश होना चाहिए। आदर्श वाचन करते समय अध्यापक को बाँए हाथ में गद्य पुस्तक पकड़नी चाहिए, दायाँ हाथ आवश्यक संचालन के लिए स्वतन्त्र रखना चाहिए। एकदम सीधा खड़ा होना चाहिए। शुद्ध उच्चारण, विराम चिन्हों, उचित हाव-भाव उतार-चढ़ाव का ध्यान रखते हुए स्वाभाविक एवं प्रफुल्लित मुखमुद्रा में अध्यापक को गद्यांश का सस्वर पठ न करना चाहिए।

(ब) अनुकरण वाचन—छात्रों के द्वारा किया जाने वाला सस्वर वाचन अनुकरण वाचन कहलाता है। छात्रों के उच्चारण को शुद्ध करने, उन्हें वाचन कला में निपुण करने तथा पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करने आदि उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अध्यापक द्वारा आदर्श पाठ के उपरान्त कक्षा में दो, तीन छात्रों से अलग-अलग अनुकरण वाचन करवाना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

जाता है। छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन करने के समय अध्यापक को छात्रों को उच्चारण ध्यान से सुनना चाहिए तथा पूरी कक्षा को ध्यान से देखते रहना चाहिए जिससे सभी छात्र वाचन को ध्यान से सुनें। इसके साथ ही अनुकरण वाचन के समय चात्र जो भी उच्चारण या पठन सम्बन्धि अशुद्धि करते हैं उन्हें छात्रों की सहायता से ही शुद्ध कराने का प्रयास करना चाहिए।

(स) मौन वाचन—मौन वाचन कठिन शब्दों की व्याख्या व गद्यांश की पूर्ण व्याख्या के बाद कराया जाता है। गद्यांश के अर्थ एवं भाव को समझने के लिए छात्रों से गद्यांश को मन में पढ़ने और समझने के लिए कहा जाता है। मौन वाचन के समय अध्यापक को सम्पूर्म कक्षा पर दृष्टिपात करते रहना चाहिए कि सभी छात्र शान्तिपूर्वक गद्यांश को पढ़ रहे है या नहीं। पठन पूरा होने के उपरान्त पाठ्य पुस्तक को बन्द करने का आदेश दे देना चाहिए और प्रश्न पूछने चाहिए।

(ख) व्याख्या

अनुकरण वाचन एवं उच्चारण सम्बन्धि अशुद्धियों को दूर करने के पश्चात् छात्रों को भाषा सम्बन्धि ज्ञान एवं मानसिक स्तर को देखते हुए गद्यांश में आए कठिन शब्दों, मुहावरों एवं लोगोक्तियों तथा कठिन वाक्यांशों की भी व्याख्या करनी चाहिए ताकि छात्र गद्यांश के अर्थ एवं भाव को सुगमता से ग्रहण कर सकें। कठिन शब्दों को छाँटकर श्यामपट्ट पर लिख देना चाहिए और निम्नलिखित विधियों से उन कठिन शब्दों का अर्थ छात्रों से ही निकलवाने का प्रयत्न करना चाहिए।

1. प्रतिभूति द्वारा—कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनसे सम्बन्धित पदार्थ कक्षा में लाना असम्भव होता है। उनके अर्थ बताने के लिए उनकी प्रतिभूति (मॉडल) को कक्षा में प्रदर्शित किया जा सकता है। जैसे हिरण, बाँघ शेर आदि शब्दों के लिए इनके मॉडल दिखाने चाहिए।

2. प्रत्यक्ष वस्तु द्वारा—अध्यापक वास्तविक वस्तु को दिखाकर शब्द का अर्थ छात्रों से निकलवा सकता है।जैसे 'जलज' का अर्थ बताने के लिए कमल के फूल को दिखाया जा सकता है।

3. चित्र, रेखाचित्र, मानचित्र द्वारा—जैसे पर्णकुटी का अर्थ बताने के लिए पत्तों से बनी कुटिया का चित्र, त्रिकोण, डेल्टा, प्रत्यंचा आदि शब्दों के लिए क्रमशः त्रिकोण का डेल्टा का एवं धनुष का रेखाचित्र श्यामपट्ट पर बनाकर अर्थ बताया जा सकता है। इसी प्रकार सतपुड़ा विन्ध्याचल आदि शब्दों को स्पष्ट करने के लिए मानचित्र का प्रयोग करना चाहिए।

4. पर्यायवाची शब्दों द्वारा—नवीन शब्द के अर्थ का स्पष्टीकरण पर्यायवाची शब्दों के द्वारा किया जा सकता है। नवीन शब्द के समानार्थी सरल शब्दों का अर्थ निकलवाया जा सकता है। जैसे—'गगन' के अर्थ को बताने के लिए उसके पर्यायवाची 'आकाश' शब्द का प्रयोग किया जा सकता है।

5. विपरीतार्थक शब्द द्वारा—कठिन शब्दों के विपरीतार्थक शब्दों का प्रयोग करना भी कठिन शब्द का अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे—'दुर्जन' शब्द का अर्थ बताने के लि 'सज्जन' का, अवनति का अर्थ बताने के लिए 'उन्नति' का और 'तिमिर' का अर्थ बताने के लिए 'प्रकाश' शब्द को प्रस्तुत किया जा सकता है।

6. **वाक्य प्रयोग द्वारा**—बहुत से शब्द ऐसे होते है जिनका अर्थ स्पष्ट करने के लिए उन्हें वाक्य में प्रयोग करना आवश्यक होता है। जैसे—'निवृत्त' शब्द का अर्थ बताने के लिए यह वाक्य—'अच्छे छात्र प्रातः काल अपने दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर पढ़ने बैठ जाते हैं' बताकर अर्थ को स्पष्ट किया जा सकता हैं।

7. **अभिनय का अंग-संचालन द्वारा**—मुस्कान, अट्टहास, त्यौरी चढ़ाना, घूरना आदि शब्दों की व्याख्या अंग-संचालन द्वारा सुगमता से की जा सकती है।

8. **व्युत्पति द्वारा**—शब्दों के मूल को निकलवाकर उनके अर्थ बताने का प्रयास करना चाहिए। शब्दों का रूपान्तरण कई कारणों से होता है। अतः उनके मूल रूप को बताना आवश्यक है। अनेक शब्द ऐसे होते हैं जो बिगड़ते-बिगड़ते नया रूप धारण कर लेते हैं या किसी बोली से हिन्दी में आ गए हैं, ऐसे शब्दों का अर्थ बताने के लिए उन शब्दों की व्युत्पत्ति बतानी चाहिए।

9. **विलोम द्वारा**—सत्य के अर्थ को समझाने के लिए उसके विलोम 'असत्य' को प्रयोग किया जा सकता है।

10. **व्याख्या द्वारा**—कुछ शब्द ऐसे होते है जिनका अर्थ एक-दो शब्दों में नहीं बताया जा सकता है। इसके लिए प्रसंगानुसार विस्तृत व्याख्या करना आवश्यक है जैसे—भागीरथी शब्द का अर्थ बताने के लिए उससे जुड़ी कथा के द्वारा इस शब्द की व्याख्या की जा सकती है।

11. **सन्धिविच्छेद द्वारा**—हिन्दी भाषा में दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से भी अनेक शब्दों का मेल हुआ है। इन शब्दों के विग्रह या सन्धि विच्छेद द्वारा शब्द का अर्थ बताया जा सकता है जैसे यदि महोत्सव शब्द के अर्थ को बताना है तो उसका सन्धि विच्छेद महा + उत्सव करके बताया जा सकता है।

12. **समास विग्रह द्वारा**—समस्त पद का विग्रह करके अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है जैसे दशाननः दश आनन वाला।

13. **प्रत्यय द्वारा**—प्रत्यय हटा कर मूल शब्द निकलवाना बड़ी रोचक क्रिया है। उदाहरण के लिए विशेष + ज्ञ = विशेषज्ञ या धन में दान प्रत्यय लगाने से धनवान शब्द बना है। इस प्रकार प्रत्यय हटाकर भी अर्थ बताया जा सकता है।

14. **उपसर्ग द्वारा**—उपसर्ग वह शब्दांश है जिसका स्वतन्त्र रूप से कोई विशेष महत्त्व न रहने पर जब वह अन्य शब्द के पूर्व जुड़ कर आता है तो शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देता है। उदाहरण के लिए बल शब्द में क्र पूर्व प्र उपसर्ग लगाने से प्रबल शब्द बन गया जिसे उसका अर्थ भी बदल गया।

15. **परिभाषा द्वारा**—परिभाषा बताकर भी शब्दों के अर्थ बताये जा सकते है जैसे पारस—एक पत्थर जिसके छूने से प्रत्येक धातु सोने में बदल जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

16. **अर्थविस्तार द्वारा**—इस विधि का प्रयोग विशेषतः मुहावरों व लोकोक्ति के अर्थ समझाने

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में किया जाता है। उदाहरण के लिए 'आटे दाल का भाव मालूम होने का अर्थ वाक्य प्रयोग विधि द्वारा निकलवाया जा सकता है।

17. अनुवाद द्वारा—कुछ शब्द विदेशी भाषाओं के होते हुए भी ऐतिहासिक कारणों से हिन्दी शब्दों से सरल और स्वाभाविक जान पड़ते हैं। ऐसे शब्दों का अर्थ अनुवाद द्वारा समझाया जा सकता है। जैसे चिकित्सालय के लिए हास्पीटल का प्रयोग परमाणु बम के लिए एटम बम्ब, पोस्ट आफिस का डाक घर आदि।

इस प्रकार कठिन शब्दों की व्याख्या करने के साथ-साथ गद्यांश में प्रयुक्त मुहावरों, लोकोक्तियों व सूक्तियों का अर्थ भी स्पष्ट करना होता है। वाक्य प्रयोग विधि की सहायता से मुहावरों की व्याख्या की जा सकती है। व्याख्या के उपरान्त छात्रों से गद्यांश को मन में पढ़ने के लि कहना चाहिए।

(ग) विचार—विश्लेषण एवं बोध परीक्षण

छात्रों में वाचनयोग्यता व शब्द-भण्डार को विकसित करने के उद्देश्य के साथ-साथ उनकी अर्थग्रहण करने की योग्यता व विचार-शक्ति को भी विकसित करना गद्य-शिक्षण का उद्देश्य होता है। अतः अध्यापक को छात्रों की सहायता से पाठ्य-वस्तु के विचारों का विश्लेषण करना चाहिए। प्रश्नोत्तर, स्वकथन, कहानी एवं व्याख्या आदि के द्वारा छात्रों को विचार करने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान करने चाहिए। उदाहरणों, दृष्टान्तों व तुलना की सहायता से पाठ्य-वस्तु के विचारों एवं तथ्यों को स्पष्ट करना चाहिए। इसके लिए विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्न क्रमबद्ध रूप से पूछने-चाहिए। छात्रों से पूर्ण वाक्य में उत्तर लेना चाहिए। छात्रों की बोध-क्षमता, विचार-शक्ति, कल्पना शक्ति एवं सृजनात्मक योग्यता को विकसित करने वाले प्रश्न पूछने चाहिए। विचार विश्लेषण के पश्चात् छात्रों की अर्थ ग्रहण-योग्यता का परीक्षण भी करना चाहिए। छात्रों ने पाठ्य-सामग्री को एवं प्रदत्त भाषायी ज्ञान को किस सीमा तक ग्रहण किया है इस बात की जाँच करने के लिए सरल, स्पष्ट एवं रुतरानुकूल प्रश्न पूछने चाहिए।

3. कक्षाकार्य-निरीक्षण—अध्यापक को कठिन शब्दों की व्याख्या एवं विचारों का विश्लेषण करते समय श्यामपट्ट का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। बाद में छात्रों से इस कठिन शब्दों एवं व्याख्या आदि को छात्रों से अपनी अभ्यास-पुस्तिका में उतारने के लिए कहा जाता है। जब छात्र अपनी अभ्यास-पुस्तिका में श्यामपट्ट कार्य लिखते हैं तो अध्यापक कक्षा में छात्रों के पास जाकर लिखित कार्य में सुधार के लिए सुझाव भी देता है।

4. आवृत्ति—छात्रों को जो कुछ पढ़ाया गया है उसे उन्होंने ग्रहण किया है या नहीं यह जानने का प्रयास किया जाता है। इसके लिए अध्यापक कुछ शब्दों के अर्थ, पाठ्य वस्तु से सम्बन्धित एक-दो-प्रश्न एवं लेखक के सम्बन्ध में कोई प्रश्न पूछ सकता है। छात्रों से नवीन शब्दों को वाक्य में प्रयोग करने के लिए भी कहना चाहिए। पढ़ाए गए पाठ का छात्रों पर क्या प्रभाव पड़ा है इस बात की जाँच करने के लिए कुछ कल्पनाजन्य प्रश्न भी पूछने चाहिए जैसे यदि तुम उस परिस्थिति में होते तो क्या करते ? या उस घटना से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. गृहकार्य—छात्रों को लिखित अभिव्यक्ति की जाँच करने एवं कक्षा में पढ़ाए गए पाठ का अभ्यास कराने के उद्देश्य से छात्रों को पाठ से सम्बन्धित कुछ प्रश्न गृह-कार्य के रूप में देने चाहिए। छात्रों को मानसिक क्षमता एवं घर पर प्राप्त समय का अनुमान लगा कर ही गृह कार्य देना चाहिए।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि उपरोक्त सोपानों के अन्तर्गत कक्षा के लिए स्तर एवं विषय की जटिलता को देखते हुए परिवर्तन किए जा सकते है। प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर गद्य शिक्षण में भेद किया जाना चाहिए। मौन पाठ के साथ-साथ शब्दार्थ व्याख्या में भी अन्तर करना चाहिए। माध्यमिक स्तर पर उपसर्ग, प्रत्यय, समास व संधि विच्छेद आदि का प्रयोग किया जा सकता है परन्तु प्राथमिक स्तर पर यह पूछा जा सकता है कि ये शब्द किन शब्दों से मिलकर बना है। इसी प्रकार माध्यमिक स्तर पर प्राथमिक स्तर के छात्रों की तुलना में अधिक सूक्ष्मति सूक्ष्म तथ्यों का विश्लेषण किया जा सकता है। उच्च कक्षाओं में दृश्य श्रन्य सामग्री का प्रयोग इतना नहीं किया जाता जितना कि प्रांथमिक स्तर का।

गद्य शिक्षण की पाठ-योजना
(LESSON PLAN IN PRASE TEACHING)

गद्य-शिक्षण छात्रों के शब्द भण्डार में वृद्धि करने, उनको शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराने, उनकी वाचन में निपुणता विकसित करने, उनकी अर्थग्रहण योग्यता विकसित करने और मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति में परिपक्वता लाने की सर्वोत्तम विधा है। गद्य-शिक्षण द्वारा छात्रों में इस योग्यताओं का विकास तभी हो सकता है जब उसके लिए एक अच्छी पाठ योजना का निर्माण किया जाए। गद्य पाठों का प्रारम्भ कैसे किया जाए। इस विषय में तीन मत है—अद्यापक आदर्श पठन से, बच्चों द्वारा पठन से और बच्चों द्वारा मौन पठन से। यहा निम्न रूप से एक आदर्श पाठ योजना का निर्माण किया जा सकता है।

पाठ—योजना

छात्रा अध्यापक का अनुक्रमांक— कक्षा—आठवीं

शिक्षण केन्द्र— समय—40 मिनट

विषय—हिन्दी (गद्य) दिनांक—

उपविषय—हमारा राष्ट्रीय ध्वज

सामान्य उद्देश्य—

1. छात्रों के शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
2. छात्र की व्याकरण के नियमों और उनका भाषा में प्रयोग करना सिखाना।
3. छात्रों में रचनात्मक शक्ति का विकास करना।
4. छात्रों की वाचन कौशल में निपुण करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विशिष्ट उद्देश्य

1. छात्रों को केसरिया, उर्वरा, सुजलाम्, सुफलाम्, शस्य श्यामलाम्, देशान्तर, सत्याग्रह एवं प्रभुत्व शब्दों का ज्ञान प्रदान करना।
2. छात्रों को राष्ट्रीय ध्वज की रचना के रहस्य का ज्ञान देना।
3. छात्रों में राष्ट्रध्वज के प्रति सम्मान भाव जागृत करना।
4. प्रतीक, गतिशील एवं सत्याग्रह शब्दों की भावानुभूति कराना।
5. त्याग, तपस्या, सत्य, प्रेम, अहिंसा, उदारता, विश्व शान्ति एवं मैत्री की भावना को जागृत करना और तदनुसार आचरण करने की अभिवृत्ति का निर्माण करना।

सहायक सामग्री—कक्षा कक्ष की सामान्य सामग्री, राष्ट्रीय ध्वज, अशोक स्तम्भ का मॉडल।

पूर्व ज्ञान

1. छात्रों ने राष्ट्रीय ध्वज देखा एवं उनको उसके विषय में साधारण ज्ञान है।
2. छात्र अहिंसा के पुजारी महात्मा बुद्ध, महाराजा अशोक एवं गाँदी से परिचित है।

प्रस्तावना/पूर्व ज्ञान परीक्षा

छात्रों को राष्ट्रीय ध्वज दिखाकर उनसे निम्नलिखित प्रश्न पूछे जाएँगे।

1. यह झण्डा किस देश का है ?
2. इसमें कितने रंग है ?
3. इसके बीच में क्या बना हुआ है ?
4. इस झण्डे के विषय में तुम क्या जानते हो ?

उद्देश्य कथन—यह वह झण्डा है जिसके सम्मान को बनाए रखने के लिए सहस्त्रों वीरों एवं वीरांगनाओं ने अपने जीवन की आहुति दी है। आज भी इस झण्डे के सम्मान के रक्षार्थ प्रत्येक भारतीय प्राण अर्पण से कटिबद्ध है। आज हम इसी पवित्र "राष्ट्रीय झण्डे" के विषय में पढ़ेंगे।

गद्यांश—हमारे राष्ट्रीय झण्डे में तीन रंग हैं, केसरिया, सफेद और हरा। केसरिया रंग त्याग और तपस्या का प्रतीक है। केसरिया रंग के वस्त्र पहनकर राजपूतों ने हँसते-हँसते अपने देश के लिए प्राण न्यौछावर कर दिए थे। सफेद रंग सत्य और पवित्रता का प्रतीक है और हरा रंग जीवन का, भारत की उर्वरा भूमि का, इस 'सुजलाम् सुफलाम् शस्य श्यामलाम्' धरती का चिन्ह है। अशोक का चक्र धर्म-चक्र है। यह अहिंसा, प्रेम, विश्व मैत्री और विश्व शान्ति का चिन्ह है। इस धर्म-चक्र को प्रथम बार महात्मा बुद्ध ने सारनाथ में प्रचलित किया था और इसे गतिशील रखने के लिए अशोक ने देश-देशान्तर में बौद्ध भिक्षुओं को भेजा था। इस प्रकार चर्खे के स्थान पर चक्र का चिन्ह बनाकर महाराजा अशोक के धर्म प्रचार ने पवित्र कार्य के साथ हमारे स्वतन्त्र राष्ट्र ने पवित्र कार्य के साथ हमारे स्वतन्त्र राष्ट्र ने अपने झण्डे का सम्बन्ध जोड़ लिया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारा झण्डा किसी के ऊपर प्रभुत्व का संकेत नहीं करता, वह तो भारत की त्याग और तपस्या, सत्य और प्रेम तथा विश्व शान्ति और विश्व मैत्री की उस नीति का प्रतीक है जो युग-युग से भारत की अपनी विशेषता रही है। एक दिन भगवान बुद्ध ने अहिंसा और प्रेम का दीप जलाया था, पूज्य बापू ने उसी की मन्द होती हुई ज्योति को पुनः तेज प्रकाशित करने के लिए सत्याग्रह किया था। हमारा राष्ट्रीय झण्डा इसी ज्योति का प्रतीक है। इस झण्डे के नीचे खड़े होने वाले प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह त्याग, तपस्या, सत्यता, पवित्रता और विश्वबन्धुत्व के आदेशों का पालन करे।

प्रस्तुतीकरण—सुविधा के लिए पाठ को दो अन्वितियों में पढ़ाया जाएगा।

आदर्श पठन/वाचन—छात्राअध्यापक शुद्ध उच्चारण एवं विराम चिन्हों को ध्यान में रखते हुए उचित स्वर और भावानुसार उचित स्वर प्रवाह में वाचन करेगा।

अनुकरण पाठ—कक्षा के कुछ छात्रों से एक-एक करके गद्यांश का सस्वर पठन करने के लिए निर्देश देगा। अध्यापक छात्रों के वचन को ध्यानपूर्वक सुनेगा और उनके उच्चारण दोषों को नोट करेगा।

उच्चारण संशोधन—छात्र अध्यापक छात्रों की उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियों को उन्हीं के सहयोग से ठीक कराएगा।

व्याख्या—कठिन शब्दों के अर्थ विभिन्न विधियों के प्रयोगों द्वारा छात्रों की सहायता से स्पष्ट किए जाएँगे। विश्लेषणात्मक प्रश्नों की सहायता से स्पष्टीकरण भी किया जाएगा।

श्यामपट्ट कार्य			विधि
केसरिया (केसर + इया)	केसर के रंग का	व्युत्पत्ति	संस्कृत शब्द केसर में + इया प्रत्यय लगने से बना है।
उर्वरा	उपजाऊ	वाक्य प्रयोग	अन्न उर्वरा भूमि में पैदा होता है बंजर में नहीं।
सुजलाम्	अच्छे जल से युक्त	विग्रह एवं व्याख्या	सु + जलाम् जलाम् (संस्कृत) = जल से पूर्ण सु (उपसर्ग) + जलाम् (संस्कृत शब्द) (1) 'सु' उपसर्ग लग जाने से शब्द के अर्थ में क्या परिवर्तन हो जाता है ?
सुफलाम्	अच्छे फलों से युक्त	समान शब्द	= सुजलाम्
स... शीतलाम्			

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्यामपट्ट कार्य			विधि
शस्य	खेती	कथन	'शस्य' संस्कृत भाषा क शब्द है जिसका अ है—खेती।
शस्य श्यामलाम्	हरी खेती से पूर्ण	व्याख्या	साहित्य में श्याम बड़ा व्यापक है। नी और हरे रंग के लिए प्रायः 'श्याम' शब्द प्रयोग होता है। नी और हरे रंग के लिए प्रायः 'श्याम शब्द प्रयोग होता है।' दू जहाँ बहुत अधिक ह याली होती है, वहां ह याली की तीव्र बढ़कर 'श्याम' हो ज है। हरी खेती से भारत भूमि को श श्यामलाम् कहा गया
देशान्तर (देश + अन्तर)	विदेश	सन्धि-विच्छेद एवं	देश + अन्तर रेडियो द्वारा घर बैठे देशान्तर समाचार मिल जाते है
सत्याग्रह (सत्य + आग्रह)	सत्य के लिए आग्रह	वाक्य प्रयोग सन्धि विच्छेद एवं प्रश्न	(1) सत्याग्रह का सन्धि विच्छेद करो। (2) अब बताओ सत्या ग्रह का क्या अर्थ है हैं।

भाव-व्याख्या

(1) केसरिया रंग को त्याग और तपस्या की भावना का प्रतीक क्यों माना जाता है

(2) प्राचीन काल में क्षत्रीय युद्ध किस प्रकार करते थे ?

(3) अपनी पराजय होती देखते क्या करते थे ?

(4) क्षत्राणियाँ उस समय क्या करती थी ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

केसरिया रंग अग्नि की लपट का रंग है। भारतीय धर्म में इस रंग को पवित्रता, शुद्धता, त्याग एवं तपस्या का प्रतीक माना गया है। इस रंग को धारण करने वाले अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ते है। तभी हमारे यहाँ के साधु लोग भगवा अथवा केसरिया रंग के वस्त्र धारण करते हैं। हमारे देश में जब क्षत्रीय वीर अपनी पराजय निश्चित समझ लेते थे तब वे सपार्ट वार केसरिया वस्त्र पहन कर युद्ध स्थल में पहुँच जाते थे और रक्त की अन्तिम बूँद शेष रहने तक लड़ते थे। क्षत्रणियाँ भी युद्ध स्थल में लड़ती थीं। अन्त में शत्रुओं के स्पर्श के भय से ये क्षत्रणियाँ जोहर करती थी। इस केसरियां रंग को देखते ही मस्तिष्क में उन राजपूतों के त्याग की कहानी घूम जाती है।

(2) सफेद रंग को सत्य एवं पवित्रता का प्रतीक क्यों मानते है ?

सफेद रंग स्वच्छ होता है, साहित्य में उसे समस्त सातविक भावनाओं एवं यश का प्रतीक माना जाता है। इसके अतिरिक्त एवं वैज्ञानिक सत्य यह भी है कि श्वेत रंग में सात रंग होते हैं। इसमें उन सातों रंगों के गुण तो होते ही हैं साथ ही साथ ये उन सबकी विविधता से उठ कर स्वच्छता की ओर बढ़ जाता है, इसलिए इसे सत्य और पवित्रता का प्रतीक माना जाता है।

(3) हरे रंग को जीवन का चिन्ह क्यों मानते है ? इसे भारत भूमि का चिन्ह क्यों मानते हैं। हमारे देश भारत की भूमि सदैव हरी-भरी रहती है। यही कारण है कि हरे रंग से भारत भूमि का आभास होता है। हरे-भरे खेतों से हमें अन्न मिलता है और अन्न से जीवन। खेतों की हरियाली के अभाव में जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती।

(4) अशोक के धर्म चक्र को अहिंसा, प्रेम विश्व मैत्री और विश्व-शान्ति का चिन्ह क्यों मानते है ?

(क) अशोक महान् ने राज गद्दी पाने के लिए क्या किया था ?

(ख) अशोक ने अपना राज्य विस्तारं करने के लिए क्या किया था ?

(ग) अशोक महान् द्वारा लड़े गये इतिहास प्रसिद्ध युद्ध का लाभ बताओ।

(घ) कलिंग के युद्ध का अशोक पर क्या प्रभाव पड़ा था ?

कलिंग युद्ध के जीवन नर संहार ने अशोक के हृदय को बदल दिया था, उसे तलवार से सदैव के लिए घृणा हो गई थी और उसके हृदय में बौद्ध धर्म के सत्य, प्रेम और अहिंसा के सिद्धान्तों ने स्थान ले लिया था। तभी अशोक ने उस चक्र को धारण किया था। यह चक्र अशोक ने अपने स्तम्भ में भी बनवाया था। राष्ट्रीय ध्वज में हमने इस चक्र को अशोक के स्तम्भ से ही लिया है।

रेलगाड़ी का गार्ड जब हरी झण्डी दिखाता है तो क्या होता है ?
वह हरी झण्डी किस बात की प्रतीक है ?

जिस प्रकार हरी झण्डी को देखते ही इन्जिन चालक यह समझ जाता है कि जब गाड़ी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

चला देनी चाहिए, ठीक उसी प्रकार अशोक ने इस धर्म चक्र को देखते ही दर्शक के हृदय में सत्य, अहिंसा, प्रेम, विश्व मैत्री एवं विश्व शान्ति की शुभ भावनाएं उठ जाती है।

(6) चक्र की गतिशील रखने से क्या तात्पर्य है ?

चक्र का अर्थ है जो चलता हो। गाड़ी के पहिए गाड़ी पर रक्खे समान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचते हैं। इस धर्म चक्र के साथ, सत्य, अहिंसा, प्रेम विश्व मैत्री एवं विश्व शान्ति की भावनाएँ जुड़ी हैं। अशोक ने इस धर्म चक्र को लेकर बौद्ध भिक्षुओं को देश-विदेशों में भेजा था और उन भावनाओं का प्रसार किया था। इस प्रकार यह धर्म चक्र गतिशील रहा था।

मौन पाठ—अध्यापक बच्चों से गद्यांश को मन में पढ़ने और उसका अर्थ समझने के लिए कहेगा तथा देखेगा किसकी छात्र पूर्ण मनोयोग से पढ़ रहे हैं।

अर्थ ग्रहण परीक्षण/पुनरावृत्ति

(1) हमारे राष्ट्रीय झण्डे का केसरिया रंग किस भावना को प्रकट करता है ?

(2) हमारे झण्डे का श्वेत रंग विश्व के सामने क्या आदर्श उपस्थित करता है ?

(3) सत्य, अहिंसा और पवित्रता-इन गुणों की आज विश्व को क्यों आवश्यकता है ?

(4) अशोक के धर्म चक्र को देखते ही हमारे मन में कौन-कौन से भाव उठते हैं ?

(5) धर्म चक्र को गतिशील रखने के लिए अशोक ने क्या कार्य किये थे ?

कक्षा कार्य निरीक्षण

छात्र श्याम-पट्ट का सार को अपनी-अपनी पुस्तिकाओं में उतारेगें। अध्यापक देखेगा कि सभी छात्र अपना-अपना कार्य स्वतन्त्र, स्वच्छता एवं शुद्धता के साथ करते हैं। छात्रों को बैठने के आसनों को उचित दिशा दी जाएगी।

द्वितीय अन्विति

हमारा झण्डा ______________________ प्रतीक है।

आदर्श पठन—अध्यापक द्वारा शुद्ध उच्चारण एवं विराम चिन्हों का ध्यान रखकर भावानुचित स्वर प्रवाह में किया जायेगा।

अनुकरण पठन—कक्षा के कुछ छात्रों द्वारा कराया जायेगा।

उच्चारण संशोधन—बच्चों की उच्चारण अशुद्धियों को दूर किया जायेगा।

व्याख्या—कठिन शब्दों के अर्थ विभिन्न विधियों के प्रयोग द्वारा छात्रों की सहायता से स्पष्ट किए जायेंगे। विश्लेषणात्मक प्रश्नों की सहायता से भाव स्पष्टीकरण भी किया जाएगा।

शब्द व्याख्या एवं भाषा कार्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्यामपट्ट कार्य		विधि	
शब्द	अर्थ	नाम	रूप
प्रभुत्व	शासनिधिकार	वाक्य-प्रयोग	अंग्रेजों के चले जाने पर भारत में अब हमारा प्रभुत्व है।

भाव व्याख्या

(1) हमारा यह झण्डा किसी के ऊपर प्रभुत्व का संकेत नहीं करता इससे क्या तात्पर्य है ?

(2) झण्डे के केसरिया रंग से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

(3) श्वेत रंग से क्या शिक्षा मिलती है ?

(4) अशोक चक्र से क्या शिक्षा मिलती है ?

हमने त्याग, करना सीखा है, हम सत्य और अहिंसक पुजारी है। हमारा झण्डा त्याग, अहिंसा, प्रेम एवं विश्व मैत्री तथा विश्व-शान्ति का पाठ सिखाता है। भारतीय झण्डे के नीचे खड़े होने वाले किसी भी व्यक्ति को किसी दूसरे देश को अपने अधीन करने की बात नहीं सोचनी चाहिए।

(2) अहिंसा और प्रेम के द्वीप से क्या तात्पर्य है ?

(i) दीप कब जलाया जाता है ?

(ii) दीप जलने से क्या लाभ है ?

(iii) यदि रात्री में प्रकाश न किया जाएं तो क्या परिणाम होगा।

(जिस प्रकार दीप अंधकार को दूर कर प्रकाश फैलाता है ठीक उसी प्रकार अहिंसा और प्रेम की भावना हमारे जीवन के अंधकार को नष्ट कर हमारा जीवन सुखमय बनाती है। इसके अभाव में संघर्ष मारकाट, अशान्ति और हाहाकार का राज्य छा जाता है। यही कारण है कि अहिंसा और प्रेम को दीपक कहा गया है।)

(3) गांधी जी के आन्दोलन को सत्याग्रह क्यों कहा गया ?

(यह सत्य है कि यह भारत देश हमारा है और यह भी सत्य है कि स्वतन्त्रता प्रत्येक व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है—इसी के लि गांधी जी ने आन्दोलन किया था। यही कारण है कि उनके आन्दोलन को सत्याग्रह कहा गया।

मौन पठन—समस्त छात्रों द्वारा शान्ति पूर्वक मौन पठन किया जायेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अर्थ ग्रहण/पुनरावृत्ति परीक्षा

(1) भारतवर्ष की सबसे बड़ी विशेषता क्या रही है ?
(2) भगवान बुद्ध ने हमें कौन-कौन सी शिक्षाएँ दी थी ?
(3) गाँदी जी ने इस शिक्षाओं को पुनः फैलाने के लिए क्या-क्या प्रयत्न किए ?
(4) इन शिक्षाओं को भारतीय सरकार प्रायोगिक रूप में कहाँ तक मान रही है ? उदाहरण दो।

कक्षा कार्य एवं निरीक्षण—छात्र श्याम-पट्ट सार को अपनी-अपनी पुस्तिकाओं में उतारेंगे। अध्यापक देखेगा कि सभी छात्र अपनी-अपनी पुस्तिकाओं में अपना-अपना कार्य स्वतन्त्रता स्वच्छता एवं शुद्धता के साथ करते हैं। छात्रों के बैठने के आसनों को उचित दिशा दी जायेगी।

गृह कार्य—

(1) अपने देश के राष्ट्रीय झण्डे पर एक लेख लिखिए।
(2) निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-न्यौछावर, गतिशील, देशानु प्रभुत्व, प्रतीक और सत्याग्रह।

प्रश्नावली

1. भाषा में गद्य साहित्य का क्या महत्त्व है ? कक्षा के गद्य शिक्षण 'किन उद्देश्य को सामने रखकर किया जाता है ?
2. गद्य-शिक्षण के सोपानों की व्याख्या कीजिए ?
3. गद्य के पाठों को आदर्श पठन से शुरू करना चाहिए या छात्रों द्वारा पठन कराव या मौन पठन से ? सकारण उत्तर दीजिए।
4. गद्य के पाठों में कठिन शब्दों एवं वाक्यों की व्याख्या किन-किन युक्तियों से की जाती है ? उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए।
5. गद्य पाठ संकेत निर्माण की भिन्न-भिन्न शैलियां कौन सी है स्पष्ट कीजिए।
6. गद्य शिक्षण की एक पाठ योजना बनाइए।

□□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय – 10

कविता शिक्षण

(TEACHING OF POETRY)

भाषा का प्रमुख कार्य विचारों और भावों को अधिक से अधिक संप्रेपणशील बनाना है। वाचिक और लिखित दोनों रूपों में भाषा मानव जाति के संचित ज्ञान और भाव-राशि को व्यापक स्तर पर सुरक्षित, विकसित और प्रसारित करती है। लेखन के जिन रूपों में ज्ञान की अपेक्षा भाव पर अधिक बल दिया जाता है, वे साहित्य या काव्य के अन्तर्गत आते हैं। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि रचनाएँ, इसी कोटि में आती हैं। सामान्यतः लेखक या कवि अपनी अनुभूति को ही विशेष महत्त्व देता है। इसलिए साहित्य मूलतः भावात्मक होता है और जीवन में भावात्मक एकता के विकास के लिए उसका अध्ययन आवश्यक है।

कविता क्या है ? (What is Poetry ?)

भाषा वाचिक और लिखित रूपों में भावों और विचारों को अधिकाधिक संप्रेपणीय बनाती है। साहित्य में इस संप्रेषण की दो प्रमुख शैलियाँ हैं : गद्य और कविता। जब हम अपने विचारों को विस्तारपूर्वक तर्क और प्रमाण सहित व्याकरण सम्मत भाषा में प्रस्तुत करते हैं हम तक गद्य शैली का प्रयोग कर रहे होते हैं और जब अपने भावों और विचारों को छंद, लय, ताल, स्वर में बाँधकर (कभी-कभी प्रतीकों या अमूर्त बिम्बों के सहारे) प्रकट करते हैं तो कविता-शैली का। यही काव्य और गद्य का स्थूल अंतर है। कभी-कभी कविता में छंद, स्वर, ताल आदि का निर्वाह नहीं किया जाता, तब भी वह कविता रहती है।

कात्यत्व कविता के द्वारा प्रस्तुत भावानुभूति पर अधिक टिका होता है, उसे प्रस्तुत करने की शैली पर कम। कविता की सृष्टि तभी होती है जब कवि के हृदय में अनुभूति की तीव्रता होती है और होता है भावों का ऐसा आवेग जो फूट पड़ने को आतुर हो। यह भाव या विचार हमारे मन को छू जाता है। कविता का अभिव्यक्ति कौशल छन्द, तुक, वर्ण प्रयोग, शब्द चयन अलंकार आदि पाठक के सौन्दर्य-बोध को तीव्र करते हैं। कल्पना और वर्णन शैली की विशेपता से कविता कभी-कभी विलक्षण और विचित्र बातें कहती सी जान पड़ती है—इसे कवि कौशल या उक्ति वैचित्रय कहा जाता है जहाँ कवि का शब्द-चयन गूढ़ार्थ से भरा रहता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काव्य : परिचय एवं स्वरूप

कविता शिक्षण से पहले कविता से जुड़े कुछ प्रश्नों का उत्तर देना आवश्यक है कि काव्य क्या है ?

कवि की कृति को काव्य कहा जाता है।

कवि कौन है ? 'कवि' मूलतः कर्त्ता/निर्माता को कहा जाता है। सृष्टि का निर्माता ब्रह्म है वह चाहे व्यक्त हो या अव्यक्त, वेदों में उसे कवि कह कर पुकारा गया है।

'कविर्मनीषीपरिभूस्वयम्भू' कह कर उसे बुद्धिमान, सम्पूर्ण को आवृत्त करने वाला, स्वयं उत्पन्न होने वाला तथा 'कवि' अर्थात् अखिल ब्रह्माण्ड का सृजनकर्त्ता कहा है। अर्थात् ब्रह्म कवि है। अब क्योंकि वह निर्माता है, रचयिता है, कर्त्ता व स्रष्टा है तो फिर उसकी सृष्टि भी होगी। उसकी सृष्टि है यह अखिल ब्रह्माण्ड जो अपने आप में अद्वितीय एवं मौलिक है। ब्रह्म ने जिस सृष्टि को रचा है, वैसी पहले कहीं और नहीं थी। ब्रह्मा ने किसी प्रदत्त योजना के आधार पर इसका उत्पादन नहीं किया है, प्रत्युत अपनी मौलिक कल्पनाओं, उद्‌भावनाओं, प्रेरणाओं के अनुसार रच दिया है। यह सृष्टि इसलिए सृष्टि कहलाती है क्योंक मौलिक है, तथा अनुकरण अथवा उत्पादन नहीं है। इस प्रकार ब्रह्मा का पर्याय हुआ स्रष्टा या सृजनकर्त्ता। इसी शब्द को भक्ति साहित्य में कहीं-कहीं सिरजनहार कहा गया है। क्योंकि ब्रह्म स्रष्टा है अतः वह 'कवि' कहलाता है। इस प्रकार कवि का अर्थ हुआ स्रष्टा, सृजनकर्त्ता, निर्माता। अंग्रेज़ी भाषा में कवि का पर्यायवाची शब्द पोयट (Poet) है, उसका भी मूल अर्थ मेकर (Maker) अर्थात् 'बनाने वाला' है।

यदि कवि स्रष्टा है तो वह किस उपादान की सृष्टि करता है ? इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न का स्पष्ट उत्तर है 'काव्य' की। काव्य हम किसे कहते हैं, यही हमें अब जानना है।

'रामायण' (बाल्मीकि कृत) 'रामचरितमानस', 'सुदामाचरित्', विहारी सतसई, सत्य हरिश्चन्द्र, चन्द्रकान्ता, सार्कत, गोदान, कामायनी, अशोक के फूल, अवारा मसीहा, आदि सब नाम विभिन्न काव्य कृत्तियों के हैं। महाकाव्य, खण्ड काव्य, मुक्तक, उपन्यास, निबन्ध नाटक होते हुए भी ये सब कृतिया मूलतः काव्य हैं क्योंकि—

(1) इसकी रचना कवि/साहित्यकार द्वारा की गई है।
(2) इनकी रचना भाषा के माध्यम में अर्थात् शब्द और अर्थ द्वारा हुई है।
(3) इनकी मूल उत्पत्ति कवि के मानस में उसकी कल्पना द्वारा हुई है।
(4) इन में जो जीवन चित्रित किया गया है वह विश्वसनीय तथा यथार्थवत् प्रतीत होते हुए भी तथ्यात्मक तथा ऐतिहासिक नहीं है।
(5) इन का प्रभाव सीधा-पाठक के भाव-जगत पर पड़ता है।
(6) पाठक को इन से अनिवार्य रूपेण आनन्द की प्राप्ति होती है।
(7) इन में से प्रत्येक की रचना एक विशिष्ट शिल्पगत ढाँचे में की गई है, ये ढाँचे महाकाव्य, उपन्यास, नाटक व निबन्ध के लिए भिन्न-भिन्न हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(8) इन का पाठक के व्यक्तित्व पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। परिणामस्वरूप अनजाने में ही उसके व्यक्तित्व में, उसके चिन्तन में, उस की जीवन-दृष्टि में परिवर्तन आ जाता है।

(9) इन का भाषा-शैली पक्ष सुन्दर, असामान्य व चमत्कृत करने वाला है तथा कथ्य पक्ष सारगर्भित, लेखक के विशेष दृष्टिकोण का अभिव्यंजक तथा महत्त्वपूर्ण है।

(10) ये पाठक को रसानुभूति प्रदान करती है तथा पाठक की उपलब्धि बिम्बात्मक है।

काव्य की परिभाषा (Definition of Poetry)

(क) संस्कृत विद्वानों के प्रमुख मत

अग्नि पुराण—"संक्षेपाद्ववाक्यमिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली"

अर्थात् इष्ट अर्थ को प्रकट करने वाली पदावली से युक्त वाक्य ही काव्य है।

आचार्य मामह—"शब्दार्थों सहितौ काव्यम्" अर्थाथ शब्दार्थ का संयोग काव्य है।

आचार्य मम्मट—"तददोषौ शब्दार्थों सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि" अर्थात् (वह शब्दार्थयी रचना जो दोष रहति हो, गुण सहित हो, चाहे कभी-कभी अलंकार रहित भी हो, काव्य है।

आचार्य विश्वनाथ—"वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" अर्थात् रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।

पंडितराज जगग्नाथ—"रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्"

रमणीय-मनोहर अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य होता है।

इन परिभाषाओं में—शब्दार्थ के ऐसे प्रयोग को, जिस में शब्द और अर्थ दोनों का महत्त्व हो, जिस में दोषों का अभाव तथा गुणों का सद्भाव हो, जो सरस हो, जो रमणीय अर्थ को प्रतिपादित करता हो, को काव्य कहा गया है।

संस्कृत आचार्यों ने काव्य में उचित शब्द, सुन्दर अर्थ, रसात्मकता, गुण सहितता तथा दोष रहितता पर ज़ोर दिया है। हम कह सकते हैं कि संस्कृत काव्य चिन्तन के अनुसार-काव्य ऐसी शब्दार्थमयी रचना होती है, जिस में शब्द और अर्थ दोनों का महत्त्व होता है तथा जो पाठक को रस प्रदान करती है।

(2) अंग्रेज़ी विद्वानों के अनुसार

जान्सैन "Poetry is the art of uniting pleasure with truth by calling imagination to the help of reason."

अर्थात् कविता "वह कला है जो सत्य को आनन्द से समन्वित करती है। इस कार्य में वह बुद्धि का आधार लेती है और कल्पना की सहायता।"

कालरिज (Coleridge)—"Poetry is the best words, in the best order." अर्थात् "सर्वोत्ततम शब्द अपने सर्वश्रेष्ठ क्रम में कविता कहलाते है"।

एक्साईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका (Encyclopaedia Britanica)—"Poery-Art, work of the poet".

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"काव्य कवि का कलात्मक कार्य है।"

मिल्टन (Milton) – Poetry should be simple, sensuous and impassioned" कविता सादा, प्रत्यक्ष मूलक और रागात्मक अभिव्यक्ति है।"

वर्डस्वर्थ (Wordsworth) "Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings. It takes its origin from emotions recollected in tranquillity".

अर्थात् कविता मानव के सशक्त भावावेशों का सहज उच्छलन है। इस का जन्म शान्त क्षणों में स्मरण किए गए भावावेगों में होता है।

इन परिभाषाओं में कविता को श्रेष्ठ व सुन्दर शब्दों वाली, गेयात्मक विवेक से पूर्ण तथा कल्पना की सहायता से रचित एक उपादान बताया गया है।

अंग्रेज़ी काव्य-चिन्तन में सर्वश्रेष्ठ काव्य परिभाषा निम्नलिखित है :

चैम्बर्स शब्दकोश (Chambers Dictionary) के अनुसार "Poetry is the art of expressing in melodious words thoughts which are the reactions of imagination and feelings".

काव्य कल्पना तथा अनुभूति से रचित विचार-सम्पदा को सुमधुर शब्दों में अभिव्यक्त करने की कला है"।

इस परिभाषा में कविता के सभी तत्त्वों यथा अनुभूति, विचार, कल्पना, रचना आदि का उल्लेख भी कर दिया गया है।

इन सभी मतों के सार रूप में अंग्रेज़ी काव्य-चिन्तन के अनुसार–

काव्य एक कला है, जिस में सशक्त भावावेगों व विचारों को मधुर गेय–ललित भाषा में अभिव्यक्त किया जाता है। इस अभिव्यक्ति के द्वारा एक रमणीयता, सौन्दर्य व आनन्द के तत्त्व का उदय होता है"।

हिन्दी विद्वानों के प्रमुख मत

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी–"ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम साहित्य (काव्य) है।"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–हृदय की मुक्तावस्था के लिए किया हुआ शब्द विधान ही काव्य है।

सुमित्रानन्दन पंत–"कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है"।

बाबू गुलाबराय–"काव्य, संसार के प्रति कवि की भाव प्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं की कल्पना के ढाँचे में ढली हुई श्रेय की प्रेम रूपा प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है"।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी–"साहित्य का कारोबार मनुष्य के समूचे जीवन को ले कर है। सर्वभूत का अत्यधिक कल्याण साहित्य का चरम लक्ष्य है। जो साहित्य केवल कल्पना-विलास है, जो केवल समय काटने के लिए लिखा जाता है, वह बड़ी चीज़ नहीं है"।

डा. भगीरथ मिश्र–काव्य वह रचना है जो सत्य को संवेद्य बना देती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वैसे तो हिन्दी में अनेक काव्य परिभाषाएँ उपलब्ध हैं। क्योंकि प्रत्येक काव्य-चिन्तक ने अपने-अपने ढंग से काव्य की पहचान व परिभाषा बताने का प्रयास किया ह, किन्तु प्रायः उन पर किसी न किसी संस्कृत अथवा अंग्रेज़ी मत की छाया दिखाई देती है। कुछ कथनों में यथा उपर्युक्त मतों में मौलिकता के दर्शन होते हैं। विश्लेषण करने पर हम कह सकते हैं कि—

हिन्दी विद्वानों की धारणा के अनुसार काव्य ऐसी शब्दमयी रचना है, जिस का सम्बन्ध सत्य-शिव-सुन्दर के साथ है, जिस में ज्ञान का संचय है, जिसके द्वारा कवि का हृदय मुक्तावस्था में सौन्दर्य का उपयोग करता है। 'मुक्तावस्था से तात्पर्य है, हृदय की वह अवस्था जिसमें वह ममत्व, हानि-लाभ के बन्धनों से मुक्त शुद्ध भावस्थिति में हो।

इस प्रकार हम देखते हैं कि क्या भारतीय और क्या पाश्चात्य, सभी विद्वानों ने काव्य की परिभाषाएं समान रूप से की हैं। काव्य के अनेक तत्त्व हैं। कोई किसी को काव्य की आत्मा बताता है और कोई किसी को। वास्तविकता तो यह है कि कल्पना, रस, अलंकार और रीति आदि ये सब काव्य कामिनी के उपादान हैं। किसी एक उपादान के अभाव में ही कविता-कामिनी के सौन्दर्य में न्यूनता आ जाती है। अब किस अंग को प्रधानता दी जाए, यह विषय विवाद ग्रस्त ही रहेगा। अतः इन सब परिभाषाओं के समन्वय से ही हम कविता के अर्थ को समझ सकते हैं। कविता मानव की विशिष्ट अनुभूतियों की भाषाबद्ध, सुन्दर, सशक्त अभिव्यक्ति है जो रसात्मक होने के साथ-साथ मंगलमयी भी है।

काव्य के रूप—पद्य काव्य व गद्य काव्य ये काव्य के दो रूप हैं। जिस गद्य में कविता के गुण पाए जाते हैं, उसको गद्य काव्य कहते हैं। इस गद्य काव्य को कविता की कोटि में रख सकते हैं, जबकि पद्य की कोटि में नहीं, क्योंकि पद्य छन्दोबद्ध रचनाओं को कहते हैं, जबकि कविता छन्द रहित भी हो सकती है। इतना अन्तर होते हुए भी आज हम पद्य और कविता को एक ही रूप में ग्रहण करते हैं।

गद्य और पद्य में अन्तर—पद्य छन्दोबद्ध तथा नियमित गति में होने के कारण ताल पर चलता है और इसलिए वह रागमय होना है तथा रागमय होने के कारण वह हृदय को स्पन्दित करता है। पद्य में यति, गति तथा लय का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। इसका सम्बन्ध हमारे हृदय से होता है इसमें रोचकता होती है, हृदय को झंकृत करने की शक्ति होती है। गद्य में इन सब का अभाव रहता है। उसमें पद्य की सी रोचकता और प्रभावोत्पादक शक्ति नहीं होती। विराम चिन्हों का इसमें विशेष ध्यान रखा जाता है। व्याकरण के नियमों से बँधे होने के कारण गद्य में इतनी सरसता नहीं होती, जितनी की पद्य में

पद्य के रूप—पद्य एक छन्दोबद्ध रचना है। छन्दोबद्ध रचनाओं के तीन रूप होते हैं—

(1) बालगीत या बालोचित तुकबन्दियाँ

(2) वर्णात्मक या घटना प्रधान पद्य

(3) साहित्यिक रचनाएं।

प्रारम्भिक अवस्था पर हम बालकों को बाल गीत अथवा तुकबन्दियों का रसास्वादन करवाते हैं। मध्य स्तर पर वर्णात्मक या घटना प्रधान कविता पढ़ानी चाहिए व उच्च कक्षाओं में साहित्यिक रचनाओं को पढ़ाना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता पढ़ने का उद्देश्य—कविता पाठक के मन को छूकर उसे ऐसा आनन्द देती है, जिसे वह शब्दों में कठिनता से अभिव्यक्त कर पाता है। वह आनन्द के लिए पढ़ी सुनी जाती है, विचार उसमें कलात्मकता से पिरोया जाता है। कविता का उद्देश्य जीवन के अनुभवों की कलात्मक अभिव्यक्ति भी है। वह पाठक की भावनाओं का उदात्तीकरण भी करती है और उसके सौन्दर्य बोध का परिष्कार भी। मानव मन का स्वभाव ही है कि वह सौन्दर्य, माधुर्य और लालित्य की ओर सहज ही आकृष्ट होता है। कविता इस मनोवृत्ति की पूर्ति करती है। कविता मानव-प्रेम देश-प्रेम, त्याग, स्नेह, संवेदनशीलता जैसी सद्प्रवृत्तियों को जगाती है तथा मन को कोमल, उदार और संवेदनशील बनाती है।

छात्रों के किशोर मन को तो कविता बहुत प्रभावित करती है। किशोरावस्था में हृदय की गहराइयों में अनेक भावनाएँ उभर रही होती हैं। मन कुछ विशेष कर गुज़रने को प्रतिक्षण तत्पर रहता है। कविता से उनमें नई तरंग और नई स्फूर्ति जगती है। उन्हें लगता है जैसे कवि उन्हीं की भावनाओं को अपनी कविता के माध्यम व्यक्त कर रहा है।

अन्य सभी साहित्यिक विधाओं नाटक, कहानी, उपन्यास आदि की अपेक्षा कविता का प्रभाव अधिक गहरा और स्थाई होता है। कविता पढ़ने से भावानुभूति के अतिरिक्त सौन्दर्यानुभूति से भी छात्र सुपरिचित होते हैं। वाचन क्षमता तथा सौदर्य विवेचन की क्षमता का विकास भी कविता पढ़ाने के उद्देश्य है।

कविता शिक्षण के उद्देश्य—भाषा में कुछ भी पढ़ाएँ, उससे भाषा ज्ञान में वृद्धि तो होती ही है, पर कविता शिक्षण में हम मुख्य रूप से शब्द योजना, शब्द-शक्तियों, छन्दों, अलंकारों प्रस्तुत-अप्रस्तुत एवं मूर्त-अमूर्त विधानों और रसों की अनुभूति एवं उनके शास्त्रीय ज्ञान पर बल देते हैं। कविता के माध्यम से अभिव्यक्त विषय-सामग्री का ज्ञान कराए बिना हम उसकी रसानुभूति नहीं करा सकते। अतः उसका बोध भी आवश्यक है। बोध शक्ति के साथ-साथ अभिव्यक्ति शक्ति के विकास के लिए भी पर्याप्त अवसर रहते हैं। कविता रागमय होती है, उसमें हृदय को स्पन्दित करने की शक्ति होती है, इसलिए उसके द्वारा बच्चों के बोध, कल्पना एवं अभिव्यक्ति शक्ति के विकास के साथ-साथ उन्हें भावानुभूति, रसानुभूति, आनन्दानुभूति और अन्त में यदि सम्भव हो तो परमानन्दानुभूति भी करानी चाहिए।

कविता के शिक्षण से बच्चों में कविता और साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न होती है, उनकी चित्तवृत्तियों का परिमार्जन होता है, वे उच्च आदर्शों को ग्रहण करते हैं और सामाजिक आदर्शानुकूल आचरण करने की उनमें अभिवृत्ति बनती है। इन उद्देश्यों को हम निम्नलिखित रूप से अभिव्यक्त कर सकते हैं—

(1) छात्रों को स्वर-प्रवाह तथा भावों के अनुसार कविता-पाठ करने के योग्य बनाना।
(2) छात्रों को शब्द-योजना, शब्द-शक्तियों, छन्दों, अलंकारों, प्रस्तुत-अप्रस्तुत एवं मूर्त-अमूर्त विधानों और विभिन्न रसों की अनुभूति एवं शास्त्रीय ज्ञान कराना।
(3) काव्य सौन्दर्य से प्रभावित करके छात्रों को कविता के प्रति आकर्षित करना। कविता में छात्रों की रुचि बढ़ाना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(4) छात्रों को कविता के माध्यम से अभिव्यक्त प्राकृतिक सौन्दर्य, ऐतिहासिक घटनाओं, पौराणिक कथानकों, सांस्कृतिक मूल्यों, धार्मिक विश्वासों और सामाजिक दशाओं आदि की अनुभूति एवं ज्ञान कराना।

(5) छात्रों में कवि की अनुभूतियों तथा कल्पनाओं को समझने तथा ग्रहण करने की शक्ति उत्पन्न करना। उनकी ग्रहण शक्ति का पोषण करना।

(6) छात्रों को मानव जीवन के विविध पक्षों एवं उसकी सभ्यता एवं संस्कृतियों का ज्ञान कराना।

(7) छात्रों को पूर्ण मनोयोग से सुनने और सुनकर अर्थग्रहण एवं भावानुभूति करने योग्य बनाना।

(8) छात्रों की रागात्मक प्रवृत्तियों का संशोधन करना, उनककी सात्विक भावनाओं का उद्‌बोधन करना, उनके उदान्त भावों का संवर्धन करना तथा उनके दूषित मनोभावों का परिष्कार करना।

(9) छात्रों की सौन्दर्यानुभूति में वृद्धि करना, उनके हृदय में सौन्दर्य के प्रति प्रेम उत्पन्न करना।

(10) छात्रों की कविता का अर्थ ग्रहण करते हुए रसानुभूति कर सौन्दर्यानुभूति करने और अन्त में परमानन्दानुभूति करने योग्य बनाना।

(11) छात्रों को भिन्न-भिन्न काव्य शैलियों से परिचित करना।

(12) छात्रों की पढ़ी हुई कविता के भावों को अपने शब्दों में कह सकने योग्य बनाना।

(13) छात्रों की कल्पना शक्ति की वृद्धि करना।

(14) छात्रों को कविता की सुन्दर समीक्षा करने एवं उसे अपनी भाषा में प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने योग्य बनाना।

(15) छात्रों की सृजनात्मक शक्तियों को सचेष्ट करना और उनमें साहित्य रचना करने के प्रति रुचि उत्पन्न करना।

(16) छात्रों में कविता और साहित्याध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करना।

(17) छात्रों की चित्र वृत्तियों का परिमार्जन कर उनमें उच्च आदर्शों का निर्माण करना और सामाजिक आदर्शानुकूल आचरण करने की अभिवृत्ति विकसित करना।

विशिष्ट उद्देश्य—कविता शिक्षण के जिन सामान्य उद्देश्यों की हमने चर्चा की है, उनकी सीमा कविता और कक्षा के स्तर के आधार पर निश्चित् की जाती है। उदाहरण के लिए प्राथमिक कक्षाओं में शब्द-शक्ति, छन्द, अलंकार, प्रस्तुत-अप्रस्तुत एवं मूर्त-अमूर्त विधानों और रसों की केवल अनुभूति ही कराई जाती है, लेकिन उच्च कक्षाओं में इनका शास्त्रीय ज्ञान भी कराया जाता है। किसी कविता विशेष को कक्षा विशेष में जो विकास होता है और उनमें किन विशेष रुचियों और अभिवृत्तियों का विकास होता है, उन्हें उस कविता शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य कहते हैं। विशिष्ट उद्देश्यों को हम निम्नलिखित क्रम में व्यक्त कर सकते हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(1) छात्रों को किसी कवि विशेष के भाव, विचार या शैली के चमत्कार का आनन्द प्राप्त करना।

(2) कवि के किसी सन्देश को छात्रों तक पहुंचाना।

(3) किसी कविता में जीवन की जिस प्रकार आलोचना की गई हो, उसको स्पष्ट करना।

(4) कविता विशेष में वर्णित नीति, उपदेश, धार्मिक विचार, प्रकृति सौन्दर्य आदि को समझाने में सहायता देना।

(5) कविता की शैली से परिचित कराना।

कक्षा शिक्षण में कविता और छात्रों के स्तर के साथ-साथ कविता शिक्षण के लिए उपलब्ध समय का भी ध्यान रखना आवश्यक होता है। कविता में अनेक भाव हो सकते है आदि बच्चे उन्हें ग्रहण करने में समर्थ भी हो सकते हैं, परन्तु समयाभाव में हम उन सबकी प्राप्ति नहीं करा सकते। अतः कविता के विशिष्ट उद्देश्य निश्चित करते समय हमें उसके पढ़ाने के लिए उपलब्ध समय का भी ध्यान रखना चाहिए, परन्तु किसी भी स्थिति में हमें समय से इतना नहीं बँधना चाहिए कि कविता के मुख्य स्थलों को स्पर्श न किया जा सके। उसके लिए फिर हमें समय की ही सीमा बढ़ा देनी चाहिए।

काव्य शिक्षण के मुख्य सिद्धान्त

1. काव्य का प्रस्तुतीकरण सस्वर, मर्म स्पर्शी और भावोदीपक होना चाहिए।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर काव्यमय वातावरण बनाने के लिए कविता का उच्चारण समवेत स्वर में करवाया जाए। माध्यमिक स्तर पर वर्णात्मक व उच्च स्तर साहित्यिक काव्यांशों को पढ़ाया जाए।
3. अधिकाधिक शिक्षण और अभ्यास द्वारा बालकों की काव्यात्मक रुचि और काव्य रसास्वादन की योग्यता बढ़ाई जा सकती है।
4. अध्यापक स्वयं काव्य शिक्षण में रुचि लें, एकाग्रचित होकर सूक्ष्म सौन्दर्य पूर्ण स्थलों की यथावश्यक व्याख्या स्वयं ही करें।
5. स्तरानुसार उपयुक्त काव्यांशों का चयन किया जाए। उनकी भाषा बोधगम्य हो, वे रुचिकर व शिक्षाप्रद भी हों।
6. उच्चारण संशोधन व काठिन्य निवारण पर बहुत अधिक बल न देकर भाव, कल्पना एवं विचार सौन्दर्य पर ही बल देना चाहिए। व्याकरण सम्बन्धी अधिक व्याख्या करके सौन्दर्य में उसे बाधक न बनाया जाए।
7. समान भाव की कविता द्वारा उपयुक्त व्याख्या, विचार विनिमय, समालोचना आदि करवाई जाए।
8. शिक्षक का प्रधान कार्य है कि जो कवि ने अनुभव किया है उन भावों को छात्रों के अन्तःकरण में स्फुरित किया जाए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता शिक्षण की विधियाँ

हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं के शिक्षण में से काव्य शिक्षण करने हेतु विशिष्ट कला की आवश्यकता होती है क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को रसानुभूति तथा सौन्दर्यानुभूति करवाना होता है जबकि आज छात्र विभिन्न कविताओं या काव्यांशों के अर्थ रटकर परीक्षा पास करने का प्रयत्न करते हैं। काव्य शिक्षण अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सके इसके लिए आवश्यक है कि छात्रों को कक्षा में काव्यमय वातावरण प्रदान किया जाए। तत्पश्चात् उन्हें काव्य की गहन भावधारा से जोड़ने के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग करना चाहिए। इनका चयन कक्षा के स्तर व विषय वस्तु को देखकर किया जाना आवश्यक है। यहां कार्य शिक्षण की विभिन्न विधियों का वर्णन किया जा रहा है—

(1) गीत विधि
(2) अभिनय विधि
(3) अर्थबोध विधि
(4) व्याख्या विधि
(5) व्यास विधि
(6) तुलना विधि
(7) समीक्षा विधि
(8) विश्लेषण विधि

1. गीत विधि (Singing Method) – कविता शिक्षण की इस विधि में सर्वप्रथम अध्यापक ताल, लय एवं स्वर के साथ स्वयं बालगीत का पठन करता है। इसके बाद बच्चों को अध्यापक का अनुकरण करने के लिए कहा जाता है। छात्र और अध्यापक मिल कर हाथ से ताल देते हुए बालगीत को लय के अनुसार गाते हैं।

यह विधि प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को कविता सिखाने के लिए बहुत उपयोगी होती है। बच्चों को संगीत बहुत प्रिय होता है। उन्हें गीत गाने में बहुत आनन्द आता है। अतः इस विधि से सिखाई गई कविता उन्हें आसानी से याद हो जाती है। शैशवावस्था में बच्चे जिन बालगीतों को खेल-खेल में गाते हैं, उनकी बच्चों के हृदय पर अमिट छाप पड़ती है। गीत गाने से बच्चों के हृदय झंकृत होते हैं और उनका भावात्मक विकास उचित रूप से होता है।

इस विधि का पूरा लाभ उठाने के लिए अध्यापक को बालगीतों का चुनाव अति सावधानी से करना चाहिए। ये बालगीत सरल तुकबन्दियाँ होते हैं। वाक्य छोटे-छोटे और सरल भाषा में होते हैं। इस कविता में वर्णित बातें बच्चों के जीवन, वातावरण एवं अनुभव की परिधि के भीतर की होती है। ये मनोरंजक हों एवं इनमें गेयता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए निम्न कविता ली जा सकती है :

"सड़क बनी है लम्बी चौड़ी
इस पर जाती मोटर दौड़ी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सब बच्चे पटरी पर आओ,
बीच सड़क पर कभी न जाओ,
जाओगे तो दब जाओगे,
चोट लगेगी पछताओगे।"

(2) अभिनय विधि (Dramatisation Method)—बाल गीतों में कुछ गीत अभिनय प्रधान होते हैं, उन्हें अभिनय प्रणाली से ही पढ़ाया जाना चाहिए। कुछ गीत संगीत प्रधान होते हुए भी अभिनय के लिए क्षेत्र रखते हैं। ऐसे गीतों को गीत एवं अभिनय प्रणाली के योग से पढ़ाया जाता है। यह विधि गीत-विधि का ही विकसित रूप है। इस विधि में पहले अध्यापक कविता का सस्वर पठन करते हुए अंग-संचालन करते हैं और बच्चे उन्हें ध्यान से सुनते व देखते हैं। तदुपरान्त अध्यापक का अनुकरण करते हुए छात्र बाल गीत को गाते हैं और उसी तरह अभिनय करते हैं।

इस विधि का प्रयोग व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों रूपों में किया जा सकता है। जैसे निम्न कविता को सामूहिक सामिन्य द्वारा पढ़ाया जा सकता है।

लाठी लेकर भालू आया,
छम छम छम, छम छम छम
ढोल बजाता मेंढ़क आया,
ढम ढम ढम, ढम ढम ढम।

अभिनय द्वारा बालकों को बड़ी-बड़ी कविताओं की भावानुभूति कराई जा सकती है। गुप्तजी की कविता यशोधरा व राहुल के संवाद में एक बालक को यशोधरा व दूसरे को राहुल बना दिया जाए। तत्पश्चात् दोनों अपना-अपना अभिनय करें। यथा :

राहुल— "माँ, कह एक कहानी"।
यशोधरा—"समझ लिया क्या बेटा तूने,
मुझको अपनी नानी"।

इस कवितांश का अर्थ बिना बताए ही बालक समझ लेंगे कि माँ-पुत्र में वार्ता हो रही है और बालक कहानी सुनने के लिए हठ कर रहा है।

इस विधि से कविता की शिक्षा देने से बच्चों की कविता में रुचि विकसित होती है, उन्हें कविता आसानी से कण्ठस्थ हो जाती है, उसके गायन व अभिनय की स्वाभाविक रुचि सन्तुष्ट होती है, कक्षा में जीवन बना रहता है और बच्चे सक्रिय रहते हैं। इस विधि के सफल प्रयोग के लिए यह ज़रूरी है कि बाल गीतों का चुनाव सावधानीपूर्वक हो, इसका प्रयोग केवल छोटी कक्षाओं तक सीमित रहे और इस बात का ध्यान रखा जाए कि बच्चे अनावश्यक अंग संचालन न करें।

(3) शब्दार्थ कथन विधि या अर्थ-बोध प्रणाली (Meaning Explanation Method)—आज की प्रचलित विधि यही है। आज अध्यापक कक्षा में जाते हैं और केवल कविता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अर्थ बताकर अपने कर्त्तव्य की पूर्ति समझ लेते हैं। परन्तु सत्य तो यह है कि यह विधि कविता शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति नहीं करती है। क्या इतनी सुन्दर निम्न कविता का केवल चार पंक्तियों में शब्दार्थ अथवा भावार्थ बता देना-कविता के प्रति अन्याय नहीं है।

"मैं नीर भरी दुख की बदली
मैं क्षितिज-मृकुटि पर घिर धमिल चिंता का भार"

इसीलिए तो दुखित होकर श्री सीताराम चतुर्वेदी कहते हैं कि इस तरह के शिक्षक कविता का गला घोंट-घोंट कर, सांसत दे देकर उसकी हत्या करते हैं।

3. व्याख्या विधि (Method of Explanation) – व्याख्या विधि में अध्यापक अर्थ के साथ-साथ प्रासंगिक कथाओं की भी चर्चा करता हैं, छन्द, रस, और अलंकारों का स्पष्टीकरण करता है और कराता है उसमें दार्शनिक मत का स्पष्टीकरण। इस प्रकार इस प्रणाली द्वारा शिक्षक छात्रों और कवि के बीच रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न करता है। इसमें कवि का दार्शनिक मन्तव्य, उद्देश्य, उसके भावपक्ष, कलापक्ष आदि की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए व्यापक अर्थ करने की चेष्टा की जाती है। व्यापक अनुभूति के अभाव में कविता की रसानुभूति सम्भव न हो सकेगी। एक उदाहरण में अर्थ-बोध व व्याख्या प्रणाली का अन्तर स्पष्ट हो जाएगा–

"करम गति टारे नाहीं टरै।

प्रस्तुत पद को अर्थ-बोध प्रणाली से पढ़ाते हुए कि अध्यापक को केवल इतना ही बताना होता है कि कबीरदास जी कहते हैं कि भाग्य की गति को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। किन्तु व्याख्या विधि में अध्यापक हरिश्चन्द्र, रावण, राम-सीता आदि की विपत्तियाँ इससे जुड़ी अर्न्तकथाएं हैं। मुनि वशिष्ठ ने सोच-समझ कर मुहूर्त निकाला था, फिर भी राम-वनगमन हुआ, दशरथ की मृत्यु आदि, सीता हरण हुआ इत्यादि। इन सभी अर्न्तकथाओं को विस्तृत रूप से बताना होगा तथा बालकों के समक्ष "करम गति टारे नाहिं टरै" वाक्य की सत्यता को स्पष्टतः सिद्ध करना होगा।

कविता पढ़ाने में इस विधि का प्रयोग ऊँची कक्षाओं में ही करना चाहिए। पर व्याख्या करते समय शिक्षक की छात्रों की शक्ति, रुचि और बौद्धिक विकास एवं ग्रहण करने की क्षमता को सदैव ध्यान में रखना चाहिए। यदि यह व्याख्या अध्यापक स्वयं न करके छात्रों की सहायता से करे तो उत्तम रहेगा।

5. खण्डान्वय-विधि (Part or Factor Method) – इस विधि में अध्यापक स्वयं या छात्रों से कविता का सस्वर पाठ करवाता है। तत्पश्चात् सम्पूर्ण कविता को छोटे-छोटे क्रमिक खण्डों में कर लिया जाता है। हर खण्ड पर कुछ प्रश्नों का निर्माण किया जाता है। अध्यापक इन अंशों से सम्बन्धित प्रश्न छात्रों से पूछता है और छात्र उन प्रश्नों का उत्तर देते हैं। इन उत्तरों के माध्यम से अध्यापक कविता के भावों को स्पष्ट कर देता है। छात्रों के द्वारा अपेक्षित उत्तर न मिलने पर अध्यापक स्वयं कविता के अर्थ को स्पष्ट कर देता हैं।

उदाहरणार्थ–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

गगन हो प्रकाशित, धरा जगमगाए।
अभा की अँधेरी कहाँ तक सहोगे ?
निराशा भँवर में कहाँ रहोगे ?
टटोलोगे कब तक भुलावे की राहें ?
व्यथा की कथा आज किससे कहोगे ?
अगर चल सको तो चलो चाल ऐसे—
कि विध्वंस का भी हृदय कांप जाए।
अगर जल सको तो जलो दीप ऐसे—
गगन हो प्रकाशित, धरा जगमगाए।"

यह काव्यांश पढ़ाने के लिए निम्न प्रकार से प्रश्नों का निर्माण किया जा सकता है—

1. इस कविता में कवि मानव के सम्मुख किस आदर्श को प्रस्तुत करता है ?
2. दीपक का कार्य क्यों सराहनीय है ?
3. मानव रूपी दीप को कवि क्या प्रेरणा देता है ?
4. अमास्या की रात्रि की किस विशेपता की ओर कवि ने संकेत किया है ?
5. भँवर की क्या विशेपता होती है ?
6. निराशा-भँवर में पड़े मनुष्य को देखकर कवि क्या प्रश्न करता है ?
7. भुलावे की राहों में समस्त विश्व को भटकते देख कवि उसे क्या कह कई संके करता है ?
8. अपनी दुखभरी कथा मनुष्य किसकों सुनाना चाहता हैं ?
9. कवि मानव की चाल में क्या विशेपता देखने का आकांक्षी है ?

आवश्यकता पड़ने पर अध्यापक अपने कथन के द्वारा काव्यांश के भाव को स्पष्ट क सकता है।

यह प्रणाली मनोवैज्ञानिक मानी जाती है। इसमें 'पूर्ण से अंश एवं सरल से कठिन क ओर' शिक्षण सूत्रों का पालन किया जाता है। प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता-शिक्षण होने के कारण छात्रों को अधिक से अधिक रोचक बनाया जा सकता है।

6. व्यास-विधि (Detailed Discussion Method) — यह व्याख्या प्रणाली का ही विस्तृ रूप है। इसका नामकरण कथावाचक व्यासों की दृष्टि में रखकर किया गया है। यदि आ कभी कथावाचकों को कथा कहते सुना है तो आपकी उनकी शैली से परिचय हो गया होगा कथावाचक अर्थ और भाव को स्पष्ट करने के लिए भाषा और शैली का विशद विश्लेषण क हैं। भाव हृदयंगम करने के लिए प्रसंगानुसार अनेक अन्तर्कथाओं का विवरण प्रस्तुत करते हैं उदाहरणों एवं दृष्टान्तों से वे व्याख्या में जीवन डाल देते है। कवि के दार्शनिक सिद्धान्तों स्पष्टीकरण भी बड़े जोर से करते हैं। अध्यापक द्वारा भी इसी प्रकार प्रवचन तथा उद्धरणों संयोजन द्वारा काव्य की समुचित व्याख्या प्रस्तुत की जाती है और इस व्याख्या में का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025 Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाव, रस, भाषा व सभी अंगों को तो महत्त्व देता ही है साथ ही कविता के एक-एक शब्द के विशिष्ट भाव विस्तृतः समझाता है। उसी प्रकार के भाव पाठक में उद्भूत करता है।

यह विधि केवल उच्च कक्षाओं में कविता-शिक्षण के लिए उपयोगी मानी जाती है। इसके लिए अध्यापक को कविता सम्बन्धी सभी तत्त्वों की विस्तृत जानकारी होना आवश्यक है। इसमें अध्यापक को अधिक सक्रिय रहना पड़ता है, छात्र निष्क्रय हो जाते हैं। अतः इसके सफल प्रयोग के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक कविता पढ़ाते समय बीच-बीच में छात्रों का सक्रिय सहयोग लेता रहे। अध्यापक इस बात का भी ध्यान रखे कि कविता-शिक्षण रोचक होने के स्थान पर कहीं दुरूह न हो जाए। अर्न्तकथाओं, उदाहरणों, दृष्टान्तों आदि का प्रयोग छात्रों को कविता के भाव उदयंगम कराने के लिए किया जा रहा है, कविता को नीरस बनाने के लिए नहीं। एक निश्चित परिधि मे रहकर इस विधि का प्रयोग माध्यमिक कक्षाओं में भी किया जा सकता है।

7. तुलना विधि (Comparative Method)—इस विधि में अध्यापक पढ़ाई जाने वाली कविता की तुलना उसी भाषा की अथवा अन्य भाषाओं की समानार्थक, विपरितार्थक कविताओं के साथ करता हुआ पाठ्य कविता का स्पष्टीकरण करता है। तुलना में समानता और असमानता दोनों ही पक्षों पर प्रकाश डाला जाता है।

मनुष्य का स्वभाव है कि वह दो वस्तुओं की समानता और असमानता को जानने की बलवती इच्छा रखता है, इस दृष्टि से यह प्रणाली अपनानी लाभकर होती है। लेकिन इस प्रणाली का अनुसरण वही अध्यापक कर सकता है जिसने विस्तृत अध्ययन किया हो, जिसे समान भाषा, भाव एवं शैली की तत्सम्बन्धी अनेक पद्य रचनाएँ कण्ठस्थ हों, और जिसका दृष्टिकोण निर्पेक्ष हो। कविता में तुलना विधि का प्रयोग चार विधियों से किया जा सकता है। यथा—

1. समभाषा कवि तुलना प्रणाली—जहां हिन्दी भाषा के अन्य काव्यों की रचनाओं की समानान्तर कविताओं को प्रस्तुत किया जाए।

2. भिन्न भाषा कवि तुलना विधि—इस प्रणाली में विभिन्न भाषाओं के कवियों की कविताएँ समानान्तर रूप से प्रस्तुत की जाती है।

3. भाव तुलना प्रणाली—एक ही भाव को लेकर लिखी गई विभिन्न भाषाओं के कवियों की रचनाओं को प्रस्तुत करना; जैसे—

"साई इतना दीजिए, जायें कुटु समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधू न भूखा जाए"।—कबीर
'O God grant me my daily bread

4. एक ही कवि की एक भाव वाली विभिन्न कविताओं की समता—कभी-कभी एक ही कवि एक ही प्रसंग को लेकर अपने काव्यों में से विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत करता है।

तुलना विधि के द्वारा एक ही प्रसंग के अभिनव रूप का दर्शन छात्रों को कराया जा सकता है। तुलनात्मक काव्य-शिक्षण से काव्य के व्यापक अध्ययन की ओर स्वयमेव छात्रों का ध्यान जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

इस विधि का प्रयोग प्राथमिक स्तर पर नहीं किया जाता है। इसका प्रयोग माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर करना चाहिए। इस विधि का प्रयोग करने के लिए अध्यापक को साहित्य का विस्तृत ज्ञान होना आवश्यक है। अर्थ में समानता रखने वाली विभिन्न कविताओं की जानकारी आवश्यक है। कविता के तत्त्वों का भी विस्तृत ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि तुलना करते समय दोनों कविताओं के भाषा एवं भाव सम्बन्धी सभी समान एवं असमान तत्त्वों की व्याख्या करनी पड़ती है।

छात्रों को विस्तृत ज्ञान होने की दृष्टि से यह विधि उपयोगी है। परन्तु इसका प्रयोग करते समय चात्रों के आयु-स्तर, योग्यता एवं भाषा सम्बन्धी ज्ञान को ध्यान में रखना आवश्यक है। अध्यापक को पाठ्य कविता की तुलना उस समानार्थक कविता से करनी चाहिए जिसका उसे प्रयाप्त ज्ञान हो। अध्यापक को दोनों कविताओं की समानताओं एवं असमानताओं का निष्पक्ष विवेचन करना चाहिए। साथ ही तुलना करते समय अध्यापक को विषय से भटकना नहीं चाहिए।

8. समीक्षा विधि (Critical Analysis Method) – इस विधि की अपनी विशिष्ट विशेषता यह है कि अधिक से अधिक अध्ययन का भार छात्रों पर रहता है। अध्यापक केवल पुस्तकों की एक वृहद् सूची व समीक्षा के सिद्धान्त बता देते है। कभी-कभी कक्षा में भी किसी विशेष कवि के प्रति छात्रों के निजीमत जानने के लिए या यह ज्ञात करने के लिए कि छात्रों ने यथार्थतः अध्ययन किया है, शिक्षक प्रश्नोत्तर या तुलना प्रणाली से भी समीक्षा करा सकता है।

इसमें काव्य की तीन प्रकार से समीक्षा की जाती है—

1. भाषा की समीक्षा-यह देखना कि प्रस्तुत कवि की काव्य-भाषा अपने में किन विशेषताओं को समाहित किए हैं तथा अन्य कवियों की तुलना में कैसी है ?
2. काव्यगत भाव की समीक्षा।
3. उन सब प्रभावों का अध्ययन, जिनसे कवि की रचना करने में प्रेरणा या सहायता मिली हो।

यह विधि ऊँची कक्षाओं में ही प्रयोग की जा सकती हैं। जबकि छात्रों का मानसिक विकास हो चुका होता है और उन्हें समीक्षण के सिद्धान्त समझने और उस कसौटी पर काव्य रचनाओं को कसने की शक्ति आ जाती है।

9. विश्लेषण या प्रश्नोत्तर विधि (Analysis or Question Answer Method) – इस विधि में प्रश्नों द्वारा पहले कविता का विश्लेषण किया जाता है, फिर खण्ड-खण्ड को जोड़कर सम्पूर्ण कविता का भाव स्पष्ट किया जाता है।

जहां भावों की जटिलता होती है, वहां प्रश्नोत्तर विधि सहायक सिद्ध होती है। कुछ शिक्षा विशारदों का कहना है कि कविता एक पूर्ण अभिव्यक्ति होती है, अतः उसके खण्ड करना उचित नहीं होता। यह सत्य है, लेकिन हम प्रायोगिक सत्य से भी दूर नहीं जा सकते। कविता-शिक्षण किसी गूढ़ भाव को प्रश्नों द्वारा स्पष्ट नहीं किया जाएगा तो फिर किस प्रणाली का अनुसरण करना होगा ? हाँ कविता की पूर्णता का हमें सदैव ध्यान रखना चाहिए, बीच-बीच में सम्पूर्ण कविता का पठन इस ओर सहायक सिद्ध होता है। ऐसा करने से कक्षा में काव्यमय वातावरण भी बना रहता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब प्रश्न उठता है कि—उपयुक्त शिक्षा विधियों में से भाषा का शिक्षक किस विशेष विधि को अपना सकता है।

आजकल प्रायः कक्षा में व्याख्या विधि का ही प्रयोग किया जाता है। शिक्षक अर्न्तकथा व कवि की जीवन-घटनाओं का सम्वल लेते हुए काव्यांश की व्याख्या करता है। खन्डान्वय विधि द्वारा शिक्षक छात्रों को प्रश्नोत्तर द्वारा ही समझाते है। साथ ही बीच-बीच में प्रवचन व उद्धरण देते हुए व्याख्या भी की जाती है। तुलनात्मक विधि का प्रयोग हम अपनी पाठ-योजना में व्याख्या तथा सौन्दर्यानुभूति के पश्चात् के समय आत्मीकरण करते है। उद्देश्य-प्रथमतः प्रस्तुत कविता को पूर्ण-रूपेण आत्मसात् कराना है, तदनुसार तुलना के द्वारा उसे और भी अधिक ग्रहणीय बना देता है। इसलिए कवितांश से साम्य रखता हुआ अथवा विरोधी, उसी कवि, या अन्य कवि की रनचा का अंश लेकर आत्मीकरण कराते हैं।

व्यास व समीक्षा प्रणाली तो केवल उच्च कक्षाओं के लिए ही उपयुक्त हैं। कविता-शिक्षण करते समय अध्यापक को कविता के उद्देश्यों को सम्मुख रखना चाहिए और शिक्षण कार्य को प्रभावशाली बनाते हुए इन उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

हिन्दी-शिक्षण में प्रयुक्त सोपान
(VARIOUS STEPS INVOLVED IN TEACHING OF POETRY)

हिन्दी भाषा की शिक्षा में कविता-शिक्षा में कविता-शिक्षण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी-भाषा में पद्य-साहित्य की अनुपम विधि-सुरक्षित है। उसका समुचित परिचय कराये बिना तथा छात्रों को सैन्दर्यानुभूति के रसास्वादन की ओर अग्रसर किये बिना हिन्दी-शिक्षण पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता। हिन्दी के पाठ्यक्रम में कविताओं को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। कविता-शिक्षण का उद्देश्य भी कविताओं को हिन्दी शिक्षण में महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है। कविताओं के अध्ययन से ही छात्रों में सौन्दर्यानुभूति का विकास होता है। उनके मनोभावों का उदान्तीकरण होता है। उन के लिए आनन्द का मार्ग प्रशस्त होता है और उन्हें मानवीय संवेदनाओं का व्यापक परिचय मिलता है।

कविता शिक्षण के बारे में हैडो ने कहा है—

"यदि हम अपने छात्रों में सैन्दर्यानुभूति विकसित कर सकें, ताकि हमें छोड़ने के पश्चात् वे सभी वस्तुओं में ध्वनि एवं दृश्य, विचार एवं कार्य-सौन्दर्य की ओर स्वाभाविक रूप से उन्मुख हों, तो हम शिक्षा के एक उच्चतम उद्देश्य को प्राप्त कर सकेंगे"।

हैडों के इस कथन से स्पष्ट है कि कविता-शिक्षण में शिक्षा के उच्चतम उद्देश्य निहित है, परन्तु इन उद्देश्यों की प्राप्ति तबी सम्भव हो सकती है जब कविता-शिक्षण प्रभावशाली तथा छात्रों में सौन्दर्यानुभूति विकसित करने में सहायक हो। कविता शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए निम्नलिखित सोपानों का पालन करना चाहिए।

1. प्रस्तावना (Introduction)
2. प्रस्तुतीकरण (Presentation)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

3. भाव-विश्लेषण एवं समीक्षा (Appreciation)
4. भाव ग्रहण एवं अर्थ बोध परीक्षण (Evaluation of Aesthetic Appreciation)
5. रचनात्मक कार्य (Constructional Work)

(1) प्रस्तावना—यह कविता-शिक्षण का प्रथम सोपान है। प्रस्तावना के द्वारा बालक अपने अर्जित ज्ञान की निम्न भूमि से प्रस्तुत पाठ की उच्च भूमि तक पहुँचाए जाते है। छात्रों के अर्जित ज्ञान के साथ नवीन ज्ञान को जोड़ा जाता है और नए पाठ की ओर आकर्षित किया जाता है। अतः प्रस्तावना रोचक, सरल, प्रेरक, आकर्षिक एवं अनुकूल होनी चाहिए। प्रस्तावना द्वारा ही कविता शिक्षण के अनुरूप वातावरण का निर्माण किया जाता है यह अनेक प्रकार से की जा सकती है। अध्यापक को छात्रों के स्तर तथा पाठ्य कविता के भाव के अनुसार किसी भी उचित ढंग का चुनाव कर लेना चाहिए। यह प्रस्तावना निम्नलिखित प्रकार से की जा सकती है।

(क) कवि-परिचय द्वारा—इस विधि में कवि का जीवनकृत बता दिया जाता है और साथ ही उस परिस्थिति का उल्लेख भी कर दिया जाता है जिनसे कवि को यथा कविता लिखने की प्रेरणा मिली। यह विधि निम्न कक्षाओं की जगह उच्च व माध्यमिक कक्षाओं के लिए उपयुक्त है।

(ख) शब्दार्थ कथन प्रणाली द्वारा—इस विधि में कविता पढ़ाने से पूर्व ही कविता में आए हुए कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर उनकी व्याख्या कर दी जाती है। इस विधि का प्रयोग बहुत कम करना चाहिए। यदि कठिन शब्द हो भी तो वे आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन के बाद ही बताने चाहिए।

(ग) पूर्व सूचना देकर—इसमें अध्यापक कविता पढ़ाने से पहले यह सूचित कर देता है कि आज हम इस विषय की कविता पढ़ाएंगे, इसमें अमुख रस तथा अलंकारो का अच्छा निर्वाह हुआ है, आदि-आदि।

इस प्रकार प्रस्तावना करने के बाद बच्चों को कविता में आनन्द नहीं आता, इसलिए यह भी कम प्रयोग करनी चाहिए।

(घ) सारांश कथन द्वारा—इस विधि में कविता का सारांश प्रसंग सहित बता दिया जाता है। कुछ कविताओं में इस प्रणाली का प्रयोग करना आवश्यक होता ह। कुछ कविताएं ऐसी होती हैं। जिनके पढ़ाने से पहले यदि कुछ न कहा जाए तो उनका समझ में आना कठिन होता है।

(ङ) कविता के अनुकूल वातावरण का निर्माण करके—यदि ऐसी कविता पढ़ानी है जिसमें पर्वतों की विशालता, झरनों की झंकार और बादलों की गड़गड़ाहट आदि का वर्णन है तो अध्यापक कुछ प्रश्नों द्वारा बच्चों को प्रसंग की ओर ले आ सकता है।

(च) सामान्तर कविता के पाठ द्वारा—कविता शिक्षण में प्रस्तावना समान भाव की अन्य कविता की पंक्तियों से भी की जाती है। ये समाज भाव की पंक्तियां बहुत सरल होनी चाहिए फिर उन पंक्तियों पर कुछ प्रश्न कर अध्यापक को उद्देश्य कथन कर देना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(छ) उसी कविता के पाठ द्वारा—आज अधिकतर शिक्षा विशारद इस बात को मानते हैं कि कविता में बच्चों की स्वाभाविक रुचि होती है इसलिए कविताओं की प्रस्तावना माल उनके सस्वर पठन से हो सकती है, अलग से प्रस्तावना करने की आवश्यकता नहीं। यदि प्रस्तावना उसी कविता से की जाए तो यह आवश्यक है कि कविता का सस्वर पठन करने के बाद उसके केन्द्रीय भाव पर एक दो प्रश्न किए जाएँ।

प्रस्तावना किसी भी ढंग से की जाए, यह संक्षिप्त एवं प्रेरक होनी चाहिए।

उद्देश्य कथन—प्रस्तावना में छात्रों को मूल कविता की तरफ आकर्षित करने के लिए प्रश्न आदि के बाद अध्यापक को अपने उद्देश्य की घोषणा करनी होती है। उद्देश्य-कथन के बिना प्रस्तावना पूरी नहीं होती है। कविता शिक्षण में उद्देश्य कथन बड़े उत्साह के साथ, रोचक ढंग से करना चाहिए।

प्रस्तुतीकरण—कविता-शिक्षण का मूल भाग प्रस्तुतीकरण है। इस सोपान के अर्न्तगत ही कविता की भावानुभूति एवं रसानुभूति कराई जाती है। इसमें अध्यापक को सबसे पहले आदर्श पठन करना होता है, उसके बाद छात्रों द्वारा अनुकरण पठन, फिर शब्दार्थ-कथन, भाव व्याख्या, भाव-विश्लेषण एवं सौन्दर्यानुभूति करानी चाहिए।

कविता अपने में पूर्व इकाई होती है अतः कविता को एक ही इकाई में पढ़ाया जाए। यदि कहीं विवशता हो तो उसके ऐसे जीवित खण्ड करने चाहिए जो अपने में पूर्ण हो। दोहे, सवैये, कवित्त आदि अपने में पूर्ण होते हैं, इसलिए उन्हें अलग-अलग ही पढ़ाना चाहिए।

(अ) आदर्श पठन—कविता-शिक्षण का महत्त्वपूर्ण पक्ष आदर्श-पठन है। कविता शिक्षण में सस्वर पठन का सबसे अधिक महत्त्व है। कुछ विद्वानों के मतानुसार अच्छे पठन से कविता का पूरा भाव समझ में आ जाता है। अतः अध्यापक को अपने वाचन को प्रभावशाली बनाने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :

(1) पढ़ाई जाने वाली कविता को पहले कई बार पढ़ लेना चाहिए।

(2) कविता का वाचन भावानुकूल होना चाहिए।

(3) कविता उचितलय, हाव-भाव एवं आरोह-अवरोह के साथ-साथ पढ़नी चाहिए।

(4) कविता-पाठ करते समय उचित एवं स्वाभाविक अंग-संचालन भी करना चाहिए।

(5) वाचन करते समय पुस्तक पकड़ने का ढंग, खड़े होने का ढग आदि भी आकर्षक एवं प्रभावशाली होना चाहिए।

(6) भावानुसार राग में पठन करना चाहिए।

वैसे तो अध्यापक को एक बार ही वाचन करना चाहिए, यदि आवश्यकता हो तो अध्यापक को दूसरी बार भी वाचन करना चाहिए।

(ब) अनुकरण पठन—छात्रों से कविता का अनुकरण पाठ अध्यापक के आदर्श वाचन के पश्चात करवाया जाता है। कविता का अनुकरण पठन पहले मधुर कण्ठ वाले छात्रों द्वारा कराना चाहिए। यदि छात्र पढ़नो में उच्चारण की मूल करे तो उसे पढ़ते समय न टोक कर,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाद में आदर्श पठन द्वारा ठीक करना चाहिए। पठन की अन्य कमियों को भी आदर्श पठन द्वारा ही दूर करना चाहिए। अनुकरण पठन दो प्रकार का होगा-व्यक्तिगत और समवेत।

1. व्यक्तिगत पाठ—एक-एक छात्र उठे और अध्यापक का अनुकरण करता हुआ सस्वर वाचन करे। जहां वह अशुद्ध बोले, किसी वर्ण का उच्चारण अस्पष्ट कई, यदि, वह बल विराम आदि के अनुसार बोलने में भूल करे वहां शेष छात्र उसकी आलोचना करें, दोष निकालें और स्वयं उसे पढ़ कर सुनाएं। ऐसा करने में अध्यापक उनकी सहायता करें।

2. सामूहिक पाठ—व्यक्तिगत वाचन के अतिरिक्त सारी कक्षा सम्मिलित रूप में एक वाचन कर सकती है। इससे यह लाभ है कि सारी कक्षा में एक साथ संगीत ध्वनि उत्पन्न होती है जिनसे बच्चे बहुत आनन्द प्राप्त करते हैं। यह काम छोटी कक्षाओं में श्रेयस्कर है। माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं में न ही।

3. शब्दार्थ कथन—छात्रों द्वारा कविता का अनुकरण पठन किए जाने के बाद अध्यापक को कठिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना चाहिए। अर्थ के लिए केवल उन्हीं शब्दों को चुनना चाहिए जो कठिन हो, जो भाव एवं सौन्दर्य को निखारते हो। प्रतीकात्मक या लाक्षणिक शब्दों का अर्थ भी संक्षिप्त रूप से बता देना चाहिए।

भाव-विश्लेषण एवं सौन्दर्यानुभूति—कविता श्रव्य-काव्य है, यह आनन्दानुभूति का विषय है। यदि कविता-शिक्षण से छात्रों को आनन्द की अनुभूति होती है तो उसे सफल मानना चाहिए। आनन्दानुभूति के लिए अर्थानुभूति के अभाव में कविता के संगीत-पक्ष का आनन्द तो लिया जा सकता है परन्तु उसकी आत्मा का नहीं। अतः कविता-पठन एवं विश्लेषणात्मक प्रश्नों की सहायता से बच्चों को कवि के भावों की अनुभूति करानी चाहिए और उसके लिए प्रतीकात्मक, लाक्षणिक, ध्वन्यात्मक शब्द योजना का विश्लेषण भी करना चाहिए। कविता में यदि कोई धार्मिक या पौराणिक प्रसंग हो तो रोचक ढंग से उसका संक्षिप्त वर्णन भी करना चाहिए।

शब्दार्थ कथन एवं भाव-विश्लेषण के साथ-साथ बच्चों को कविता के सौन्दर्य पक्ष की अनुभूति करानी चाहिए। वैसे सौन्दर्यनुभूति का सबसे उत्तम साधन सस्वर पठन ही होता है। कविता का आनन्द तो तभी लिया जा सकता है, जब उसके भावों की अनुभूति करा दी जाए। भावाभिव्यक्ति का ढंग ही कविता के सौन्दर्य तत्त्व होते हैं। इसके लिए काव्य के निम्न सौन्दर्य तत्त्वों का विश्लेषण करना चाहिए।

(1) ध्वनि सौन्दर्य

(2) शैली सैन्दर्य

(3) कल्पना सौन्दर्य

(4) भाव सौन्दर्य

(5) विचार सौन्दर्य

यहां हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि प्राथमिक कक्षाओं में केवल भाव-सौन्दर्य को ही स्पष्ट किया जाए। इसके लिए सर्वोत्तम ससाधन सस्वर वाचन है। निम्न माध्यमिक कक्षाओं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
में प्रश्नोत्तर की सहायता से अर्थानुभूति एवं भावानुभूति करानी चाहिए। माध्यमिक कक्षाओं में उपर्युक्त वर्णित सभी प्रकार के सौन्दर्य की अनुभूति कराने का प्रयास करना चाहिए। परन्तु यह अनुभूति सरल होनी चाहिए। काव्य तत्त्वों के शास्त्रीय ज्ञान के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। हाँ, उच्च कक्षाओं में कविता के सौन्दर्य की अनुभूति कराने के लिए ध्वनि सौन्दर्य, शैली-सौन्दर्य, कल्पना सौन्दर्य एवं विचार-सौन्दर्य की अनुभूति कराने के लिए उनसे सम्बन्धित शास्त्रीय नाम आदि का ज्ञान भी कराना चाहिए। इतना ध्यान अवश्य रखा जाए कि इन काव्य-तत्त्वों का उतना ही स्पष्टीकरण किया जाए जितना कि पाठ्य कविता के सौन्दर्य की अनुभूति के लिए आवश्यक है।

भाव-विश्लेषण एवं सौन्दर्यानुभूति के लिए अध्यापक को पाठ्य कविता की समभावी किसी अन्य कविता का पठन भी कराना चाहिए। इससे बच्चे एक ही भाव को विविध रूप में देखकर कविता की ओर आकर्षित होते हैं और कक्षा में काव्यात्मक वातावरण बना रहता है।

(द) **द्वितीय आदर्श वाचन**—कविता के अर्थ एवं भाव का विश्लेषण करने के पश्चात् कविता का रसास्वादन कराने के लिए पुनः सस्वर पठन करना चाहिए क्योंकि अर्थ समझने के पश्चात् जब छात्र कविता का भावानुसार सस्वर पाठ सुनते हैं तब उन्हें कविता के रस की अनुभूति अपनी पूर्णता के साथ होती है।

(घ) **पुनः अनुकरण वाचन**—यह जानने के लिए कि छात्रों ने कविता के सौन्दर्य को कितना ग्रहन किया है, छात्रों से कविता का पाठ फिर से करवाना चाहिए। छात्रों का सस्वर पाठ इस बात को स्पष्ट कर देगा कि छात्रों ने कविता के भाव को कहाँ तक ग्रहन किया है।

4. अर्थग्रहण एवं सौन्दर्य बोध परीक्षण—यह जानने के लिए कि बच्चे कविता के भाव सौन्दर्य को कहाँ तक ग्रहण कर सके है। अध्यापक को कुछ प्रश्न करने चाहिए। इससे एक बहुत बड़ा लाभ यह भी होता है कि छात्र किसी कविता को समझकर अपनी भाषा में उसकी व्याख्या करने में समर्थ होते है और यह कविता शिक्षण का उद्देश्य भी है।

5. रचनात्मक कार्य—कक्षा में काव्यात्मक वातावरण को अन्त तक बनाए रखने के लिए अपने शिक्षण की समाप्ति पर अध्यापक बच्चों से कविता के मार्मिक स्थलों या कविता से सम्बन्धित भाव की अन्य कविताओं आदि को कण्ठस्थ करने के लिए प्रेरित कर सकता है। वास्तविक अर्थों में काव्य जीवन है। अध्यापक को चाहिए कि वह कविता के माध्यम से ऐसा वातावरण उपस्थित करें कि बच्चे स्वयं उत्सुक हो जाएं—कविता को कण्ठस्थ करने के लिए।

इस रचनात्मक कार्य के अन्तर्गत उस कविता से सम्बन्धित अन्य कविताओं का परिचय भी दिया जा सकता है। ऊँची कक्षाओं में छात्रों को कुछ पुस्तकों के नाम भी बताए जा सकते हैं। जिनको वे पुस्तकालय से लेकर पढ़े। कवि विशेष की कविताओं के संग्रह को पढ़ने की प्रेरणा भी दी जा सकती है। यदि कविता किसी संकलन, खण्ड काव्य, प्रबन्ध काव्य आदि से ली गई हो तो मूल ग्रन्थ और यदि मूल ग्रन्थ बहुत बड़ा हो तो उसके किसी भाग को पढ़ने के लिए कहा जा सकता है। इस प्रकार इस पायदान पर छात्रों की सृजनात्मक वृत्तियों को सचेत किया जा सकता है। इस प्रकार अध्यापक को इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए काव्यमय वातावरण बनाए रखना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कविता के प्रति रूचि बढ़ाने के साधन

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(MEANS OF INCLUCATING INTEREST IN THE POETRY)

किसी भाषा के साहित्य में सबसे अधिक महत्त्व काव्य साहित्य का होता है क्योंकि इसमें सत्य का प्रतिपादन इतने रोचक ढंग से होता है कि उसका सीधा प्रभाव मनुष्य के हृदय पर पड़ता है। अतः भाषा शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों के हृदय में कविता के प्रति अक्षय प्रेम प्रदुर्भुत करें ऐसा प्रेम जो जीवन भर उनमें अक्षुब्ध रहे। इसके लिए विद्यालय में निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं :

1. कविता का प्रभावशाली पठन—पहला साधन तो प्रभावशाली पठन है। अध्यापक को कविता-पठन कला में निपुण होना चाहिए जब बच्चे उचित लय, हाव-भाव एवं आरोह-अवरोह के साथ किए गये कविता पाठ को सुनते हैं तो आनन्द से झूम उठते है। सुन्दर पठ से बच्चों काव्यमय वातावरण में विचरण करने लगते है और काव्य के प्रति उनमें अभिरूचि जागृत होती है।

2. कविताओं को कण्ठस्थ कराना—अध्यापकों को चाहिए कि वे छात्रों को कवितायें कण्ठस्थ करने के लिए प्ररित करें। बच्चे जितने रूचि के साथ कवितायें कण्ठस्थ कर सके उतना ही ठीक है। बच्चे जब कण्ठस्थ कविताओं के सहारे अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से कहने में सफल होते हैं तो उन्हें प्रसन्नता होती है और वे अधिकाधिक काव्य का अध्ययन करने और उसमें से सुन्दर और जीवनोपयोगी पंक्तियों को रटने के लिए प्रोत्साहित रहते हैं।

3. कविताओं का संग्रह कराना—बच्चों को कविताओं के कण्ठस्थ करने के साथ-साथ उनका संग्रह करने के लिए भी कहा जाए। कण्ठस्थ करना एक कला है, इसमें सभी छात्र बराबर सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। दूसरे कण्ठस्थ करने की कोई सीमा भी होती है, संग्रह तो सभी छात्र कर सकते हैं। संग्रह की यह प्रवृत्ति ही कविता के प्रति रूचि है।

4. कवि जयन्ती—विद्यालय में समय-समय पर प्रमुख कवियों की जयन्ती का आयोजन करना चाहिए। इस अवसर पर सम्वन्धित कवि के जीवन, उसकी रचनाओं एवं उसकी काव्य भावनाओं, काव्य शैली आदि पर चर्चा की जानी चाहिए।

5. कवि समादर—समय-समय पर कवियों को आमन्त्रित किया जाए और उनकी रचनाएं सुनी जाएं।

6. कवि-सम्मेलन—विद्यालय में साहित्यिक परिषद् के द्वारा कभी-कभी विभिन्न-स्तरों के कवि-सम्मेलनों का आयोजन कर मूल कवियों के मुख्य से उनकी कविताएँ छात्रों को सुनवाकर, कविता के प्रति उनकी रूचि वढ़ाई जा सकती है।

7. कवि गोष्ठी—कभी-कभी विद्यालय में कविगोष्ठी का आयोजन भी कराना चाहिए। इसमें छात्र कवि साहित्यिक विशेषताओं पर विचार-विमर्श करते हैं और स्वरचित कविताएँ भी सुनाते हैं।

8. समस्या पूर्ति—यह सत्य है कि कविता स्वयं की प्रेरणा से लिखी जाती है। लेकिन प्रारम्भ में प्रेरणा का स्रोत आवश्यक होता है। छात्रों को किसी समस्या की पूर्ति करने के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रोत्साहित न किया जा सकता है। प्रतिभाशाली छात्र इस प्रकार कविता लिखने के लिए उत्सुक होते हैं और कविता में उनकी रूचि बढ़ती है।

9. कविन्दरबार—विद्यालयों में कवि-दरबार करने चाहिए। इसमें छात्र किसी युग विशेष के कवियों की वेशभूषा में सज्जित होकर भाव भंगिमा और अभिनय के साथ उनकी रचनाओं को पढ़कर सुनाते हैं। अतीत को वर्तमान में उपस्थित करने का यह सरल उपाय है। इस साधन से बच्चे उस युग विशेष के कवियों की रचनाएँ पढ़ने के लिए उत्सुक हो जाते हैं। काव्य में जितना जीवन है, इसका उन्हें आभास होता है और वे कविता के प्रति सक्रिय हो जाते हैं।

10. विभिन्न उत्सवों पर कविता पाठ—विद्यालय में अनेक उत्सव मनाए जाते हैं। अध्यापकों को इन अवसरों पर बच्चों से कविता सस्वर पठन कराना चाहिए।

11. सुभाषित प्रतियोगिता—उसमें छात्र प्रसिद्ध कवियों की सुन्दर कविताओं को अभिनयपूर्वक सुनाते हैं। इस तरह की प्रतियोगितायें सत्र में चार-पाँच की जा सकती हैं।

12. निश्चित विषय पर कविता पठन—छात्रों को एक निश्चित विषय दे दिया जाता है, जैसे—बालकृष्ठा, भगवान राम, वर्षा ऋतु, बसन्त आदि और यथा विषय पर किसी कवि की सुन्दर रचना ढूंढ कर याद करते हैं और सुनाते हैं।

13. कविता-पाठ-प्रतियोगिता—विद्यालय में साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन करते हुए, कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन कर छात्रों को सस्वर कविता पाठ-कराने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

इस प्रकार उपर्युक्त क्रियाओं और साधनों का विद्यालय में समय-समय पर आयोजन कर कविता की तरफ छात्रों को आसानी से बढ़ाया जा सकता है। आवश्यकता उस बात की है कि स्वयं अध्यापक की रूचि इन क्रियाओं में होनी चाहिए। छात्रों को इन क्रियाओं में भाग लेने और उनकी रूचि को प्रोत्साहित करना चाहिए तभी छात्र उत्साहपूर्वक सक्रिय रूप में इन क्रियाओं में भाग ले सकेगें और उनकी रूचि कविता में बढ़ सकेगी।

कविता की पाठ-योजना
(PLANNING A POETRY LESSON)

हिन्दी-शिक्षण में कविता का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसके माध्यम से हिन्दी-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति होती है। कविता-शिक्षण सम्बन्धी उद्देश्यों की पूर्ति तभी हो सकती है जबकि पाठ-योजना बनाते समय सभी आवश्यक बातों का पूरी तरह से ध्यान रखा जाए। इन बातों को ध्यान में रखते हुए, पद्य शिक्षण के लिए एक अच्छी पाठ-योजना बनाई जा सकती है। इसे निम्न पाठ योजना द्वारा समझा जा सकता है :

छात्र अध्यापक का नाम_	स्कूल का नाम_
छात्र अध्यापक का अनुक्रमांक_	कक्षा नवम
विषयः हिन्दी (कविता)	समय—30 मि.
उपविषय—'यशोधरा'	दिनांक_

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सामानय उद्देश्य—

1. छात्रों के हृदय में मातृभाषा के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम जागृत करना।
2. छात्रों में लय, ताल, मधुरता एवं भाव के अनुसार कविता पाठ करने की क्षमता उत्पन्न करना।
3. छात्रों की कल्पना शक्ति तथा शब्द एवं अर्थमूलक सौन्दर्यानुभूति की वृद्धि करना।
4. छात्रों को उदात्त भावों का सम्वर्द्धन करके चरित्र निर्माण में योग देना।
5. कविता द्वारा छात्रों के संवेगों, स्वयं भूवृत्तियों और सहजात-वृत्तियों का परिष्कार करना।

विशिष्ट उद्देश्य—छात्रों को यशोधरा के सम्मानित आहत व्यक्तित्व का दर्शन करना और पतिव्रता नारी के स्वरूप को दिखाना।

पूर्व ज्ञान—छात्रों को गौतम बुद्ध के बारे में जानकारी है।

सहायक सामग्री—1. यशोधरा और सखी का चित्र।
2. उद्धरण।

प्रस्तावना—"यदि स्वर्ग कहीं है पृथ्वी पर,
तो वह नारी उर के भी वर।"

आधुनिक कवि नारी को अकथनीय विभूतियों से सम्पन्न अलौकिक शक्ति के रूप में पूजता है। आज नारी है—भंजुता या ममता की मूर्ति, भावना की स्फूर्ति और सज्जनता की प्रतिमूर्ति।

ऐसे युग में प्रतिनिधि कवि मैथिलीशरण जी का ध्यान बरबस काव्य की उपेक्षिताओं पर केन्द्रित हो गया। सर्वगुण सम्पन्न उर्मिला और यशोधरा बन गई। उनके काव्य का प्रमुख विषय। 'यशोधरा' में गुप्त जी ने—

"गोपा बिनु गौतम भी ग्राह्य नहीं मुझको" का नवीन संदेश सुनाया।

कपिल वस्तु के महाराज शुद्धोदन के पुत्र 'सिद्धार्थ' में बाल्यकाल से ही वीतराग के लक्षण प्रकट होने लगे थे। पिता ने उन्हें संसारी बनाने हेतु, शीघ्र ही उसका विवाह देवदह की राजकुमारी यशोधरा से कर दिया।

पिता का प्रबन्ध था कि जो कुछ स्वस्थ, शोभन और सजीव हो उसी पर सिद्धार्थ की दृष्टि पड़े। परन्तु एक दिए एक रोगी को, दूसरे दिन एक वृद्धि को, और तीसरे दिन तक मृत को देखकर वे अपनी पत्नी यशोधरा तथ अपने पुत्र राहुल को सोता छोड़ मुक्ति का उपाय खोजने के लिए गृह त्याग कर चले गए।

उद्देश्य कथन—आज हम मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'यशोधरा' शीर्षक कविता की रसानुभूति करते हुए हम देखेंगे कि इस प्रकार चले जाने से यशोधरा को कितना अधिक दुःख हो रहा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

प्रस्तुतीकरण—पाठ का विकास बच्चों के सक्रिय सहयोग से किया जाएगा।

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता—यशोधरा

सिद्धि हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात।
पर चोरी चोरी गये, यही बड़ा व्याधात।
सखि व मुझसे कहकर जाते।
कह तो क्या मुझको वे अपनी पथ-बाधा ही पाते ?
सखि वे मुझसे कह कर जाते।
मुझको बहुत उन्होंने माना,
फिर भी क्या पूरा पहिचाना ?
मैंने मुख्य उसी को जाना,
जो वे मन में लाते।
सखि वे...।
स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को प्राणों के पण में।
हमीं भेज देती हैं रण में।
छात्र धर्म के नाते।
सखि वे...।
जायें सिद्धि पायें वे सुख से,
दुखी न हो इस जग के दुख से,
उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से ?
आज अधिक वे भाते।
सखि वे...।
गए लौट भी वे आयेंगे,
कुछ अपूर्व अनुपम लावेंगे।
रोते प्राण उन्हें पावेंगे।
पर क्या गार्त-गार्त ?
सखि वे मुझसे कह कर जाते।

शिक्षण बिन्दु	छात्र अध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
कवि परिचय	छात्र अध्यापक यशोधरा कविता के रचयिता श्री मैथिलीशरण गुप्त का संक्षिप्त परिचय देगा। श्री मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव जिला झाँसी में हुआ था। आपने देश भक्ति से ओत-प्रोत	छात्र ध्यान से सुनेगें को उत्तर पुस्तिका पर उतारेगें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण बिन्दु	छात्र अध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
	काव्यों की रचना खड़ी बोली में की। साकेत, यशोधरा, भारत भारती, जय प्रथवध, नहुष आदि आपको प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थ है। आपको राष्ट्र कवि की उपाधि से विभूषित किया गया था। छात्र अध्यापक आवश्यक बिन्दुओं की श्यामभट्ट पर लिखेगा।	
आदर्श पाठ	छात्र अध्यापक स्पष्ट, शुद्ध एवं भावपूर्ण वाणी में स्वरों के उतार-चढ़ाव के साथ प्रस्तुत कविता का आदर्श-पाठ करेगा। (छात्रों को पुस्तक खोलने का आदेश दिया जायेगा)	छात्र ध्यान से सुनेगे व अपनी पाठ्य पुस्तक खोलेगें।
अनुकरण वाचन	छात्र अध्यापक कक्षा के दो-तीन छात्रों से स्पष्ट वाणी में अनुकरण पाठ करवाएगा। जिसमें शब्द उच्चारण एव भाव प्रदर्शन पर विशेष बल दिया जाएगा।	छात्र अध्यापक के आदेशानुसार उचित स्वर एव लय के साथ वाचन करेगे। शेष छात्र ध्यान से सुनेगें।
शब्दार्थ कथन	छात्र अध्यापक कविता में आए हुए कवि का शब्दों का अर्थ बताएगा और उन्हें श्यामपट्ट पर लिखेगा।	
	शब्द — अर्थ सिद्धि — सफलता, मुक्ति व्याघात — बहुत अधिक दुख उपालम्भ — उलाहना पण — बाजार, क्रय विक्रय का स्थान	छात्रों शब्दार्थों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे और श्यामपट्ट पर लिखे हुए शब्दार्थों को अपनी कापी पर उतारेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण बिन्दु	छात्र अध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
भाव विश्लेषण एवं सौन्दर्यानुभूति	छात्र अध्यापक प्रश्न, प्रवचन, तथा उद्धरण आदि की सफलता से कविता के भाव को स्पष्ट कर सौन्दर्यानुभूति कराएगा।	छात्र अध्यापक के प्रश्नों का उत्तर देगें और कविता के भाव तथा सौन्दर्य का अनुभव करेंगे।
	छात्र अध्यापक 'सिद्धि हेतु स्वामी गए-पथ पर बाधा ही पाते का पठन करेगा व प्रश्न पूछेगा। (1) सिद्धार्थ किस महत् कार्य के लिए राजमहल छोड़ कर चले गए ? (2) मुक्ति की खोजज में जाना-यशोधरा की दृष्टि में कैसी बात है ? (3) पति के गृह त्याग से पत्नी की कैसी दशा हो जाती है ? (4) यशोधरा के अत्यिधिक दुख का कारण क्या है ? (5) उसकी एक मात्र इच्छा क्या है ? (6) चित्र दिखाकर इस चित्र में आप क्या देखते है ? छात्र प्रश्नों के उत्तर देगा।	छात्र कथन को ध्यान से सुनेगें व पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देंगे।
	छात्र अध्यापक कथन-समवस्यकों से हम अपने हृदय से सभी भावों को कहने के लिए व्याकुल रहते है। दुख कथन से हृदय को कुछ शान्ति और सन्तोष मिलता है।	

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण बिन्दु	छात्र अध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
	सिद्धार्थ की यशोधरा से बताकर जाने में क्या शंका थी ? छात्र अध्यापक कथन-वे सोचते थे कि नवविवाहिता यशोधरा उनसे रूकने का आग्रह करने लगेगी। कोमल हृदया पत्नी कहीं विरह-दु:ख से आकुल हो, उनसे रूकने का आग्रह न करने लगे। किन्तु यशोधरा साधारण नारी नहीं है। वह उन्हें मुक्ति हेतु जाने से कभी मना न करती। यशोधरा जानती थी कि कोई भी संसारिक आकर्षण उन्हें नहीं रोक सकता। "हाय स्वार्थिनी मैं रोक ऐसी, तुम्हें रख लेती। जहाँ राज्य भी ज्याज्य, वहाँ मैं जाने तुम्हें न देती ?"	छात्र पंक्तियों को कापियों में उतारेगें।
	दूसरा पद्यांश—मुझको बहुत उन्होंने...जो वे मन में लाते।" (8) सिद्धार्थ के हृदय में यशोधरा के प्रति कैसे भाव थे ? छात्र अध्यापक कथन-इसका पूर्वानुभव यशोधरा को मी-था-स्वयं यशोधरा के शब्दों में— "सभी सुन्दरी बालाओं में मुझे उन्होंने माना। सब ने मेरा भाग्या सराहा, सब ने रूप बखाना।" (9) फिर भी सिद्धार्थ ने क्या भूल की ? (10) पतिव्रता स्त्री सबसे अधिक महत्त्व किस बात को देती है ?	छात्र प्रश्नों के उत्तर देंगे व छात्र अध्यापक कथनों को ध्यान से सुनेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण बिन्दु	छात्र अध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
	छात्र अध्यापक कथन—यशोधरा सच्ची सहधार्मिणी है। पति के इस महान् त्याग में वह भी भाग लेना चाहती है। इसकी सम्मति लेकर बुद्धदेव ने उसे इस अवसर से सदैव के लिए वंचित कर दिया।	छात्र मनोयोग पूर्वक सुनेगें।
	तृतीय पद्यांश-स्वयं सुसज्जित-छात्र धर्म के नाते। (11) रणभेरी सुन कर क्षत्राणियाँ क्या करने लगती है ? (12) प्राणों के प्रण में भेजना क्यों कहा गया है ? (13) क्षत्रणियाँ ऐसा कठोर कार्य क्यों करती है।	छात्र प्रश्नों के उत्तर देगें।
	छात्र अध्यापक कथन-क्षात्रधर्म की पूर्ति के कोमलता और कठोरता का अपूर्ण सामंजस्य है। करुणा की मूर्ति, कोमलता की आगार भावना की प्रतीक नारी-कर्त्तव्य की कठोर वेदी पर अपने सुख-सुहाग तक की आहुति दे देती है।	
	जायें सिद्धि पावें-अधिक वे भातेः यशोधरा के पति के लिए क्या मंगल कामना करती है ? (15) वह अपने दुःख से उन्हें दुःखी क्यों नहीं बनाना चाहती ?	
	छात्र अध्यापक कथन—यशोधरा स्वयं अत्यधिक विरहाकुल है, पीड़ित है।	

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण बिन्दु	छात्र अध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
	पति-वियोग की ज्वाला से दुग्ध है। फिर भी पति की शुभ-चिन्तना में संलग्न है और अपने रुदन को उनके पथ का रोड़ा नहीं बनाना चाहती। उद्देश्य सिद्धि में बाधक नहीं बनना चाहती— "मेरी नयन-मालिके; माना तुने बन्धन तोड़ा। पर तेरी मोती न बने हा ! प्रिय से पथ का रोड़ा।"	

गए लौट भी क्या गाते-गाते ?

16. वह उन्हें उलाहना क्यों नहीं दे पा रही है?
17. यशोधरा को किस बात का पूर्ण विश्वास है ?

छात्र अध्यापक कथन—उसे अपने-अपने प्रेम की अनन्यता तथा शक्ति पर अटूट विश्वास है. जैसे वे स्वतः छोड़कर चले गए है—वैसे ही एक दिन प्रेम की दृढ़ता के कारण स्वतः लौट आयेंगे।

छात्र ध्यान से सुनेंगे।

समानान्तरण पंक्तियाँ

"उन्हें समर्पित कर दिए, यदि मैंने सब काम।
तो आवेंगे एक दिन, निश्चय मेरे राम॥"

18. उनके लौटने में क्या विशेषता होगी ?
19. विरहाकुल यशोधरा की क्या दशा है ?

छात्र अध्यापक कथन

पति के विरह में वह आरती से स्वयं जल रही है—

सामानान्तर पंक्तियाँ—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

"मानस मन्दिर में सती, पती की प्रतिमा थाप
जलती थी उस विरह में, बनी आरती आप॥"

2. यशोधरा उनका स्वागत किस प्रकार करेगी ?

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छात्र अध्यापक कथन—उनके चुप चाप चले जाने की वेदना और अयमान को वह उनके आने पर भी, हर्ष की विभोरता में भी डुबा न सकेगी। वह जन-साधारण की तरह उनका स्वागत करने में असमर्थ है—

"ले न सकेगी तुम्हें वही बढ़,
तुम सब कुछ हो जिसके।
यह लज्जा यह क्षोम भाग्य मे,
लिखा गया कब किसके ?"
अपनी कापी में लिखेगे।

छात्र अध्यापक इन पंक्तियों को श्यामपट्ट पर लिखेगा।

द्वितीय आदर्श पाठ

कविता मैं पुनः पूर्णता लाने और उसका भाव अधिक स्पष्ट करने के लिए छात्र अध्यापक आदर्श पाठ करेगा।

छात्र ध्यान पूर्वक सुनेगें।

द्वितीय अनुकरण पाठ

दो-तीन छात्रों से काव्यात्मक वातावरण उत्पन्न करने के लिए अलग पदों का सस्वर वाचन करने का निर्देश देगा।

छात्र कविता पाठ करेंगे।

अर्थग्रहण एवं सौन्दर्यबोध परीक्षण—छात्रों ने कविता के अर्थ और भाव को समझा है या नहीं इस वात की जाँच करने के लिए छात् अध्यापक निम्न प्रश्न पूछेगा।

(1) यशोधरा को बहुत मानते हुए भी सिद्धार्थ से क्या त्रुटि हो गई ?

(2) वे पति के लिए हृदय से क्या चाहती हैं ?

(3) बुद्ध देव का लौटने का प्रश्न भी यशोधरा के लिए समस्या प्रधान क्यों है ?

गृहकार्य

छात्र अध्यापक कविता का भाव अपने शब्दों में घर से लिखकर लाने तथा ऐसी ही कुछ कविताएँ कण्ठस्थ करने के लिए कहेगा।

प्रश्नावली

1. कविता क्या है ? गद्य से यह किस प्रकार भिन्न है ? स्पष्ट कीजिए।
2. हिन्दी शिक्षण में कविता शिक्षण के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. कविता से क्या अभिप्राय है ? आध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी कविता-शिक्षण के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।
4. कविता शिक्षण की कौन-कौन सी विधियाँ प्रचलित है ? आप किन विधियों का प्रयोग करना चाहेगें। और क्यों ?
5. कविता से क्या अभिप्राय है ? कविता-शिक्षण के विभिन्न सोपानो का वर्णन कीजिए।
6. कविता के प्रति छात्रों में रूचि विकसित करने के लिए आप किन-किन उपायों का प्रयोग करेगें ? स्पष्ट कीजिए।
7. माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में से कोई एक कविता लेकर उसकी पाठ-योजना बनाइए।

□ □ □

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय – 11

मूल्यांकन : प्रत्यय, अर्थ तथा अच्छी भाषा-परीक्षण का आधार

(EVALUATION : CONCEPT, MEANING AND CRITERIA OF A GOOD LANGUAGE TEST)

अध्यापन और परीक्षण दोनों एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। अध्यापक शिक्षण के साथ ही साथ अपने पढ़ाये हुए पाठ का फल जानने के लिए छात्रों की परीक्षा भी लेता है। जिस प्रकार शिक्षण-प्रक्रिया अध्यापक और छात्र दोनों के बीच चलती है। उसी प्रकार परीक्षा की प्रक्रिया भी इन दोनों के बीच चलती है। छात्रों ने विषय को सीखने में कितनी प्रगति की है ? विषय शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति हुई अथवा नहीं, यह सब ज्ञात करने के लिए परीक्षा का होना बहुत आवश्यक है। इससे दोनों पक्षों को ही लाभ होता है। अध्यापक को अपनी शिक्षण-प्रणाली में सुधार का अवसर मिलता है तथा विद्यार्थी की ओर ग्रहण करने की प्रेरणा मिलती है।

छात्रों को विद्यालय में प्रवेश से लेकर अपनी शिक्षा पूर्ण करने तक अनेक परीक्षाएं देनी पड़ती है। भाषा-शिक्षण में भी परीक्षा अन्य विषयों की तरह से ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। विद्यार्थी भाषा में कितनी योग्यता प्राप्त कर चुके हैं ? उनकी शब्दावली का कितना विकास हुआ ? उच्चारण तथा रचना कार्य में कितनी प्रगति की है ? कविता शिक्षण के उद्देश्यों की कहां तक पूर्ति हो सकी हैं ? यह सब जानने का एकमात्र साधन परीक्षा ही है। भाषा की परीक्षा सामान्य परीक्षा के समान ही कार्यों का सम्पादन करती है। भाषा की परीक्षा अनेक कार्यों का सम्पादन करने के कारण शिक्षण-प्रक्रिया में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

मूल्यांकन प्रत्यय व अर्थ
(EVALUATION CONCEPT AND MEANING)

मूल्यांकन का प्रत्यय (Concept of Evaluation)

मूल्यांकन का शाब्दिक अर्थ मूल्य का अंकन करना है। दूसरे शब्दों में मूल्यांकन मूल्य निर्धारण की एक प्रक्रिया है। मूल्यांकन के अन्तर्गत व्यक्ति अथवा वस्तु के गुणों या विशेषताओं की वांछनीयता पर दृष्टिपात किया जाता है। मूल्यांकन एक ऐसा कार्य अथवा प्रक्रिया है जिसमें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मापन से प्राप्त परिणामों की वांछनीयता का निर्णय किया जाता है। मूल्यांकन से निर्धारित होता है व्यक्ति में या छात्र में उपस्थित गुण अथवा विशेषता की माला किसी उद्देश्य की दृष्टि से कितनी संतोषप्रद है।

निःसन्देह परीक्षा मूल्यांकन में सहायक है, परन्तु मूल्यांकन का समानार्थी नहीं है। वस्तुतः परीक्षा की तुलना में मूल्यांकन अधिक व्यापक होता है।

एन.एम. डांडेकर के शब्दों में—"मूल्यांकन को छात्रों के द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने की सीमा ज्ञात करने की क्रमबद्ध प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

N.M. Dandekar – Evaluation may be defined as a systematic process of determining the extent to which educational objectives are achieved by the pupils.

एच.एच. रैमर्स तथा एन.एल. गेज ने मूल्यांकन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "मूल्यांकन में व्यक्ति अथवा समाज अथवा दोनों की दृष्टि से क्या अच्छा है अथवा क्या वांछनीय है का विचार या लक्ष्य निहित रहता है।"

H.H. Remmers and N.L. Gage. Evaluation assumes a purpose or an idea of what is good or desirable from the stand point of the individual or society or both."

ब्रेडफील्ड तथा मोरडोक के अनुसार

"मूल्यांकन किसी सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा वैज्ञानिक मानदण्ड के सन्दर्भ में किसी घटना को प्रतीक आवंटित करना है जिससे उस घटना का महत्त्व अथवा मूल्य ज्ञात किया जा सके।"

Bradfield and Mordock. Evaluation is the assignment of symbols to aphenomenon in order to characterise the worth or value of the phenomenon with refer̃ence to some social, cultural or scietific standard.

राष्ट्रीय क्षैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) ने मूल्यांकन के प्रत्यय को स्पष्ट करते हुए कहा है कि यह एक ऐसी सतत् व व्यवस्थित प्रक्रिया है जो देखती है कि निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है, कक्षा में दिये गये अधिगम अनुभव कितने प्रभावशाली रहे हैं, तथा शिक्षा के उद्देश्य कितने अच्छे ढंग से पूर्ण हो रहे हैं।

मूल्यांकन व्यक्तियों अथवा वस्तुओं के किसी भी गुण के संदर्भ में किया जा सकता है परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन से अभिप्राय छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में लगाया जा सकता है। मूल्यांकन प्रक्रिया में किसी कार्यक्रम के द्वारा प्राप्त उद्देश्यों अथवा उपलब्धियों की वांछनीयता को ज्ञात किया जाता है। अन्य शब्दों में मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जो यह बताती है कि वांछित उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया जा चुका है। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री नार्मन ई. ग्रोनलुंड के अनुसार—"मूल्यांकन के द्वारा प्राप्त किये गये शिक्षा उद्देश्यों की सीमा को ज्ञात करने की क्रमबद्ध प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।" मूल्यांकन के अन्तर्गत छात्रों के व्यवहार के गुणात्मक व मात्रात्मक वर्णन के साथ-साथ व्यवहार की वांछनीयता से सम्बन्धित मूल्य निर्धारण भी निहित रहता है। वास्तव में कोई भी अध्यापक अपने शिक्षण कार्य के उपयन्त यह जानना चाहता है कि क्या उसने वे उद्देश्य प्राप्त कर लिए हैं जिसके लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसने अध्यापन कार्य किया था। इसी प्रकार छात्र यह जानना चाहते हैं कि क्या उन्होंने वह ज्ञान प्राप्त कर लिया है जिसे प्राप्त करने के लिए अध्ययन कार्य कर रहे हैं तथा प्रधानाचार्य यह जानना चाहता है कि क्या विद्यालय के छात्रों के द्वारा वांछित शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति की जा रही है। यह सभी प्रश्न मूल्यांकन की तरफ़ संकेत करते हैं।

मूल्यांकन का यह नवीन प्रत्यय इस मूलभूल मान्यता पर आधारित है कि शिक्षा संस्था का कार्य छात्रों को सीखने में सहायता करना है। सीखने के दौरान छात्रों के व्यवहार में जिन परिवर्तनों को लाने के हम इच्छुक होते हैं उन्हें शिक्षा उद्देश्य कहते हैं तथा इन शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यालय में विभिन्न अधिगम क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। ये अधिगम क्रियायें निर्धारित उद्देश्यों की प्रक्रिया में किस सीमा तक सफल रहीं हैं यह देखना मूल्यांकन प्रक्रिया का कार्य है। इस प्रकार से मूल्यांकन प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग, शिक्षण उद्देश्य, अधिगम क्रियायें व व्यवहार परिवर्तन होते हैं।

मूल्यांकन के ये तीनों अंग परस्पर एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं तथा एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यालय में अधिगम क्रियायें आयोजित की जाती हैं जिनसे छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन होते हैं। छात्रों के व्यवहार में आये इन परिवर्तनों की तुलना वांछित परिवर्तनों से करके मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन प्रक्रिया के इन तीनो अंगों को एक त्रिभुज के रूप में निम्न ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

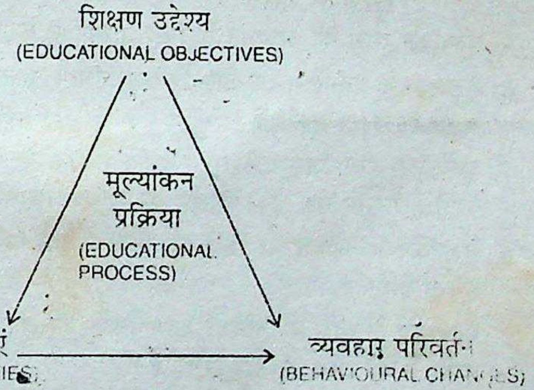

मूल्यांकन का यह नवीन प्रत्यय केवल पाठ्यवस्तु के ज्ञान तक ही सीमित नहीं है वरन् विद्यालय पाठ्यक्रम से सम्बन्धित समस्त उद्देश्यों की एक विशाल तथा व्यापक शृंखला का मूल्यांकन करते हैं। मूल्यांकन में पारम्परिक परीक्षा प्रणाली के द्वारा प्राप्त मापन प्राप्तांकों के ऊपर ही आधारित नहीं होता वरन् अनेक प्रकार की मापन प्राविधियों, विधियों तथा यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। मूल्यांकन का नवीन प्रत्यय छात्रों की केवल शैक्षिक उपलब्धि से ही सम्बन्धित नहीं होता वरन् उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास से सम्बन्धित होता है। वस्तुतः मूल्यांकन का यह प्रत्यय अत्यन्त व्यापक तथा बहु आयामी होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूल्यांकन का महत्त्व
(IMPORTANCE OF EVALUATION)

शिक्षा प्रक्रिया से सम्बन्धित व्यक्तियों विशेषकर छात्रों, अध्यापकों, अभिभावकों, प्रशासकों तथा समाज के लिए मूल्यांकन का अत्यन्त महत्त्व है। मापन तथा मूल्यांकन के द्वारा छात्रों को अपनी शैक्षिक प्रगति का ज्ञान होता है। इससे उनमें प्रेरणा, आत्मसंतोष, आत्मविश्वास, आगे बढ़ने की हिम्मत उत्पन्न होती है तथा उन्हें अपनी कमियों की भी जानकारी मिल जाती है जो उन्हें भविष्य में परिश्रम करने की प्रेरणा देती हैं। मापन मूल्यांकन का अध्यापकों के लिए भी अत्यन्त महत्त्व है। इसके द्वारा अध्यापकगण पाठ्यक्रम, शिक्षणविधि, पाठ-योजना, शिक्षण सामग्री की प्रभावशीलता जानते हैं तथा समय-समय पर उनमें आवश्यक संशोधन करते हैं। मूल्यांकन की सहायता से अभिभावक बच्चों की शैक्षिक प्रगति के साथ उनकी रुचि, योग्यता, क्षमता, व्यक्तित्व, सामर्थ्य, कमियों को पहचानते हैं जिससे वे अपने बच्चों का उचित मार्गदर्शन कर सकते हैं। मूल्यांकन शिक्षा के सुधार तथा गुणवत्ता उन्नयन में सहायक होता है। संक्षेप में मूल्यांकन के महत्त्व को निम्नलिखित रुप से व्यक्त किया जा सकता है।

1. मूल्यांकन उचित शैक्षिक निर्णय लेने के लिए आवश्यक है।
2. मूल्यांकन से शिक्षा शास्त्री, प्रशासक अध्यापक छात्र तथा अभिभावक शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति की सीमा को जान सकते हैं।
3. मूल्यांकन शिक्षक की प्रभावशीलता को बताता है।
4. मूल्यांकन शिक्षा के उद्देश्यों को स्पष्ट करता है।
5. मूल्यांकन छात्रों को अध्ययन के लिये प्रोत्साहित करता है।
6. मूल्यांकन के आधार पर पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, सहायक सामग्री आदि में आवश्यक सुधार किया जा सकता है।
7. मूल्यांकन कक्षा शिक्षण में सुधार लाता है। अध्यापक को अपनी कमी ज्ञात हो जाती है जिससे वह अपने शिक्षण को अधिक सुसंगठित कर लेता है।
8. मूल्यांकन के आधार पर छात्रों को शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन दिया जा सकता है।
9. मूल्यांकन के छात्रों की रुचियों, अभिरुचियों, कुशलताओं, योग्ताओं, दृष्टिकोणों एवं व्यवहारों की जांच का ज्ञान संभव है।
10. मूल्यांकन से विभिन्न कार्यक्रमों की उपयोगिता का ज्ञान किया जा सकता है।

शैक्षिक मूल्यांकन के उद्देश्य
(AIMS OF EDUCATIONAL EVALUATION)

मूल्यांकन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(1) छात्रों की वृद्धि तथा विकास में सहायता करना।

(2) छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान की जांच कराना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(3) छात्रों की वृद्धि तथा विकास में उत्पन्न अवरोधों को जानना।

(4) छात्रों की शैक्षिक प्रगति के बाधक तत्त्वों को जानना।

(5) छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं की जानकारी करना।

(6) छात्रों में प्रतियोगिता की भावना विकसित करना।

(7) छात्रों की कमियों व कठिनाइ को जानना व उनका निवारण करना।

(8) छात्रों को अधिगम के लिए प्रेरित करना।

(9) अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता को ज्ञात करना।

(10) विद्यालयों के कक्षा शिक्षण में सुधार लाना।

(11) पाठ्यक्रम में सुधार के लिए आधार तैयार करना।

(12) शिक्षण विधियों तथा सहायक सामग्री की उपादेयता को ज्ञात करना।

(13) छात्रों का योग्यता आधारित वर्गीकरण करना।

(14) छात्रों का विभिन्न दृष्टियों से चयन करना।

(15) कक्षा उन्नति व रोज़गार के लिए शैक्षिक योग्यता का प्रमाण-पत्र देना।

मूल्यांकन, परीक्षा तथा मूल्यकरण

(EVALUATION, EXAMINATION AND APPRAISAL)

परीक्षा तथा मूल्यकरण शब्दों का प्रयोग कभी-कभी मूल्यांकन के समानार्थी शब्दों के रूप में किया जाता है। इसलिए इन तीनों शब्दों के बीच अन्तर को स्पष्ट करना अत्यन्त आवश्यक है। परीक्षा छात्रों की विद्यालयी उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आयोजित की जाती है। ये परीक्षाएं साधारणतः केवल विषय वस्तु के संदर्भ में छात्रों के ज्ञान का मापन करती हैं। जबकि मूल्यांकन में न केवल विषय वस्तु का ज्ञान वरन् अन्य शिक्षण उद्देश्यों जैसे बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि की जानकारी भी प्राप्त की जाती है तथा उसकी सार्थकता का भी निर्धारण किया जाता है। मूल्यांकन विद्यालयी उपलब्धि तक सीमित नहीं होता, यह तो छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से सम्बन्धित होता है। परीक्षायें सतत् नहीं होती है। ये सामान्यतः सत्र के अन्त में आयोजित की जाती है, जबकि मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया है जो शिक्षण अधिगम के साथ-साथ सत्र पर्यन्त चलती रहती है। परीक्षा में प्रायः केवल मात्रात्मक प्राविधि का प्रयोग किया जाता है, जबकि मूल्यांकन में मात्रामक प्राविधियों के साथ-साथ गुणात्मक प्रविधियों बहुतायत से प्रयोग में पायी जाती है।

मूल्यकरण तथा मूल्यांकन दोनों ही शब्दों का अर्थ भी मूल्य से सम्बन्धित है, फिर भी दोनों में कुछ अन्तर है। यह अन्तर इनके दृष्टिकोण का अन्तर है। मूल्यांकन आन्तरिक दृष्टिकोण की ओर संकेत करता है। इसके विपरीत मूल्यकरण बाह्य दृष्टिकोण की ओर संकेत करता हैं। मूल्यांकन वांछनीयता पर ज़ोर देता है जबकि मूल्यकरण केवल उपयोगिता को इंगित करता है।

शिक्षण-क्रिया को सम्पन्न करने के लिए सबसे पहले शिक्षण-उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है। हिन्दी-शिक्षण में भी शिक्षण से पूर्व पाठ्य वस्तु को ध्यान में रखते हुए भाषा-शिक्षण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के उद्देश्यों का निर्धारण होता है और छात्रों के व्यवहार में आए परिवर्तनों के आधार पर यह ज्ञात किया जाता है कि शिक्षण-उद्देश्यों की प्राप्ति हुई है या नहीं। छात्रों के इन व्यवहारगत परिवर्तनों, रुचियों, आकांक्षाओं, रुझानों एवं योग्यता की जाँच करने के लिए अध्यापक विभिन्न तकनीकों, विधियों एवं साधनों की सहायता लेता है। हिन्दी भाषा में मूल्यांकन की विधियाँ निम्नलिखित हो सकती हैं :

(1) परीक्षा द्वारा (Testing)

(क) लिखित परीक्षा (written) निबन्धात्मक प्रकार (Essay Type) लघूत्तरातमक प्रकार (Short Answer), वस्तुनिष्ठातमक प्रकार (Objective Type) के प्रश्न

(ख) मौखिक परीक्षा (Oral)

(ग) प्रायोगिक परीक्षा (Practical)

(2) पर्यवेक्षण (Supervision)

(3) संचित अभिलेख (Cumulative Record)

(4) गृह-कार्य (Home-work)

(5) निर्धारण मापनी (Rating Scale)

(क) परीक्षा—मूल्यांकन की सबसे महत्त्वपूर्ण व प्राचीन विधि परीक्षा है। कक्षा में पढ़ाए गए विषय के आधार पर छात्रों के सम्मुख कुछ प्रश्न प्रस्तुत किए जाते हैं और उनके उत्तरों के आधार पर छात्रों की विषयगत योग्यता की जांच की जाती है। इस प्रक्रिया को ही परीक्षा कहते हैं। यह परीक्षा तीन प्रकार की होती है : (क) लिखित (ख) मौखिक (ग) प्रायोगिक

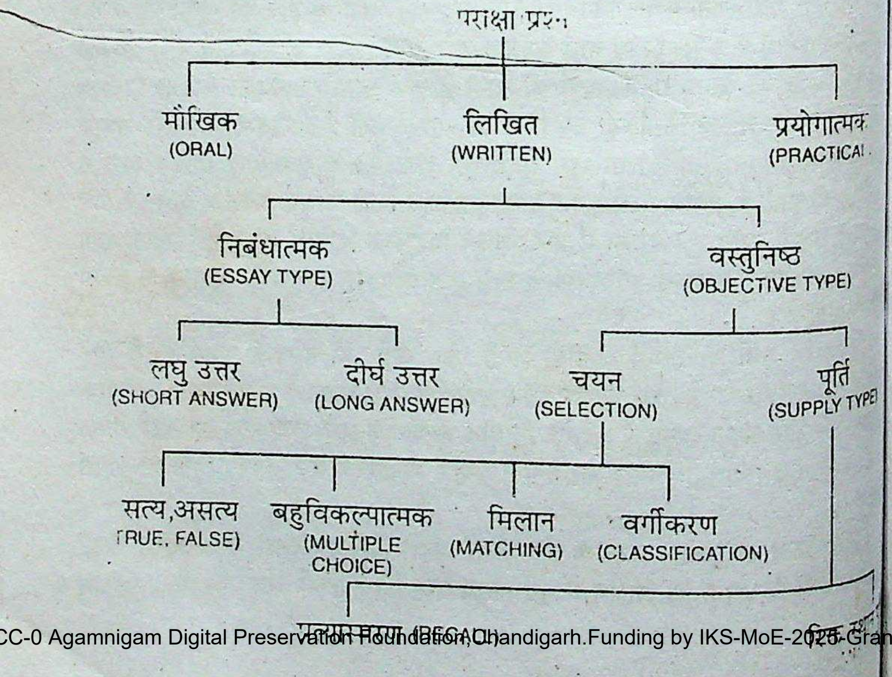

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(क) निबन्धात्मक परीक्षण (Essay Type Test) –

जिन प्रश्नों का उत्तर छात्रों को विस्तृत निबन्ध के रूप में देना होता है, ऐसे प्रश्नों पर आधारित लिखित परीक्षा को निबन्धात्मक परीक्षा कहा जाता है। इससे बच्चों को विषय से सम्बन्धित प्रश्नों पर आधारित प्रश्न-पत्र दिया जाता है। प्रश्न पत्र में 8 से 10 प्रश्न होते हैं, जिनमें से 5 या 6 प्रश्नों का उत्तर देना होता है।

निबन्धात्मक परीक्षण प्राचीन काल से ही प्रचलित है। इतिहास के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 2000 बी॰ सी॰ पूर्व भी चीन में निबन्धात्मक प्रश्नों का प्रचलन था। वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ होने तक ये लिखित परीक्षाएं लेने का एकमात्र ढंग था। इसलिए इस प्रकार के परीक्षणों को परम्परागत विधि भी कहते हैं। निबन्धात्मक परीक्षण अत्यन्त सुविधाजनक होते हैं। प्रश्न निर्माता निबन्धात्मक प्रश्नों को अत्यन्त सरलता व शीघ्रता से तैयार कर लेते हैं। निबन्धात्मक प्रश्नों में छात्रों से विस्तृत उत्तर प्रस्तुत करने की अपेक्षा की जाती है तथा किसी मानक उत्तर से तुलना किये बिना ही परीक्षक छात्रों के द्वारा दिए उत्तरों का अंकन कर लेता है। निबन्धात्मक परीक्षण का अंकन करते समय परीक्षक के लिए अत्यन्त सरल होता है कि वह प्राप्तांकों के सामान्य स्तर तथा वितरण की प्रकृति को नियन्त्रित कर सके। किसी उत्तर पर परीक्षक कितने अंक देता है यह उसका व्यक्तिगत निर्णय होता है। निबन्धात्मक परीक्षण का कठिनाई स्तर कुछ भी क्यों न हो, परीक्षक अपने प्राप्तांकों को इस तरह से व्यवस्थित कर सकता है कि उसके द्वारा पूर्व निर्धारित प्रतिशत के छात्र न्यूनतम उत्तीर्ण अंक प्राप्त कर सकें।

निबन्धात्मक प्रश्नों के पक्ष में जो तर्क दिया जाता है, उनमें सबसे प्रमुख तर्क यह है कि निबन्धात्मक परीक्षण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का सर्वोत्तम ढंग से मापन करते हैं। छात्रों को पहले से तैयार उत्तर नहीं देना होता है, बल्कि उन्हें उत्तर देने के लिए अपने विषय का अच्छा ज्ञान व बोध होना चाहिए, जिससे वे विभिन्न तथ्यों तथा सिद्धान्तों को एक दूसरे से सम्बन्धित कर सकें तथा इन विचारों की लिखित अभिव्यक्ति करने में सफल हो सकें। इसके अतिरिक्त निबन्धात्मक परीक्षणों पर छात्रों के द्वारा दिए गए उत्तर उनकी विचार प्रक्रियाओं की प्रकृति तथा गुणवत्ता का ज्ञान भी प्रदान करते हैं। अलोचनात्मक चिन्तन, सृजनशीलता, अभिव्यक्ति क्षमता, ज्ञान का तार्किक संश्लेपण, मूल्यांकन क्षमता आदि अनेक योग्यताओं का मापन निबन्धात्मक परीक्षा द्वारा ही सम्भव है।

निबन्धात्मक प्रश्नों के प्रकार (Types of Essay Type Questions)

प्रश्नों के उत्तरों की प्रकृत्ति के आधार पर निबन्धात्मक प्रश्न भी कई प्रकार के हो सकते हैं। यही कारण है कि निबन्धात्मक परीक्षा में अनेक प्रकार के प्रश्नों को सम्मिलित किया जा सकता है। निबन्धात्मक प्रश्न निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं :

वर्णात्मक प्रश्न (Descriptive Questions) इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों से किसी घटना, वस्तु, प्रक्रिया, सिद्धान्त, परिभाषा, सूत्र आदि का वर्णन करने के लिए कहा जाता है।

व्याख्यात्मक प्रश्न (Explanatory Questions) – इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों को किसी सम्बन्ध या कारण व प्रभाव की तार्किक व्याख्या करने के लिए कहा जाता है। छात्र तर्क देकर अपने पक्ष को स्पष्ट करते हैं।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विवेचनात्मक प्रश्न—इस प्रकार के प्रश्नों में किसी स्थिति के पक्ष तथा विपक्ष में तर्क देते हुए किसी एक निष्कर्ष पर पहुंचा जाता है। छात्र पक्ष या विपक्ष दोनों पर विचार प्रस्तुत करने के उपरान्त पक्ष या विपक्ष का समर्थन करते हैं।

उदाहरणार्थ प्रश्न (Illustrative Questions)—इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे उदाहरणों तथा दृष्टातों की सहायता से अपनी बात स्पष्ट करें।

तुलनात्मक प्रश्न (Comparative Questions)—इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों को किन्हीं दो वस्तुओं, विचारों, सिद्धांतों आदि में समानता व असमानता तथा गुण व दोषों के आधार पर तुलना करनी होती है।

आलोचनात्मक प्रश्न (Critical Question)—इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों को किसी विचार या पक्ष की आलोचना करनी होती है, जिससे उसकी शुद्धता, पर्याप्तता, सत्यता, दृढ़ता आदि का मूल्यांकन हो सके।

विश्लेषणात्मक प्रश्न (Analytical Questions)—इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों को किसी तथ्य के विभिन्न पक्षों को स्पष्ट करते हुए उनका वर्णन एवं परस्पर सम्बन्ध को स्पष्ट करना होता है।

हिन्दी के कुछ निबन्धात्मक प्रश्नों के उदाहरण—

1. कबीरदास जी की भाषा, शैली एवं रचनाओं का साहित्यिक परिचय दें।
2. 'नीलकण्ठ' पर एक लेख लिखिए।
3. मूरझाया फूल कविता का प्रतिपाद लिखिए।
4. अपने देश की राष्ट्रीय एकता पर एक लेख लिखिए।

इस प्रकार के प्रश्नों के छात्रों की समीक्षात्मक एवं सृजनात्मक योग्यता की जाँच करने में सहायता मिलती है। अक्षर-विन्यास, विराम-चिन्ह, आदि के शुद्ध प्रयोग की परख भी आसानी से की जा सकती है। इससे छात्रों की लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच होती है। पढ़कर अर्थ ग्रहण करना, विचारों का विश्लेषण करना, विचारों को व्यवस्थित करना एवं उचित भाषा तथा क्रम में अभिव्यक्त करना, तीव्र लिखना आदि योग्यताओं का मूल्यांकन करने के लिए निबन्धात्मक परीक्षाएँ सबसे अच्छी साधन हैं।

निबन्धात्मक परीक्षा की सीमाएं (Limitations of Essay Type Tests)—निबन्धात्मक परीक्षा का अपना महत्त्व है लेकिन इसमें कुछ कमियां पाई जाती हैं, जिनके कारण इनकी आलोचना की जाती है। निबन्धात्मक परीक्षा की कुछ सीमायें इस प्रकार हैं—

1. निबन्धात्मक परीक्षा में परीक्षार्थी को उत्तर देने व परीक्षक को भी अंक देने में अत्यधिक छूट रहती है।
2. निबन्धात्मक परीक्षा में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम तथा उद्देश्यों से अपेक्षाकृत कम संख्या में प्रश्नों का चयन किया जाता है जिससे विस्तृत पाठ्यक्रम तथा शिक्षण उद्देश्यों का उचित प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता है। इससे छात्रों के द्वारा चयनित अध्ययन व रटन्त स्मरण पर बल दिया जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. निबन्धात्मक परीक्षण के उत्तर देने में छात्रों को तथा उनका अंकन करने में परीक्षकों को अधिक समय की आवश्यकता होती है।
4. निबन्धात्मक परीक्षण के अंकन में त्रुटि होने की संभावना अधिक रहती है। परीक्षक प्रश्नों के उत्तरों की अपने ढंग से व्याख्या कर सकता है।
5. ऐसे प्रश्नों की विश्वसनीयता तथा वैधता अपेक्षाकृत कम होती है। न केवल परीक्षण में सम्मिलित किए गए प्रश्नों के निर्धारण में बल्कि छात्रों द्वारा प्राप्त किए जाने वाले अंकों के निर्धारण में भी संयोग तथा भाग्य का महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है।
6. निबन्धात्मक परीक्षणों की प्रकृति के चयनात्मक होने तथा संयोग व भाग्य से प्रभावित होने के कारण शिक्षा प्रणाली बोझिल हो जाती है।
7. निबन्धात्मक परीक्षणों का अंकन करते समय पहले प्रश्नों के उत्तरों की गुणवत्ता बाद के प्रश्नों के अंकन को बुरी तरह से प्रभावित कर सकती है।

निबन्धात्मक परीक्षा के उपयोग (Use of Essay Type Test)

निबन्धात्मक परीक्षणों की मुख्य आलोचना इनके आत्मनिष्ठ, अविश्वसनीय तथा अवैध होने के कारण की जाती है, परन्तु यदि सावधानीपूर्वक इनका प्रयोग किया जाए तो ये शैक्षिक उपलब्धि का सफलतापूर्वक मापन कर सकते हैं। निम्न परिस्थितियों में निबन्धात्मक परीक्षणों का प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया जा सकता है—

1. जब परीक्षण किए जाने वाले समूह में अपेक्षाकृत कम छात्र हों तथा परीक्षण का पुनः कोई उपयोग न करना हो।
2. जब शिक्षक छात्रों की लिखित भाषाभिव्यक्ति को पूर्ण रूपेण विकसित करने एवं उसका मापन करने का इच्छुक हो।
3. जब अध्यापक शैक्षिक उपलब्धि के साथ-साथ उनकी अभिवृत्ति को जानने का इच्छुक हो।
4. जब अध्यापक छात्रों के द्वारा प्रश्नों पर दिए उत्तरों के अंकन की दृष्टि से स्वयं को सक्षम एवं विश्वसनीय समझता हो।
5. जब प्रश्न पत्र तैयार करने के लिए उपलब्ध समय कम हो, जबकि उत्तरों का अंकन करने के लिए अधिक समय उपलब्ध हो।
6. जब छात्रों की उच्च मानसिक योग्यताओं जैसे सृजनात्मक, विश्लेपण, संश्लेपण, मूल्यांकन, अभिव्यक्ति आदि का मापन करना हो।

निबन्धात्मक प्रश्न को बनाते समय सावधानियाँ

निबन्धात्मक प्रश्नों को अत्यन्त सावधानी से तैयार करना चाहिए। निबन्धात्मक प्रश्नों को तैयार करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh,Funding by IKS-MoE-2025-Grant

1. ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए जो छात्रों को अपना सर्वोत्तम ज्ञान प्रदर्शित करने के अवसर दे।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. ऐसे प्रश्न पूछे जाने चाहिएं जिनके उत्तर पर एकमत होना सम्भव हो।
3. प्रश्न परीक्षार्थी की दृष्टि से स्पष्ट होने चाहिए।
4. ऐसे प्रश्नों को वरीयता देनी चाहिए जिनका उत्तर संक्षिप्त हो।
5. परीक्षा में अधिक संख्या में प्रश्नों को शामिल करना चाहिए।
6. प्रश्नों में आन्तरिक चयन की छूट यथा सम्भव नहीं देनी चाहिए।

इस तरह से यदि इन सावधानियों को ध्यान में रखा जाए तो छात्रों के मूल्याकन में निबन्धात्मक परीक्षा महत्त्वपूर्ण होती है। निबन्धात्मक परीक्षा छात्रों की विचार संगठन एवं विश्लेपण सम्बन्धी योग्यता की जाँच करती है, उनकी लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच करती है एवं भाषा के शुद्ध तथा प्रभावशाली प्रयोग आदि का मापन भी करती है एवं भाषा के शुद्ध तथा प्रभावशाली प्रयोग आदि का मापन भी करती है। अतः इसे त्यागा नहीं जा सकता है। भाषा-योग्यताओं की जाँच की दृष्टि से विशेषकर हिन्दी-शिक्षण में निबन्धात्मक परीक्षा की बहुत उपयोगिता है। इसलिए हिन्दी-शिक्षण के उद्देश्यों का मापन करने के लिए इसका प्रयोग होना आवश्यक है लेकिन थोड़ा सावधानी के साथ।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण

जिन प्रश्नों के उत्तर किसी चिन्ह विशेष या एक-दो शब्द के द्वारा दिए जाते हैं, उन्हें वस्तुनिष्ठ परीक्षा कहते हैं। वस्तुनिष्ठ परीक्षण का प्रयोग बीसवीं शताब्दी में आरम्भ हुआ, इसलिए इन्हें नवीन प्रकार की परीक्षा भी कहा जाता है। ये परीक्षण तकनीकी दृष्टि से निबन्धात्मक परीक्षण की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय, वैध होते हैं। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में प्रत्येक का एक निश्चित सही उत्तर होता है तथा परीक्षार्थी से उसी उत्तर की अपेक्षा की जाती है, अतः किसी वस्तुनिष्ठ प्रश्न पर किसी छात्र द्वारा दिया गया उत्तर या तो सही होगा या ग़लत होगा। सही होने पर छात्र को पूर्ण अंक प्राप्त होंगे जबकि ग़लत होने पर कोई अंक प्राप्त नहीं होगा। प्रश्नों के उत्तर की इस प्रवृत्ति की वजह से वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का अंकन करते समय परीक्षक को किसी प्रकार की स्वतन्त्रता अथवा व्यक्तिगत निर्णय लेने की छूट नहीं होती है, चाहे कोई भी व्यक्ति अंकन करे किसी छात्र द्वारा प्राप्त अंक वहीं रहेंगे। प्रश्नों के उत्तर की प्रकृत्ति के आधार पर वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनेक प्रकार के होते हैं। वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का प्रशासन तथा अंकन कम समय में त्रुटि रहित ढंग से किया जा सकता है। कम्प्यूटरों के प्रयोग से वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का अंकन अत्यन्त शीघ्रता एवं पूर्ण यथार्थता से किया जाता है। परीक्षणों की विषयनिष्ठता से मुक्त होने के कारण वस्तुनिष्ठ परीक्षा को वरीयता दी जाती है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण के लाभ—हिन्दी शिक्षण के मूल्यांकन में उनका प्रयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के लाभ निम्नलिखित हैं—

1. वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में प्रश्नों की संख्या अधिक होती है, जिनके कारण इनमें सम्पूर्ण पाठ्य वस्तु तथा शिक्षण उद्देश्यों का उचित प्रतिनिधित्व सम्भव होता है।
2. वस्तुनिष्ठ परीक्षा में प्रश्न स्पष्ट होते हैं, जिससे छात्रों को उत्तर देने में तथा परीक्षक को अंकन करने में सुगमता होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का अंकन सरलता शीघ्रता तथा त्रुटि रहित ढंग से सम्भव होता है।
4. वस्तुनिष्ठ परीक्षण निबन्धात्मक परीक्षणों की तुलना में अधिक विश्वसनीय तथा वैध होते हैं।
5. वस्तुनिष्ठ परीक्षण में सम्मिलित प्रश्नों की रचना भली-भाँति ढंग से करने पर इनकी सहायता से उच्च मानसिक योग्यताओं का मापन भी किया जा सकता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के प्रकार—वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के मुख्यतः दो भाग हैं (1) आपूर्ति प्रश्न (2) चयन प्रश्न। बहुविकल्पनात्मक प्रश्न, सत्या सत्य प्रश्न, व्यवस्थीकरण प्रश्न, मिलान प्रश्न तथा वर्गीकृत प्रश्न चयन प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। इन सभी के प्रश्नों में छात्रों को दिए गए उत्तरों में से सही उत्तर का चयन करना होता है। प्रत्यास्मरण तथा रिक्त स्थान पूर्ति प्रश्न आपूर्ति प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। इनमें छात्रों को स्मृति के आधार पर उत्तर देना होता हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के इन दोनों भागों एवं इनके विभिन्न उपभागों के प्रश्नों का वर्णन आगे प्रस्तुत किया गया है।

1. आपूर्ति प्रश्न (Supply Type Questions)—इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों को उत्तर की पूर्ति करनी होती है। इनमें या तो कोई प्रश्न सीधे-सीधे पूछा जाता है तथा छात्रों को इसका उत्तर अपने ज्ञान का स्मरण करके देना होता है अथवा कोई अपूर्ण वाक्य दिया जाता है तथा छात्र को अपने ज्ञान के आधार पर इस वाक्य को पूर्ण करना होता है। इस प्रकार के पूर्ति प्रश्न के अन्तर्गत छात्रों को प्रश्न का उत्तर स्वयं अपनी ओर से देना होता है। यदि छात्रों को सम्बन्धित तथ्य ज्ञात है तो वे प्रश्न का सही उत्तर दे पाते हैं। अन्यथा वे प्रश्न का सही उत्तर देने में असमर्थ रहते हैं। इस प्रकार के प्रश्नों से मुख्यतः छात्रों की प्रत्यास्मरण करने की योग्यता का मापन होता है। इसलिए पूर्ति प्रश्नों को प्रत्यास्मरण प्रकार के प्रश्न भी कहते हैं। प्रश्नों की प्रकृति के आधार पर इन्हें भी दो भागों—सामान्य प्रत्यास्मरण तथा रिक्त स्थान पूर्ति प्रश्न में बांटा जा सकता है।

2. रिक्त स्थान पूर्ति प्रश्न (Completion Type Items)—इस प्रकार के प्रश्नों को अपूर्ण कथन अथवा वाक्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। छात्रों को अपने ज्ञान के आधार पर इन वाक्यों की पूर्ति करनी होती है। पूर्ति करने के लिए साधारणतः एक शब्द, नाम, अंक अथवा वाक्यांश पर्याप्त होता है। जैसे—

1. जयशंकर प्रसाद जी की प्रमुख रचना ________ है।
2. कश्मीर की मातृभाषा ________ है।
3. राम चरित मानस के कवि ________ हैं।
4. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को _ कहते हैं।
5. किसी भी व्यक्ति से बातचीत करते समय हमें ________ का सदैव ध्यान रखना चाहिए।
6. [illegible] रोग को ________ कहा जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7. चन्द बरदाई की प्रसिद्ध रचना ______ है।
8. महाराज शिवाजी ने युद्ध में शुत्र के ______ दिये।
9. 'राम' ______ संज्ञा है।

3. चुनाव वाक्य पूर्ति प्रश्न—इनमें वाक्य के आगे कुछ शब्द दिए जाते हैं और छात्रों को उन शब्दों में से उचित शब्द का चुनाव कर रिक्त स्थान को पूरा करना होता है। जैसे—

(1) गोदान ______ की प्रमुख रचना है।

(महादेवी वर्मा, कबीरदास, प्रसाद, प्रेम चन्द)

(2) तुलसीदास की प्रमुख रचना का नाम ______ है।

(कामायनी, रंगभूमि, रामचरित मानस)

(3) किसी व्यक्ति वस्तु, स्थान आदि के बताने वाले शब्दों को ______ कहते हैं।

(सर्वनाम, विशपेण, संज्ञा, सर्वनाम)

4. सरल प्रत्यास्मरण प्रश्न—इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों से सीधे-सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रश्न का रूप इस प्रकार का होता है कि उनका उत्तर संक्षिप्त तथा विशिष्ट होता है। छात्रों को प्रश्न के उत्तर के रूप में केवल एक शब्द, अंक, नाम अथवा वाक्यांश आदि ही लिखना होता है। जैसे—

(1) रीतिकाल के दो कवियों का नाम लिखो।
(2) जल के तीन पर्यायवाची लिखो।
(3) 'आँखे बिछाना' मुहावरे का अर्थ लिखें।
(4) 'दशानन' किस प्रकार का समास है।
(5) 'रात' का विपरीतार्थक लिखिए।

निर्देश (1)—निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द उनके सामने लिखो—

शब्द	**विलोम**
(अ) श्वेत	(अ)
(ब) दिन	(ब)
(स) बुद्धिमान्	(स)
(द) परिश्रमी	(द)

(2) निम्नलिखित शब्दों के 4-4 पर्यायवाची शब्द लिखो—

सूर्य :—

गंगा :—

पुत्र :—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

कमल :—

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(3) **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

लोहे के चने चबाना, दांत खट्टे कर देना, ऊंट के मुंह में जीरा, नाक भौं चिढ़ाना।

आपूर्ति प्रश्नों की विशेषताएं

आपूर्ति प्रश्नों की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं–

(1) प्रश्नों की रचना करना अत्यन्त सरल है।

(2) प्रश्नों का उत्तर अनुमान से देना सम्भव नहीं होता है।

(3) इस प्रकार के प्रश्नों का अंकन सरल होता है।

(4) प्रश्नों द्वारा ज्ञान उद्देश्य के मापन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।

(5) इस प्रकार के प्रश्नों से प्रत्यास्मरण का अभ्यास होता है।

आपूर्ति प्रश्नों की रचना में सावधानियां

1. प्रश्न ऐसे होने चाहिएं, जिनका केवल एक ही सही उत्तर हो।
2. प्रश्नों तथा वाक्यों की भाषा सरल तथा स्पष्ट होनी चाहिए।
3. परीक्षण में पूर्ति प्रश्नों की संख्या कुल प्रश्नों के लगभग 10% से अधिक नहीं होनी चाहिए।
4. सामान्य प्रत्यास्मरण प्रकार के प्रत्येक प्रश्न में केवल एक ही तथ्य को पूछना चाहिए।
5. रिक्त स्थान पूर्ति प्रश्नों में केवल एक ही रिक्त स्थान की पूर्ति करानी चाहिए।

2. चयन प्रश्न (Selection Type Question)

इस प्रकार के प्रश्नों में प्रश्न के अनेक संभावित उत्तर दिये जाते हैं तथा छात्रों से सही उत्तर का चयन करने के लिए कहा जाता है। इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों की पहचान करने की योग्यता का मापन होता है। इसलिए इन्हें अभिज्ञान प्रश्न भी कहते हैं। इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों को अनुमान से भी उत्तर देना होता है। प्रश्नों की प्रकृति के आधार पर चयन प्रश्नों को निम्न पाँच भागों में बाँटा जा सकता है–सत्यासत्य प्रश्न, बहुविकल्प प्रश्न, मिलान प्रश्न, वर्गीकरण प्रश्न, व्यवस्थीकरण प्रश्न।

1. सत्यासत्य प्रश्न–इस प्रकार के प्रश्नों में कुछ कथन दिये जाते हैं। इनमें से कुछ कथन सत्य होते हैं तथा कुछ असत्य होते हैं। छात्रों को यह देखना होता है कि कौन सा कथन सत्य है तथा कौन सा असत्य है। इस प्रकार से छात्र प्रत्येक कथन के सन्दर्भ में सत्य अथवा असत्य विकल्प में किसी एक का चयन करता है। जैसे

(1) 26 जनवरी हमारा स्वतन्त्रता दिवस है। सत्य/असत्य

(2) बिहारी शृंगार रस के कवि हैं। सत्य/असत्य

(3) सूरदास ने राम की बाल लीला का चित्रण किया है। सत्य/असत्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(4) कश्मीर शब्द व्याकरण की दृष्टि से संज्ञा है। सत्य/असत्य

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. बहुविकल्प प्रश्न—इस प्रकार के प्रश्नों में एक ही प्रश्न के अनेक उत्तर दिए जाते हैं। इनमें से केवल एक ही उत्तर सही होता है तथा शेष उत्तर ग़लत होते हैं। छात्रों को दिए गए उत्तर में से सही का चयन करना होता है। दिए गए उत्तरों की संख्या, 3, 4, या 5 कुछ भी हो सकती है। जैसे—

1. 'काला' शब्द व्याकरण की दृष्टि से है

(1) संज्ञा (2) सर्वनाम

(3) विशेषण (4) क्रिया विशेषण

2. निम्नलिखित में से कौन सा कवि भक्तिकाल से सम्बन्धित है—

(1) जयशंकर प्रसाद (2) महादेवी वर्मा

(3) मीरा (4) निराला

3. निम्नलिखित शब्दों में से शुद्ध कौन सा है—

(1) इतिहासिक (2) ऐतिहासिक

(3) एतिहासिक (4) ऐतीहासिक

3. मिलान प्रश्न—इस प्रकार के प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न के दो भाग होते हैं। इन दोनों भागों को दो अलग-अलग स्तम्भों में लिखा जाता है। प्रश्न के एक भाग की विभिन्न प्रविष्टियों का प्रश्न के दूसरे भाग की प्रविष्टियों से मिलान करना होता है परन्तु दूसरे भाग में लिखे भाग को पहले स्तम्भ में लिखे भागों के क्रम में नहीं लिखा जाता है। छात्रों को पहले स्तम्भ में लिखी प्रविष्टियों के लिए दूसरे स्तम्भ से सही प्रविष्टि को छांटना होता है। जैसे—

प्रथम स्तम्भ	**दूसरा स्तम्भ**
1. जम्मू	1. विशेषण
2. जल्दी-जल्दी	2. जाति-वाचक संज्ञा
3. नीला	3. व्यक्ति-वाचक संज्ञा
4. गीता	4. भाव वाचक संज्ञा
5. कौन	5. क्रिया विशेषण
6. काली	6. सर्वनाम

4. वर्गीकरण प्रश्न—इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों के सम्मुख शब्दों का एक ऐसा समूह प्रस्तुत किया जाता है जिससे एक को छोड़कर सभी शब्द एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा क्रियाओं से सम्बन्धित होते हैं। छात्रों को उस एक असंगत का चयन करना होता है। जैसे—

1. तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, प्रेमचन्द
2. पानी, नीर, जल, पावक
3. जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, घनानन्द
4. जम्मू, गीता, मोहन, धीरे-धीरे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. व्यवस्थीकरण प्रश्न—इसमें कई शब्दों, कथनों या वाक्यांशों को अव्यवस्थित रूप में रख दिया जाता है और छात्रों को उन शब्दों, कथनों या वाक्यांशों को व्यवस्थित रूप में रखने को कहा जाता है। इससे छात्रों के विषय एवं भाषा ज्ञान की परीक्षा की जाती है। जैसे—नीचे दिए शब्दों को उचित क्रम में रखिए।

(1) खरगोश को खिलाओ, काटकर को गाजर।

(2) वाक्य, शब्द, अनुच्छेद, निबन्ध

चयन प्रश्नों की विशेषताएं

(1) बोध उद्देश्य के मापन के लिए चयन प्रश्न अधिक उपयुक्त है।

(2) चयन प्रश्न विभेदीकरण की योग्यता के मापन के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

चयन प्रश्नों की रचना में सावधानियां—

(1) चयन प्रश्नों में साधारणतः चार या अधिक विकल्पों का प्रयोग करना चाहिए जिससे छात्रों द्वारा अनुमान से प्रश्नों का उत्तर देने की सम्भावना कम हो जाए।

(2) दिए गए विकल्पों में समरूपता होनी चाहिए जिससे छात्रों को सही उत्तर के सम्बन्ध में कोई संकेत न मिल सके।

(3) मिलान प्रश्नों में दूसरे स्तम्भ में पहले स्तम्भ की अपेक्षा कुछ अधिक प्रविष्टियां होनी चाहिएं

(4) चयन प्रश्नों के निर्देश सरल, स्पष्ट एवं बोधगम्य भाषा में लिखने चाहिएं।

लघु उत्तर परीक्षण

जिन प्रश्नों का उत्तर बहुत छोटा अर्थात् एक, दो, तीन या चार पंक्तियों में देना होता है, उन्हें लघु उत्तर कहा जाता है। यह निबन्धात्मक परीक्षा का ही परिष्कृत रूप है। इसमें निबन्धात्मक परीक्षाओं की अपेक्षा अधिक प्रश्न पूछे जा सकते हैं। अतः यह पाठ्य क्रम के अधिक अंश से सम्बन्धित ज्ञान की जाँच करती है। इनके उत्तर भी अपेक्षाकृति अधिक निश्चित होते हैं। इनमें छात्रों की बोध शक्ति तथा ज्ञान की जाँच भी होती है। ये छात्रों की वाक्य रचना की योग्यता की जाँच करने में सहायक हैं, परन्तु ये न तो छात्रों की तर्क, विचार आदि मानसिक शक्तियों की जाँच कर सकती हैं और न ही भाषा, शैली एवं विचाराभिव्यक्ति की जाँच भी पूरी तरह से करने में सक्षम होती है।

लघु प्रश्नों के कुछ उदाहरण—

(1) कबीरदास की भाषा शैली की कोई चार विशेषताएं बताओ ?

(2) मुहावरे व लोकोक्तियां किसे कहते हैं।

(3) अनुप्रास अलंकार किसे कहते है ? एक उदाहरण दीजिए।

इस प्रकार हिन्दी भाषा के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाँच करने के लिए हिन्दी के प्रश्न-पत्र में निबन्धात्मक, लघु उत्तर एवं वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों का समावेश कर प्रश्न-पत्र का निर्माण करना चाहिए जिससे छात्रों की भाषा सम्बन्धी सभी योग्यताओं की सही-सही जाँच हो सके।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मौखिक परीक्षा

(VERBAL TEST)

उच्चारण की शुद्धता के लिए, ग्राह्य बुद्धि की परीक्षा हेतु तथा मौखिक आत्म प्रकाशन की दृष्टि से हिन्दी मातृभाषा के मूल्यांकन में मौखिक परीक्षा का अन्यन्त महत्त्व है। मौखिक रूप से छात्रों से प्रश्न पूछकर उनके उत्तर भी मौखिक रूप से ही देने को कहा जाता है। इसे ही मौखिक परीक्षा कहते हैं। हिन्दी भाषा के मूल्यांकन में मौखिक परीक्षा का बहुत महत्त्व है क्योंकि हिन्दी भाषा शिक्षण में पढ़ने-लिखने की योग्यता का विकास करने से पहले छात्रों की सुनकर, विचार ग्रहण करने और बोलकर विचारों को अभिव्यक्त करने के योग्य बनाना भाषा की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। हम दैनिक जीवन में भी पढ़ने-लिखने से अधिक कार्य सुनने और बोलने का करते हैं। बोलने की योग्यता, लिखने की योग्यता का विकास भी होता है। मौखिक रचना ही लिखित रचना का आधार है। अतः हिन्दी के मूल्यांकन में मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच करना भी उतना ही आवश्यक है जितना लेखन अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच करना।

मौखिक परीक्षा में अध्यापक छात्रों में होने वाले मौखिक अभिव्यक्ति सम्बन्धी अपेक्षित व्यवहार-परिवर्तनों व दिए गए ज्ञान के आधार पर प्रश्नों का निर्माण का लेता है और एक-एक छात्र से कुछ प्रश्नों का उत्तर पूछता है। छात्रों के उत्तर देने के ढंग के आधार पर उनका मूल्यांकन कर लिया जाता है। मौखिक परीक्षा के द्वारा ही छात्रों की शुद्ध उच्चारण, उचित गति, हाव-भाव, स्वर के उतार-चढ़ाव एवं उचित स्वराघात के साथ बोलने की योग्यता की जाँच की जाती है। वाचन सम्बन्धी योग्यता की जाँच मौखिक परीक्षा द्वारा ही की जाती है। अध्यापक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का मौखिक रूप से उत्तर देने पर उनकी सुनने की योग्यता की जाँच भी हो सकती है।

प्रचलन में प्राथमिक कक्षाओं में ही छात्रों की मौखिक परीक्षा ली जाती है। इसके बाद तो केवल लिखित परीक्षा ही ली जाती है। यही कारण है कि बी. ए. व एम.ए. करने के बाद यदि छात्र बी.एड. करने आते है तो पढ़ाना तो छोड़िए, आरम्भ में घबराहट के मारे उनसे ठीक से बोला तक नहीं जाता। इसीलिए मौखिक परीक्षा का थोड़ा-सा भाग प्रत्येक कक्षा में अवश्य होना चाहिए।

इस परीक्षा की सबसे बड़ी कमज़ोरी यह है कि इसमें एक-एक छात्र से अलग-अलग प्रश्न पूछने के कारण समय अधिक लगता है। लेकिन इसकी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक कक्षा में लिखित परीक्षण के साथ-साथ मौखिक परीक्षा भी अवश्य ली जानी चाहिए।

प्रायोगिक परीक्षा

अधिकतर प्रायोगिक परीक्षा विज्ञान, भूगोल, मनोविज्ञान तथा हस्त कौशलों से सम्बन्धित विषयों की परीक्षा लेने में ही प्रयुक्त की जाती हैं, अन्य विषयों में नहीं। भाषा भी इन्हीं विषयों की तरह एक कौशल है। अतः जिस प्रकार अन्य विषयों की कुशलता का मूल्यांकन करने के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिए प्रायोगिक परीक्षा ली जाती है, उसी प्रकार भाषा में विभिन्न कौशलों की जांच करने के लिए प्रायोगिक परीक्षा अवश्य ली जानी चाहिए।

हिन्दी भाषा में सस्वर पठन, कविता पाठ, भाषण, वाद-विवाद, सुलेख, निबन्ध-लेखन आदि क्रियाओं द्वारा प्रायोगिक परीक्षा का आयोजन कर छात्रों की भाषा सम्बन्धी विभिन्न योग्यताओं की जाँच की जा सकती है। हां, स्वतन्त्र रूप में यह परीक्षा अपने आप में पर्याप्त नहीं हैं। लिखित एवं मौखिक परीक्षा के साथ इसका प्रयोग किया जा सकता है।

(ख) अवलोकन या पर्यवेक्षण—किसी भी विषय के शिक्षण के लिए जिन उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है उनकी उपलब्धि व्यवहार परिवर्तन के रूप में मापी जाती है। परीक्षा के द्वारा तो इस उपलब्धि का आंशिक मूल्यांकन ही हो पाता है। भाषा-शिक्षण सम्बन्धी उपलब्धियों का सही और विस्तृत मूल्यांकन तो छात्र के दैनिक कार्य-कलापों एवं व्यवहार को देखकर ही किया जाता है।

छात्रों के दैनिक व्यवहार एवं क्रियाओं को देखकर उनका लेखा-जोखा रखने की क्रिया को ही पर्यवेक्षण या अवलोकन कहा जाता है। कक्षा-शिक्षण के समय कक्षा आन्तक्रिया में छात्र की सक्रियता, स्कूल के विभिन्न कार्यक्रमों में आयोजित भाषा सम्बन्धी क्रियाओं में छात्र की सहभागिता एवं प्रदर्शन, छात्र के कार्य करने के ढंग व सभी अध्यापकों, छात्रों व अन्य कर्मियों आदि के साथ वार्तालाप आदि का अवलोकन करते हुए छात्रों की भाषागत योग्यताओं के विकास व उपलब्धियों की जाँच की जा सकती है।

(ग) संचित अभिलेख पत्र—छात्रों के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों में आए व्यवहार परिवर्तनों एवं उपलब्धियों को एक ही प्रपत्र में लिखकर सुरक्षित रखा जाता है, इसी को संचित अभिलेख पत्र कहा जाता है। इसकी सहायता से छात्रों के क्रमिक विकास एवं व्यवहार-परिवर्तनों की जाँच की जाती है। क्योंकि इसमें छात्र के विद्यालय प्रवेश से लेकर विद्यालय छोड़ने तक की छात्र की स्थिति, मानसिक व बौद्धिक विकास एवं शैक्षिक उपलब्धियों से सम्बन्धित समय-समय पर किए मूल्यांकन के परिणामों का पूर्ण लेखा-जोखा रखा जाता है। छात्र का प्रारम्भिक स्तर क्या था, शिक्षणोपरान्त उसमें क्या अन्तर आया है, प्रगति हुई है या नहीं, इन सभी बातों की जानकारी संचित अभिलेख पत्र द्वारा हो जाती है।

(घ) गृह-कार्य—कक्षा-शिक्षण के उपरान्त पढ़ाए गए विषय का अभ्यास करने के लिए अध्यापक द्वारा छात्रों को घर से करके लाने के लिए कुछ प्रश्न दिए जाते हैं। इसे ही गृह-कार्य कहते हैं। गृह-कार्य के रूप में लिखे गए प्रश्नों के उत्तर पाठ के साथ, शब्दों का वाक्यों में प्रयोग, विषय वस्तु को सुनाने आदि क्रियाओं के आधार पर भी छात्र की भाषागत योग्यताओं के विकास की जांच की जाती है। अतः मूल्यांकन में गृह-कार्य भी एक साधन का कार्य करता है।

(ङ) निर्धारण मापनी—छात्र की भाषागत उपलब्धि किस स्तर की है। इस बात का निर्धारण करने के लिए निर्धारण मापक का प्रयोग किया जाता है। निर्धारण मापक की तीन, पाँच या सात श्रेणियां बनाकर छात्र की योग्यता व उपलब्धि को किसी भी श्रेणी विशेष में रखा जाता है। जैसे—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

योग्यता व उपलब्धियां	श्रेणियाँ				
	अत्याधिक	अधिक	सामान्य	कम	बहुत कम
1. वाचन कौशल में निपुणता है		√			
2. मौखिक कौशल में निपुणता है		√			
3. लेखन कौशल में निपुणता है	√				
4. अक्षर-विन्यास की शुद्धता			√		
5. साहित्यिक क्रियाओं में भाग लेता है	√				
6. अभिव्यक्ति में मौलिकता है।			√		

इस प्रकार उपयुक्त विधियों व साधनों की सहायता से शिक्षण क्रिया के परिणामस्वरूप छात्रों में आए व्यावहारिक परिवर्तनों की जाँच की जा सकती है। हिन्दी-शिक्षण के उद्देश्यों एवं विषय वस्तु की प्रकृति के आधार पर अलग-अलग विधियों के प्रयोग द्वारा उचित रूप से मूल्यांकन कार्य सम्पन्न किया जा सकता है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षा के दोष—वस्तुगत परीक्षा भी दोषमुक्त नहीं है। ये दोष निम्नलिखित हैं—

(1) वस्तुनिष्ठ परीक्षा अनुमान (Guessing) को प्रोत्साहत देती है।

(2) केवल ज्ञान के कुछ अंशों की परख होती है, सम्पूर्ण की नहीं।

(3) मौलिकता, कल्पना और आत्माभिव्यक्ति के लिए कोई अवसर नहीं देती।

(4) इन परीक्षाओं का निदानात्मक उपयोग (diagnostic use) नहीं है।

(5) भाषा, शैली, तर्क, विचार आदि की परीक्षा नहीं हो पाती।

उत्तम परीक्षा प्रणाली—मौखिक तथा लिखित निबन्धात्मक, लघु उत्तर रूप तथा वस्तुनिष्ठ) दोनों ही प्रकार की परीक्षा दोष युक्त है। लिखित परीक्षा में निबन्धात्मक, लघु उत्तर रूप तथा वस्तुनिष्ठ तीनों ही प्रकार की परीक्षाएं किसी न किसी दोष से युक्त हैं। अतः किसी एक को अपनाना अनुचित है। जो ज्ञान निबन्धात्मक परीक्षा से नहीं जांचा जा सकता उसे हम मौखिक परीक्षा से तथा वस्तुनिष्ठ परख से जांच सकते हैं। परीक्षा का मूल उद्देश्य बच्चे के द्वारा अर्जित ज्ञान की परख करना होता है कि उसने कितना सीखा और नहीं सीखा तो किन कारणों से नहीं सीखा ? अतः परीक्षा प्रणाली विषय शिक्षण के उद्देश्यों के अनुकूल होनी चाहिए। भाषा की शिक्षा का मूल उद्देश्य यही होता है कि बच्चे दूसरों के मौखिक अथवा लिखित भावों को समझ सकें तथा अपने विचार दूसरों के सामने लिखित अथवा मौखिक रूप से प्रकट कर सकें। भाषा की परीक्षा लेते समय हमें इन उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

बच्चों की ग्रहण शक्ति तथा अभिव्यक्त करने की शक्ति को परखने के लिए मौखिक तथा निबन्धात्मक परीक्षाएं ही उपयुक्त हैं। किन्तु निबन्धात्मक परीक्षाओं से पूरे पाठ्य क्रम की परीक्षा नहीं हो पाती। इसके लिए लघु उत्तर रूप तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं को अपनाना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
चाहिए इनसे कम समय में अधिक ज्ञान की परीक्षा हो जाती है। इसलिए मौखिक, निबन्धात्मक, लघु उत्तर रूप तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं के योग से बनी एक दोषमुक्त प्रणाली का अनुसरण किया जाए। तथा बच्चों की दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक परीक्षा का भी आयोजन किया जाए। भाषा अध्यापक गृह कार्य के आधार पर भी बच्चों के ज्ञान की जांच कर सकता है। इस प्रकार बाह्य परीक्षा (External examination) के साथ ही आन्तरिक परीक्षा (Internal examination) को भी महत्त्व दिया जाए।

परीक्षा का महत्त्व
(IMPORTANCE OF EXAMINATION)

(1) प्रासंगिक महत्त्व
(2) प्रशासनिक महत्त्व
(3) निदानात्मक महत्त्व
(4) भावी जीवन की झलक परीक्षा ही देती है।

अच्छे मूल्यांकन की विशेषताएं व आधार
(QUALITIES & CRITERIA OF A GOOD EVALUATION)

मूल्यांकन शिक्षा प्रक्रिया का अति आवश्यक अंग है। शिक्षा प्रक्रिया के विभिन्न चरणों में छात्रों की विभिन्न योग्यताओं एवं उपलब्धि का मूल्यांकन करना होता है। मूल्यांकन के लिए कुछ उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। किसी भी मूल्यांकन में कुछ मूलभूत विशेषताओं का होना आवश्यक है। इसलिए मूल्यांकन विधि का चयन करते समय इन विशेषताओं का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक हैं। ये विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

(1) वैधता (Validity)
(2) संतुलन (Balance)
(3) सक्षमता (Efficiency)
(4) वस्तुनिष्ठता (Objectivity)
(5) विशिष्टता (Specificity)
(6) कठिनता (Difficulty)
(7) विभेदकता (Discrimination)
(8) विश्वसनीयता (Reliability)
(9) न्यायमुक्तता (Fairness)
(10) गतिशीलता (Speededness)
(11) व्यावहारिकता (Practicability)
(12) प्रमापीकरण (Standardization)
(13) व्यापकता (Comprehensiveness)

(1) वैधता परीक्षण की यह विशेषता बताती है कि कोई दिया गया परीक्षण मापन के उद्देश्यों को किस सीमा तक पूरा करता है। यदि कोई परीक्षण मापन के उद्देश्य को पूर्ण करता है तो उस परीक्षण को वैध परीक्षण कहा जाता है तथा परीक्षण की इस विशेषता को वैधता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहा जाता है। हिन्दी-शिक्षण के जो निर्धारित उद्देश्य हैं, हम चाहते हैं कि उनकी पूर्ति होनी चाहिए। यही 'चाहिए' वैधता है वैधता का अभिप्राय है—'सापेक्षता' अर्थात् जब परीक्षा द्वारा अभीष्ट लक्ष्य का मापन होता है तभी उसे वैध कहा जा सकता है। जैसे भापा की 'निष्पत्ति परीक्षा' (Achievement Test) तभी वैध मानी जाएगी जब उसके द्वारा होने वाला मापन भाषा की निष्पत्ति का प्रतीक हो, न कि अंग्रेजी या इतिहास सम्बन्धी योग्यता का। मूल्यांकन के बाद यह पता चलना चाहिए कि मूल्यांकन जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया गया है उन उद्देश्यों की पूर्ति हुई है अर्थात् मूल्यांकन इस चीज़ को मापता है जिसे उसे मापना चाहिए। अमुक कक्षा के छात्रों को हिन्दी में अमुक चीज़ें आनी चाहिएं। ऐसा निर्धारित किया गया है, मान लीजिये। मूल्यांकन के बाद आप सोचते हैं—क्या मूल्यांकन से हमें यह पता चलता है कि उस कक्षा के छात्र वे चीजें जानते है ? घड़ी के उदाहरण में घड़ी का पीछे या आगे न चलकर ठीक-ठीक समय देना उसकी वैधता है अर्थात् भाररतीय मानक समय के अनुसार यदि सुवह के 10 बजे हैं तो घड़ी में भी ठीक 10 ही वजने चाहिएं न एक मिनट आगे न एक मिनट पीछे। तभी घड़ी के समय को वैध माना जा सकता है।

(2) संतुलन—परीक्षण की यह विशेपता उसमें सम्मिलित किये गये प्रश्न समस्त पाठ्यवस्तु में ठीक से वितरित है तो परीक्षण को एक सन्तुलित परीक्षण कहा जाता है।

(3) सक्षमता परीक्षण का यह गुण परीक्षण की रचना करने में, प्रशासन करने में, परीक्षण का अंकन करने में तथा परीक्षार्थी के द्वारा परीक्षण उत्तर देने में लगे समय से सम्बन्धित होता है। यदि परीक्षण कम समय में तैयार किया जा सकता है, प्रशासित किया जा सकता है, अंकन किया जा सकता है तो परीक्षण एक सक्षम परीक्षण कहा जाता है।

(4) वस्तुनिष्ठता—परीक्षण का यह गुण इसके अंकन से सम्बन्धित होता है। यदि परीक्षण में सम्मिलित किये गए प्रश्न स्पष्ट होते हैं तथा उनका एक ही निश्चित उत्तर होता है, तो परीक्षण कर अंकन करना सरल तथा त्रुटिरहित होने के साथ-साथ परीक्षक की व्यक्तिनिष्ठता से मुक्त हो जाता है। ऐसे परीक्षण को वस्तुनिष्ठ परीक्षण कहा जाता है। यह मूल्यांकन का वह गुण है जिससे विपय वस्तु की ही जाँच होती है, ऐसे मूल्यांकन में व्यक्तिगत परछाईं (प्रभाव) का सर्वथा अभाव होता है अर्थात् शिक्षक या परीक्षक की व्यक्तिगत रुचि-अरुचि, पसन्द-नापसन्द आदि पक्षपातपूर्ण खैयों से मूल्यांकन को दूर रखा जाता है। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर तैयार कर लिए जाते हैं। मूल्यांकन के बाद इन्हीं उत्तरो के आधार पर उत्तर-पुस्तिकाओं की जाँच की जाती है। इस तरह मूल्यांकन शिक्षक अथवा परीक्षक के व्यक्तिगत विचारों के प्रभाव से बच जाता है। वस्तुनिष्ठता मूल्यांकन का महत्त्वपूर्ण गुण है। एक अच्छी परीक्षा वस्तुनिष्ठ होती है वस्तुनिष्ठता में व्यक्ति निष्ठ (Subjective) तत्वों का लोप होता है। एक वस्तुनिष्ठ परीक्षा उसे कहते हैं जिसमें परीक्षा लेने वाले के व्यक्त्त्र उसकी रुचियों तथा पक्षपातों के लिए कोई स्थान न हो। छात्रों का मूल्यांकन निष्पक्ष भाव से होता है।

(5) विशिष्टता परीक्षण की यह विशेपता वस्तुनिष्ठता की पूरक होती है। यदि परीक्षण इस प्रकार का है कि परीक्षण से अनभिज्ञ छात्र कम अंक पाते हैं तथा अन्य छात्र अधिक अंक पाते हैं तो परीक्षण को विशिष्ट परीक्षण कहा जाता है।

(6) कठिनता—परीक्षण की यह विशेपता परीक्षण में सम्मिलित किये गये प्रश्नों के कठिनाई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्तर से होती है। यदि परीक्षण छात्रों को दृष्टि से न तो अत्याधिक कठिन और न ही अत्याधिक सरल है तो उसे उपयुक्त सरलता वाला प्रश्न कहा जाता है। अत्यधिक सरल या अत्यधिक कठिन परीक्षण ठीक नहीं माने जाते हैं।

(7) विभेदकता—परीक्षण की यह विशेषता उसके द्वारा श्रेष्ठ व कमज़ोर छात्रों में ठीक ढंग से अन्तर स्पष्ट करने से सम्बन्धित होती है। यदि परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों का वितरण काफी बड़ा होता है, विशेषकर ऐसे छात्रों के लिए, जो परीक्षण के द्वारा मापी जा रही योग्यता में भिन्न-भिन्न होते हैं, तो परीक्षण को एक विभेदक परीक्षण कहा जाता है। एक अच्छी परीक्षा की विशेषता है उसका विभेदकारी होना। ऐसी परीक्षा के द्वारा उच्च और निम्न योग्यता वाले विद्यार्थियों में विभेद हो जाता है। परीक्षा विभेदकारी उसी सूरत में होती है जब कि उसके सभी प्रश्न विभेदकारी हों। यदि किसी परीक्षा में ऊँची योग्यता वाले विद्यार्थी बुरा कहते हैं और कम योग्यता वाले अच्छा, ऐसी परीक्षा को नकारात्मक विभेदकारी कहेंगे। इस प्रकार की परीक्षा त्याज्य है। प्रश्न-पत्र के सभी प्रश्न समान काठिन्य के होने चाहिएं। ऐसा न हो कि कोई प्रश्न बहुत ही मुश्किल हो तथा कोई बहुत ही आसान अर्थात् प्रश्न-पत्र न तो बहुत कठिन होना चाहियें और न ही बहुत सरल। इससे सभी स्तर के बच्चें मूल्यांकन में रूचि ले सकेंगे अन्यथा मूल्यांकन मात्र अत्यधिक मेधावी छात्रों तक ही सीमित होकर रह जायेगा।

(8) विश्वसनीयता—परीक्षण की यह विशेषता परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों की विश्वसनीयता को बताती है। यदि परिक्षण किसी व्यक्ति को बार-बार एक ही प्राप्तांक प्रदान करता है तो परीक्षण को विश्वसनीय परीक्षण कहा जाता है। एक अच्छी परीक्षा विश्वसनीय होती है। उसका तात्पर्य यह है कि परीक्षा द्वारा होने वाला मापन प्रायः अविचल (consistent) होता है। विश्वसनीयता का अर्थ है अचलता (consistency)। यदि परीक्षा विश्वसनीय है तो उसमें बालकों द्वारा प्राप्त किए जाने वाले अंक प्रायः एक से रहेंगे। हो सकता है कि परिपक्वता एवं अभ्यास आदि तत्त्वों के कारण उन अंकों में थोड़ा सा अन्तर हो जाए, परन्तु यह विचलन नगण्य होता है। इस प्रकार विश्वसनीयता का अर्थ है जिसके ऊपर आप भरोसा कर सकें।

(9) न्यायमुक्तता—परीक्षण की यह विशेषता छात्रों की अपनी सही योग्यता के प्रदर्शन करने के अवसरों के प्राप्त करने से सम्बन्धित होती है। यदि परीक्षण के द्वारा सभी छात्रों को अपनी वास्तविक योग्यता के प्रदर्शन के उपयुक्त तथा समान अवसर प्राप्त होते हैं तो परीक्षण को न्याययुक्त परीक्षण कहा जाता है।

(10) गतिशीलता—परीक्षण की यह विशेषता परीक्षण में सम्मिलित किये गये प्रश्नों की संख्या से सम्बन्ध रखती है। यदि परीक्षण में प्रश्नों की संख्या इतनी है कि दिये गए समय में छात्र प्रश्नों को पूरा कर लेते हैं तथा उनके काम करने की गति का कोई अवांछित प्रभाव नहीं पड़ता है तो प्रीक्षण को उचित परिक्षण माना जाता है।

(11) व्यावहारिकता—परीक्षण की यह विशेषता परीक्षण के व्यावहारिक पक्ष से सम्बन्ध रखती है। इसके अन्तर्गत प्रशासन में सुगमता। अंकन में सुगमता व्याख्या में सुगमता तथा अल्पमूल्य में उपलब्धता जैसे कारक आते हैं। अच्छी परीक्षा उपयोगी होती है साथ ही उसमें सरलतापूर्वक व्यवहार में लाए जाने का गुण भी होना चाहिए।

(12) प्रमापीकरण—परीक्षण की यह विशेषता परीक्षण की रचना विधि से सम्बन्धित है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यदि परीक्षण की रचना पद विश्लेषण के आधार पर की गई है तथा परीक्षण के मानक उपलब्ध होते हैं तो परीक्षण को प्रमापीकृत परीक्षण कहते हैं। मानक वे संदर्भ बिन्दु होते हैं जिनके आधार पर परीक्षण पर प्राप्त अंको की व्याख्या की जाती है। यदि परीक्षण के लिए मानक उपलब्ध हैं तो प्राप्तांकों की व्याख्या सरल हो जाती है।

(13) व्यापकता– व्यापकता से तात्पर्य है—मापित होने वाली चल-राशि (variables) में अधिक से अधिक तत्त्वों को सम्मिलित करना। उदाहरण स्वरूप यदि भाषा की निष्पत्ति परीक्षा द्वारा व्यापक रूप से पाठ्यवस्तु के अधिक से अधिक बहलु का मापन हो जाता है तो उसे अच्छी परीक्षा की श्रेणी में गिना जाएगा। कुछ परीक्षक मूल्यांकन करते समय सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से प्रश्न नहीं पूछते, कुछ महत्त्वपूर्ण अंशों से ही प्रश्न पूछते हैं जो सर्वथा गलत है। सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछने चाहिएं ताकि छात्र पाठ्यक्रम के किसी हिस्से अथवा अंश को छोड़ न सके। यदि उस पेपर को दूसरी जगह के शिक्षक से भी यदि प्रश्न पत्र तैयार करवाया जाए तो वह भी अपने अनुभव के आधार पर ऐसा प्रश्न पत्र तैयार करें जो पहली जगह या अन्यत्र किसी भी जगह के शिक्षक से तैयार किये गए प्रश्न-पत्र से मिलते-जुलते हों प्रश्न-पत्र में ऐसे गुण का पाया जाना ही मूल्यांकन की व्यापकता कहलाती है।

प्रश्नावली

1. वर्तमान हिन्दी परीक्षा प्रणाली की आलोचना करते हुए सुधार के उपाय बताइए।
2. परीक्षा के मुख्य उद्देश्य क्या हैं ? परीक्षा लेना क्यों आवश्यक है ? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।
3. वस्तुनिष्ठ परीक्षा क्या है ? अपने छात्रों के हिन्दी भाषा के सम्पूर्ण अंगों की परख करने के लिए आप किन-किन परीक्षणों को अपनायेगें ?
4. भाषा के विविध अंगों की जांच करने के लिए आप क्या करेंगे ? क्या निबन्धात्मक परीक्षण इसके लिए उपयुक्त है ? तर्क पूर्ण उत्तर दीजिए।
5. हिन्दी भाषा जैसे विषय में नवीन प्रकार की वस्तुनिष्ठ परीक्षा के गुण दोषों की व्याख्या कीजिए। उचित उदाहरण दीजिए।
6. हिन्दी के प्रचार में विभिन्न हिन्दी संस्थाओं की परीक्षाओं का क्या योगदान है ? आप उनकी वर्तमान परीक्षा प्रणाली में सुधार के लिए क्या उपाय करेंगे ?
7. अच्छे मूल्यांकन के क्या गुण होने चाहिएं विस्तार से लिखिए।
8. हिन्दी का प्रश्न-पत्र बनाते समय आप किन बातों का ध्यान रखेंगे ? हिन्दी परीक्षा में मूल्यांकन के विभिन्न गुण कैसे लाए जा सकते हैं ?
9. निम्नलिखत पर टिप्पणी लिखिए :
   (1) बैधता (2) विश्वसनीयता (3) वस्तुनिष्ठता (4) व्यापकता
10. हिन्दी की नवीन मूल्यांकन तकनीके कौन-कौन सी हैं ? विस्तार से लिखिए।

□□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय — 12

अशुद्धि विश्लेषण व उपचारात्मक शिक्षण

(ERROR ANALYSIS & REMEDIAL TEACHING)

अशुद्धि विश्लेषण
(ERROR ANALYSIS)

बच्चे ने जो भी या जिस भी प्रकार की अशुद्धि की है उसके कारणों का विशलेप करना ही अशुद्धि विश्लेषण कहलाता है। निदानात्मक परीक्षाओं द्वारा हम जान सकते हैं कि बच्चा कौन सी अशुद्धि करता है, वह उच्चारण में अशुद्धियां करता है या वर्तनी सम्बन्धी। हो सकता है बच्चा विराम चिन्हों की अशुद्धि करता हो या वाक्य विन्यास की अशुद्धियां। अशुद्धि विश्लेपण में बच्चे द्वारा किस प्रकार की अशुद्धियां की हैं उनकी जांच परख कर उनके कारणों को जानने की कोशिश की जाती है। इस प्रकार हम कह सकते है कि बच्चे ने जो भी अशुद्धियां की है उनका विश्लेषण कारण या निदान ही अशुद्धि विश्लेगण है।

अशुद्धियों के कारण—बच्चे उच्चारण या लेखन में जो अशुद्धिया करते हैं वो इस प्रकार हो सकती हैं—

(1) वर्णों के शुद्ध उच्चारण ज्ञान का अभाव

(2) वातावरण का प्रभाव

(3) अध्यापक का अशुद्ध उच्चारण

(4) अतिशीघ्रता

(5) असावधानी

(6) प्रयत्नलाघव

(7) शारीरिक दोप

(8) मनोवैज्ञानिक कारण

(9) स्थानीय प्रभाव

(10) प्रान्तीय प्रभाव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(11) विदेशी भाषा का प्रभाव

(12) दोषपूर्ण आदतें

लेखन सम्बन्धी अशुद्धियों के कारण निम्नलिखित हो सकते है।

(1) लिपि का अपूर्णज्ञान

(2) अशुद्ध उच्चारण

(3) असावधानी

(4) मात्राओं का अधूरा ज्ञान

(5) अतिशीघ्रता

(6) व्याकारण का अधूरा ज्ञान

(7) अध्यापक की अयोग्यता

(8) अध्यापक द्वारा मार्गदर्शन का अभाव

(9) लेखन कार्य का अभाव

(10) संशोधन अभ्यास का अभाव

(11) सांवेगिक कारण

(12) बौद्धिक न्यूनता

(13) शारीरिक दोष

अशुद्धियां छात्रों की अभिव्यक्ति को प्रभावहीन बना देती हैं। इसलिए अध्यापक का कर्त्तव्य है कि बच्चों से होने वाली अशुद्धियों और उनके कारणों का विश्लेपण करे।

यों तो बच्चों की अशुद्धियों का विश्लेपण प्राचीन काल में भी किया जाता था। सबसे पहले गुरुजन बच्चे अशुद्धियों का पता लगाने के लिए परीक्षा लेते थे और जहां बच्चे अशुद्धि करते थे वहां क्यों और कैसे पूछ कर अशुद्धि का कारण पता लगाते थे। या जिस तरह की बच्चे ने अशुद्धियां की हैं उनका विश्लेषण करते थे। पर यह तरीका केवल निरीक्षण और प्रश्नातर तक ही सीमित था। आज बच्चों की अशुद्धियों के कारणों का पता लगाने के लिए वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए बच्चों लेखन सम्बन्धी अशुद्धियों को लीजिए। एक स्थिति लीजिए श्रुत लेख की। अध्यापक बोलता है और बच्चे लिखते हैं। इस लेख में छात्र अशुद्धियां करते हैं। अध्यापक उन अशुद्धियों के कारण को ढूंढता है। उसके आधार पर ही वह उपचार करता है। इस प्रकार की अशुद्धि के विशलेषण से पता लगता है की बच्चे ने अशुद्धि किस कारण कि है इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं।

(1) अध्यापक जो बोल रहा है—

उसके उच्चारण का शुद्ध न होना।
उसके बोलने की गति तीव्र होना।
उसके बोलने का स्वर छीना होना।
उसके स्वभाव में सहानुभूति का अभार होना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(2) छात्र जो लिख रहे हैं--

उनका शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ न होना।

उनका श्रवण यन्त्र ठीक न होना।

उनको ध्वनियों एवं अक्षरों का स्पष्ट ज्ञान न होना।

उनका स्वयं उच्चारण अशुद्ध होना।

जो बहुत जल्दी जल्दी या शीघ्रता से लिखते हों।

उनमें रुचि का अभाव होना।

(3) विषय सामग्री जो बोली जा रही है,

उसका बच्चों के स्तर से उंचा होना।

उसमें अपरिचित शब्दों की अधिकता होना।

उसका बच्चों की रुचि के अनुसार न होना।

उसका बच्चों के जीवन से सम्बन्ध न होना।

(4) सीखने में बाधा उपस्थित करने वाले कुछ अन्य तत्त्व--

बच्चे का स्कूली वातावरण (उनको बैठने के लिए उचित स्थान, उचित प्रकाश एवं वायु का प्रबन्ध; जल प्रबन्ध, स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के अवसर, पुस्तकालय, वाचनालय, प्रयोगशालाएं, खेल के मैदान एवं खेल के स्थान, आदि का उचित प्रबन्ध न होना या अध्यापकों का बच्चों के साथ व्यवहार आदि)।

बच्चे का घरेलू वातावरण (उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, माता-पिता एवं घर के अन्य सदस्यों का बच्चे के साथ व्यवहार, घर में उचित स्थान, प्रकाश एवं वायु की व्यवस्था।

बच्चे का सामाजिक वातावरण (बच्चा जिस समाज में रहता है उसका पर्यावरण, उसकी मान्यताएं और उसकी आकांक्षाएं आदि।

देश का राजनीतिक पर्यावरण—(देश का राजनीतिक पर्यावरण शान्त है अथवा उथल-पुथल का, इसका भी बच्चे की सीखने की क्रिया पर प्रभाव पड़ता है।)

शिक्षा की उपयोगिता—(बच्चा जो ग्रहण कर रहा है उसका उसके जीवन से सम्बन्ध और उसकी उपयोगिता)

बालकों की हिन्दी भाषा की अशुद्धियों के कुछ कारण इस प्रकार हैं।

(1) विषय वस्तु का बालक के उपयुक्त न होना--जो पाठ्य वस्तु बालक को दी जा रही है, वह उसके स्तर से ऊपर है। इससे बालक को पढ़ने लिखने तथा बोलने में कठिनाई आती है। बोलते समय, पढ़ते समय अथवा लिखते समय कठिन शब्दावली तथा गहन विचारों का विषय एक कठिनाई उत्पन्न कर देता है, जिससे वह उस विषय वस्तु को ग्रहण करने में पूर्ण असमर्थ रहता है।

(2) कार्य करने के अनुपयुक्ऍत तरीके-शब्दावली तथा विषयवस्तु की पहचान तो बालक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को है, उसका अर्थ समझने, विचार ग्रहण करने तथा अनुच्छेद की प्रमुख बातों को ग्रहण करने में पूर्ण असमर्थ पाता है।

(3) अध्यापक की अयोग्यता—अध्यापक का अधूरा ज्ञान, अशुद्ध उच्चारण, गति का तीव्र होना, व्यवहार में सहानुभूति का अभाव आदि कारण भी बच्चे की अशुद्धियो का कारण हो सकता है।

(4) लेखन कार्य—शारीरिक दृष्टि से बालक का अस्वस्थ होना। सुनने में कठिनाई, ध्वनियों का तथा लिपि का अधूरा ज्ञान, रुचि का अभाव भी भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों का कारण हो सकता है।

(5) घर का अनुपयुक्त वातावरण—घर में बच्चे को कार्य करने का उचित वातावरण न मिले व उसकी अशुद्धियां बताने वाला न हो तो भी बच्चा अशुद्धियां करता है।

(6) क्षेत्रीय व प्रान्तीय प्रभाव—इस प्रकार भी बच्चा उच्चारण या लेखन में अशुद्धियां करता है।

(7) देश के सामाजिक तथा राजनैतिक वातावरण का अंशात होना—इस कारण बच्चों को उचित वातावरण नहीं मिल पाता।

(8) स्कूल की स्थिति—यदि स्कूल किसी शोर-शराबे वाले स्थान पर है तब बच्चा अध्यापक की बातों की ठीक से नहीं सुन पाएगा जिस कारण वह अशुद्धि करता है।

(9) शिक्षा की अनुपयोगिता—जो शिक्षा बच्चा ग्रहण कर रहा है उसका बच्चे के जीवन में काम न आने वाली हो तो इसका प्रभाव भी भाषा सीखने की क्रिया पर पड़ता है।

यह हो सकता है कि अशुद्धि करने वाले एक बालक के साथ कोई एक कारण हो और दूसरे के साथ दूसरा कारण और अन्य के साथ कोई अन्य कारण। तब सभी छात्रों की अशुद्धियों का विश्लेषण व उनका उपचार एक ही तरीके से नहीं किया जा सकता। उपचार व विश्लेषण से पहले जरुरी है कि यह पता लगाया जाये कि छात्र विशेष की अशुद्धि के क्या कारण हैं।

अशुद्धियों को जानने की विधियां—

(1) विद्यार्थियों की भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों तथा उनके कारणों को खोज निकालना आसान काम नहीं। इस के लिए अध्यापक को सचेत रहने की आवश्यकता है। आज कल शैक्षणिक उपचार गृहों में कई प्रकार के यांत्रिक उपकरणों के प्रयोग से विद्यार्थियों की भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों का पता लगाया जाता है। इसके अतिरिक्त अध्यापक को अपनी चेतनता कार्य निपुणता तथा कर्त्तव्य-निष्ठा पर निर्भर रहना होगा। अशुद्धियों को जानने के लिए अध्यापक निम्नलिखित विधियों का प्रयोग कर सकता है :

(1) परीक्षा (Examination)

(2) गृहकार्य (Home Work)

(3) अवलोकन (Observation)

(4) साक्षात्कार (Interview)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(5) संचित अभिलेख (Cumulative Records)

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(1) परीक्षा (Examination)—प्रत्येक विद्यालय में कक्षा की, त्रैमासिक, छमाही, वार्षिक परीक्षाएं ली जाती हैं। उन परीक्षाओं का उद्देश्य जहां छात्रों के प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन करना होता है वहीं छात्रों की अशुद्धियों का भी इन से पता चलता है। कक्षा कार्य या पहली परीक्षा में छात्र द्वारा दिए उत्तरों या उनकी कापियों की जांच से उनकी त्रुटियों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार परीक्षण अशुद्धियों को जानने की एक विधि हो सकती है।

(2) गृहकार्य—अध्यापक छात्रों को प्रतिदिन कुछ न कुछ कार्य घर से लिखकर या याद करके लाने के लिए देता है। अध्यापक इस कार्य की जांच द्वारा भी छात्रों की अशुद्धियों के प्रकार के बारे में जान सकता है।

(3) अवलोकन—कक्षा में छात्रों की अशुद्धि तथा उनके कारणों को ढूंढने की तात्कालिक विधि अवलोकन है इसे निरीक्षण विधि भी कहते हैं। अध्यापक अपने निरीक्षण से छात्रों की न केवल भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों को जान सकता है अपितु उन कारणों को भी जान सकता है जिस कारण बच्चे अशुद्धि करते हैं।

(4) साक्षात्कार—छात्रों के दोषों तथा उनके कारणों का पता लगाने की एक अन्य प्रभावशाली विधि 'साक्षात्कार' है। छात्रों के जिन दोषों का कारण कक्षा का वातावरण या पाठ्य सामप्ती की जटिलता एवं नीरसता होता है, वे तो अवलोकन से ज्ञात हो जाते हैं और उन्हें दूर भी किया जा सकता है। कुछ परिस्थितियों में छात्र संवेगात्मक व भावात्मक कठिनाइयों के कारण कक्षा में ध्यान नहीं दे पाते और उनके सीखने की गति रुकी-रुकी सी रहती है। ऐसे छात्रों की कठिनाइयों को जानने के लिए साक्षात्कार अत्यन्त प्रभावशाली विधि हो सकती है। 'साक्षात्कार' में छात्रों को अपने मन की बात स्पष्ट रूप से प्रकट करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। साक्षात्कार के दौरान अध्यापक का व्यवहार सहानुभूति पूर्ण, सद्भावनापूर्ण, स्नेहशील तथा आत्मीयता पूर्ण होना चाहिए। तभी छात्र बिना झिझक के स्पष्ट रूप से सारी बाते बता सकेगा। साक्षात्कार के छात्रों की बातों तथा उस द्वारा दिए गए उत्तरों का सावधानी से विश्लेपण कर उसकी अशुद्धियों व कठिनाइयों को अच्छी तरह जाना जा सकता है।

(5) संचित अभिलेख—प्रत्येक छात्र के संचित अभिलेख से उसकी रुचि, अभिरुचि, इच्छाओं तथा विभिन्न क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इन अभिलेखों के आधार पर छात्र की वर्तमान कठिनाइयों तथा समस्याओं का भी अच्छी तरह विश्लेपण किया जा सकता है। यही कारण है कि प्रायः सभी शिक्षा-शास्त्री इस बात पर ज़ोर देते हैं कि छात्र के स्कूल में प्रवेश प्राप्त करते ही उसका संचित अभिलेख रखा जाना चाहिए और यह अभिलेख उसके शिक्षा प्राप्त करते रहने तथा उसके साथ-साथ रहना चाहिए। छात्रों की समस्याओं को समझने के लिए संचित अभिलेखों से बहुत सहायता मिलती है परन्तु इसके लिए अभिलेख का हर दृष्टिकोण से पूर्ण होना चाहिए और उनमें सभी बातें सही ढंग से दर्ज होनी चाहिएं।

इस प्रकार उपरोक्त विधियों से हम बच्चों की अशुद्धियों के कारणों को न केवल जान सकते हैं बल्कि उनका विश्लेषण भी इन्हीं विधियों से किया जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अशुद्धि विश्लेषण के मुख्य उद्देश्य—

(1) छात्रों के भाषा सम्बन्धी दोषों का पता लगाना।

(2) दोषों के कारणों का पता लगाना।

(3) विषय वस्तु अशुद्धियों के कारण जानना।

(4) कार्य सम्पादन सम्बन्धि कारणों का पता लगाना।

(5) अध्यापक से सम्बन्धि कारणों को जानना।

(6) परिस्थिति जन्य कारणों को जानना।

(7) मानसिक कारण।

(8) शारीरिक कारण।

(9) छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायता करना।

(10) शिक्षा को प्रभावशाली बनाना।

उपचारात्मक शिक्षण
(REMEDIAL TEACHING)

अशुद्धियों के विश्लेषण का अपना कोई महत्त्व नहीं यदि उसके अनुसार बच्चों का उपचार नहीं किया जाता। अशुद्धि विश्लेषण की क्रिया में केवल बच्चों की कठिनाइयों का पता लगाया जाता है व उनका विश्लेषण किया जाता है और उपचारात्मक शिक्षण में इन अशुद्धियों को दूर करते हुए शिक्षण किया जाता है। इस प्रकार भाषा शिक्षण में छात्रों की भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों का निराकरण करना ही उपचारात्मक शिक्षण कहलाता है। प्रशिक्षण से सम्बन्धित सभी अशुद्धियों के निराकरण के लिए उचित एवं प्रभावशाली विधियों के निर्माण एवं प्रयोग को उपचारात्मक शिक्षण कहते हैं। इसके द्वारा इस बात का प्रयास किया जाता है कि विद्यार्थी जो गलतियां करते हैं वे न करें। इस प्रकार उनके सीखने के मार्ग में आई कठिनाइयों तथा समस्याओं को दूर करके उन्हें इस योग्य बनाया जाता है कि वे भाषा के सभी अंगों का शुद्ध ज्ञान प्राप्त कर सकें।

उपचारात्मक शिक्षण के उद्देश्य
(AIMS OF REMEDIAL TEACHING)

उपचारात्मक शिक्षण का प्रमुख प्रयोजन शैक्षणिक कठिनाइयों का निराकरण करना है। शैक्षणिक कठिनाइयों से बच्चे के सीखने का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। उपचारात्मक शिक्षण कठिनाइयों को दूर करके छात्र के सीखने के मार्ग को प्रशस्त करता है। एक बार उसके सीखने का मार्ग प्रशस्त हो जाए तो उसे सच्चे ज्ञान की प्राप्ति होने लगती है उसे सीखने में आनन्द आने लगता है और उसका व्यक्तित्व वांछित दिशा में विकसित होने लगता है। इस प्रकार से उपचारात्मक शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(1) छात्रों की भाषा सम्बन्धि अशुद्धियों को दूर करना।

(2) ज्ञान-प्राप्ति के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों का निराकरण करना।

(3) छात्रों के अन्तद्वन्द्वों का समाधान करके उनको मानसिक रूप से योग्य एवं स्वस्थ बनाना।

(4) छात्रों को अपने दोषों के प्रति सचेत करना और इन्हें दूर करने के लिए प्रेरित करना।

(5) शिक्षण को प्रभावशाली बना।

(6) छात्रों को व्याक्तित्व के सम्पूर्ण विकास की ओर अग्रसर करना।

अशुद्धिविश्लेषण व उपचारात्मक शिक्षण के लाभ (Advantage of Error Analysis & Remedial Teaching)

(1) छात्रों की कठिनाइयों व अशुद्धियों का पता लग जाता है।

(2) छात्रों की कठिनाइयों व अशुद्धियों का पता लगने के बाद उनका विश्लेषण कर उन्हें दूर किया जाता है।

(3) कठिनाइयों को दूर करने से शिक्षण प्रक्रिया प्रभावशाली हो जाती है और छात्रों को उनकी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार उचित दिशा में लगाया जा सकता है।

(4) छात्र कुसमायोजन से बच जाते हैं।

(5) छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को व्यक्तिगत रूप से दूर किया जाता है। इससे बच्चों की कठिनाइयां दूर होती है व छात्र अरुचिकर वातावरण से बच जाते हैं।

(6) छात्रों की शारीरिक, भावात्मक, संवेगात्मक व सामाजिक क्षमताएं विकसित होती हैं और उनके व्यक्तित्व का समुचित विकास होता है।

(7) एक अच्छे समाज का निर्माण होता है।

(8) इससे अध्यापकों को अपनी त्रुटियों का भी ज्ञान होता रहता है जिन्हें दूर करके वे अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सकते हैं।

(9) इससे छात्रों की बुरी आदतों को दूर करके उनमें अच्छी आदतों का निर्माण करने में सहायता मिली है।

(10) इससे शिक्षा के सामान्य एवं विशिष्ट उदेश्यों की प्राप्ति में सहायता होती है।

अशुद्धियों को दूर करने के उपाय

(MEASURES OR REMEDY FOR REMOVING ERRORS)

छात्रों की अशुद्धियों का विश्लेषण करने के बाद उनको दूर करने के लिए अध्यापकों को यथा सम्भव प्रयास करने चाहिएं। छात्रों की अशुद्धियों को दूर करने के लिए अध्यापक निम्न उपाय कर सकता है।

(1) लिपि का पूर्ण ज्ञान छात्रों को करवाया जाए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(2) मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर करने के लिए बारह । खड़ी का अभ्यास करावाया जाए।

(3) व्याकरण का पूर्ण ज्ञान छात्रों को करवाया जाये।

(4) शुद्ध उच्चारण की शिक्षा दी जाए।

(5) लिखने का अभ्यास अधिक से अधिक करवाया जाए।

(6) लिखित कार्य का संशोधन सावधानी से किया जाए।

(7) सावधानीपूर्वक लिखने की आदत डालना।

(8) तीव्रगति से लिखने का अभ्यास कराना।

(9) खेल विधि का प्रयोग किया जाए।

(10) सामान्य त्रुटियों को सामूहिक रूप से समझाना चाहिए।

(11) व्यक्तिगत ध्यान देना चाहिए।

(12) शारीरिक उपचार किया जाए।

(13) अध्यापक का व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण व प्रोत्साहजनक होना चाहिए।

(14) शब्द पुस्तिकांए वनवाना।

(15) विश्लेपण विधि का प्रयोग करना चाहिए

(16) अध्यापक का स्वंय का लेख व उच्चारण शुद्ध होना चाहिए।

(17) वाचन का अभ्यास करवाया जाए।

(18) शब्दकोश का प्रयोग करना बच्चों को सिखाया जाए।

(19) सभी विषयों में अशुद्धियों को दूर करने की कोशिश करनी चाहिए।

(20) उच्चारण व लेखन प्रतियोगिताएं करवाईं जाए।

(21) आवृत्ति विधि का प्रयोग करना चाहिए।

इस प्रकार उपयुक्त उपायों का प्रयोग कर अध्यापक छात्रों की अशुद्धियों को दूर कर उन्हें शुद्ध भापा लिखने बोलने व पढ़ने का अभ्यास करा सकता है।

उपचार विधियां

(METHODS OF REMEDIAL TEACHING)

छात्रों की भापा सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर करने के लिए प्रायः निम्नलिखित विधियों को प्रयुक्त किया जाता है :

(1) समूहिक विधि (Collective Method) – इस विधि में सभी विद्यार्थियों का एक साथ उपचार किया जाता है। कुछ अशुद्धियां ऐसी होती हैं जिन्हें अधिकांश विद्यार्थी करते हैं। अध्यापक छात्रों की अशुद्धियों का विश्लेपण करके ऐसी अशुद्धियों को ढूंढ निकालता है। ये अशुद्धियां पिछली कक्षा में ग़लत शिक्षण के कारण या समपूर्ण धारणायें बन जाने के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कारण या परिवेश के कारण पैदा हो सकती हैं। इन अशुद्धियों का सामूहिक उपचार करने से सभी छात्रों को लाभ पहुंचता है और समय की भी बचत होती है। अध्यापक की सामूहिक उपचार के लिए सामान्य अशुद्धियों की सूची तैयार कर लेनी चाहिए और फिर श्यामपट्ट के माध्यम या आदर्श वाचन द्वारा उन अशुद्धियों को दूर करना चाहिए। वाचन, लेखन, अक्षर-विन्यास, व्याकरण आदि के शुद्ध रूप समझाने के पश्चात् छात्रों से अभ्यास भी करवाना चाहिए क्योंकि निरन्तर अभ्यास से ही अशुद्धियों को जो आदत बन चुकी होती है दूर किया जा सकता हैं।

सामूहिक उपचार विधि में ही कई बार अध्यापक समूची कक्षा की अशुद्धियों का एक साथ उपचार न करके अशुद्धियों के आधार पर कक्षा को चार-पांच वर्गा में बांट दिया जाता है और फिर प्रत्येक वर्ग की विशिष्ट अशुद्धियों का सामूहिक उपचार किया जाता है।

इस विधि के अनुसार कक्षा के कुछ छात्र उच्चारण दोष, कुछ वाचन संबंधी त्रुटियां, कुछ अक्षर विन्यास की त्रुटियां, तो कुछ व्याकरण के प्रयोग में अशुद्धियां करते होंगे। इस विशिष्ट दोषों के आधार पर छात्रों के वर्ग बना दिए जाते हैं और प्रत्येक वर्ग को अतिरिक्त समय देकर उनके विशिष्ट दोषों का उपचार करके उन से भाषा के शुद्ध का प्रयोग का अधिक अभ्यास कराया जाता है। यह विधि श्रमसाध्य है परन्तु इस का लाभ अधिक है। इस विधि में छात्र भी एक दूसरे की सहायता कर सकते हैं।

व्यक्तिगत विधि (Individual Method) — व्यक्तिगत विधि में प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत अशुद्धियों को व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा दूर किया जाता है। इस विधि में अध्यापक प्रत्येक विद्यार्थी की अशुद्धियां का पता लगाकर उन्हें व्यक्तिगत रूप से दूर करने का प्रयास करता है। कुछ छात्र सामूहिक विधि से अपने दोषों को दूर नहीं कर पाते। उनकी अपनी व्यक्तिगत समस्याएं एवं कठिनाई होती हैं। जब तक उन्हें दूर न किया जाए तब तक उन में वांछित सुधार नहीं होता। ऐसे छात्रों के लिए 'व्यक्तिगत विधि' को अपनाना चाहिए। इस विधि में निम्नलिखित बातों की ओर भी ध्यान देना चाहिए—

व्यक्तिगत विभिन्नता के सिद्धान्त का उपयोग करना चाहिए। व्यक्तिगत विभिन्नता के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त का व्यक्तिगत उपचार के समय ध्यान रखना चाहिए। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि सभी बच्चे दूसरों से भिन्न होते हैं। इसलिए सभी बच्चों को एक ही स्तर पर रखकर उन का व्यक्तिगत उपचार सम्भव नहीं हो सकता। प्रत्येक छात्र के व्यक्तिगत उपचार के लिए उसकी मानसिक एवं बौद्धिक स्तर का ध्यान रखना चाहिए।

(2) सभी छात्र एक जैसी अशुद्धियां नहीं करते। उनकी अशुद्धियां करने के ढंग अलग-अलग होते हैं। उनका व्यक्तिगत-उपचार भी अलग-अलग ढंग से किया जाना चाहिए।

(3) इस विधि में छात्रों की समस्याओं एवं कठिनाइयों का गम्भीरता से अध्ययन करना चाहिए। उसकी विभिन्न परिस्थितियों तथा विवशताओं को ध्यान में रखना चाहिए।

(4) सामूहिक रूप से कोई बात समझाने के पश्चात् अध्यापक को प्रत्येक छात्र के कार्य का निरीक्षण करना चाहिए। तभी उसे ज्ञात हो सकेगा कि कौन सा छात्र उसकी बात को कहां तक समझा है और उसे अपने आप को सुधारने में कहां तक सफलता प्राप्त हुई है। जिन छात्रों को अशुद्धियों दूर करने में कठिनाई अनुभव हो रही है उन छात्रों को व्यक्तिगत सहायता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रदान करनी चाहिए। अतः व्यक्तिगत उपचार को सामूहिक उपचार का आवश्यक अंग मानना चाहिए।

इस प्रकार से यदि अध्यापक निम्न उपायों व विधियों को अपनाए तो छात्रों की अशुद्धियो को दूर कर सकता है। यदि अध्यापक को उपचारात्मक कार्य से अपेक्षित परिणाम नहीं मिलते तो कहीं कोई त्रुटि रह गई होगी। यह मूल्यांकन से उसे पता चल सकता है। इसलिए अध्यापक को पुनः उपचारात्मक कार्य पर मूल्यांकन करना चाहिए व वांछित सफलता न मिलने पर अध्यापक को क्रोध न कर, धैर्यपूर्वक अपने कार्य का मूल्यांकन करते हुए छात्र में वांछित परिवर्तन लाने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्नावली

1. अशुद्धि विश्लेषण व उपचारात्मक शिक्षण के उद्देश्य कौन से है ? दोनों प्रकार के शिक्षण की प्रक्रिया संक्षेप में लिखें।
2. उपचारात्मक व अशुद्धि विश्लेपण शिक्षण के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
3. अशुद्धि विश्लेपण के लिए किन-किन विधियों का प्रयोग किया जाता है अशुद्धियों की जांच की विधि कौन सी है ? विस्तार से लिखिए।
4. छात्रों की भापा सम्बन्धी अशुद्धियों को रोकने के लिए आप किस उपाय का प्रयोग करेंगे क्यों उदाहरण दे कर समझाएं।
5. छात्र लेखन व उच्चारण में किस प्रकार की अशुद्धियां करते हैं ? चर्चा कीजिए। निम्नलिखित पर टिप्पणी कीजिए—

   (1) अशुद्धि विश्लेपण की सामूहिक विधि।

   (2) अशुद्धियों को दूर करने के उपाय।

   (3) अशुद्धि विश्लेपण के लाभ।

   (4) संचित अभिलेख अशुद्धि जानने की विधि के रूप में।

□ □ □

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इकाई—V (हिन्दी शिक्षण—विषयवस्तु)

UNIT—V (TEACHING OF HINDI)

(1) हिन्दी की मानक ध्वनियां, हिन्दी के स्वर व त्यंजनों का सही उच्चारण (STANDARD SOUNDS OF HIND, VOWELS, CONSONANTS CORRECT PRONUNCIATION IN HINDI)

(2) संज्ञा व विशेषण की परिभाषा व प्रकार
(DEFINATION KINDS OF NOUNS & ADJECTIVES)

(3) कबीर व तुलसी का जीवनवृत्त व कृत्तीत्व का विस्तृत अध्ययन
(A DETAILED DESCRIPTION OF THE LIFE & WORKS CONTRIBUTION OF KABIR & TULSI)

(4) निम्नलिखित का अध्ययन (Study of the following)

(1) कबीर के दोहे (7वीं व 9वीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक)
Kabir's Dohe (7th & 8th Grade Text)

(2) महादेवी की कविता (मुरझाया फूल)
(7वीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक)
Mahadevi's Murjhaya Phool (7th Grade Book)

(3) गिल्लू (कहानी) (8वीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक)
Gilloo (Story) (8th Grade Text Books)

(4) नीलकंठ (10वीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक)
Nilakant (10th Grade Text)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय – 13

हिन्दी की मानक ध्वनियाँ हिन्दी के स्वर, व्यंजन का सही उच्चारण

(STANDARD SOUNDS OF HINDI VOWELS, CONSONANTS, CORRECT PRONUNCIATION IN HINDI)

मानव समुदाय ने अपनी भावनाओं, अनुभवों और विचारों को आपस में एक दूसरे तक पहुँचाने के लिए जिस सार्थक ध्वनि समूह को अपनाया है, उसे भाषा कहते हैं। भाषा की इकाई वाक्य, वाक्य की इकाई शब्द और शब्द की इकाई ध्वनि है। भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है जिसे टुकड़ों में विभाजित नहीं किया जा सकता है। विचारों की अभिव्यक्ति के समय हमारे मुख के अवयवों से घर्षण करती हुई जो प्राणवायु बाहर निकलती है वही ध्वनि है। इसे आवाज़ भी कहते हैं। ध्वनियों की पहचान के लिए कुछ विशेष चिन्हों का प्रयोग किया जाता है, ये विशेष चिन्ह ही अक्षर कहलाते हैं। अक्षर अर्थात् अ+क्षर, जो कभी नष्ट न हो वह अक्षर है। अक्षर को ही वर्ण भी कहते हैं। वर्ण अर्थात् रंग, रूप आदि। भारतीय आर्य भाषाओं के ध्वनि समूह का प्राचीनतम रंग, रूप आदि। भारतीय आर्य भाषाओं के ध्वनि समूह का प्राचीनतम रूप वैदिक ध्वनि समूह है। हिन्दी में कुछ ध्वनियां अपनी स्वयं की भी हैं। कुछ विदेशी ध्वनियों का भी समावेश हिन्दी ध्वनि-समूह में है। वैदिक ध्वनियों का उच्चारण जिस रूप में आज प्रचलित है। ठीक उसी रूप में वैदिक काल में भी रहा हो, यह आवश्यक नहीं है, हमारा अनुभव यह है कि काल, समय, परिस्थिति के अनुरूप कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य हुआ होगा, यही सम्भावना अधिक है।

हिन्दी भाषा में हर ध्वनि को अलग-अलग विशेष चिन्ह प्रदान किए गए हैं जिन्हें अक्षर कहा जाता है। हिन्दी एक ऐसी ध्वन्यात्मक भाषा है जिसमें शब्द उसी प्रकार लिखे जाते हैं जिस प्रकार उन्हें बोला जाता है। एक ध्वनि के लिए एक ही अक्षर होता है। इन्हें वर्ण भी कहा जाता है, जैसे—'हिन्दी' शब्द में तीन ध्वनि या प्रतीत होती हैं परन्तु यदि इनका पूरी तरह विश्लेषण करें तो ज्ञात होगा कि इसमें पांच ध्वनियां हैं, "ह्+इ+न्+द्+ई"।

हिन्दी की ध्वनियों का वर्गीकरण

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि हिन्दी ध्वनियां दो प्रकार की होती हैं—स्वर और व्यंजन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वरों का उच्चारण करने में किसी अन्य अक्षर की सहायता नहीं लेनी पड़ती है जबकि व्यंजन का उच्चारण करते समय स्वर की सहायता लेनी पड़ती है। ध्वनि तंत्र के रूप में कुछ ध्वनियाँ मुख के किसी अवयव से टकराए बिना फेफड़े से निकलकर कण्ठ या नासिका से सीधा बाहर निकलती हैं वे 'स्वर' कहलाती है और जो ध्वनियाँ मुख के अवयवों से टकराकर निकलती हैं उन्हें 'व्यंजन' कहते हैं। इस प्रकार हिन्दी भाषा की समस्त ध्वनियाँ दो वर्गों में विभाजित हैं स्वर और व्यंजन।

(1) **स्वर** (Vowel) – जिन ध्वनियों का उच्चारण फेफड़ों से अनुस्फुटित होकर, कण्ठ से होता हुआ, झंकार उत्पन्न करता हुआ तथा मुखावरोध से सर्वथा मुक्त रहता हुआ, नासिका द्वारा अभिव्यक्त होता है उन्हें 'स्वर' कहते है। प्रत्येक स्वर अन्य किसी स्वर अथवा व्यंजन के स्पर्श या सम्पर्क से सर्वथा मुक्त या स्वतन्त्र होकर उच्चरित होता है। स्वरों की संख्या मुख्य रूप से बारह मानी गई है अ, इ, उ और ऋ मुख्य स्वर हैं। आ, ई, ऊ क्रमशः मुख्य स्वर के दीर्घ रूप हैं। स्वरों के मेल से चार सन्धि स्वर और बनते है— ए (अ + इ), ऐ (अ + ई), ओ (अ + उ), औ (अ + ऊ)। अंग्रेज़ी भाषा के कुछ शब्दों को हिन्दी में बोलने व लिखने की एक ध्वनि और स्वीकार की गई है—'आ', जिसमें 'आ', और 'ओ' के बीच की ध्वनि का उच्चारण होता है, जैसे—लार्ड, गॉड, मॉडल, डॉक्टर आदि। ऋ का प्रयोग, ऋषि, ऋतु आदि शब्दों में होता है। अं, अः का प्रयोग स्वतन्त्र रूप में नहीं होता, केवल व्यंजनों के साथ लगाकर प्रयोग किया जाता है।

स्वरों का वर्गीकरण (Types of Vowels) – सभी स्वरों को (क) मात्राँ की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा जाता है :

(i) **ह्रस्व स्वर** (Small Vowels) – जिन स्वरों को बोलने में एक मात्रा का समय लगता है या जिनके उच्चारण में कम-से-कम समय लगता है जैसे—अ, इ, उ ह्रस्व स्वर हैं उन्हें मुख्य स्वर भी कहा जाता हैं।

(ii) **दीर्घ स्वर** (Long Vowels) – जिन स्वरों को बोलने में दो मात्राओं का समय लगता है या जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ तथा ऑ दीर्घ स्वर हैं।

(iii) **प्लुत स्वर** (Short Vowels) – जिन स्वरों के उच्चारण में तीन मात्राओं का समय लगता है या जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगता है। उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं इनका प्रयोग ज़ोर से या दूर से पुकारने वाले शब्दों में होता है। इन्हें लिखने में स्वर के आगे 3 का अंक लिखा जाता है, जैसे हे ३रामं, ओ३म आदि।

(ख) जिह्वा के प्रयत्न के आधार पर स्वरों को तीन भागों में बांटा जा सकता है—

(i) **अग्र** (Front Vowels) – जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का अग्र भाग व्यवहृत होता है, वे अग्र स्वर कहलाते हैं। इ, ई, ए, ऐ अग्र स्वर हैं।

(ii) **मध्य** (Middle Vowels) – जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का मध्य भाग व्यवहृत होता है, वे मध्य स्वर कहलाते है। 'अ' मध्य स्वर है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) पश्च (Back Vowels) – जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का पीछे का भाग व्यवहृत होता है, वे पश्च स्वर कहलाते हैं। आ, उ, ऊ, ओ, औ और ऑ पश्च स्वर हैं।

(ग) मुख द्वार के प्रयत्न के आधार पर–स्वरों को चार भागों में वर्गीकृत किया गया है–संवृत, अर्द्ध स्वर, विवृत स्वर और अर्द्ध विवृत स्वर।

संवृत स्वर–जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार बहुत संकरा हो जाता है उन्हें 'संवृत' स्वर कहते हैं, जैसे–इ, ई, उ, ऊ।

(ii) अर्द्ध स्वर–जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा संकरा होता है, उन्हें 'अर्द्ध संवृत' स्वर कहते हैं, जैसे–ए, ऐ, ओ, औ।

(iii) विवृत स्वर–जिन स्वरों के उच्चारम में मुख द्वार पूरा खुला होता है, उन्हें 'विवृत' स्वर कहते हैं, जैसे–आ, ऑ।

(iv) अर्द्ध विवृत स्वर–जिन स्वरों के उच्चारण में मुख-द्वार आधा खुला रहता है, उन्हें अर्द्ध विवृत स्वर कहा जाता है, जैसे–अ।

इस प्रकार आज हिन्दी में 12 स्वर प्रचलित हैं। अ, इ, उ, ऋ चार मुख्य स्वर हैं। अ, इ, उ के दीर्घ रूप आ, ई तथा ऊ हैं। ए (अ + इ), ऐ (अ + ई), ओ (अ + उ) तथा औ (अ + ऊ) ये चार सन्धि स्वर हैं और ऑ का उच्चारण अ तथा ओ के बीच का है।

2. व्यंजन (Consonants) – जब प्राण वायु कण्ठ एवं मुख के अवयवों से टकराती हुई बाहर निकलती है तो जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं उन्हें व्यंजन कहते हैं। व्यंजन ध्वनि के उच्चारण में हवा मुख के अवयवों से घर्षण करती हुई बाहर निकलती है। हिन्दी भाषा में व्यंजनों की संख्या 33 है। ये व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं :

(i) स्पर्श–इन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा मुख के किसी भाग का स्पर्श करके वायु को पहले थोड़ा रोकती है फिर आगे निकलने देती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। ये संख्या में 25 हैं और 5 वर्गों में विभाजित है :

क, ख, ग, घ, ङ –कवर्ग
च, छ, ज, झ, ञ –चवर्ग
ट, ठ, ड, ढ, ण –टवर्ग वर्गीय वर्ण = 25
त, थ, द, ध, न –तवर्ग
प, फ, ब, भ, म –पवर्ग

(ii) अन्तस्थ–इन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा मुख के किसी भाग का पूरी तरह स्पर्श नहीं करती और वायु बिना रगड़ खाए मुख से बाहर निकल जाती है, उन्हें अन्तस्थ व्यंजन कहते हैं। ये स्वरों और व्यंजनों के मध्यवर्ती स्थिति के हैं। ये संख्या में चार हैं–

य, र, ल, व

(ii) ऊष्म–इन व्यंजनों के उच्चारण में वायु मुख से रगड़ खाती हुई धीरे-धीरे बाहर निकलती है। अतः इन्हें ऊष्म या संघर्षी व्यंजन कहा जाता है। ये भी संख्या में चार हैं–

स, श, ष, ह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस प्रकार 12 स्वरों और 33 व्यंजनों के अतिरिक्त हिन्दी भाषा में कुछ अन्य ध्वनियां भी प्रचलित हैं जो निम्नलिखित हैं :

(स) संयुक्ताक्षर—क्ष, त्र, ज्ञ तीन संयुक्तक्षर है जो क्रमशः

क्ष (क् + ष), त्र (त् + र) और ज्ञ (ज् + ञ) के योग से बने हैं। दो वर्णों के योग से बने होने के कारण इन्हें संयुक्त व्यंजन कहा जाता है। एक अन्य संयुक्त वर्ण का प्रयोग भी हिन्दी में किया जाता है—'श्र' जो श् + र् के योग से बना है।

(iv) चन्द्र विन्दु—हिन्दी भाषा में कुछ वर्णों के साथ एक विशेष प्रकार का चिन्ह (ँ) का प्रयोग किया जाता है, इसे चन्द्रविन्दु या अनुनासिक कहते हैं। इसके उच्चारण में वायु नासिका से निकल जाती है।

(v) अनुस्वार और विसर्ग—अं और अः ये दो वर्ण अर्द्ध व्यंजन कहलाते हैं। इनकी गणना स्वरों में की जाती है, परन्तु वास्तव में इनका प्रयोग स्वर के रूप में नहीं होता है वरन् ये स्वर के साथ लगते हैं अ + . = अं, अ + : = अः। किसी वर्ण के साथ पहले स्वर लगता है, फिर स्वर के साथ अनुस्वार (ं) या विसर्ग (:) लगता है जैसे कंचन, (क् + अ + ं (कं), चंचल (च् + अ + ं) प्रातः में प्रा + त् + अ + : (तः)।

(vi) अन्य ध्वनियाँ—हिन्दी में पाँच ध्वनियाँ—क़, ख़, ग़, ज़ तथा फ़ अरबी फ़ारसी से आई हैं। तीन अन्य ध्वनियाँ (ड़, ढ़, व) और विकसित हुई हैं।

इस प्रकार हिन्दी में 47 व्यंजन ध्वनियाँ

(33 + 4 + 1 + 2 + 5 + 3) प्रचलित हैं।

इस प्रकार आज हिन्दी भाषा की प्रचलित ध्वनियाँ 60 हैं—

12 स्वर—अ, आ, इ, ई उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ औ, ऑ

33 व्यंजन—क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, स, ष, ह।

4. संयुक्ताक्षर—क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

2 विसर्ग व अनुस्वार—अं, अः

1 चन्द्रविन्दु—ँ

5 फ़ारसी व अरबी = क़, ख़, ग़, ज़ तथा फ़

3 अन्य = ड़, ढ़, व

हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण

(Classification of Hindi Sounds)

हिन्दी भाषा में प्रचलित सभी ध्वनियों के उच्चारण में उच्चारण स्थान और उच्चारण में लगने वाले प्रयत्न दोनों का ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसलिए हिन्दी ध्वनियों को दो तरह से वर्गीकृत किया जा सकता है :

कुल = 60 ध्वनियाँ हैं जो आज हिन्दी भाषा में प्रचलित हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

 Sanwal Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. प्रयत्न के आधार पर—(क) बाह्य प्रयत्न के आधार पर
(ख) आभ्यान्तर प्रयत्न के आधार पर
2. उच्चारण स्थान के आधार पर

(1) प्रयत्न के आधार पर—ध्वनियों के उच्चारण मे कण्ठ से पूर्व, मुख विवर से पहले किए गए प्रयास को बाह्य प्रयत्न कहते हैं तथा मुख विवर में स्थित तालु, जीभ, दाँत, होंठ आदि को ध्वनि निर्गम के लिए जो प्रयास करने पड़ते है उन्हें आभ्यान्तर प्रयत्न कहा जाता है। इस दृष्टि से प्रयत्न के आधार पर भी ध्वनियों का वर्गीकरण दो प्रकार से होता है (क) बाह्य प्रयत्न के आधार पर (ख) आभ्यान्तर प्रयत्न के आधार पर

(क) बाह्य प्रयत्न के आधार पर—कण्ठ से पूर्व स्वर तन्त्री तथा काक के प्रयास से ध्वनियों का उच्चारण किए जाने को ही अर्थात् मुखविवर से पहले ही किए गए प्रयत्न को बाह्य प्रयत्न कहते हैं। स्वतन्त्री तथा काक उन दो अवयवों का पृथक्-पृथक् प्रयास होने के कारण दो प्रकार से ध्वनियों का वर्गीकरण होता है—स्वर तन्त्री के प्रयत्न के आधार पर एवं काक के प्रयत्नानुसार।

स्वरतन्त्री के प्रयत्न के आधार पर ध्वनियाँ दो प्रकार की होती हैं—घोष तथा अघोष।

(1) घोष—जब स्वतंत्रियाँ अक्षरों के उच्चारण के समय आपस में मिल जाती है और वायु उन्हें धक्का देकर बाहर आती है तो उससे एक प्रकार का कम्पन नाद अथवा घोष होता है। इस प्रकार से जिन ध्वनियों का उच्चारण होता है उन्हें घोष ध्वनियाँ कहते हैं। सभी स्वर, पांचों वर्गों के तृतीय चतुर्थ व पंचम वर्ण—ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म व्यंजन तथा य, र, ल, व, ह घोष ध्वनियाँ हैं।

(2) अघोष—जिन वर्णों का उच्चारण करने में स्वरतन्त्रियों के अलग-अलग रहने के कारण वायु को बाहर निकलने में कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता है उन्हें अघोष ध्वनियाँ कहते हैं।

सभी वर्गों के प्रथम एवं द्वितीय वर्ण—क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ तथा स, श, ष अघोष ध्वनियाँ हैं।

(1) काक के प्रयत्न के आधार पर—काक के आधार पर भी ध्वनियों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है—अल्प प्राण व महा प्राण ध्वनियाँ।

अल्प प्राण—जिन वर्णों के उच्चारण में अन्दर से आने वाली प्राण वायु को कम परिश्रम करना पड़ता है उन्हें अल्प प्राण ध्वनियाँ कहते हैं। वर्गों की प्रथम, तृतीय व पंचम ध्वनियाँ।

क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड़, ण, त, द, न, प, ब, भ, तथा य, र, ल व, सभी स्वर एवं अनुस्वार अल्प प्राण ध्वनियाँ हैं।

(2) महाप्राण—जिन वर्णों के उच्चारण में अपेक्षाकृत अधिक परिश्रम करना पड़ता है उन्हें महाप्राण ध्वनियाँ कहते हैं। सभी वर्गों के द्वितीय व चतुर्थ वर्ण—ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ तथा स, श, ष, ह तथा विसर्ग महाप्राण ध्वनियाँ हैं।

ख. आभ्यन्तर प्रयत्न के आधार पर—आभ्यन्तर प्रयत्न के आधार पर व्यंजन ध्वनियों के निम्न भेद हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(1) स्पर्श व्यंजन—जिन वर्णों के उच्चारण में वायु उच्चारण स्थानों का सामान्य रूप से स्पर्श करती है या जिन वर्णों का उच्चारण करने में मुख-द्वार को बन्द करके खोलने से वायु उच्चारण स्थानों का सामान्य स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, द, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ, स्पर्श ध्वनियाँ हैं।

(2) स्पर्श संघर्षी व्यंजन—जिन व्यंजनों का उच्चारण करने में मुख द्वार को बन्द करके खोलने पर वायु उच्चारण स्थानों को कुछ रगड़ती हुई स्पर्श करती है उन्हें स्पर्श संघर्षी व्यंजन कहते हैं। च, छ, ज, झ स्पर्श संघर्षी ध्वनियाँ है।

(3) संघर्षी व्यंजन—जिन वर्णों का उच्चारण करने पर मुख-द्वार को इस प्रकार से बन्द करके खोलते हैं कि वायु उच्चारण-स्थानों को बहुत रगड़ती हुई, शीतकार की सी ध्वनि करती हुई निकलती है उन्हें संघर्षी व्यंजन कहते हैं। क़, ख़, ग़, ज़, फ़, स, श, ष और ह संघर्षी व्यंजन हैं।

(4) अनुनासिक—जिन वर्णों का उच्चारण करने में वायु नासिका विवर से निकल जाती है उन्हें अनुनासिक व्यंजन कहा जाता है। ङ, ञ, ण, न, म अनुनासिक हैं।

(5) पार्श्विक—जिन वर्णों के उच्चारण में मुख द्वार बीच से बन्द होता है और वायु दोनों ओर से निकल जाती है उन्हें पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। 'ल' पार्श्विक व्यंजन है।

(6) लुंठित—जिस वर्ण के उच्चारण में जीभ के अग्र भाग से मुख द्वार बहुत जल्द-जल्द बन्द होता है और खुलता है उसे लुंठित व्यंजन कहते हैं। 'र' लुंठित व्यंजन हैं।

(7) उत्क्षिप्त—जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ की नोक उलटकर तालु को कुछ दूर तक छूकर मुख द्वार को झटके से खोलती है उन्हें 'उत्क्षिप्त व्यंजन' कहते है। ड़ तथा ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन हैं।

(8) अर्द्धस्वर—जिन वर्णों के उच्चारण में मुख-द्वार सिकुड़ जाता है और वायु उच्चारण स्थानों को प्रभावित करती हुई, स्वरों के उच्चारण की भाँति बाहर जाती है वे अर्द्ध स्वर व्यंजन कहलाते हैं। 'य' तथा 'व' अर्द्ध स्वर ध्वनियाँ हैं।

आभ्यान्तर प्रयत्न के आधार पर स्वरों का वर्गीकरण—कण्ठ के आगे मुख विवर और नासिकाविवर के बीच जो प्रयत्न होते हैं उन्हें आभ्यन्तर प्रयत्न कहते हैं। इस आभ्यन्तर प्रयत्न के आधार पर स्वरों को मुख-द्वार के प्रयत्न के आधार पर चार भागों में बाँटा गया है :

(क) संवृत स्वर—जिन स्वरों का उच्चारण करने में मुख-द्वार बहुत संकरा हो जाता है उन्हें संवृत स्वर कहते हैं। इ, ई, उ, ऊ, संवृत स्वर हैं।

(ख) अर्द्धसंवृत स्वर—जिनके उच्चारण में मुख-द्वार आधा सिकुड़ा होता है उन्हें अर्धसंवृत स्वर कहा जाता है। ए, ऐ, ओ, औ अर्द्ध संवृत स्वर हैं।

(ग) विवृत्त स्वर—जिन स्वरों के उच्चारण में मुख-द्वार आधा पुरा रहता है, वे विवृत स्वर कहलाते हैं। 'आ' विवृत्त स्वर है।

(घ) अर्द्ध विवृत्त स्वर—जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा खुला रहता है, उन्हें अर्द्ध विवृत्त स्वर कहा जाता है। अ, आ अर्द्ध विवृत्त स्वर हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आभ्यन्तर प्रयत्न में जिह्वा के प्रयत्न के आधार पर स्वरों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है :

(क) अग्र—जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का अग्र भाग उठता है वे अग्र स्वर हैं। इ, ई, ए, ऐ अग्र स्वर हैं।

(ख) मध्य—जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का मध्य भाग उठता है वे मध्य स्वर हैं। अ मध्य स्वर है।

(ग) पश्च—जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का पिछला भाग उठता है वे पश्च स्वर कहलाते है। आ, उ, ऊ, ओ, औ, आँ पश्च स्वर हैं।

(ख) उच्चारण के आधार पर ध्वनियों का वर्गीकरण—ध्वनियों के उच्चारण में मुख के विभिन्न अवयवों का प्रयोग होता है। इन्हीं उच्चारण-स्थानों के प्रयोग की दृष्टि से ध्वनियों का वर्गीकरण इस प्रकार से किया जा सकता है।

(1) **अनुनासिक**—जिन ध्वनियों के उच्चारण में वायु नासिका से निकल जाती है,वे अनुनासिक ध्वनियाँ कहलाती हैं अनु स्वार '', चन्द्रबिन्दु ँ'

सभी वर्गों के पंचम वर्ण—ङ, ञ, ण, न, म अनुनासिक ध्वनियाँ हैं।

(2) कण्ठ्य—जो ध्वनियाँ कण्ठ से बोली जाती हैं उन्हें कण्ठ्य ध्वनियां कहते हैं। अ, आ, आँ तथा क वर्ग के व्यंजन क, ख, ग, घ, ङ और ह तथा विसर्ग (:) कण्ठ्य ध्वनियाँ हैं।

(3) तालव्य—जिन वर्णों का उच्चारण करने में जिह्वा को कोमल तालु का स्पर्श करना होता है उन्हें तालव्य ध्वनियाँ कहते हैं। इ, ई स्वर तथा च, छ, ज, ञ, ज, च वर्ग से तथा य, श एवं 'ज्ञ' तालव्य ध्वनियाँ हैं।

(4) मूर्द्धन्य-जिनके उच्चारण में जीभ को कठोर तालु का स्पर्श करना होता है उन्हें मूर्द्धन्य ध्वनियाँ कहते है। ऋ, ट वर्ग के व्यंजन—ट, ठ, ड, ढ, ण और र, ष, श्र, ड़, ढ़ मूर्द्धन्य ध्वनियाँ हैं। ड़, ढ़ द्विस्पस्ट मूर्द्धन्य हैं।

(5) दन्त्य—जिन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा को दाँतों का स्पर्श करना होता है उन्हें दन्त्य ध्वनियाँ कहते हैं। त वर्ग के व्यंजन—त, थ, द, ध, न तथा ल, स, ज़, त्र, दन्त्य ध्वनियाँ हैं।

(6) ओष्ठ्य—जिन ध्वनियों के उच्चारण में दोनों होठों का प्रयोग होता है, वे ओष्ठ्य ध्वनियाँ कहलाती हैं। उ, ऊ, प वर्ग के व्यंजन प, फ, ब, भ, म ओष्ठ्य ध्वनियाँ हैं।

(7) दन्त्योष्ठ्य—जिनके उच्चारण में दाँत तथा होंठ का प्रयोग होता है वे दन्तोष्ठ्य ध्वनियाँ कहलाती हैं। व तथा फ़ दन्त्योष्ठ्य ध्वनियाँ हैं।

(8) कन्ठोष्ठ्य—जिनके उच्चारण में कण्ठ एवं होंठ का प्रयोग होता है, वे कण्ठोष्ठ्य कहलाती हैं। ओ तथा औ कण्ठोष्ठ्य ध्वनियाँ हैं।

(9) कण्ठतालव्य—कण्ठ और तालु से बोली जाने वाली ध्वनियाँ कण्ठतालव्य ध्वनियाँ कहलाती हैं। ए ऐ तथा क्ष कण्ठतालव्य ध्वनियाँ हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(10) कण्ठजिह्वा मूलीय—कण्ठ एवं जिह्वा के पश्च भाग की रगड़ से जो ध्वनियाँ उच्चारित होती हैं वे कण्ठजिह्वामूलीय ध्वनियाँ कहलाती हैं। क, ख, ग कण्ठजिह्वा मूलीय ध्वनियाँ हैं।

ध्वनियों के वर्गीकरण के ज्ञान की आवश्यकता
(NEED OF KNOWING ABOUT AND CLASSIFICATION OF SOUNDS)

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। मानव-समूह अपने भाव, विचार एवं अनुभवों को व्यक्त करने के लिए भाषा के मौखिक एवं लिखित रूप का प्रयोग करता है। मौखिक रूप से विचाराभिव्यक्ति में ध्वनियों और लिखित अभिव्यक्ति में लिपि का प्रयोग किया जाता है। इन दोनों रूपों में अभिव्यक्ति की प्रमुख इकाई वाक्य है, वाक्य की इकाई शब्द और शब्द की इकाई वर्ण है। वर्ण का मौखिक रूप ध्वनि और लिखित रूप लिपि है।

संसार में जितनी भी भाषाएँ है, उन सबका अपना-अपना ध्वनि-तत्त्व होता है। भिन्न-भिन्न ध्वनियों के लिए अलग-अलग वर्ण या अक्षर निश्चित होते हैं। हर वर्ण के उच्चारण का एक निश्चित ढंग होता है। हर वर्ण के उच्चारण में उच्चारण-अवयवों को अलग-अलग ढंग से प्रयास करना पड़ता है। इन उच्चारण स्थानों, उच्चारण में होने वाले प्रयत्न एवं प्रकृति आदि के आधार पर हिन्दी ध्वनियों को अलग-अलग ढंग से वर्गीकृत किया गया है। हिन्दी भाषा की हर ध्वनि के उच्चारण का एक निश्चित ढंग है। हर ध्वनि के उच्चारण में जिह्वा को एक निश्चित ढंग से, निश्चित स्थान का स्पर्श करना होता है। मुख-विवर के अन्दर हर ध्वनि के उच्चारण के लिए एक निश्चित प्रक्रिया होती है, उस प्रक्रिया में सूक्ष्म से सूक्ष्म परिवर्तन होने पर ध्वनि भी परिवर्तित हो जाती है। सकल और शकल में क्रमशः स एवं श ध्वनि। 'श' का उच्चारण करने के लिए जीभ को दाँतों के पीछे के तालू का स्पर्श करना होगा। 'श' तालव्य ध्वनि है और 'स' का उच्चारण करने के लिए जीभ को ऊपर के दाँतों के पीछे छूने पर स ध्वनि निकलेगी जो कि दन्त्य है। यदि बच्चों को यह ज्ञात नहीं कराया जाएगा कि तालव्य ध्वनियाँ कौन-कौन सी हैं और दन्त्य ध्वनियाँ कौन-कौन सी हैं तो वे ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण कर ही नहीं सकेंगे। अतः यह आवश्यक है कि बच्चों को भाषा की शिक्षा देते समय सबसे पहले हिन्दी की ध्वनियों के वर्गीकरण का ज्ञान दिया जाए। ध्वनियों के वर्गीकरण का ज्ञान होने पर बच्चे हर ध्वनि को पहचान सकेंगे।

अपनी-अपनी क्षेत्रीय या प्रान्तीय भाषा का प्रयोग करने वाले व्यक्ति जब हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं तब हिन्दी भाषा विज्ञान से अपरिचित होने एवं अपनी प्रान्तीय भाषा से प्रभावित होने के कारण वे हिन्दी ध्वनियों का अशुद्ध प्रयोग करने लगते हैं। उन्हें हिन्दी ध्वनियों का शुद्ध प्रयोग करना सिखाने के लिए पहले ध्वनियों का वर्गीकरण सिखाना आवश्यक है। उन्हें बताया जाए कि उच्चारण प्रकृति के आधार पर, उच्चारण-स्थान के आधार पर एवं बाह्य एवं आभ्यन्तर प्रयत्न के आधार पर हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण किस प्रकार किया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वास्तव में ध्वनियों के विस्तृत ज्ञान के बिना भाषा को ठीक प्रकार से नहीं समझा जा सकता है। भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने की दृष्टि से भी छात्रों को ध्वनियों के वर्गीकरण का ज्ञान कराना आवश्यक है। छात्रों में प्रारम्भिक वर्षों में भाषा सम्बन्धी जिन आदतों का निर्माण हो जाता है उन्हें बाद में बदलना मुश्किल हो जाता है। अतः प्रारम्भ में ही भाषा का थोड़ा सा ज्ञान होने के पश्चात् ही बच्चों को ध्वनियों के वर्गीकरण का ज्ञान कराना आवश्यक है जिससे बच्चा अपने भाषा संबंधी प्रयोग की शुद्धता और अशुद्धता की परख कर सके।

इस प्रकार ध्वनियों के वर्गीकरण का ज्ञान कराने के उपरान्त ही हम उनकी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली व सारयुक्त बना सकेंगे।

प्रश्नावली

1. 'स्वर' तथा 'व्यंजन' की परिभाषा देते हुए बताओं कि हिन्दी में कौन-कौन से स्वर और व्यंजन पाए जाते हैं। उनके उच्चारण स्थलों का भी वर्णन कीजिए।
2. हिन्दी में अनुनासिक स्वर तथा अनुनासिक व्यंजन कौन-कौन से हैं ? उनके उच्चारण में क्या विशेषताएं पाई जाती हैं ?
3. संक्षिप्त टिप्पणियां लिखो—

   (क) ज और क्ष ध्वनियां

   (ख) विदेशी ध्वनियां

   (ग) हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण।

   (घ) आभ्यान्तर प्रयत्न और व्यंजन।

   (ड़) ध्वनियों के वर्गीकरण के ज्ञान की आवश्यकता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय – 14

संज्ञा व विशेषण की परिभाषा व प्रकार

(DEFINITION AND TYPES OF NOUN AND ADJECTIVE)

(2) संज्ञा (Noun)

संसार में प्रत्येक व्यक्ति, स्थान, वस्तु या भाव का कोई-न-कोई नाम अवश्य होता है। वे नाम ही व्याकरण की भाषा में 'संज्ञा' कहे जाते हैं। जैसे:

श्री कृष्ण ने रणक्षेत्र में अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। इस उदाहरण में

व्यक्ति—श्री कृष्ण, अर्जुन

स्थान—रणक्षेत्र

वस्तु—गीता

भाव—उपदेश

ये सब संज्ञा हैं।

संज्ञा की परिभाषा—जिन शब्दों से किसी व्यक्ति वस्तु, स्थान या भाव का बोध हो, उन्हें संज्ञा कहते हैं।

जैसे:

व्यक्ति—राम, कृष्ण, बुद्ध, मोहन, संदीप, शेर, हाथी, मोर, तोता, कीड़ा आदि।

स्थान—करनाल, कश्मीर, भारत, शहर, गाँव, चौराहा, द्वीप, महाद्वीप, अमेरिका आदि।

वस्तु—किताब, गीता, मेज़, कुर्सी, चित्र, शीशा, रोटी, गहने

भाव—सुन्दरता, सुख-दुःख, लम्बाई, चौड़ाई, खटाई, मिटास, विजय

उपर्युक्त उदाहरणों में

कुछ ऐसे नाम हैं जो किसी विशेष प्राणी, स्थान या वस्तु आदि की ओर संकेत करते हैं।

कुछ ऐसे नाम हैं जो किसी विशेष प्राणी, स्थान या वस्तु आदि की ओर संकेत न करके साधारण जाति का बोध कराते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ ऐसे नाम हैं जो ऐसे भावों का बोध कराते हैं जिन्हें न हम देख सकते हैं, न छू सकते हैं, केवल इन्द्रियों द्वारा अनुभव ही कर सकते हैं।

इसी आधार पर संज्ञा के तीन भेद हैं—

संज्ञा के भेद (Types of Noun)

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)

(2) जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)

(3) भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा—"जिस संज्ञा शब्द से किसी एक विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का ज्ञान हो उसे 'व्यक्तिवाचक' संज्ञा कहते हैं।"

जैसे—ताजमहल, हिमालय, दिल्ली, गंगा, सुभाष चन्द्र बोस, रामायण आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा—"जिस संज्ञा शब्द से एक पूरी जाति या संपूर्ण समुदाय का बोध हो अर्थात् उस जाति के सभी पदार्थों या व्यक्तियों या स्थानों का ज्ञान हो जाए, उसे 'जातिवाचक' संज्ञा कहते हैं।"

जैसे—नदी, पर्वत, घोड़ा, बालक, पुस्तक, मनुष्य, नगर आदि।

3. भाववाचक संज्ञा—"जिस संज्ञा शब्द से किसी वस्तु या पदार्थ में पाए वाले धर्म, गुण या भाव का बोध हो, उसे 'भाववाचक' संज्ञा कहते हैं।"

जैसे—सुन्दरता, कडवाहट, बचपन, बुढ़ापा, उड़ान, भय, दया मिठास आदि।

अंग्रेजी भाषा के व्याकरण के प्रभाव के कारण कुछ विद्वान संज्ञा के दो भेद और मानते हैं। इस प्रकार संज्ञा के कुल पाँच भेद हो जाते हैं—

4. समुदायवाचक संज्ञा (Collective Noun)—"जिस संज्ञा से व्यक्तियों, पदार्थों के एक समूह का ज्ञान हो, उसे 'समुदायवाचक' संज्ञा कहते हैं।"

जैसे—मेला, सेना, सभा, दल, भीड़ आदि।

5. द्रव्यवाचक संज्ञा (Material Noun)—"जो शब्द द्रव्य पदार्थों या धातुओं के नाम का बोध कराए उन्हें 'द्रव्यवाचक' संज्ञा कहते है।"

जैसे—लोहा, सोना, पानी, दूध, घी आदि।

विशेष—समुदायवाचक संज्ञा तथा द्रव्यवाचक संज्ञा वास्तव में जाति वाचक संज्ञा के अन्तर्गत ही आ जाती हैं, इसलिए वस्तुतः ये जाति वाचक संज्ञा के उपभेद मात्र ही है, पृथक् नहीं।

संज्ञा के विशेषण की परिभाषा व उसके भाग

विशेषण (Adjective)

अच्छा बालक	गन्दा बालक
पतला आदमी	मोटा आदमी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन उदाहरणों में अच्छा, गन्दा, पतला, मोटा शब्द बालक या आदमी की कुछ-न-कुछ विशेषता बता रहे हैं। इन्हीं शब्दों को हम विशेषण कहते हैं।

परिभाषा—जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता को प्रकट करे उसे विशेषण कहते हैं।

जैसे—पाण्डव **पाँच** भाई थे।

वीर पुरुष घबराते नहीं हैं।

रमा के बाल **लम्बे** हैं।

मिठाई बहुत **मीठी** है।

विशेष्य—जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं;

जैसे—'सुन्दर' बालक।

यहाँ 'सुन्दर' विशेषण है और बालक' उसका विशेष्य

विशेष्य के साथ विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से होता है—

विशेष्य विशेषण--विशेष्य से पहले विशेषण का प्रयोग इसे 'विशेष्य-विशेषण' कहते है।

जैसे—मैंने 'सफ़ेद' गाय देखी।

श्याम ने 'मीठा' फल खाया।

इन दोनों वाक्यों में सफ़ेद व मीठा विशेपण हैं व गाय व फल विशेष्य।

2. विधेय-विशेषण—विशेष्य के पश्चात् विशेपण का प्रयोग होता है इसे विधेय विशेषण कहते हैं।

जैसे—

राम की बहन 'छोटी' है।

मुझे बसन्त ऋतु 'अच्छी' लगती है।

विशेषण के भेद

विशेषण के चार भेद होते हैं।

(1) गुणवाचक विशेषण (Qualitative Adjective)

(2) परिमाणवाचक विशेषण (Quantitative Adjective)

(3) संख्यावाचक विशेषण (Numeral Adjective)

(4) सार्वनामिक या निर्देशक विशेषण (Demonstrative Adjective)

1. गुणवाचक विशेषण—जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, आकार आदि का बोध कराए, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे—लोग दीपावली पर नए वस्त्र पहनते हैं।

राम डरपोक है।

निम्नलिखित सभी विशेषण 'गुणवाचक' कहलाते हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(1) **रंग**—लाल, नीला, पीला, हरा, सफ़ेद आदि

(2) **आकार**—गोल, सुडौल, चौकोर आदि

(3) **स्थान**—लम्बा, चौड़ा, ऊँचा, नीचा आदि

(4) **समय**—नया, पुराना, अगला, पिछला आदि

(5) **दशा**—दुबला, पतला, मोटा, निर्धन, रोगी आदि

(6) **गुण**—दयालु, शांत, क्रोधी, वीर आदि

(7) **दोष**—दुष्ट, झूठा, पापी, लोभी आदि।

2. परिमाणवाचक विशेषण—जिस विशेषण से वस्तु की मात्रा का बोध हो उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते है।

जैसे—दो मीटर कपड़ा, 2 किलो चीनी, बहुत सारी मिट्टी।

परिमाणवाचक के दो भेद हैं

(1) निश्चित परिमाणवाचक—जिस विशेषण से निश्चित नाप-तोल का बोध हो उसे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे—दस एकड़ भूमि, एक किलो चावल दस मीटर कपड़ा।

(2) अनिश्चित परिमाणवाचक—जिस विशेषण से अनिश्चित नाप-तोल का पता चले उसे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे—बहुत सा दूध, कुछ व्यक्ति
थोड़ी मिठाई, कुछ सोना।

(3) संख्यावाचक विशेषण—जिस विशेषण से संख्या का बोध हो उसे संख्यावाचक विशेषण कहते है।

जैसे—एक चित्र, आठ आदमी, पहला दरवाज़ा आदि।

संख्यावाचक विशेषण के दो भेद हैं

(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण

(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण—जिस विशेषण से निश्चित संख्या का बोध हो उसे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे—एक, दो, चार आदि।

(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण—जिस विशेषण से अनिश्चित संख्या का बोध हो उसे अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण कहते हैं। जैसे कुछ मकान, थोड़े से फल आदि।

निश्चित संख्या वाचक के भी चार उपभेद होते हैं।

(क) गणनावाचक—जिन शब्दों से गिनती का बोध हो जैसे एक, दो, तीन, आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) **क्रमवाचक**—जिन संख्या शब्दों से क्रम (बारी) विशेषण का बोध हो।जैसे पहली, दूसरी, तीसरी आदि।

(ग) **आवृत्ति वाचक**—संख्या के गुणन का बोध कराने वाले विशेषण। जैसे—दुगना, चौगुना, पाँच गुना आदि।

(घ) **समुदायवाचक**—जिन संख्या-शब्दों से समूह का बोध हो जैसे—दोनों, तीनों, चारों आदि।

(4) सार्वनामिक विशेषण या निर्देशक विशेषण—जो विशेषण किसी व्यक्ति या वस्तु के विषय में संकेत या निर्देश का बोध कराएँ, उन्हें 'निर्देशक' विशेषण कहते हैं। क्योंकि ये निर्देशक अथवा संकेत करने वाले शब्द सर्वनाम ही होते हैं, अतः इनका नाम 'सार्वनामिक विशेषण' है।

जैसे— 'यह' बालक। 'वह' घर। 'उस' व्यक्ति ने।

'वह' पुस्तक मेरी है।

इनमें यह, वह, उस सर्वनाम क्रमशः बालक, घर, व्यक्ति व पुस्तकें विशेषण बनकर आये हैं; अतः सार्वनामिक विशेषण कहलाएंगे।

विशेष ध्यान देने योग्य

(i) परिमाणवाचक विशेषण तथा संख्यावाचक विशेषण में अन्तर।

जिनको नापा-तोला जा सके, उनके वाचक शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं और जिनकी गिनती की जा सके, उनके वाचक शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—कुछ तेल, कुछ लड़के, पहले उदाहरण में 'कुछ' परिमाणवाचक है और दूसरे उदाहरण में 'कुछ' संख्यावाचक है।

(ii) सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण में अन्तर—संज्ञा-शब्द से रहित जहाँ अकेला सर्वनाम ही, वह तो सर्वनाम है और जहाँ संज्ञा से पहले या बाद में विशेषण आया हो, वहाँ सार्वनामिक विशेषण है; जैसे—वह जाता है। यहाँ 'वह' सर्वनाम है। परन्तु वह बालक जाता है। यहाँ 'वह' शब्द बालक का विशेषण है इसलिए सार्वनामिक विशेषण है। इसी प्रकार, यह विद्यालय है। यहाँ 'यह' सार्वनामिक विशेषण है।

तुलना की अवस्थाएँ

(Degree of Comparison)

"वस्तुओं के परस्पर गुण-दोषों का मिलान करने को 'तुलना' कहते है।" तुलना की दृष्टि से विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं—

(1) मूल अवस्था (Positive Degree)

(2) उत्तर अवस्था (Comparative Degree)

(3) उत्तम अवस्था (Superlative Degree)

(1) मूल अवस्था—इस अवस्था में वस्तु के गुण की तुलना किसी दूसरी वस्तु से नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की जाती। इसमें मूल वस्तु का अपना गुण-दोष ही प्रकट होता है। जैसे—मोहन अच्छा बालक है।

तुलसी महान कवि थे।

(2) उत्तर अवस्था—इस अवस्था में दो पदार्थों की तुलना करके एक को दूसरे की अपेक्षा बढ़ाकर या घटाकर बताया जाता है।

जैसे—मोहन से सोहन अधिक मेहनती है।

राधा की अपेक्षा श्यामा अधिक चतुर है।

(3) उत्तम अवस्था—इस अवस्था में अनेक वस्तुओं की तुलना में एक वस्तु को सबसे बढ़ाकर या घटाकर बताया जाता है। इस अवस्था को सूचित करने के लिए 'सबसे' या 'सब में' शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे—राम 'सबसे' मोटा व्यक्ति है।

विशेष—संस्कृत भाषा में उत्तर तथा उत्तम अवस्था को सूचित करने के लिए तर तथा तम प्रत्यय लगाए जाते हैं। हिन्दी भाषा में भी तत्सम शब्दों की अधिक संख्या है। अतः संस्कृत के नियमानुसार ऐसे विशेषणों के कुछ रूप निम्नलिखित हैं।

मूल अवस्था	उत्तर अवस्था	उत्तम अवस्था
सुन्दर	सुन्दरतर	सुन्दरतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
महान	महानतर	महानतम।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. संज्ञा किसे कहते हैं ? उसके मुख्य भेदों को उदाहरण सहित लिखो।
2. विशेषण किसे कहते हैं ? विशेषण के मुख्य भेदों को उदाहरण सहित लिखें।

2nd Reading

□□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय – 15

कबीरदास व तुलसीदास का जीवन व कृतीत्व

कबीरदास
(1399-1495 ई.)

निर्गुण (नाम, रूप आदि से परे ब्राह्म) की साधना करने वाले लोकहित चिन्तक-सज्जन को 'सन्त' कहा जाता है। हिन्दी की सन्तकाव्य-परम्परा अपने पूर्ववर्ती सिद्धों और जैनियों से वर्ण-व्यवस्था खण्डन, जैनियो से नारी-निन्दा, नाथों से योग-साधना, अपने समकालीन सूफ़ियों से प्रेम तथा अपने समाज से क्षोभ प्राप्त कर मुखरित हुई है। निःसन्देह सन्तकाव्य परम्परा के पहले कवि नामदेव हैं, लेकिन पूरी सन्त काव्य-परम्परा में कबीर सरीखा बहुमुखी प्रतिभा वाला क्रान्तिकारी कवि और कोई नहीं मिलता।

हिन्दी के संत कवियों में कबीरदास का सर्वोपरि स्थान है। वे एक क्रान्तिकारी विद्वान थे। उनके जन्म और स्वर्गवास के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। अधिकांश विद्वानों के अनुसार उनका जन्म सन् 1399 में तथा मृत्यु 1495 में हुई थी। उनके प्रारम्भिक जीवन के विषय में कई जनश्रुतियां प्रचलित हैं, जिनमें से एक यह है कि उनका जन्म काशी की किसी विधवा ब्राह्मणी से हुआ था। वह विधवा लोक-लज्जा के डर से बालक को 'लहखारा' तालाब के किनारे छोड़ गयी। नीरू और नीमा जुलाहा-दम्पत्ति ने, संतानहीन होने के कारण, उस बालक को ईश्वर की कृपा समझकर स्वीकार कर लिया। इतिहास द्वारा समर्थन न पाने पर भी इस किवदंती को सर्वथा असत्य नहीं कहा जा सकता, क्योंकि कबीर की रचनाओं में 'ताना-बाना', 'भरनी', 'तार', 'चरखा' आदि शब्दों का प्रतीक रूप में प्रयोग हुआ है। इससे सिद्ध होता है कि उनका प्रारम्भिक जीवन जुलाहों के संसर्ग में व्यतीत हुआ था।

गरीब परिवार में पालन होने के कारण कबीर को शिक्षा का अवसर नहीं मिला। साधु-सन्तों तथा फ़कीरों आदि के सत्संग से उन्हें अध्यात्म और ज्ञानपयोग का परिचय हुआ। कबीर ने रामानंद का शिष्यत्व ग्रहण किया था। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है—

काशी में हम प्रकट भये, रामानन्द चेताये।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कबीर जुलाहे का कार्य करते थे और भक्ति की लहर आने पर पद आदि गाने लगते थे। उन्होंने गृहस्थाश्रम में भी पांव रखा था। उनकी पत्नी का नाम लोई था। उनके यहाँ कमाल और कमाली नामक पुत्र व पुत्री होने की बात भी कही जाती है। कबीर मौजी और फक्कड़ सन्त थे। वे वैरागी प्रवृत्ति के थे। अतः वे न तो अपने व्यवसाय में मन रमा सके और न ही अपना पारिवारिक जीवन सुखी बना सके। वे किसी धर्म या सम्प्रदाय के पाखण्ड को सहन नहीं करते थे। इसलिए अपनी अन्तिम अवस्था में वे जान-बूझकर मगहर चले गये। लोग कहते है, मगहर में मरने से मुक्ति नहीं होती। कबीर ने इसी अंधविश्वास को तोड़ने के लिये मगहर में ही सन् 1495 में अपना देह त्याग किया।

रचनाएं—कबीर ने किसी विद्यालय में विधिवत् शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। उनके पास प्रतिज्ञा और ज्ञान की कमी नहीं थी। उन्होंने पण्डितों एवं संतों की संगति से ज्ञान प्राप्त किया था। अपने गुरु रामानन्द से उन्हें वेदान्त तथा उपनिषदों का ज्ञान प्राप्त हुआ था। अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के परिणामस्वरूप उनके व्यावहारिक ज्ञान में भी पर्याप्त वृद्धि हो गई थी। उन्होंने शास्त्र-ज्ञान को भी बड़ी सरल भाषा में प्रस्तुत किया। इस विषय में उनका कथन है—तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता अखियन की देखी।

कबीर ने कवित्व शक्ति के विस्तार के लिए काव्य-रचना नहीं की, अपितु वे अपने काव्यबद्ध उपदेशों के माध्यम से समाज में फैली रूढ़ियों, पाखंड और अंधविश्वासों का जगह-जगह घूम कर उच्छेदन करते थे। उनके ज्ञान का मुख्य आधार सत्संगति था। उनकी एक प्रमुख उपलब्धि यह है कि जिस सांप्रदायिक एकता का आज हम स्वप्न मात्र देखते है उसे इतने समय पूर्व उन्होंने अकेले ही क्रियान्वित कर दिखाया था।

कबीर के सम्पूर्ण काव्य का संग्रह 'बीजक' में हुआ है। इस ग्रन्थ के तीन भाग हैं। पहले भाग को 'रमैनी' कहते है, जो चौपाई छन्द में लिखा हुआ है। दूसरा भाग 'सबद' है, जो गीत या पद में लिखा गया है। तीसरा भाग 'साखी' कहलाता है, जो संस्कृत के 'साक्षी' शब्द से बिगड़ कर बना है, यह भाग दोहों में लिखा गया है।

कबीर ने 'मसि-कागद' नहीं छुआ, लेकिन जो भी उन्होंने कहा, वह प्रभावशाली है। उनकी उलट-बासियाँ भी प्रसिद्ध है। उनकी भाषा में ब्रज, राजस्थानी और पूर्वी भाषाओं का मिश्रित रूप है। अपनी कृतियों में कबीर ने उपदेश और खण्डन की शैली भी अपनायी है। उनके पदों में सूर और मीरा की तरह संगीत की लहर प्राप्त होती है। आत्म-सुधार, भक्ति, गुरु की महिमा, निर्गुण, ब्रह्म की उपासना आदि विषय कबीर के काव्य में महत्त्वपूर्ण हैं।

कबीर की भक्ति निर्गुण है उनके 'राम' उनके गुरु राम के नाम से भिन्न हैं। उनके राम दशरथ के पुत्र न होकर निर्गुण ब्रह्म हैं। कबीर के अनुसार ब्रह्म ही जगत में एकमात्र सत्ता है। उसी से सबकी उत्पत्ति होती है और उसी में सब लीन हो जाते हैं। इसीलिए कबीर ने राम और रहिम को एक मानकर हिंदू-मुसलमान दोनों को सहयोग और एकता का पाठ पढ़ाया। उन्होंने दोनों के धार्मिक बाह्यडंबरों का विरोध किया। उनकी विचारधारा पर अपने समय की अनेक धार्मिक विचारधाराओं का प्रभाव दिखलाई पड़ता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कबीर ने अहिंसा, सदाचार, त्याग, गुरु महिमा, सत्संग आदि पर अधिक बल दिया है। अपनी बात को निर्भीकता से कहने के कारण उनकी भाषा में कहीं-कहीं कटुता आ गई है। धर्म-सुधारक के साथ-साथ कबीर ने समाज-सुधार के लिए भी अपनी वाणी का प्रयोग किया। जाति-पाति, छुआछूत, खान-पान आदि के आडंबर का उन्होंने खुलकर विरोध किया है।

कबीर ने नाम-स्मरण और गुरु की महत्ता पर बल दिया है। उन्होंने भक्ति के लिये अहम् का नाश और ईश्वर में विश्वास को प्रधान माना है। कहीं-कहीं कवि ने ईश्वर को प्रियतम भी माना है। भक्ति के लिए आत्मा में वही बेचैनी उत्पन्न होनी चाहिये, जो विरहिणी के हृदय में प्रिय के लिये होती है। कबीर ने कहा भी है कि "हरि मोर पिय में राम की बहुरिया।" अज्ञान रूपी घूंघट का परदा हटाने पर भी ईश्वर की प्राप्ति होती है। कबीर की भक्ति में रहस्यवाद और अद्वैतवाद के दर्शन होते हैं।

कबीर की भाषा—कबीर की भाषा में अरबी, फ़ारसी राजस्थानी, पंजाबी, अवधि आदि का मिश्रण है : अतः वह 'सधुक्कड़ी' (साधुओं की) अथवा 'खिचड़ी भाषा' कहलाती है वे घुमक्कड़ थे, फलस्वरूप उनकी भाषा में उत्तरी भारत की लगभग सभी बोलियों के शब्द घुल-मिल गए। इसीलिए उनकी भाषा को जन भाषा कहा जाता है। कबीर के दोहे और पद आज भी ज्ञान और क्रांति का अमर संदेश देते हैं।

संत कबीर के दोहों में सत्संग की महिमा, लोकाचार, कर्त्तव्य आदि का जिस सरल तथा प्रभावशाली ढंग से निर्देश किया गया है, वह अत्यन्त दुर्लभ है। यही कारण है कि उनके अनेक दोहे सूक्तियों के रूप में शिक्षित और अशिक्षित सभी प्रकार के लोगों के मुख से प्रायः सुने जाते हैं। इन दोहों अथवा साखियों में कबीर के अनुभवों का सार निहित है।

गुरु महिमा

कबीरदास की भक्ति-साधना में गुरु का महत्त्व बहुत अधिक है—उनके गुरु आध्यात्मिक गुरु हैं। यद्यपि मनुष्य अपने अनुभवों और पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करता है, तथापि गुरु से समझे बिना संसार के अनेक रहस्य स्पष्ट नहीं होते। गुरु अपने ज्ञान के प्रकाश से शिष्यों के अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट करता है। कबीरदार ने गुरु के इसी महत्त्व को इन दोहों में व्यक्त किया है।

1. ग्यान प्रकास्या गुर मिल्या, सो जिनि बीसरि जाइ।
   जब गोविन्द कृपा करी, गुर मिलिया आइ ॥1 ॥
2. सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।
   लोचन अनत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार ॥2 ॥
3. पीछै लागा जाइ था, लोक बेद के साथि।
   आगै तैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि ॥3 ॥
4. माया दीक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवै पडंत।
   कहै कबीर गुरु ग्यान तैं, एक आध उबरंत ॥4 ॥

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेम और विरह

ईश्वर के प्रति भक्ति ही भक्त कवियों का 'प्रेम' है। ईश्वर का साक्षात्कार न हो पाने के कारण इसमें विरह का समावेश रहता है। कबीरदास ने भक्ति में प्रेम और तन्मयता का सबसे अधिक महत्त्व दिया है। इस कोटि के प्रेम के लिए भक्त को अपना सर्वस्व नयोछावर करना होता है।

1. प्रेम न खेतौं नीपजै, प्रेम न हारि विकाई।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस देई ले जाइ॥
2. कबीरा प्याला प्रेम का, अंतर लिया लगाय।
राम रोम में रमि रहा, और अमल क्या खाय॥
3. जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लोहार की, सांस लेत बिनु प्रान॥
4. कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का धर नांहि।
सीस उतारै हाथि-धरि, सो पैठे घर मांहि॥
5. अंखडिया झाई पड़ी पंथ निहारि निहारि।
जीभड़िया छाला पड़या, राम पुकारि पुकारि॥

सुमिरन

ईश्वर का स्मरण भक्ति का महत्त्वपूर्ण साधन है। 'सुमिरन' अर्थात् 'स्मरण' से भक्त ईश्वर को सदैव सर्वत्र देखता है। आत्मसमर्पण और एकाग्रता भक्त की मुख्य विशेषताएं हैं। इन्हीं के द्वारा वह ईश्वर को हृदयाम कर पाता है अन्यथा 'मैं' का भाव भक्ति में बाधक रहता है।

1. चहु तन जालौं मसि करौं, लिखौं राम का नाउं।
लेखपि करूं करंक की, लिखि-लिखि राम पठाउं॥
2. चारि भुजा के भजन में, भूलि परे सब संत।
कबिरा सुमिरै तासु को, जाके भुजा अनंत॥
3. जब मैं था हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि।
सब अंधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या मांहि॥
4. कस्तुरी कुंडलि बसै, मृग ढूंढै बन मांहि।
ऐसे घटि-घटि राम है, दुनिया देखें नांहि॥
5. आज कहै हरि काल्हि भजौगो, काल्हि कहै फिरि काल्हि।
आज ही काल्हि करंतड़ा, ओसरि जासी चाल॥

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साधु महिमा

साधु महिमा के इन दोहों में सत्संगति के महत्त्व को प्रकट किया गया है। सच्चे साधु अपने आचरण से लोगों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। ऐसे महात्माओं की संगति कभी निष्फल नहीं होती। परोपकार और वाक्-संयम साधु के आवश्यक गुण हैं।

कबिरा संगत साधु की, कहे न निरफल होइ।
होसी चंदन बासना, नीव न कहसी कोई॥
कबिरा संगत साधु की, ज्यों गंधी का बास।
जो गंधी कुछ दे नहीं, तो भी बास सुवास॥
साधु भया तो क्या भया, बोले नाहिं बिचारि।
हतैं पराई आत्मा, जीभ बांधि तरवारि॥
वृच्छ कबहुं नहिं फल भखैं, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधु न धरा सरीर॥

नीति और उपदेश

कबीरदास केवल भक्त कवि ही नहीं, समाज-सुधारक भी थे। नीति और उपदेश के इन दोहों में उन्होंने लोगों को सतपथ पर चलने का संदेश दिया है। इसके लिए उन्होंने मर्यादित आचरण, सबके प्रति मृदु व्यवहार, आत्मचिंतन की आवश्यकता, निदंक का भी सम्मान करना चाहिए आदि अनेक गुणों को अपनाने पर बल दिया है।

ऐसी बाणी बोलिए, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरेन कौं सुख होई॥
निन्दक नेडे राखिए, आंगणि कुटी बंधाइ।
बिनु साबुण पाणी बिना, निरमल करै सुमाइ॥
करता केरे बहुत गुन, औगुन कोई नांहि।
जो दिल खोजौ अपनौ, सब ओगुन मुझ मांहि॥

तुलसीदास (1532-1623 ई.)

तुलसी जीवनवृत्त

कवि-शिरोमणि तुलसीदास हिन्दी साहित्य के चमकते हुए सितारे हैं। उनका जीवन-वृत्त अतीत के गर्भ में छिपा है। इनके जन्म स्थान और जन्म संवत् के विषय में इतिहासकारों एवं विद्वानों में मतभेद हैं। कबीर और सूर की भांति उनका जीवन वृत्त निश्चित कर पाना असम्भव है। उनके जीवन-तथ्यों के बारे में सभी विद्वान एकमत नहीं हैं। उनका जन्म स्थान के बारे में कुछ विद्वान कहते हैं कि इनका जन्म स्थान गाजीपुर है। कई उन्हें राजु पुरा, ज़िला बांदा का मानते हैं और कई लोग इनका जन्म स्थान उत्तर प्रदेश के ज़िला एटा के सोरों नाम गांव को

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानते हैं। गोस्वामी तुलसी दास की जन्म तिथि सन् 1532 मानी गई है। इनकी माता का नाम तुलसी और पिता का नाम आत्माराम था। जनश्रुति है कि जन्म के समय ही इन्होंने 'राम' नाम का उच्चारण किया था। सम्भवतः इसी से इनका नाम 'राम बोला' रखा गया।

तुलसी का बचपन बड़ी निर्धन अवस्था में व्यतीत हुआ और कई बार इन्हें भिक्षा भी मांगनी पड़ी थी। कुछ समय पश्चात् इनकी भेंट बाबा नरहरिदास से हुई। उन्होंने इन्हें शिक्षा दी। गुरु नरहरिदास के साथ ही तुलसी ने अनेक स्थानों की यात्रा की। बाबा नरहरिदास से ही तुलसी ने सूकर-खेत में रामकथा सुनी थी। काशी में श्री शेष सनातन जी से उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। यहीं उन्होंने पन्द्रह वर्ष तक शास्त्रों का अध्ययन किया।

विद्या प्राप्त करने के बाद तुलसीदास राजपुर में आकर रहने लगे। वहीं इनका विवाह दीनबन्धु-पाठक की पुत्री रत्नावली से हो गया। ये अपनी पत्नी के रूप गुण आदि पर इतने आसक्त थे कि उसके बिना थोड़ी देर भी नहीं रह सकते थे। एक बार पत्नि के पितृगृह चले जाने पर ये भी, आंधी पानी की परवाह किए बिना, वहाँ पहुँच गए। पति को प्रेम विह्वल देख कर रत्नावली को लज्जा उठानी पड़ी। इस पर उसके पति को फटकारा—

लाज न आवत आपको, दौरे आयो साथ।
धिक्-धिक् ऐसे प्रेम को, कहा कहूं मैं नाथा॥
अस्थि चर्ममय देह मम, तामैं ऐसी प्रीति।
तैती जो श्री राम में, होति न तो भव भीति॥

तुलसीदास को यह बात लग गई और वे संसार से विरक्त हो गए। उन्होंने अपना शेष जीवन श्री राम की भक्ति में बिता दिया। उन्होंने घर छोड़ कर वैराग्य ले लिया। तत्पश्चात् अनेक स्थानों का भ्रमण करते हुए अन्त में जाकर काशी में रहने लगे। वहीं सन् 1623 में उनका देहावसान हो गया।

मुख्य रचनाएँ—तुलसी की रचनाओं के बारे में भी मतभेद हैं। इनकी बारह रचनाएँ प्रसिद्ध हैं। इनमें रामचरि तमानस, विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली और जानकीमंगल बड़े ग्रन्थ हैं। छोटे ग्रन्थों में पार्वती मंगल, रामलला नहछू, रामाज्ञा प्रश्न, कृष्ण गीतावली, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी आदि की गणना की जाती है। लोकप्रिय और समाज पर प्रभाव की दृष्टि से 'रामचरितमानस' तुलसी की ही नहीं, बल्कि समस्त हिन्दी-साहित्य की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में से एक है। तुलसी भक्त और कवि दोनों थे। उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जीवन कथा को रामचरित मानस में ढाला। यह उनकी अमर रचना है।

भाषा एवं शैली—कविवर तुलसी ने अपनी रचनाएं ब्रज और अवधी दोनों भाषाओं में रची हैं। दोनों भाषाओं पर उनका एक सा अधिकार था। उन्होंने तत्कालीन सभी काव्य-पद्धतियों को और सभी रसों और गुणों का अपने काव्य में यथास्थान वर्णन किया है। प्रबन्ध, रीति, मुक्तक, छप्पय, कवित्त और दोहा-चोपाई का उन्होंने अपनी रचनाओं में सफल प्रयोग किया है।

काव्य प्रतिभा—गोस्वामी तुलसीदास काव्य प्रतिभा में पूर्ण रूपेण सम्पन्न थे। विषय का समयानुसार चुनाव करना वो भली भांति जानते थे। श्री राम और सीता उनके इष्टदेव थे। उनके प्रति उनकी श्रद्धा का आभास 'विनय पत्रिका' के निम्नलिखित पद में मिलता है—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाके प्रिय न राम वैदेही।

तजि यु ताहिं कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही।

तज्यो पिता प्रह्लाद विभीपन बंधु भरत महतारी।

रामचरितमानस में माता कैकेयी के वर मांगने पर श्री राम इसे उचित ठहरा कर बनवास चले जाते हैं। भरत ननिहाल से लौटने पर अपनी माता को स्वार्थी बताते हैं—

हित हमार सिय पति सेवकाई। सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई ॥

मैं अनुमानि दीख मन माही। आन उपाय मोर हित नाहीं।

तुलसी हमारे समाज के सजग प्रहरी थे। लोक मर्यादा, लोक हित और जन कल्याण का उन्हें पूरी तरह ध्यान था। इस प्रकार तुलसी कविता के लिए नहीं बल्कि कविता तुलसी के लिए बनी है। किसी ने सच कहा है—

कविता पर तुलसी न लसे कविता लसी या तुलसी की कला।

तुलसी के राम सृष्टि में बढ़ते हुए अत्याचार दूर करने आए थे—

जब जब होहिं धर्म की हानी। बाढ़ाई असुर महा अभिमानी।

तब तब धरि प्रभु मनुज सरीरा। हरहि सकल सज्जन भव-पीरा ॥

फिर भी वे एक स्थान पर कहते हैं—

जाकी रही भावना जैसी।

प्रभु मूरति तिन देखी तैसी ॥

तुलसी की आध्यात्मिक विचारधारा—डा. लक्ष्मी सागर वार्णेय ने लिखा है कि तुलसी 'राम को परब्रह्म और सीता को मूल प्रकृति मानते हैं। समस्त विश्व के मूल स्रोत होने के कारण उनके राम ज्ञान-स्वरूप है। मायाधीश होने के कारण वे सगुण ब्रह्म भी हैं। वे मोह से अलग रहते हैं। राम की माया ही उनके इशारे से सृष्टि का निर्माण और संहार करती है। इस लोक में सीता राम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। समस्त विश्व राम की माया के अधीन है। मायाजनित संसार मिथ्या है। वह राम के सत्य से प्रतिभासित होकर सत्य प्रतीत होता है। ईश्वर और जीव में कोई भेद नहीं है। जो भेद है, वह मायाजनित है। मानव-शरीर दुर्लभ है। इस लिए मनुष्य परमार्थ की सिद्धि के लिए प्रयत्नशील हो : चाहिये। मनुष्य का बन्धन राम भक्ति द्वारा छूट सकता है। — भक्ति, ज्ञान की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है। — सत्संग, गुरु-कृपा, नाम स्मरण, अनुराग, राम-तीर्थों की यात्रा, ब्रह्मण-सेवा, माया से निर्लेप, लोक-निरपेक्ष भाव, वासनाहीन प्रेम, शिव आदि भक्ति के पोषक हैं।"

गोस्वामी तुलसीदास राम के अनन्य भक्त थे। वे राम को स्वामी और स्वयं को उनका दास मानते थे। इसी से उनकी भक्ति 'दास्य भाव' की भवित कही जाती है। तुलसी के यश का आधार 'रामचरितमानस' है। इसमें राम की कथा प्रमुख है, जिसके साथ अन्य अनेक अंतकथाएं भी हैं। इसे हिन्दी का श्रेष्ठ महाकाव्य माना जाता है। इस ग्रंथ में कवि ने अपनी कुशल लेखनी द्वारा राम चरित के माध्यम से तत्कालीन समाज का भी प्रभावशाली एवं तटस्थ दृष्टि से चित्रण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया है। तुलसी को महान् समन्वयवादी कहा जाता है। उन्होंने इस ग्रन्थ में परस्पर विरोधी समझे जाने वाले दार्शनिक विचारों, मत-मतांतरों, जातियों, वर्णों, भावों आदि का सुन्दर समन्वय किया है। यह ग्रंथ आज भी उतना ही अनुकूल एवं उपयोगी है जितना कवि के युग में था। इसकी भाषा अवधी है, परन्तु व्रज भाषा को भी उन्होंने समान आदर दिया और उस समय आम बोलचाल की भाषा में जिन देशी-विदेशी शब्दों का प्रचलन था उनका समाहार भी उन्होंने अपने काव्य में किया। 'मानस' में सभी रसों का सुन्दर परिपाक हुआ है। इस ग्रंथ की विशेषता यह है कि हर स्तर के लोग अपनी आवश्यकतानुसार इसमें से सामग्री चुन लेते हैं। यही कारण है कि आज भी यह हर घर की शोभा बढ़ा रहा है। तुलसी उदान्त काव्य के श्रोता थे और उनके काव्य की प्राणधारा है—लोक मंगल की भावना।

तुलसीदास ने विनय-भाव को भक्ति का अनिवार्य अंग माना है।

'विनय-पत्रिका' में ऐसे अनेक पद संकलित हैं। प्रस्तुत पाठ में संकलित पदों में तुलसी ने आवागमन के बंधन से मुक्ति के लिए भगवतकृपा की कामना की है। निर्मल भाव से हरि-भक्ति में लीन रहने में ही वे जीवन की सार्थकता मानते हैं।

विनय

(1)

हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों।
साधन-धाम विबुध-दुर्लभ तनु मोहिं कृपा हरि दीन्हों।
कोटिहूं मुख कहि जायं न प्रभु के एक एक उपकार।
तदपि नाथ कछु और मांगिहों दीजै परम उदार।
विषय-वारि मन-मीन भीन्न नहिं होत कबहुं पल एक।
तातें सहिय बिपति अति दारुन जनमत जोनि अनेक,
कृपा-डोरि, बंसी-पद-अंकुस, परम प्रेम-मृदु-चारों।
एहि बिधि-विधि-हरहु मेरो दुख, कौतुक राम तिहारो।
हैं श्रुति-बिदित उपाय सकल, सुर केहि केहि दीन निहोरै ?
तुलसीदास यहि जीव मोह-रजु, जोई बांध्यो सोइ छोरे।

(2)

कबहुंक हो यहि रहनि रहौंगो।
श्री रघुनाथ-कृपालु-कृपा तै, संत सुभाव गहौंगो।
ज्था लाभ संतोष सदा, काहू सों कछु न चहौंगो।
परहित निरत निरंतर, मन क्रम बचन नेम निबहौंगो।
परुष बचन अति दुसह स्रवन, सुनि तोहि पावक न दहौंगो॥

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिगत मान सम सीतल मन, पर-गुन, नहिं दोष कहौंगो।
परिहरि देह जनित चिन्ता दुख सुख समबुद्धि सहौंगो।
तुलसीदास प्रभु यहि पथ रहि अविचल हरिभक्ति लहौंगो।

(3)

ऐसी मूढ़ता या मन की।
परिहरि रामभगति-सुरसरिता, आस करत ओसकन की।
धूमसमूह निरखि-चातक ज्यों, तृषित जानि मति धन की।
नहिं तहं सीतलता न बारि, पुनि हानि होति लोचन की।
ज्यों गचकाँच बिलौकि सेन जड़ छांह आपने तन की।
टूटत अति आतुर अहार बस, छति विसरि आनन की।
कहं लौं कहौं कुचाल कृपानिधि, जानत हों गति मन की।
तुलसीदास प्रभु हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पन की।

(4)

अब लौं नसानी, अब न नसैहों।
राम-कृपा भव-निसा सिरानी, जागे फिर न डसैहों।
पायो नाम चारु चिंतामनि, डर-कर ते न खसैहों।
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसैहों।
परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, जिन बस हवै न हँसैहों।
मन मधुकर पन करि तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहों।

तुलसी कृत 'रामचरितमानस' हिन्दी का सर्वप्रसिद्ध महाकाव्य है। इसमें राम की जीवन-गाथा प्रस्तुत की गई है। प्रस्तुत अवतरण इसी काव्य के बालकांड से उद्धृत है। राजा जनक द्वार आयोजित सीता-स्वयंवर में जब रामचंद्र ने शिव-धनुष-भंग कर दिया तब परशुराम ने एकाएक मंच पर आकर उन्हें ललकारा। राम तो शांत रहे, पर उनकी ललकार को सुनकर लक्ष्मण स्वयं को न रोक सके। प्रस्तुत काव्य-खंड में परशुराम के क्रुद्ध होने और लक्ष्मण द्वारा उनसे विवाद करने का वर्णन है। वर्णन-शैली की दृष्टि से यह 'रामचरितमानस' का बहुत ही रोचक प्रसंग है।

लक्ष्मण-परशुराम संवाद

(1)

बिहसि लखन बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभटमानी॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूंकि पहारू॥

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इहां कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥
देखि कुठारू सरासनु बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥
भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरें कुल इन्ह पर न सुराई॥
बंधे पाप अपकीरति हारें। मारतहू पां परिअ तुम्हारे॥
कोटि कलिस सम बचनु तुम्हारा। व्यर्थ धरहु धनु बान कठारा॥

जो बिलोकि अनुचित कहेंउ, छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोज भृगुवंस मनि, बोले गिरा गंभीर॥

(2)

कौसिक सुन्हु मंद चेहु बालकु। कुटिल काल निज कुल धालकु॥
मानु बंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुसु अबुधु असंकू॥
काल कबलु होइहि छन माहीं। कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं॥
तुम्ह हटकहू जौं चहहु उबारा। कहि प्रतापु बलु रोपु हमारा॥
लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा॥
अपने मुहु तुम आपनि करनी। बार अनेक भांति बहु बरनी॥
नहिं संतोपु तो पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू॥।
बीखती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा॥

सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु, कायर करहि प्रलापु॥

(3)

तुम्ह तो कालु हांक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा॥
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर बोरा॥
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुवादी बालकु बध जोगू॥
बाल बिलोकि बहुतु मैं बांचा। अब येहु मरनिहारभा सांचा॥
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोप गुन गनहि न साधू॥
कर कुठार मैं अकरून कोही। आगें अपराधी गुरु द्रोही॥
उत्तर देत छोड़ौं बिनु मारे। केवल कौसिक सील तुम्हारे॥
न त येहि काटि कुठार कठोरें। गुरहि उरिन होतेउं श्रम थोरें॥
गाधि सुनु कह हदय हँसि, मुनिहि हरिअरेइ सूझ।
अयमय खांडन अखमय, अजहुं न बूझ अबूझ॥

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(4)

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहि जान विदित संसारा॥
माता पितहि उरिन भए नीकें। गुर रिनु रहा सोचु बड़ जी कें॥
सो जनु हमरोहि माथें काढ़ा। दिन चलि गए व्याज बड़ बाढ़ा॥
अब आनिज व्यवहारिआ बोली। तुरंत देउं मैं थैली खोली॥
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।
भृगुबर परसु देखावहु मोहि। विप्र विचारि बचौं नृप द्रोही॥
मिले न कबहुं सुभर रन गाढ़े। द्विज देवता धरहि के बढ़े॥
अनुचित कहि सब लोग पुकारे। लघुपति सयनहि लखनु नेवारे॥

लखन उत्तर आहुति सरिस, भृगुबर कोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन, बोले रघुकुल भानु॥

(5)

नाथ करहु बालक पर छोहू। सुध दुधमुख करिअ न कोहु॥
जौं पै प्रभु प्रभाउ कछु जाना। तौं कि बराबरि करै अयाना॥
जौं लरिका कछु अचगरि करहीं। गुर पितु मातु मोद मन भरहीं॥
करिअ कृपा सिसु सेवक जानी। तुम्ह सम सील धीर मुनि ज्ञानी॥
राम बचन सुनि कछुक जुड़ाने। कहि कछु लखनु बहुरि मुसुकाने॥
हँसत देखि नखसिख रिस व्यापी। राम तोर भ्राता बड़ पापी॥
गौर सरीर स्यामु मन माहीं। कालकूट मुख पयमुखं नाहीं॥
सहज टेढ़ अनुहरं न तोही। नीचु मीचु सम देख न मोही॥

लखन कहेउ हँसि सुनहु मुनि, क्रोध पाप कर मूल।
जोहि बस जन अनुचित करहिं, चरहिं विस्व प्रतिकूल॥

(6)

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया। परिहरि कोप् करिअ अब दाया॥
टूट चाप नहिं जुरिहि रिसाने। बैठिअ होंइह पाय पिरानें॥
जं अति प्रिय तौं करिअ उपाई। जोरिअ कोउ बड़ गुनी बोलाई॥
बोलत लखनहि जनकु डेराहीं। भ्रष्ट करहु अनुचित मल नाहीं॥
थर थर कांपहि पुर नर नारि। छोट कुमारु खोट अति भारी।
भृगुपति सुनि-सुनि निरभय बानी। रिस तनु जरै होइ बल हानी॥

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बोले रामहि देह निहोरा। बचौं बिचारि बंधु लघु तोरा॥
मनु मलीन तनु सुंदर कैसें। विष रस भरा कनक घट जैसें॥

सुनि लछिमन बिहसे बहुरि, नयन तरेरे राम।
गुर समीप गवने सकुचि, परिहरि बानी बाम॥

प्रश्नावली

1. लक्ष्मण परशुराम संवाद को अपने शब्दों में लिखिए!
2. तुलसी का जीवन परिचय लिखिए।
3. कबीरदास ने अपने दोहों में जिन जीवन-मूल्यों अथवा आदर्शों को महत्त्व दिया है, उनका उल्लेख कीजिए।
4. कहैं कबीर गुरु ग्यान तैं, एक आध उबरतें। इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।
5. कबीरदास की हिन्दी साहित्य को देन पर विस्तृत लेख कीजिए।
6. कबीर दास के दोहों से संबंधित एक पाठ योजना बनाएं।
7. तुलसी के विनय के पदों से संबंधित एक पाठ योजना बनाएं।
8. रामचरितमानस के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
9. कबीर के राम व तुलसी के राम में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
10. कबीर व तुलसी की भाषा शैली पर एक निबंध लिखिए।

2nd Reading

□□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय – 16

निम्नलिखित का अध्ययन

(1) कबीर के दोहे (7वीं व 9वीं कक्षा का पाठ्यपुस्तक से)

(2) महादेवी वर्मा की कविता मुरझाया फूल।

(3) गिल्लू (कहानी)

(4) नीलकंठ (नवीं कक्षा में) कबीर के दोहे

(प्रस्तुत दोहों में कबीर ने समाज-कल्याण के लिए आचार-विचार संबंधी अपने अनुभव व्यक्त किए हैं।)

ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होई।
सुवरन कलस सुरा भरा, साधु निंदा सोई॥
दोष पराए देख करि, चले हसंत हंसत।
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत॥

सातवीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक सरस भारती (भाग-2) में कबीर दास के दोहे

साँच बरावर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप॥
बोली एक अमोल है, जो कोई बोले जानि।
हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि। 2।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप। 3।
काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब्ब। 4।
साँई इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साध न भूखा जाय। 5।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय। 6।
दोस पराए देखि करि, चला हंसत-हंसत
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत। 7।
जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ग्यान।
मोल करो तलवार का, पड़न रहन दो म्यान। 8।
माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर। 9।
सोना, सज्जन, साधुजन, टूटि जुरैं सौ बार।
दुर्जन, कुंभ-कुम्हार के, एकै धका दरार॥ 10।
तिनका कबहूँ न निंदिए, जो पाँयन तर होय।
कबहूँ उड़ि आँखिन परे, पीर घनेरी होय। 11।

—कबीरदास

मुरझाया फूल

था कली के रूप शैशव
में अहा, सूखे सुमन।
हास्य करता था, खिलाती
अंक में तुझको पवन॥ 1॥
खिल गया जब पूर्ण तू।
मंजुल सुकोमल पुष्प वन।
लुब्ध मधु के हेतु मँडराने
लगे, उड़ते भ्रमर॥ 2॥
स्निग्ध किरणें चन्द्र की
तुझको हँसाती थी सदा।
ओस मुक्ता-जाल से
शृंगारती थीं सर्वदा॥ 3॥
वायु पंखा झल रही
निद्रा विवश करती मुझे।
यत्न माली का रहा
आनन्द से भरता तुझे॥ 4।
कर रहा अठखेलियाँ,
इतरा सदा उद्यान में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंत का यह दृश्य आया,
था कभी क्या ध्यान में ॥ 5 ॥
सो रहा अब तू धरा पर
शुष्क बिखराया हुआ।
गन्ध-कोमलता नहीं,
मुख-मंजु मुरझाया हुआ ॥ 6 ॥
आज तुझको देखकर,
चाहक भ्रमर आता नहीं।
वृक्ष भी खोकर तुझे
हा, अश्रु बरसाता नहीं ॥ 7 ॥
जिस पवन में अंक में
ले, प्यार था तुझको किया।
तीव्र झोंके से सुला
उसने तुझे भू पर दिया ॥ 8 ॥
कर दिया मधु और सौरभ
दान सारा एक दिन।
किन्तु रोता कौन है
तेरे लिए दानी सुमन ॥ 9 ॥
मत व्यथित हो पुष्प, किसको
सुख दिया संसार ने ?
स्वार्थमय सबको बनाया
है यहाँ करतार ने ॥ 10 ॥
विश्व में हे पुष्प ! तू
सबके हृदय भाता रहा।
दान कर सर्वस्व फिर भी
हाय, हरपाता रहा ॥ 11 ॥
जब न तेरी ही दशा पर,
दुख हुआ संसार को।
कौन रोयेगा सुमन,
हम से मनुज निस्सार को ॥ 12 ॥

—महादेवी वर्मा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गिल्लू (कहानी)

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। उसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघु प्राणी की खोज है।

परन्तु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा। कौन जाने, स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो।

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौए एक गमले के चारों ओर चोंचों से छुवा-छुवौवल जैसा खेल-खेल रहे हैं। यह काक मुशुंडि भी विचित्र पक्षी है—एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के। उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं, हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आप का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही दे देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौआ और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रकट करते हैं।

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गई। निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है, जो संभवतः घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौए जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं।

काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघु प्राण के लिए बहुत थे। अत. वह निश्चेष्ट-सा गमले में चिपटा पड़ा था।

सबने कहा कि कौए की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जाए।

परन्तु मन नहीं माना, उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में ले आई, फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पैन्सिलिन का मरहम लगाया।

रुई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हें से मुँह में लगाई, पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदे दोनों ओर ढुलक गई।

कई घंटे के उपचार के उपरांत उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उँगली अपने दो नन्हें पंजों से पकड़कर नीले काँच की मोतियों जैसे आँखों से इधर-उधर देखने लगा।

तीन-चार मास में उसके स्निग्ध रोयें, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखे सबको विस्मित करने लगीं।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उस गिल्लू बुलाने लगे। मैंनें फूल रखने की एक हल्की डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से ख़िड़की पर लटका दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता समझता रहता था। परन्तु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला। वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती।

कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लंबे लिफ़ाफ़े में इस प्रकार रख देती कि अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघु गात लिफ़ाफ़े के भीतर बंद रहता। इस अद्भुत स्थिति में कभी-कभी घंटों मेज़ पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता।

भूख लगने पर चिक्-चिक् करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफ़ाफ़े से बाहर वाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता रहता।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया। नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में धीरे-धीरे आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक्-चिक् करके न जाने क्या कहने लगीं। गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है।

मैंने कीलें निकाल कर जाली का एक कोना खोल दिया। और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते-बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

आवश्यक काग़ज़-पत्री के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है। मेरे कालेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तबसे यह नित्य का क्रम हो गया।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिन भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना, हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गई थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।

मेरे पास बहुत-से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परन्तु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफ़ाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीज़ें या तो लेना बन्द कर देता था या झूले के नीचे फेंक देता था।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाज़ा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फ़िर किसी दूसरे को देखकर उसी तेज़ी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे जाते, परन्तु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफ़ाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात हुआ कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य, कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक पारिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती। अत: गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत आ ही गया। दिन भर उसने न कुछ खाया और न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतर कर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से मेरी बड़ी उँगली पकड़ पर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया। परन्तु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

उसका झूला उतारकर रख दिया है और खिड़की की जाली बंद कर दी गई है, परन्तु गिलहरियों की नई पीढ़ी जाली के उस पार चिक्-चिक् करती ही रहती है और सोनजुही पर वसंत आता ही रहता है।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू की समाधि दी गई है, इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी, इसलिए भी कि उस लघु गात का किसी वासंती दिन, जुही के पीलाभ छोटे-फूल में खिल जाने का विश्वास मुझे संतोष देता है। —महादेवी वर्मा

नीलकण्ठ

प्रयाग-जैसे शांत और सांस्कृतिक आश्रम-नगर में नखास-कोना एक विचित्र स्थिति रखता है। जितने दंगें-फ़साद और छुरे-चाकूबाजी की घटनाएँ घटित होती हैं, सबका अशुभारम्भ प्राय: खास कोने से ही होता है।

उसकी कुछ और भी अनोखी विशेषताएं है। घास काटने की मशीन के बड़े चौंड़े चाकू से लेकर फ़रसा, कुलहाड़ी, आरी, छुरी आदि में धार रखनेवालों तक की दुकानें वहीं हैं। अर्थात्

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गोंठिल चाकू-छूरी को पैना करने के लिए दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। आंखों का सरकारी अस्पताल भी वहीं प्रतिष्ठित है। शत्रु-मित्र की पहचान के लिए दृष्टि कमज़ोर हो तो वहां ठीक कराई जा सकती है, जिससे कोई भूल होने की संभावना न रहे। इसके अतिरिक्त एक और अस्पताल उसी कोने में गरिमापूर्ण ऐतिहासिक स्थिति रखता है। आहत, मुमु व्यक्ति की दृष्टि से यह विशेष सुविधा है। यदि अस्पताल के अन्तः कक्षों में स्थान न मिलें, यदि डॉक्टर, नर्स आदि का दर्शन दुर्लभ रहे तो बरामदे-पोर्टिको आदि में विश्राम प्राप्त हो सकता है ; और यदि वहां भी स्थानालाभन हो, तो अस्पताल के कंपाउंड में मरने का संतोष तो मिल ही सकता है।

हमारे देश में अस्पताल साधारण जन को अंतिम यात्रा में संतोष देने के लिए ही तो हैं। किसी प्रकार घसीटकर, योग-कर उस सीमा-रेखा में पहुंचा आने पर बीमार और उसके परिचारकों को एक अनिर्वचनीय आत्मिक सुख प्राप्त होता है। इससे अधिक पाने की न उसकी कल्पना है, न मांग। कम-से-कम इस व्यवस्था ने अंतिम समय मुख में गंगाजल, तुलसी, सोना डालने की समस्या तो सुलझा ही दी है।

यहां मत्स्य-क्रय-विक्रय केन्द्र भी हैं और तेल-फुलेल की दुकानें भी, मानो दुर्गंध-सुगंध में समरसता स्थापित करने का अनुष्ठान हैं। पर नख़ासकोने के प्रति मेरे अकर्षण का कारण उपयुक्त विशेषताएं नहीं हैं। वस्तुतः वह स्थान मेरे ख़रगोश, कबूतर, मोर, चकोर आदि जीव-जंतुओं का कारागार भी हैं। अस्पताल के सामने की पटरी पर कई छोटे-छोटे घर और बरामदे हैं, जिनमें ये जीव-जंतु तथा इनके कठिन हृदय जेलर दोनों निवास करते हैं।

छोटे-बड़े अनेक पिंजड़े बरामदे में और बाहर रखे रहते हैं, जिनमें दो ख़रगोशों के रहने के स्थान में पचीस और चिड़ियों के रहने के स्थान में पचास भरी रहती हैं। इन छोटे जीवों को हंसने-रोने के लिए भिन्न ध्वनियां नहीं मिली हैं। अतः इनका महाकलरव महाक्रंदन भी हो तो आश्चर्य नहीं। इन जीवों के कष्ट-निवारण का कोई उपाय न सूझ पाने पर भी मैं अपने-आपको उस ओर जाने से नहीं रोक पाती। किसी पिंजड़े में पानी न देखकर उसमें पानी रखवा देती हूं। दाने का अभाव हो, तो दाना डलवा देती हूं। कुछ चिड़ियों को ख़रीदकर उड़ा देती हूं। जिनके पंख काट दिए गए हैं, उन्हें ले आती हूं। परंतु फिर जब उस ओर पहुंच जाती हूं, सब कुछ पहले जैसा ही कष्टकर मिलता है।

उस दिन एक अतिथि को स्टेशन पहुंचा कर लौट रही थी कि चिड़ियों और ख़रगोशों की दुकान का ध्यान आ गया और मैंने ड्राइवर को उसी ओर चलने का आदेश दिया।

बड़े मियां चिड़िया वाले की दुकान के निकट पहुंचते ही उन्होंने सड़क पर आकर ड्राइवर को रुकने का संकेत दिया। मेरे कोई प्रश्न करने के पहले ही उन्होंने कहना आरंभ किया, 'सलाम गुरु जी। पिछली बार आने पर आपने मोर के बच्चों के लिए पूछा था। शंकरगढ़ से एक चिड़ीमार दो मोर के बच्चे पकड़ लाया है, एक मोर है, एक मोरनी। आप पाल लें। मोर के पंजों से दवा बनती है, सो ऐसे ही लोग ख़रीदने आए थे। आख़िर मेरे सीने में भी इनसान का दिल है। मारने के लिए ऐसी मासूम चिड़ियों को कैसे दे दें ? टालने के लिए मैंने कह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टिया, गुरु जी ने मंगवाए हैं। वैसे, यह कम्बख़्त रोज़गार ही ख़राब है। बस, पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो।'

बड़े मियां के भाषण की तूफ़ान मेल के लिए कोई निश्चित स्टेशन नहीं है। सुननेवाला थककर जहां रोक दे, वही स्टेशन मान लिया जाता है। इस तथ्य से परिचित होने के कारण ही मैंने बीच में उन्हें रोककर पूछा, 'मोर के बच्चे हैं कहां ?' बड़े मियां के हाथ के संकेत का अनुसरण करते हुए मेरी दृष्टि एक तार के छोटे से पिंजड़े तक पहुंची, जिसमें तीतरों के समान दो बच्चे बैठे थे। मोर हैं, यह मान लेना कठिन था। पिंजड़ा इतना संकीर्ण था कि वे पक्षिशावक जाली के गोल फ्रेम में कसे-जड़े चित्र-जैसे लग रहे थे।

मेरे निरीक्षण के साथ-साथ बड़े मियां की भाषण मेल चली जा रही थी। 'ईमान-कसम, गुरु जी, चिड़ीमार ने मुझसे इस मोर के जोड़े के नकद तीस रुपए लिए हैं। बारहा कहा, भई जरा सोच तो, अभी इनमें मोर की कोई ख़ासियत भी है कि तू इतनी बड़ी कीमत ही मांगने चला पर वह मूजी क्यों सुनने लगा ? आपका ख़याल करके अछता पछताकर देना ही पड़ा। अब आप जो मुनासिब समझें। अस्तु तीस चिड़िमार के नाम के और पांच बड़े मियां के ईमान के देकर जब मैंने वह छोटा पिंजरा कार में रखा, तब मानो वह जाली के चोखटे का चित्र जीवित हो गया। दोनों पाक्षिशावकों के छटपटाने से लगता था, मानो पिंजड़ा ही सजीव और उड़ने-योग्य हो गया है।

घर पहुंचने पर सब कहने लगे, तीतर है, मोर कहकर ठग लिया है।

कदाचित् अनेक बार ठगे जाने के कारण ही ठगे जाने की बात पर मेरे चिढ़ जाने की दुर्बलता बन गई है। अप्रसन्न होकर मैंने कहा। मोर के क्या सुर्खाब के पर लगे हैं ? है तो पक्षी ही। और तीतर-बटेर क्या लंबी पूंछ होने के कारण उपेक्षा-योग्य पक्षी है ? चिढ़ा दिए जाने के कारण ही संभवतः उन दोनों पक्षियों के प्रति मेरे व्यवहार और यत्न में कुछ विशेषता आ गई।

पहले अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में उनका पिंजड़ा रखकर उसका दरवाज़ा खोला, फिर दो कटोरों में सतू की छोटी-छोटी गोलियां और पानी रखा। वे दोनों चूहेदानी जैसे पिंजड़े से निकलकर कमरे में मानो खो गए। कभी मेज़ के नीचे घुस गए, कभी अलमारी के पीछे। अंत में इस लुका छिपी से थककर उन्होंने मेरे रद्दी काग़ज़ों की टोकरी को अपने नए बसेरे का गौरव प्रदान किया। दो-चार दिन वे इसी प्रकार दिन में इधर-उधर गुप्तवास करते और रात में रद्दी की टोकरी में प्रकट होते रहे। फिर आश्वस्त हो जाने पर कभी मेरी मेज़ पर, कभी कुर्सी पर और कभी मेरे सिर पर अचानक आविर्भूत होने लगे। खिड़कियों में तो जाली लगी थी, पर दरवाज़ा मुझे निरंतर बंद रखना पड़ता था। खुला रहने पर चित्रा (मेरी बिल्ली) इन नवागंतुकों का पता लगा सकती थी और तब उसकी शोध का क्या परिणाम होता, यह अनुमान करना कठिन नहीं है। वैसे, वह चूहों पर भी आक्रमण नहीं करती, परंतु यहां तो दो सर्वथा अपरिचित पक्षियों की अनाधिकार चेष्टा का प्रश्न था। उसके लिए दरवाज़ा बंद रहे और ये दोनों (उसकी दृष्टि में) ऐरे-गैरे मेरी मेज़ को अपना सिंहासन बना लें, यह स्थिति चित्रा-जैसी अभिमानिनी मार्जारी के लिए असहज ही कही जाएगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब मेरे कमरे का कायाकल्प चिड़ियाखाने के रूप में होने लगा, तब मैंने बड़ी कठिनाई से दोनों चिड़ियों को पकड़कर जाली के बड़े घर में पहुंचाया, जो मेरे जीव-चंतुओं का सामान्य निवास है।

दोनो नवांगतुकों ने पहले से रहने वालों में वैसा ही कूतूहल जगाया, जैसा नववधु के आगमन पर परिवार में स्वाभाविक है। लक्का कबूतर नाचना छोड़कर दौड़ पड़े और चारों ओर घूम-घूमकर गुटर्गूं-गुटर्गू की रागिनी अलापने लगे। बड़े खरगोश मभ्य सभासदों के समान क्रम से बैठ कर गंभीर भाव से निरीक्षण करने लगे। उन की गेंद-जैसे छोटे ख़रगोश उनके चारों ओर उछल कूद मचाने लगे। तोते मानो भलीभांति देखने के लिए एक आंख बंद करके उनका परीक्षण करने लगे। ताम्रचूड़ झूले से उतरकर और दोनों पंखो को फैलाकर शोर करने लगा। उस दिन मेरे चिड़ियाघर में मानो भूचाल आ गया।

धीरे-धीरे दोनों मोर बच्चे बढ़ने लगे। उनका कायाकल्प वैसा ही क्रमशः और रंगमय था. जैसा इल्ली से तितली का बनना।

मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊंची तथा चमकीली हो गई। चोंच अधिक वंकिम और पैनी हो गई, गोल आंखों में इंद्रनील की नीलाभ द्युति झलकने लगी। लंबी नील-हरित ग्रीवा की हर मंगिमा में छूपछाहीं तंरगे उठने-गिरने लगीं। दक्षिण-वाम दोनों पंखों में सलेटी और सफ़ेद अलोखन स्पष्ट होने लगे। पूंछ लंबी हुई और उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इन्द्र धनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंग-रहित पैरों को गर्वीली गति ने एक नई गरिमा से रंजित कर दिया। उसका गर्दन ऊंची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीचा कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो शुकुभारता आदि सौन्दर्य था, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है। गति का चित्र नहीं आंका जा सकता।

मोरनी का विकास मोर के समान चमत्कारिक तो नहीं हुआ। परंतु अपनी लंबी छुपछांही गर्दन, हवा में चंचल कलगी, पंखों की श्याम-श्वे पत्रलेखा मंथर गति आदि से वह भी मोर की उपयुक्त सहचारिणी होने का प्रमाण देने लगी।

नीलाभ ग्रीवा के कारण मोर का नाम रखा गया नीलकण्ठ और उसकी छाया के समान रहने के कारण मोरनी का नामकरण हुआ राधा।

मुझे स्वयं ज्ञात नहीं कि कब नीलकंठ ने अपने-आपको चिड़ियाघर के निवासी जीव-जंतुओं का सेनापति और संरक्षक नियुक्त कर लिया। सवेरे ही वह सब ख़रगोश, कबूतर आदि की सेना एकत्र कर उस ओर ले जाता, जहां दाना दिया जाता है और घूम-घूमकर सबकी रखवाली करता रहता है। किसी ने कुछ गड़बड़ की और वह अपने तीखे चंचु प्रहार से उसे दंड देने दौड़ा।

ख़रगोश के छोटे शरीर और बच्चों को वह चोंच से उनके कान पकड़कर उठा लेता था और जब तक वे आर्त क्रंदन न करने लगते, उन्हें अधर में लटकाए रखता। कभी-कभी उसकी पैनी चोंच से ख़रगोश के बच्चों का कर्ण वेध-संस्कार हो जाता था, पर वे फिर कभी उसे क्रोधित होने का अवसर न देते थे। उसके दण्डविधान के समान ही उन जीव-जंतुओं के प्रति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसका प्रेम भी असाधारण था। प्रायः वह मिट्टी में पंख फैला कर बैठ जाता और वे सब उसकी लंबी पूंछ और सघन पंखों में छुआ-छुआ-अल-सा खेलते रहते थे।

एक-दिन उसके अपत्य स्नेह का हमें ऐसा प्रमाण मिला कि हम विस्मित हो गए। कभी-कभी खरगोश, कबूतर आदि सांप के लिए आकर्षण बन जाते हैं और यदि जाली के धर में पानी निकलने के लिए बनी नालियों में से कोई खुली रह जाए तो उसका भीतर प्रवेश पा लेना सहज हो जाता है। ऐसी ही किसी स्थिति में एक सांप जाली के भीतर पहुंच गया।

सब जीव-जंतु भागकर इधर-उधर छिप गए, केवल एक शिशु खरगोश सांप की पकड़ में आ गया। निगलने के प्रयास में सांप ने उसका आधा पिछला शरीर तो मुंह में दबा रखा था, शेष आधा जो बाहर था उससे चीं-चीं का स्वर भी इतना तीव्र नहीं निकल सकता था कि किसी को स्पष्ट सुनाई दे सके। नीलकंठ दूर ऊपर झूले में सो रहा था। उसी के चौकन्ने कानों ने उस मंद स्वर की व्यथा पहचानी और वह पूंछ-पंख समेटकर सर्र-से एक झपट्टे में नीचे आ गया।

संभवतः अपनी सहज चेतना से ही उसने समझ लिया होगा कि साँप के फन पर चोंच मारने से खरगोश भी घायल हो सकता है। उसने साँप को फन के पास पंजों से दबाया और फिर चोंच से इतने प्रहार किए कि वह अधमरा हो गया। पकड़ ढीली पड़ते ही खरगोश का बच्चा मुख से निकल तो आया, परन्तु निश्चेष्ट-सा वहीं पड़ा रहा।

राधा ने सहायता देने की आवश्यकता नहीं समझी, परन्तु अपनी मंद केका से किसी असामान्य घटना की सूचना सब ओर प्रसारित कर दी। माली पहुँचा, फिर हम सब पहुँचे। नीलकंठ जब साँप के दो खंड कर चुका, तब उस शिशु खरगोश के पास गया और रात-भर उसे पंखों के नीचे रखे उष्णता देता रहा।

कार्तिकेय ने अपने युद्ध वाहन के लिए मयूर को चुना होगा यह उस पक्षी का रूप और स्वभाव देखकर समझ में आ जाता है।

मयूर कलाप्रिय पक्षी है, हिंसक-मात्र नहीं। इसी से उसे बाज, चील आदि की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, जिनका जीवन ही क्रूर कर्म है।

नीलकंठ में उसकी जातिगत विशेषताएँ तो थीं हीं, उनका मानवीकरण भी हो गया था। मघों की साँवली छाया में अपने इन्द्रधनुष के गुच्छे—जैसे पंखों को मंडलाकर बनाकर जब वह नाचता था, तब उस नृत्य में पंखों को मंडलाकर बनाकर जब वह नाचता था, तब उस नृत्य मे एक सहजात लय-ताल रहता था। आगे-पिछे, दाहिने-बाएँ क्रम से घूमकर वह किसी अलक्ष्य सम पर ठहर-ठहर जाता था।

राधा नीलकंठ के समान नहीं नाच सकती थी, परन्तु उसकी गति में भी एक छंद रहता था। वह नृत्यमग्न नीलकंठ के दाहिनी ओर के पंख को छूती हुई बाँई ओर निकल जाती थी और बाएँ पंख को स्पर्श कर दाहिनी ओर। इस प्रकार उसकी परिक्रमा में भी एक पूरक ताल का परिचय मिलता था। नीलकंठ ने कैसे समझ लिया कि उसका नृत्य मुझे बहुत भाता है,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह तो नहीं बताया जा सकता; परन्तु अचानक एक दिन वह मेरी जालीघर के पास पहुँचते ही अपने झूले से उतरकर नीचे आ गया और पंखों का सतरंगी मंडलाकर छाता तानकर नृत्य की भंगिमा में खड़ा हो गया। तब से यह नृत्यु-भंगिमा नित्य का क्रम बन गई। प्रायः मेरे साथ कोई-न-कोई देशी-विदेशी अतिथि भी पहुँच जाता था और नीलकंठ की मुद्रा को अपने प्रति सम्मान-सूचक समझकर विस्मयभिभूत हो उठता था। कई विदेशी महिलाओं ने उसे 'परफ़ैक्ट जेंटिलमैन' की उपाधि दे डाली।

जिस नुकीली पैनी चोंत से वह भयंकर विषधर को खंड-खंड कर सकता था, उसी से मेरी हथेली पर रखे हुए भुने चने ऐसी कोमलता से हौले-हौले उठाकर खाता था कि हँसी भी आती थी और विस्मय भी होता था। फलों के वृक्षों से अधिक उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे।

वसंत में जब आम के वृक्ष सुनहरी मंजरियों से लद जाते थे, अशोक नए लाल पल्लवों से ढँक जाता था, तब जालीघर में वह इतना अस्थिर हो उठता था कि उसे बाहर छोड़ देना पड़ता। पर जब तक राधा को भी मुक्त न किया जाए, वह दरवाज़े के बाहर ही उपालंभ की मुद्रा में खड़ा रहता। मंजरियों के बीच नीलाभ झलक संध्या की छाया से सुनहले सरोवर में नीले कमल-दलों का भ्रम उत्पन्न कर देती थी। हवा से तरंगायित अशोक के रक्तिमाभ पत्तों में तो वह मूँगे के फलक पर मरकत से बना चित्र जान पड़ता था।

नीलकंठ और राधा की सबसे प्रिय ऋतु तो वर्षा ही थी। मेघों के उमड़ आने से पहले ही वे हवा में उसकी सजल आहट पा लेते थे और तब उनकी मंद्र केका की गूँज अनुगूँज तीव्र से तीव्रतर होती हुई मानो बूँदों के उतरने के लिए सोपान-पंक्ति बनने लगती थी। मेघ के गर्जन के ताल पर ही उसके तन्मय नृत्य का आरम्भ होता। और फ़िर मेघ जितना अधिक गरजता, बिजली जितनी अधिक चमकती, बूँदों की रिमझिम जितनी तीव्र होती जाती, नीलकंठ के नृत्य का वेग उतना ही बढ़ता जाता और उसकी केका का स्वर उतना ही मंद से मंदतर होता जाता। वर्षा के थम जाने पर वह दाहिने पँजे पर दाहिना पंख और बाएँ पर बायाँ पंख फैलाकर सुखाता। कभी-कभी वे दोनों एक-दूसरे के पंखों से टपकने वाली बूँदों को चोंच से पी-पीकर पंखों का गीलापन दूर करते रहते।

इस आनन्दोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा, वह भी एक करूण कथा है।

एक दिन मुझे किसी कार्य से नखासकोने से निकलना पड़ा और बड़े मियाँ ने पहले के समान कार को रोक लिया। इस बार किसी पिंजड़े की ओर नहीं देखूँगी, यह संकल्प करके मैंने बड़े मियाँ की विरल दाड़ी ओर सफ़ेद डोरे से कान में बँदी ऐनक को ही अपने ध्यान का केन्द्र बनाया। पर बड़े मियाँ के पैरों के पास, जो मोरनी पड़ी थी, उसे अनदेखा करना कठिन था।

मोरनी राधा-जैसी ही थी। उसके गूँज से बंधे दोनों पंजों की उँगलियां टूटकर इस प्रकार एकत्र हो गई थी कि वह खड़ी ही नहीं हो सकती थी।

बड़े मियाँ की भाषण-मेल फिर दौड़ने लगी देखिए गुरूजी, कम्बख्त चिड़ीमार ने बेचारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

[illegible] क्या हाल किया है ! ऐसे कभी चिड़िया पकड़ी जाती है ? आप न आई होतीं तो मैं उसी [illegible] सिर इसे पटक देता। पर आपसे भी यह अधगरी मोरनी ले जाने को कैसे कहूँ !

सारांश यह कि सात रुपए देकर मैं उसे अगली सीट पर रखवाकर ले आई और एक बार फिर मेरे पढ़ने-लिखने का कमरा अस्पताल बना। पंजों की मरहम-पट्टी और देखभाल करने पर वह महीने भर में अच्छी हो गई। अँगुलियां वैसी ही टेढ़ी-मेढ़ी रही, परन्तु वह ठूँठ-जैसे पंजों पर डगमगाती हुई चलने लगी। तब उसे जालीघर में पहुँचाया गया और नाम रखा गया। कुब्जा। कुब्जा नाम के अनुरूप स्वभाव से भी वह कुब्जा प्रमाणित हुई।

[illegible] नीलकंठ और राधा साथ रहते थे। अब कुब्जा उन्हें साथ देखते ही मारने दौड़ती। [illegible] मार-मारकर उसने राधा की कलगी नोच डाली, पंख नोच डाले। कठिनाई यह थी कि नीलकंठ उससे दूर भागता था और वह उसके साथ रहना चाहती थी। न किसी जीव-जन्तु से उसकी मित्रता थी। न वह किसी को नीलकण्ठ के समीप आने देना चाहती थी। उसी बीच राधा ने दो अंडे दिए, जिनको वह पंखों में छिपाए बैठी रहती थी। पता चलते ही कुब्जा ने चोंच मार-मारकर राधा को ढकेल दिया और फिर अंडे फोड़कर ठूँठ-जैसे पैरों से सब ओर छितरा दिए।

हमने उसे अलग बंद किया, तो उसने दाना-पानी छोड़ दिया और जारी पर सिर पटक-पटक कर घायल कर लिया।

इस कलप-कोलाहल से और उससे भी अधिक राधा की दूरी से बेचारे नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया।

कई बार जाली के घर से निकल भागा। एक बार कई दिन भूखा-प्यासा आम की शाखाओं में छिपा बैठा रहा, जहाँ से बहुत पुचकारकर मैंने उतारा। एक बार मेरी खिड़की के शेड पर छिपा रहा।

मेरे दाना देने पर सदा के समान अब भी को मंडलाकार बनाकर खड़ा हो जाता था, पर उसकी चाल में थकावट और आँखों में एक शून्यता रहती थी। अपनी अनुभवहीनता के कारण ही मैं आशा करती रही कि थोड़े दिन बाद सबसे मेल हो जाएगा। अंत में तीन-चार मास के उपरांत एक दिन सवेरे जाकर देखा कि नीलकंठ पूँछ-पंख फैलाए धरती पर उसी प्रकार बैठा हुआ है, जैसे ख़रगोश के बच्चों को पंखों में छिपाकर बैठता था। मेरे पुकारने पर भी उसके न उठने पर संदेह हुआ।

वास्तव में नीलकंठ मर गया था। 'क्यों' का उत्तर तो अब तक नहीं मिल सका है। न उसे कोई बीमारी हुई, न उसके रंगबिरंगे फूलों के स्तवक जैसे शरीर पर किसी चोट का चिन्ह मिला। मैं अपने शाल में लपेटकर उसे संगल ले गई। जब गंगा की बीच धार में उसे प्रवाहित किया गया। तब उसके पंखों की चंद्रिकाओं से बिम्बित-प्रतिबिम्बित होकर गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर के समान तरंगित हो उठा।

नीलकंठ के न रहने पर राधा तो निश्चेष्ट-सी कई दिन कोने में बैठी रही। वह कई बार भागकर लौट आया था, अतः वह प्रतिक्षा के भाव से द्वार पर दृष्टि लगाए रहती थी। पर कुब्जा ने कोलाहल के साथ खोज ढूँढ आरम्भ की। खोज के क्रम में वह प्रायः जाली का दरवाजा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुलते ही बाहर निकल जाती थी और आम, अशोक कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूँढती रहती थी। कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूँढती रहती थी। एक दि वह आम से उतरी ही थी कि कजली (अल्सेशियन कुत्ती) सामने पड़ गई। सम्वभाव के अनुसा उसने कजली पर भी चोंच से प्रहार किया। परिणामतः कजली के दो दाँत उसकी गर्दन पा लग गए। इस बार उसका कलह-कोलाहल और द्वेष-प्रेम-भरा जीवन बचाया न जा सका। परन्तु इन तीन पक्षियों ने मुझे पक्षी-प्रकृति की विभिन्नता का जो परिचय दिया है, वह मेरे लिए विशे महत्त्व रखता है।

राधा अब प्रतीक्षा में ही दुकेली है। आषाढ़ में जब आकाश मेघाच्छन्न हो जाता है, तब वह कभी ऊँचे झूले पर और कभी अशोक की डाल पर अपनी केका को तीव्र से तीव्रतर करके नीलकंठ को बुलाती रहती है।

प्रश्नावली

(1) दिए गए चारों विषयों में से किसी पर पाठ योजना बनाएं।

(2) दिए गए पाठों में से किसी एक की भाषा शैली की विशेषताएं लिखिए।

(3) दिए गए पाठों के शिक्षण उद्देश्य लिखिए।

□ □ □

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

VINOD PUBLICATIONS

ACCORDING TO KASHMIR UNIVERSITY SYLLABUS

Theory & Principles of Education	Hemant Kumar, Kumar Gaurav & Miss. Anuradha
Theory & Principles of Education	Dr. M.S. Sachdeva Dr. V.K. Gupta
Psychology of Learning & Development	Hemant Kumar, Kumar Gaurav & Miss. Anuradha
Psychology of Learning & Development	Dr. V.K. Gupta
Developmental of Education System In India	Hemant Kumar, Kumar Gaurav & Miss. Anuradha
Developmental of Education System In India	Dr. V.K. Gupta
Essentials of Instructional Technology	Hemant Kumar, Kumar Gaurav & Miss. Anuradha
Essentials of Instructional Technology	Dr. M.S. Sachdeva & Dr. V.K. Gupta
Teaching of Hindi	Surinder Singh Kadian
Teaching of History & Civics	Anita Rawat
Teaching of History & Civics	Hemant Kumar, Kumar Gaurav & Miss. Anuradha
Teaching of Geography	Anita Rawat
Teaching of Geography	Hemant Kumar, Kumar Gaurav & Miss. Anuradha
Computer Education	Ashwani Sudera
Vocational Guidance & Counselling	Dr. V.K. Gupta
Vocational Guidance & Counselling	Hemant Kumar, Kumar Gaurav & Miss. Anuradha
Population Education	Dr. V.K. Gupta
Population Education	Hemant Kumar, Kumar Gaurav & Miss. Anuradha
Health & Physical Education	Dr. Manjeet Kaur
Teaching of Bio-Science	Sandeep Sawhney
Teaching of Physical Science	Sandeep Sawhney
Teaching of Physical Science	Dr. V.K. Gupta & Yadav
Environmental Education	Hemant Kumar, Kumar Gaurav & Miss. Anuradha
Teaching of English	Dr. M.S. Sachdeva
Vinod B. Ed Syllabus Unsolved Paper, Guess paper	

VINOD PUBLICATIONS
LUDHIANA-141 008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh-Funding by IKS-MoE-2025-Grant